जलता हुआ पंजाब!

रोटी के लिए रोटी

वे नेताजी नहीं थे तो कौन थे ?

पाकिस्तानी बस : चोरी और सीनाजोरी

सुनील दत्त ज़िंदाबाद!

और गंगा-स्नान!

## फ़ैज़ाबाद के गुमनामी बाबा

# वे नेताजी नहीं थे तो कौन थे

□'यह न तो किसी बाबा को नेताजी साबित करने की कोशिश है न तो नेताजी को खोजने के लिए कोई अभियान है।' यह कहने वाले पत्रकार अशोक टंडन तो सिर्फ सामने आये कुछ तथ्यों के सहारे खुद की गयी जांच का सिलसिलेवार नतीज़ा हमारे पाठकों तक पहुंचा रहे हैं, जो फ़ैज़ाबाद से प्रकाशित दैनिक पत्र 'नये लोग' के सम्पादन काल में उन्हें प्राप्त हुए थे।

□फ़ैज़ाबाद में गुमनामी बाबा की मृत्यु होने पर जब उनके बारे में यह कहा जाने लगा कि वे नेताजी थे, तो अधिकतर लोगों ने इस पर विश्वास नहीं किया। मगर तथ्य कुछ दूसरे ही थे, जिन्हें अस्वीकार करना मुश्किल था।

□'गंगा' सनसनीखेज़ पत्रकारिता में विश्वास नहीं करती. लेकिन नेताजी जैसे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व के मसले को देश और इतिहास के हित में उठाना अपना कर्त्तव्य समझती है। हम इसी ऐतिहासिक ज़िम्मेदारी के तहत तथ्यपरक रपट छाप रहे हैं। पढ़िए पहली किस्त—

□अशोक टंडन

विगत दिनों उ.प्र. के फैज़ाबाद जिले में एक गुमनामी बाबा की रहस्यमय ढंग से मृत्यु हुई थी। उसे लेकर एक विवाद खड़ा हो गया कि यहां रहने वाले अनामधारी संत ही कहीं नेताजी सुभाष चंद्र बोस तो नहीं थे, जो पिछले 12 वर्षों से अयोध्या व फैज़ाबाद में गुप्त रूप से अज्ञातवास कर रहे थे।

फैज़ाबाद शहर के बस स्टेशन से सटे तथा सरकिट हाउस के ठीक सामने प्रसिद्ध भू.पू. नगर मजिस्ट्रेट स्व. गुरुदत्त सिंह का एक बंगला है—रामभवन। इस भवन के साथ ही पीछे बने दो कमरे के एक क्वार्टर में एक अनाम संत दो-तीन वर्ष से रह रहे थे। उस गुमनाम संत के बारे में फैज़ाबाद की आम जनता कुछ भी नहीं जानती थी। उस संत के साथ उनकी एक परिचारिका श्रीमती सरस्वती शुक्ला भी रहती थीं। संत जी किसी से मिलते नहीं थे। वे हमेशा पर्दे में रहते थे। पर्दे के पीछे से ही बात करते थे। उनका चेहरा भी किसी ने नहीं देखा था। उनके पास लोगों का आना-जाना भी नहीं होता था। कभी-कभार जो लोग आते-जाते भी थे उनकी संख्या 10–15 से ज़्यादा नहीं थी। लेकिन संत उन 10–15 लोगों से भी पर्दे की आड़ में बैठकर ही बात करते थे। इन लोगों ने भी उनका चेहरा कभी नहीं देखा था। और न ही कोई उनका नाम, पता व ठिकाना जानता था।

16 सितम्बर 85 को अचानक दोपहर में संत जी की तबियत खराब होती है। उनकी परिचारिका दौड़कर उनके प्रमुख चिकित्सक डॉ. आर.पी. मिश्रा (भू.पू. सर्जन, जिला अस्पताल, फैज़ाबाद) को बुला लाती है। शाम होते-होते शहर के एक और मशहूर होम्योपैथ डॉ. पी. बनर्जी भी वहां आ जाते हैं। ये भी उन्हीं 10–15 लोगों में से हैं, जो संत के यहां मिलने आया करते थे। रात को लगभग 9 बजे संत जी की हालत ज़्यादा खराब होती है और डॉ. बनर्जी दौड़कर ऑक्सीजन देने का सामान लेने चले जाते हैं। लेकिन लौटकर आने पर डॉ. आर.पी. मिश्रा उन्हें बताते हैं कि संत जी की मृत्यु हो चुकी है। डॉ. बनर्जी का कहना था कि अब दुनिया को बता दिया जाना चाहिए कि 'ये कौन थे।' इस पर डॉ. मिश्रा बिगड़ उठते हैं और उन्होंने किसी को भी संत जी की मृत्यु के बारे में सूचित करने से मना कर दिया। उस समय डॉ. मिश्रा का पूरा परिवार भी वहीं था। ये लोग रात भर लाश के पास रहे। दूसरे दिन कुछ खास लोग जैसे जिला अस्पताल के डॉ. बी. राय, उनके एक मित्र श्री शुक्ला तथा मास्टर कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव आदि भी खबर पाकर वहां पहुंच गये तब डॉ. मिश्रा, जिन्होंने पहले किसी को भी संत की मृत्यु की सूचना न देने की बात कही थी, उन्होंने इन लोगों से कहा कि कलकत्ता वायरलेस कर दिया गया है. वहां से लोगों के आ जाने पर ही कुछ निर्णय किया जाएगा।

इसी बीच शहर में यह चर्चा होने लगी थी कि रामभवन में रह रहे एक पर्देधारी बाबा की मृत्यु हो गई है और किसी को उनकी लाश के दर्शन नहीं करने दिया जा रहा है।

### दाहक्रिया छिपाकर क्यों की गयी ?

तीसरे दिन भी जब कलकत्ते से कोई नहीं आया तो लाश का दाह-संस्कार करने का निर्णय हुआ। बाहर खड़ी भीड़ को अयोध्या के मरघट पर ले जाने की सूचना देकर लाश को एक मेटाडोर में रखकर उसे रामभवन से थोड़ी दूर ही स्थित नगर के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल गुप्तार घाट के निकट सरकारी उद्यान के एक कोने में ले जाकर चुपचाप फूंक दिया गया। **ज्ञातव्य है कि गुप्तार घाट पर या आसपास किसी भी घाट पर कभी लाशें नहीं जलायीं जातीं। वह एक रमणीक व धार्मिक स्थल है जहां कहते हैं कि भगवान राम ने जल समाधि ली थी।** लाश जलाते समय डॉ. मिश्रा बहुत बेचैनी व हड़बड़ी में थे। साथ में सर्वश्री डॉ. पी. बनर्जी, डॉ. बी. राय, शुक्ला, रामकिशोर मिश्र तथा उनके दो पुत्र अरूण कुमार व कृष्ण कुमार, टिक्ठरी बनाने वाले महात्मा सरन, मास्टर कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव, बिंदेश्वरी खरे वकील, राजकुमार शुक्ला तथा एक व्यक्ति और था। अर्थात 13

नगर इका के उपाध्यक्ष पं. रामकिशोर मिश्र ने यह रहस्योदघांटन करके कि 'गुमनामी बाबा ही नेताजी सुभाष चंद्र बोस थे'—पूरे जनमानस को झकझोर डाला। उन्होंने उस अनाम संत से कसम खाई थी कि वे आजीवन इस रहस्य को नहीं खोलेंगे—का खुलासा करते हुए **श्री मिश्र ने कहा कि नेताजी ने उन्हें अपनी रक्षा करने की जिम्मेदारी सौंपी थी और वे उस जिम्मेदारी को उनके जीवन काल तक निभाते रहे**, लेकिन अब **वे समझते हैं कि उनकी बची हुई वस्तुओं की रक्षा करना भी उसी वचन के अंतर्गत आता है।** अत: वे यह रहस्योदघाटन कर रहे हैं क्योंकि वे देख रहे हैं कि उनके सामान को लेकर उनके कुछ अन्य शिष्यों में झगड़ा मचा हुआ है तथा सामान गायब किया जा रहा है। उन्होंने आगे बताया कि वे उन्हें भगवन जी कहा करते थे, वैसे भगवन जी ने स्वयं कभी नहीं कहा कि वे नेताजी हैं लेकिन मुझे पूरा यकीन हो चला था कि यही नेताजी सुभाष चंद्र बोस हैं।

श्री मिश्र ने भावुक होते हुए बताया कि वे मुझे नंद बाबा व मेरी स्त्री को यशोदा कहा करते थे। भगवन जी अक्सर मुझसे कहा करते थे कि जिस तरह कृष्ण को नंद-यशोदा जी ने छिपाकर रखा था, उसी तरह तुमको भी मुझे रखना होगा। उनके साथ के अनेक प्रकरण बताते हुए उन्होंने कहा कि उन्हें अयोध्या में सबसे पहले बस्ती (उ.प्र.) के श्री दुर्गा प्रसाद पांडेय वकील लेकर आये थे। अयोध्या आने के समय उनके साथ एक लम्बा-सा मुस्लिम व्यक्ति भी था। एक डेढ़ माह उनके मकान में एक किरायेदार के रूप में रहने के बाद वे ब्रह्मकुंड गुरुद्वारे के समीप श्री सोढ़ी के मकान में चले गये। कुछ वर्ष वहां रहने के बाद वे लखनऊवा मंदिर के पिछवाड़े रहने लगे थे। **इन स्थानों पर उनके साथ एक परिचारिका श्रीमती सरस्वती शुक्ला रहती थीं, जिन्हें गुमनामी बाबा यानी नेताजी जगदम्बे कहते थे।**

उन्होंने यह भी बताया कि वे **संत भगवन** जी **जब लखनऊ में रहते थे तो तत्कालीन मुख्यमंत्री सम्पूर्णानंद भगवन जी का समस्त भार वहन करते थे। यहां तक कि उनकी शिव की तंत्र साधना के लिए मेडिकल कॉलेज से शव की व्यवस्था होती थी।** भगवन जी एक महान साधक राजयोगी थे। वे अक्सर कहा करते थे कि पूरा हिमालय मेरी नज़रों में है। तिब्बत की एक तंत्रशाला में भी वे रहे हैं, जहां पर दो-तीन सौ मुर्दे रखे हैं जिन्हें तंत्र की क्रिया से चलाया जाता है। वहां पर पांच-पांच सौ,

नेताजी : मृत्यु पर विवाद

व्यक्तियों ने संत की लाश का अग्निदाह किया।

दूसरे दिन संत के कमरे में रखे सामान को लेकर मची लूट-खसोट को रोकने की गरज से डॉ. बी राय, डॉ. मिश्रा व श्रीमती सरस्वती शुक्ला ने मिलकर तीन ताले डाल दिये और तय किया गया कि कलकत्ते से आने वाले व्यक्तियों के बिना कोई सामान नहीं हटाया जाएगा।

इस बीच मुझे कुछ सूत्रों से उपरोक्त घटना की सूचना मिली तथा यह भी सुनाई पड़ने लगा कि वह अनामधारी संत नेताजी सुभाष चंद्र बोस थे, तभी उनका दाहकर्म इस तरह छिपाकर किया गया। मुझे गर्म अफवाहों ने लपेटना शुरू कर दिया। मेरी सक्रियता रात-दिन बदलने लगी। तथ्य गहराने लगे।

और फिर 28 अक्टूबर 1985 को फैज़ाबाद के स्थानीय दैनिक 'नये लोग' ने इस घटना को प्रमुखता से छापा कि 'फैज़ाबाद में अज्ञातवास कर रहे नेताजी सुभाष चंद्र बोस नहीं रहे?' और मुखपृष्ठ पर सम्पादकीय में लिखा कि 'फैज़ाबाद-अयोध्या में अज्ञातवास करने वाले इस गुमनामी व्यक्ति के इर्द-गिर्द नेताजी की सम्भावनाओं के प्रश्न-चिन्ह सदा ही जनता में मरमरी फैलाये रहे।' प्रश्न उठता है कि अगर ये गुमनामी व्यक्ति नेताजी सुभाष चंद्र बोस नहीं थे तो कौन थे? उनका नाम क्या था? उनका घर कहां था? वे कहां के रहने वाले थे और वे गुमनामी की ज़िंदगी क्यों जी रहे थे? इन सारे प्रश्नों का उत्तर उनके नज़दीक रहे लोगों से पूछा जा सकता है और इसकी सत्यता परखी जा सकती है तथा उस राष्ट्रनायक के आखिरी दिनों की गुमनामी जिंदगी को इतिहास में लाने की जिम्मेदारी के लिए अगर तथ्य की एक चिंगारी भी कहीं नज़र आती है तो उसे छोड़ा नहीं जाना चाहिए। अर्थात तीन ताले में बंद उस रहस्य को जानने के लिए जनता को आगे आना होगा।

कि तभी दूसरे दिन बाबा के एक प्रमुख शिष्य

हज़ार-हज़ार वर्ष के लोग हैं।

पंडित जी ने बताया कि वर्ष भर में दो अवसरों पर कलकत्ते से चार व्यक्ति आते थे, ये अवसर थे 23 जनवरी व नवरात्रि। 23 जनवरी को उनका अर्थात नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्मदिन मनाया जाता था। कलकत्ते से विशेष रूप से लाल गुलाब की एक माला उनके लिए आती थी। आने वाले व्यक्ति उनके सामने जमीन पर बैठकर कुछ नोट किया करते थे। उनका ज्यादातर सामान कलकत्ते से ही आता था। वही लोग नेताजी के लिए धन भी लाते थे। नेताजी उनके जाने के बाद कहा करते थे कि ये हमारे बहुत बड़े-बड़े अफसर हैं। वे अक्सर एकांत में आजाद हिंद फौज, हिटलर, द्वितीय विश्व युद्ध की घटनाओं का जिक्र किया करते थे, और नेताजी का नाम न लेकर 'यह शरीर' शब्द का प्रयोग करते थे।

भगवन जी (नेता जी) का स्वभाव कभी बहुत गरम व कभी बहुत नरम हो जाता था। आवाज में हुंकार थी शेर की तरह। वे गलती पर बहुत बिगड़ते थे। एक बार डॉ. बनर्जी के पौत्रों ने शहर में यह रहस्योद्घाटन किया कि वे नेताजी हैं—वे बहुत बिगड़े थे और दो वर्ष तक डॉ. बनर्जी को अपने पास फटकने नहीं दिया। उनके पास अंदर तक जाने वालों में पहला परिवार डॉ. टी.सी. बनर्जी का ही था।

पं. रामकिशोर मिश्र की इस घोषणा के बाद तो फैजाबाद में एक जन-आंदोलन सा उठ खड़ा हो गया और सर्वश्री जयशंकर पांडेय (भू.पू. विधायक), अनिल तिवारी, रामप्रकाश सिंह व शैलेंद्र त्रिपाठी जैसे जुझारू नेताओं ने स्थानीय प्रशासन पर जोर डालना शुरू किया कि इस मामले की तुरंत जांच करायी जाए। जी.डी. क्रम सं. 44/23–50 दिनांकित 31.10.85 पर दर्ज प्रार्थना पत्र पर जिलाधिकारी ने जांच का आदेश दिया, जिस पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री कर्मवीर सिंह ने स्थानीय कोतवाली निरीक्षक श्री ए.के. हिंगवासिया को एक गोपनीय आदेश दिया कि 'दिनांक 16.9.85 को सर्किट हाउस के सामने स्थित रामभवन में निवास कर रहे संत की मृत्यु हुई थी। इस व्यक्ति के सम्बंध में दैनिक पत्र में करीब 2–3 दिन पहले यह सूचना दी गयी कि वह नेताजी सुभाष चंद्र बोस थे। इस सूचना से नगर में राजनैतिक गतिविधियों में काफी तेजी आयी है, ऐसी हालत में यह आवश्यक है कि आपके द्वारा पूरे प्रकरण पर जांच कर ली जाए। मैं चाहूंगा कि आप अपने स्तर से दो उप-निरीक्षक नियुक्त करें जो उक्त बाबा के बारे में पूरी जानकारी करें कि वह फैजाबाद में कहां से आये थे और कहां-कहां पर रहे, और जो सम्पत्ति है उन सबकी इनवेंटरी तैयार करें ताकि उनके बारे में जानकारी की जा सके।'

इस आदेश के तुरंत बाद श्री हरीश चंद्र सिंह सब-इंसपेक्टर के नेतृत्व में एक पुलिस दल ने नगर के कई गणमान्य वकील, पत्रकार, प्रवक्ता एवं नेताओं के समक्ष गुमनामी बाबा के कमरे में बंद तीन तालों को खुलवाकर उनके सामानों की सूची (इन्वेंटरी) बनानी शुरू की।

**समर गुहा द्वारा जारी 23 जनवरी 1979 को बांग्ला 'जुगांतर' में छपा फोटोग्राफ, जिसके बारे में उनका कहना था कि यह नेताजी का चित्र है, जो किसी मंदिर में लिया गया था। गुमनामी बाबा की मृत्यु के बाद रामभवन से इस फोटो की मूल प्रतिलिपि और 'जुगांतर' की वह प्रति भी प्राप्त हुई।**

## चौंकाने वाले तथ्य व दस्तावेज़

गुमनामी बाबा के उस कमरे में जहां आज तक एक परिंदा भी नहीं घुस सका था—वहीं आज पचासों आंखें एक-से-एक अद्भुत, चौंकाने वाले तथ्य व दस्तावेज देख रही थीं।

लोग चौंक पड़े— ''जिसे आज तक आम

**जनता, बाहर से एक साधारण साधु समझती रही, उसी के कमरों में पचासों बक्सों में भरा हुआ दुनिया का अपार साहित्य मिला।** किताबें ज्यादातर अंग्रेजी व बंगला में थी। नेताजी सुभाष चंद्र बोस पर संसार में छपा उत्कृष्ट साहित्य वहां उपलब्ध था। संसार के किसी भी कोने में नेताजी के बारे में छपी अखबारों की कटिंग्स के साथ, दुनिया के सभी विषयों पर, खासकर द्वितीय विश्वयुद्ध, राजनीति आदि पर तकरीबन एक बोरा अखबारों की कटिंग्स तथा अधिकतर कटिंग्स पर अंडर लाइन की गयी थी।

वहां पर मिली कुछ पुस्तकें—'बुलेटिन ऑफ द नेताजी रिसर्च ब्यूरो', 'हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट ऑफ इंडिया', 'मास्कोस् हैंड इन इंडिया' (पूरी पुस्तक अंडर लाइन), 'फ्रीडम एंड आफ्टर, नेहरू जी फैटल फ्रैंडशिप', 'जेल में तीस वर्ष' (ले. त्रिलोक नाथ), 'सुभाष चंद्र बोस' (ले. नंदा मुखर्जी), 'मैसेज ऑफ सुभाष चंद्र बोस', 'नेताजी का आवाहन', 'नेताजी कानसेप्ट ऑफ फ्री इंडियन', शेक्सपियर, मिस्टीरियस लेडी, टैलर्स कंफेसन—'नेताजी स्टिल एलाइव', 'नेताजी स्पोक्स', 'मेसमैरीजम', 'न्यूमरोलॉजी', 'नेताजी थ्रू जरमन लेंस', 'लाइफ बियांड डेथ' तथा आक्सफोर्ड की दो डिक्सनरियां, दुनिया का एटलस, बंगला महाभारत, सुभाष सेवा दल की पत्रिका के अलावा दो बहुचर्चित पुस्तकें—भारत-चीन युद्ध पर बिग्रेडियर दलवी की 'हिमालयन ब्लंडर' तथा भारत-पाक युद्ध पर कुलदीप नैय्यर की 'बिटविन द लाइंस'। इन दोनों पुस्तकों पर सैकड़ों जगह पर अंडर लाइन करते हुए गुमनामी बाबा ने महत्वपूर्ण कमेंट्स लिखे हैं, जिनकी चर्चा हम आगामी अंकों में करेंगे।

यही नहीं पुलिस द्वारा सूचीबद्ध किये जा रहे सामानों में जहां और भी सैकड़ों महत्वपूर्ण विषयों पर पुस्तकें मिलीं, वहीं पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस के माता-पिता तथा पूरे परिवार के कई फोटोग्राफ्स, कलकत्ता में 23 जनवरी को मनाये गये नेताजी जन्मोत्सव के फोटोग्राफ, लीला राय की मृत्यु पर हुए श्राद्धकर्म आदि के कई फोटोग्राफ्स, नेताजी की ही तरह के गोल चश्में, उनकी चिरपरिचित गोल जेबी घड़ी, विदेशी दूरबीन, बढ़िया कलमें, 555 सिगरेट के अलावा विदेशी दूरबीन, बढ़िया तम्बाकू पाइप, चीन की बनी क्राकरी, धर्म व तंत्र पर साहित्य, स्वामी विवेकानंद, स्वामी परमहंस व मां काली के चित्र, एक तिरंगा झंडा, आजाद हिंद फौज की 25 वीं वर्षगांठ पर जारी डाक टिकट व फर्स्ट डे कवर के अलावा ऐसी हजारों सूचनाएं, दस्तावेज तथा नेताजी के विप्लवी समय के साथियों व नेताओं प्रो. समर गुहा, सुश्री लीला राय, सर्वश्री विश्वनाथ, संतोष बाबू, त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती, देवेश, रथींद्र, बारीन सेन, अनिल दास, पवित्र मोहन राय, कविराज कमलाकांति घोष, कौशल किशोर, बी.के. कौल, गुरु गोलवलकर, कर्नल बी.आर. मोहन एवं सुनील गुप्ता आदि के हजारों पत्रों के अलावा गुमनामी बाबा के उन दो कमरे से इलाहाबाद से प्रकाशित 'भविष्य' अखबार की सन 1931 की पुरानी प्रतियां (जिसमें नेताजी के विषय में छपा है), अंग्रेजी में जी.डी. खोसला की 40 पृष्ठों की रिपोर्ट की टाइप की हुई कापी, बंगलादेश संविधान (संशोधित 1977) की प्रमाणीकृत प्रतिलिपि, जी.डी. खोसला कमीशन में 1977 में श्री द्विजेंद्र नाथ बोस द्वारा दिये गये बयान की प्रतियां। गवाहों के जवाब-सवाल की प्रति। चौबीस परगना (कलकत्ता) के जिला जज के अदालत में 17 अगस्त को श्री सुरेश चंद्र बोस को प्रस्तुत होने के लिए चौबीस परगना के एडवोकेट कमिश्नर द्वारा भेजे गये सम्मन की मूल प्रतिलिपि। दिनांक 25.9.74 से 22.10.74 तक कलकत्ते के प्रसिद्ध दैनिक 'आनंद बाजार पत्रिका' में 24 किस्तों में छपी खबर 'ताईहोकू विमान दुर्घटना एक बनायी हुई कहानी है' की कटिंग्स। सैकड़ों टेलिग्राम व बंगला भाषा के पत्रों में जिस व्यक्ति के ज्यादातर पत्र व टेलिग्राम वहां मौजूद हैं—वह पी-517, दमदम पार्क कलकत्ता निवासी

(शेष पृष्ठ 85 पर)

**गुमनामी बाबा की मृत्यु पर 'नये लोग' में छपी खबर**

**नेताजी**
**(पृष्ठ 19 का शेष)**

कोई डॉ. पी.एम. राय हैं।

ये डॉ. पी.एम. राय कौन हैं ? इसका पता लगाने एक पुलिस दल कलकत्ता गया, जिसने आकर चौंकाने वाली रिपोर्ट दी कि डॉ. पवित्र मोहन राय वास्तव में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के निकट सहयोगी तथा आजाद हिंद फौज की गुप्तचर सेवा के अधिकारी रहे हैं, और सिंगापुर, मलेशिया में नेताजी के लिए काम करते रहे हैं तथा पनडुब्बी से भागकर हिंदुस्तान आये थे।

प्रो. समर गुहा,
यादवपुर विश्वविद्यालयं

फोन : 46–8134
60/ए, राजा सुबोध मल्लिक रोड, कलकत्ता- 32
21.1.67

श्रीचरणेषु,

इस शुभदिन को मेरी, मेरी पत्नी और हमारे सभी मित्रों की ओर से सश्रद्ध प्रणाम स्वीकार करें। भगवान से प्रार्थना है कि आप स्वस्थ रहें। सूर्योदय की प्रतीक्षा में हम सभी बेहद उतावले हैं।

माताजी से मेरा नमस्कार कहें और राजकुमार को स्नेह।

मैं इस वक्त कांथि केंद्र के लिए रवाना हो रहा हूं। 19 ता. को महेंद्रयोग में मैंने मनोनयन-पत्र दाखिल कर दिया है। लोकसभा केंद्र के अंतर्गत सात विधानसभा केंद्रों में चार पर पी.एस.पी. के उम्मीदवार हैं और तीन पर बांग्ला कांग्रेस के। मुझे बांग्ला कांग्रेस का समर्थन मिल रहा है। कांग्रेस के अलावा लोकसभा और विधान सभा केंद्रों में चीनपंथी कम्यूनिस्ट और एस.एस.पी. दल की ओर से संयुक्त रूप से एक उम्मीदवार मैदान में है। इस त्रिकोणात्मक लड़ाई में नतीजा क्या निकलेगा, कहना मुश्किल है। मेरी कोशिश जारी है।

हमलोग स्वस्थ हैं।

इति प्रणत
समर

प्रो. समर गुहा द्वारा गुमनामी बाबा को लिखा गया पत्र जो बाबा की मृत्यु के बाद रामभवन से प्राप्त हुआ।

## हवाई दुर्घटना, सिर्फ हवाई

हिंदुस्तान की नयी पीढ़ी जिसने नेताजी का नाम तो सुना है और उनकी गौरव गाथा से रोमांचित भी होती रही है, लेकिन उसे शायद यह नहीं मालुम कि नेताजी की तथाकथित हवाई दुर्घटना में हुई मृत्यु की खबर को न तो आज तक अंग्रेज हुकुमत ने सही माना था और न ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने ही। कहा जाता है कि महात्मा गांधी ने इस खबर को सुनने के बाद भी कहा था कि नेताजी का श्राद्धकर्म न किया जाए, क्योंकि वे मरे नहीं हैं।

और यह भी तय है कि ये विवाद अभी अंतिम रूप से न तो सुलझ सका है और न ही नेताजी की कोई प्रमाणिक जीवनी ही हमारी सरकार प्रकाशित करवा पाई है। क्योंकि अभी पिछले वर्ष ही कांग्रेस शताब्दी के अवसर पर नेताजी के भतीजे शिशिर बोस से नेताजी की एक जीवनी लिखवाकर भी उसे प्रकाशित न करने के पीछे कोई सारगर्भित तथ्य ही नज़र आता है; क्योंकि शिशिर बोस नेताजी को मृत मानते हैं तथा राष्ट्रभक्त सुभाषवादी लोग उन्हें झूठा करार देते हैं।

अब अगर मान लिया जाए कि नेताजी की मृत्यु उस तथाकथित विमान दुर्घटना में नहीं हुई तो फिर **यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि वे इतने दिनों तक छिपे हुये क्यों रहे ? देश स्वतंत्र होने के बाद तो वे सामने आ सकते थे या फिर उनके सामने कोई ऐसी मजबूरी थी कि जिसके कारण उन्हें सारी उम्र छिपकर रहना पड़ा**। यह एक विचारणीय प्रश्न है।

कहा जाता है कि नेताजी का नाम युद्ध अपराधियों में अंकित है और प्रकट होने पर उन्हें किसी करार के तहत इंगलैंड को सौंपना होगा।

साप्ताहिक पत्रिका 'रविवार' 22 जनवरी 1978 में प्रकाशित तारापद वसु के लेख का अवलोकन करें—

ब्रितानी सरकार ने पिछले साल, 'ब्रिटेन और भारत के सम्वैधानिक सम्बंध' का छठा खंड प्रकाशित किया... (जिसमें प्रकाशित एक पत्र)—

टॉप सीक्रेट — 28 जुलाई, 1945
प्रिय मूडी,

महामहिम ने अभी-अभी यह फरमाया है :

एस.सी. बोस का क्या किया जाए, इस पर हमें सोचना है। अगर जापानियों ने आत्म-समर्पण कर दिया, तो हम स्पष्टतः मांग करेंगे कि बोस हमें सुपुर्द कर दिये जाएं। पर उसके बाद क्या हमें उन पर भारत में ही मुकदमा चलाना चाहिए और

अगर हां, तो किस तरह की अदालत में ? उनके मुख्य सहयोगियों का सवाल है।
... वे बड़े युद्घापराधियों में एक हैं और उन्होंने भारत का जितना अहित किया है, उतना ही महामहिम की सरकार का भी !

आपका विश्वस्त
ई.एम. जैकिंस

उपरोक्त पत्र के जवाब में ब्रिटिश सरकार के तत्कालीन सदस्य फ्रांसिस मूडी ने 23 अगस्त 1945 को भारतीय वायसराय लार्ड वावेल के निजी सचिव इवान जैकिंस को एक पत्र लिखा था जो इस प्रकार है—

**प्रिय जैकिंस,**

**मैंने आपका यह प्रस्ताव नोट कर लिया है कि बोस को युद्ध अपराधी माना जाय। वह बंगाल के युवकों विशेषकर आतंकवादियों के लिये प्रेरणा-स्रोत हैं। अतः (1) उनको भारत वापस लाया जाए और युद्ध छेड़ने या शत्रु के एजेंट सम्बंधी अध्यादेश के अधीन मुकदमा उन पर चलाया जाए। (2) मुकदमा बर्मा या मलाया के न्यायालय में चलाया जाए। (3) अथवा भारत के बाहर सैनिक अदालत में मुकदमा चलाया जाए। (4) या भारत में ही उन्हें नजरबंद कर दिया जाए। (5) या ब्रिटिश क्षेत्र के सिसलेस द्वीप में अदालत में मुकदमा चलाकर फांसी लगा दी जाए और तब इसकी सूचना दी जाए। (6) या फिर वह जहां हैं वहीं छोड़ दिया जाए।...**

पत्र में आगे चलकर श्री मूडी (होम मेम्बर) ने सुझाव दिया कि बोस के साथ सलूक बाबत सर्वोत्तम मार्ग यही होगा कि... "वे जहां हैं उन्हें वहीं छोड़ दिया जाए और समर्पण या रिहाई की मांग न की जाए। क्योंकि किन्हीं खास स्थितियों में रूसियों द्वारा जरूर उनका स्वागत हो सकता है।"

लार्ड वावेल इस 'नोट' को एटली मंत्रिमंडल के सामने रखने के लिए खुद लेकर गये। इसे ब्रितानी सरकार ने विमान दुर्घटना की खबर के 67 दिन बाद अनुमोदित किया।

असल में ब्रितानी सरकार ने बाहर से ऐसी मुद्रा बनाये रखी मानो वह नेताजी को मृत मानती हो, पर अंदर-अंदर उसने जो नीति अख्तियार की वह थी कि 'बोस जहां हैं, उन्हें वहीं छोड़ देना है और समर्पण या रिहाई की मांग नहीं करना है।'

उपरोक्त बातों से साफ-साफ जाहिर होता है कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस अंग्रेजों के लिए **एक युद्ध अपराधी हैं और प्रकट होने पर आज भी इंग्लैंड उन्हें अंतर्राष्ट्रीय कानून के तहत गिरफ्तार करके सजा देगा।** जैसे कि हिटलर का 91 वर्षीय साथी रूडोल्फ हेस 42 साल से बर्लिन की एक खास जेल स्पैंडाउन में चार देशों—अमरीका, रूस, इंग्लैंड और फ्रांस की निगरानी में रखा गया है। इन चारों देशों को उसके मरने का इंतजार है। वैसे जेल में उसका ताबूत तैयार रखा है। और उसके मरने के बाद उसकी राख तक का सुराग नहीं मिलेगा और ठीक इसी तरह हिटलर के एक साथी 'आइखमैन' को इजरायल की गुप्तचर सेवा 'मोसाद' ने 25 वर्षों की लगातार खोज के बाद पकड़कर फांसी पर चढ़वा दिया। और तो और अभी दिसम्बर 86 में द्वितीय विश्व युद्ध के एक यूक्रेनियन युद्ध अपराधी को रूस में फांसी की सजा दी गयी।

तो क्या ऐसा कोई समझौता भारत सरकार का ब्रिटिश सरकार से है कि वह नेताजी के प्रकट होने पर उन्हें सौंपने पर मजबूर होगी ? लोगों का कहना है कि हां एक ऐसा गुप्त समझौता है जिसके बारे में भारत के अंतिम गवर्नर जनरल लार्ड माउंटबेटन के प्राइवेट सेक्रेटरी मिस्टर लियोनार्ड मोसले की पुस्तक 'लास्ट डेज़ ऑफ ब्रिटिश रूल इन इंडिया' की प्रस्तावना में लिखा है कि 15 अगस्त 1947 को जो समझौता या संधि कांग्रेस के नेताओं ने अंग्रेजों से सत्ता परिवर्तन के समय किया, उसकी जानकारी भारतीय जनता को सन् 2000 के बाद होगी।

लियोनार्ड मोसले ने लिखा है: Official documents dealing with the transfer of power in India will not be officially realeased untill 1999. और तभी शायद

भारत मजबूरन (?) कामनवेल्थ ऑफ नेशन का सदस्य है। देश में एक बहुत बड़ा वर्ग है जो केवल इतना जानता है कि नेताजी की मृत्यु की पुष्टि दो-दो जांच आयोग कर चुका है।

यह सही है कि इस सम्बंध में सन् 1956 में शाहनवाज़ (जो नेताजी के एक सहयोगी थे) की अध्यक्षता में एक जांच कमीशन फारमोसा भेजा गया था जिसमें नेताजी के बड़े भाई सुरेश चंद्र बोस भी शामिल थे। कमीशन घटना-स्थल फारमोसा न जाकर जापान से ही वापस लौट आया और उन लोगों के महत्वपूर्ण बयानों को दर्ज न करके कि नेताजी पूर्व निर्धारित योजना के तहत गायब हुए हैं, अधूरी सतही जांच द्वारा ही रिपोर्ट दे दी कि 18 अगस्त 1945 को नेताजी फारमोसा के निकट ताईहोकू में हुई विमान दुर्घटना में मारे गये। सुरेश चंद्र बोस ने इस रिपोर्ट पर हस्ताक्षर नहीं किये और इसे एकदम गलत बताया। उन्होंने अपनी एक अलग से रिपोर्ट दी, उसे सरकार ने अनसुनी कर दिया।

**ज्ञात रहे कि रिपोर्ट देने के पश्चात ही**

**राममवन में गुमनामी बाबा का सामान**

पत्रकार: अशोक टंडन

**मिस्टर शाहनवाज़ खां को केंद्रीय सरकार में उपमंत्री का दर्जा दे दिया गया।** लेकिन इस रिपोर्ट के बाद जब बंगाल, असम में 'नेताजी जीवित हैं' का आंदोलन चलने लगा और लोकसभा में भी यह मुद्दा जोरदार ढंग से उठा तो सरकार को मजबूर होकर 1970 में दूसरा खोसला आयोग बैठाना पड़ा। अर्थात् सरकार ने शाहनवाज़ कमीशन झूठा माना तभी तो दूसरा आयोग बैठाने पर राजी हुई। खैर, दूसरे आयोग के अध्यक्ष जी.डी. खोसला साहब पहली बार फारमोसा गये। साथ में तत्कालीन सांसद प्रो. समर गुहा भी थे। लेकिन वहां पर भी इस आयोग ने उन लोगों के बयान दर्ज नहीं किये, जो कहते थे कि उस दिन वहां कोई विमान दुर्घटना नहीं हुई। इस आयोग को अंतिम वायसराय लार्ड माउंटबेटन, राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन का बयान लेना था, लेकिन उसने नहीं लिया। यहां तक कि इस घटना के सबसे महत्वपूर्ण गवाह कर्नल हबीबुर्ररहमान का बयान भी नहीं लिया। इस आयोग पर भी तमाम आक्षेप होने लगे। अंततः श्री मोरारजी देसाई ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में लोकसभा में दिनांक 29.9.78 को घोषणा की कि प्रमाणों व दस्तावेजों के आधार पर नेताजी के जीवित होने की पुष्टि होती है, मरने की नहीं। अतः दोनों आयोगों की रिपोर्ट रद्द की जाती हैं। मगर श्री देसाई ने जाने क्यों यह कहकर कि अब कोई जांच लाभदायक नहीं होगी, आगे कोई भी आयोग बैठाने से इंकार कर दिया।

इन बातों को ध्यान से देखने पर यह सिद्ध होता है कि नेताजी की मृत्यु को लेकर उठा विवाद आज तक अंतिम रूप से तय नहीं हो पाया, बल्कि लोगों का कहना है कि समय-समय पर नेताजी के ज़िंदा होने तथा यत्र-तत्र होने की भी खबरें प्रकाशित होती रहीं, लेकिन कहीं भी कोई ठोस प्रमाण सामने नहीं आये और नेताजी के विषय में फैले सही व गलत दोनों तरह के दावों ने एक अजीब ऊहापोह की स्थिति पैदा कर दी। शायद यही कारण था कि जब फैजाबाद के गुमनामी बाबा के रूप में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के होने के समाचार प्रकाशित हुए तो सामान्य लोगों ने इसे भी संदेह की दृष्टि से देखा।

## तथ्य क्या कहते हैं ?

लेकिन वहां मिलने वाले तथ्यों को अगर गौर से देखा जाए तो ये सभी जगह से पूर्णतः भिन्न नज़र आते हैं। सबसे पहली बात कि गुमनामी बाबा के इर्द-गिर्द का दायरा काफी सीमित था और इस दायरे में घुसने की इजाजत मिलने के पहले किसी भी व्यक्ति को कड़ी परीक्षा, धैर्य-संयम तथा एक ऐसी शपथ से गुजरना पड़ता था कि कम ही लोग इसमें खरे उतर पाते थे। ऐसे दायरे को तोड़कर जो परिवार गुमनामी बाबा के सबसे करीब था—वह थे फैजाबाद शहर के मशहूर होम्योपैथ डॉ. टी.सी. बनर्जी। डॉ. बनर्जी के पूरे परिवार को भगवन जी के पास जाने की अनुमति थी। इस परिवार ने उनका चेहरा भी देखा था। इस घटना को स्व. डॉ. टी.सी. बनर्जी की पत्नी पुष्पा बनर्जी ने यूं बताया कि एक बार उन्होंने साहस करके बाबा से कहा कि उनके साथ यह भेदभाव क्यों बरता जाता है। कमरे में घुसने की इजाजत क्यों नहीं दी जाती। उन्हें इजाजत मिल गयी और वे पर्दे की आड़ से बात करने के बजाय उनके कमरे में प्रवेश कर गयीं।

'देखा ! क्या देखा ?' बाबा ने श्रीमती पुष्पा बनर्जी से फौरन यह सवाल किया। श्रीमती बनर्जी अपने शुरूआती दिनों में जब लखनऊ के चारबाग इलाके में रहती थीं तो उन्होंने कई बड़े नेताओं को देखा था। उन्होंने सीमांत गांधी, नेहरू, अबुल कलाम आजाद और खुद सुभाष चंद्र बोस को अतुल्य सेन के घर देखा था।

बाबा के उस सवाल का जबाव देने के बजाय श्रीमती बनर्जी ने कहा, "हमने देखा, जांचेंगे तो बतायेंगे।" वैसे श्रीमती बनर्जी बाबा की वास्तविकता के बारे में पूरी तरह आश्वस्त हो चुकी थीं।

**श्रीमती बनर्जी ने एक और बात बताई कि—"वह आ रहा है महाजीवन' नामक एक किताब है। प्रत्यक्षतः तो इस किताब के लेखक का नाम 'कालभैरव' है। लेकिन दरअसल यह किताब बाबा ने लिखी है। बाद में छपी हुई इस किताब की एक प्रति समर गुहा ने बाबा को भेजी थी।**

इस सवाल के जवाब में कि उन्हें 1975 में यह विश्वास कैसे हो गया कि बाबा सुभाष चंद्र बोस थे, श्रीमती बनर्जी ने जवाब दिया कि उन्होंने सबसे पहले नेताजी को 1933 में लखनऊ में ए.पी. सेन के घर पर देखा था। उस समय मेरी उम्र 11 साल की थी। वह अपने पिताजी के साथ श्री सेन के मकान से सटे हुए एक घर में फूल चुनने जाया करती थीं। उनके पिता मैसोपोटामिया से लौटे थे. दरअसल उन्होंने फौजमें फील्ड जॉब के बदले एकाउंट सर्विस में तबादला करा लिया था। फिर 1939 में मेरी नेताजी से मुलाकात हुई।

अपनी यादों के खजाने में जमा एक-एक घटना का हवाला देते हुए श्रीमती बनर्जी ने बताया कि एक बार उन्होंने बातचीत के दौरान बाबा से कहा कि मैं नेताजी से अंतिम बार 1938 में मिली थी। उन्होंने जानबूझ कर गलत वर्ष का उल्लेख किया था। बाबा ने फौरन उनकी गलती दुरूस्त की और कहा कि यह घटना 1938 की नहीं 1939 की है।

श्रीमती बनर्जी ने बताया कि वह ठीक वैसे ही लगते थे जैसी फोटो 23जनवरी 1979 को कलकत्ते से प्रकाशित बंगला दैनिक 'जुगांतर' में छपी थी। उन दिनों वह 'जुगांतर' अखबार खरीदा करती थीं।

इस फोटोग्राफ को तत्कालीन सांसद समर गुहा ने 22 जनवरी 1979 को प्रेस क्लब में आयोजित एक पत्रकार सम्मेलन में जारी किया था। उन्होंने यह दावा किया था कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस जीवित हैं और वह फोटोग्राफ इसका प्रमाण है। समर गुहा ने कहा था कि यह फोटो लगभग सालभर पहले भारत के एक प्राचीन मंदिर में खींची गयी थी और वह उनकी फोटो है। उन्होंने कहा कि नेताजी आज भी ज़िंदा हैं और योगाभ्यास और साधना कर रहे हैं। "हो सकता है दूसरों के मन में तो इस बात को लेकर संदेह की छाया भी नहीं है कि वह नेताजी नहीं थे।" यह कहते हुए श्रीमती बनर्जी की आवाज भरभरा गई और उनकी आंखों से आंसू छलक आये। उन्होंने वेदना मिश्रित आवाज में बताया कि बाबा ने एक बार उनसे कहा था कि 'मेरा नाम दुनिया के रजिस्टर से हटा दिया गया है।'

अंग्रेजी दैनिक 'नार्दन इंडिया पत्रिका' के पत्रकार वी.एन. अरोरा जब समर गुहा से इस विषय पर बात करने कलकत्ता गये तो **समर गुहा ने बड़े दुःखी मन से कहा कि इस फोटोग्राफ को लेकर जब नेताजी के भतीजे शिशिर ने यह कहा कि यह फोटोग्राफ असली नहीं है बल्कि यह शरीर उनके पिताजी का है तथा सिर के स्थान पर नेताजी की फोटो लगा दी गई है, तो वे इसको सिद्ध कर न सके, क्योंकि नेताजी उस समय प्रकट नहीं होना चाहते थे।**

(क्रमशः)

## फ़ैजाबाद के गुमनामी बाबा—2

□ गुमनामी बाबा के सामानों में प्राप्त नेताजी से सम्बंधित साहित्य तथा अन्य सामग्रियां काफी हद तक शंका में डालती हैं कि आखिर रामभवन के बाबा कौन थे? क्या यह सच है कि पाक-बांग्ला देश युद्ध के वक्त उस युद्ध का नेतृत्व फैजाबाद में बैठे-बैठे गुमनामी बाबा ने किया था और उन्हीं की रणनीति से मुक्तिवाहिनी ने लड़ाई जीती थी।

□ इन विवादास्पद प्रकरणों पर प्रकाश डाल रहे हैं पत्रकार अशोक टंडन अपनी इस दूसरी किस्त में!

# वे नेताजी नहीं थे तो कौन थे?

□अशोक टंडन

उ.प्र. के फैजाबाद के रामभवन में रह रहे एक गुमनामी बाबा को लावारिस घोषित करते हुए उनके सामानों की लिस्ट बनाने में पुलिस वालों ने लगातार तीन दिनों तक जो इवेंटरी बनायी—उसके प्रत्यक्ष गवाहानों सर्वश्री सत्यनारायण सिंह 'सत्य' एडवोकेट (अध्यक्ष बार एसोसियेसन, फैजाबाद), ओमप्रकाश मदान (प्रबंध निदेशक 'नये लोग' हिंदी दैनिक), वी.एन. अरोरा (प्रवक्ता एवं पत्रकार), मदन मोहन पंडित एडवोकेट, अनिल तिवारी एडवोकेट (नेता भाजपा), रामप्रकाश सिंह एडवोकेट (नेता जपा) ने एक लिखित बयान जारी किया कि—

"हम अधोहस्ताक्षरीकर्ता, जो कि रामभवन स्थित कथित गुमनामी बाबा उर्फ भगवन जी उर्फ स्वामी जी के निवास के दो कमरों में उपलब्ध सामानों, अभिलेखों, पुस्तकों, चित्रों तथा अन्य सभी सामग्रियों को पुलिस दल द्वारा सूचीबद्ध किये जाते समय प्रथमदृष्टया निरीक्षण करने से इस मत के हैं कि वे सभी वस्तुएं नेताजी सुभाषचंद्र बोस से सम्बंधित हो सकती हैं।

इसलिए इन परिस्थितियों में इस तथ्य पर स्पष्ट और अंतिम निर्णय, निष्कर्ष तथा घोषणा हेतु हम उच्चस्तरीय न्यायिक जांच की मांग करते हैं। सम्पूर्ण जांच एवं घोषणा तक हम ये भी मांग करते हैं कि सम्बंधित सामान यथावत् पूर्ण सुरक्षित रखा जाए।"

अब तक तो जिले में एक आंदोलन सा उठ खड़ा हो चुका था। शहर के प्रमुख बाजार चौक में सर्वदलीय सभाओं का आयोजन हुआ जिसमें भू.पू. नगर विधायक जयशंकर पांडेय, जपा नेता रामप्रकाश सिंह, भाजपा नेता अनिल तिवारी के अतिरिक्त मजदूर नेता शैलेंद्र त्रिपाठी, साकेत महाविद्यालय के प्रवक्तागण डॉ. स्वामीनाथ पांडेय, डॉ. सत्येंद्र त्रिपाठी, डॉ. गौरी शंकर तिवारी तथा युवा नेताओं राजेंद्र त्रिपाठी, रामदुलारे यादव, राजेंद्र प्रसाद सिंह, शिवकुमार आजाद, कृष्णकांत, कमलाशंकर पांडेय, वसुपति अग्रवाल आदि ने जनता के समक्ष सारे सबूतों को प्रदर्शित करते हुए जोरदार शब्दों में उच्चस्तरीय न्यायिक जांच की मांग की।

### धरना और जनसभाएं

रामप्रकाश सिंह अपने साथियों सहित रामभवन के समक्ष टेंट गाड़कर धरने पर जा बैठे। अयोध्या में मशाल जुलूस निकला और सभाएं होने लगीं। भू.पू. सांसद तथा जनता पार्टी के अखिल भारतीय महामंत्री श्री अनंतराम जायसवाल ने भी इस मुद्दे को अपनी जनसभाओं व प्रेस कांफ्रेंसों में उठाना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा कि अगर सरकार जल्दी ही इस विषय पर जांच नहीं बैठाती है तो
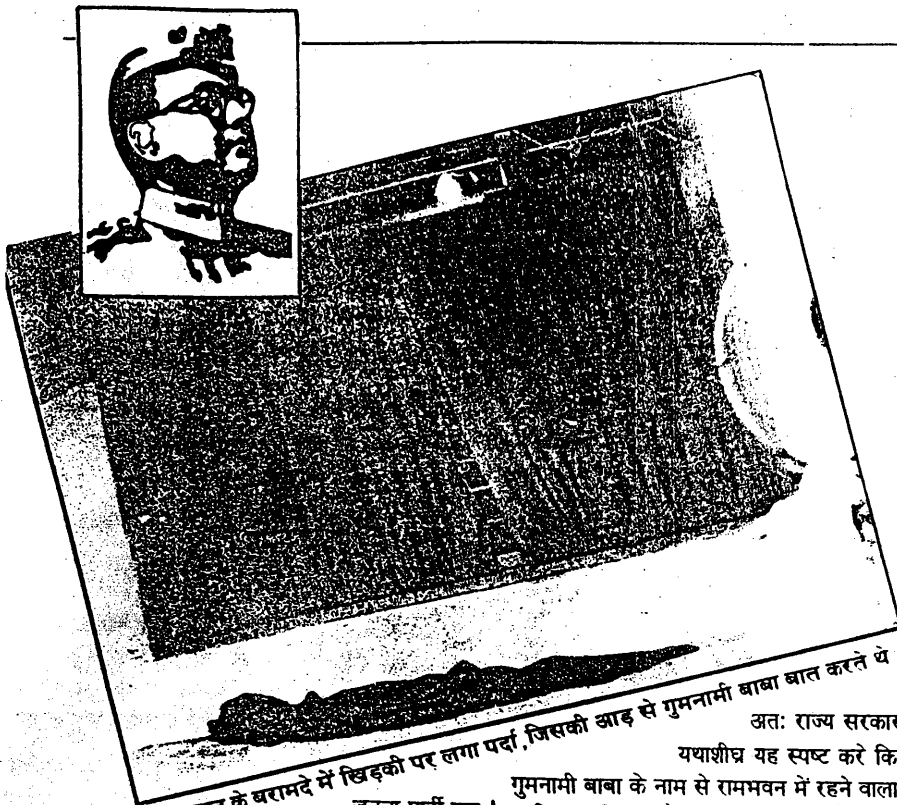
रामभवन के बरामदे में खिड़की पर लगा पर्दा, जिसकी आड़ से गुमनामी बाबा बात करते थे

जनता पार्टी इस मामले को न केवल विधान सभा व लोक सभा में उठाएगी बल्कि 'जनता की अदालत' में भी ले जाएगी।

अब तो देश-प्रदेश के कई समाचार पत्रों व पत्रिकाओं ने भी इस प्रकरण को अपने-अपने तरीके से छापना शुरू कर दिया था कि तभी यह मामला उ.प्र. की विधान परिषद में उठा। उठाया इसे गोरखपुर के प्रखर विधायक कृष्णपाल सिंह ने।

25 फरवरी 1985 को श्री कृष्णपाल सिंह ने विधान परिषद में कहा कि ''मान्यवर, जहां एक ओर झूठी अटकलें या अफवाहें फैलाने वालों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करने तथा किसी भी अफवाह का तत्काल स्पष्टीकरण देकर लोगों को गुमराह होने से बचाने का संकल्प हमारी सरकार सदैव दुहराती आयी है, वहीं 16 सितम्बर 1985 को फैजाबाद के रामभवन में एक वयोवृद्ध गुमनामी बाबा की मृत्यु को लेकर न केवल फैजाबाद जनपद व इस प्रदेश में वरन् पूरे देश की पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से यह खबर फैलाने का प्रयास किया गया कि गुमनामी बाबा कोई अन्य व्यक्ति न होकर स्वयं सुभाषचंद्र बोस थे।... किंतु उ.प्र. शासन आज भी इस विषय पर चुप्पी साधे हुआ है जो स्वयं में ही इन अटकलों को और महत्वपूर्ण बना देता है। अतः राज्य सरकार यथाशीघ्र यह स्पष्ट करे कि गुमनामी बाबा के नाम से रामभवन में रहने वाला व्यक्ति आखिर कौन था।'' (विधान परिषद कार्यवाही प्रपत्र पृष्ठ 31 व 32)।

दूसरे सदस्य श्री नित्यानंद स्वामी ने कहा कि—'गुमनामी बाबा की मृत्यु के बाद जो तथ्य सामने आ रहे हैं तथा जो सामग्री, पुस्तकें व पत्राचार प्राप्त हुए हैं, उनसे यह भ्रम पैदा होता जा रहा है कि वे नेताजी सुभाषचंद्र बोस हैं।'

और तो और इंका के प्रमुख विधायक श्री जगदम्बिका पाल तक ने कहा कि—'यह स्पष्ट है कि वह सुभाषचंद्र बोस नहीं थे, लेकिन जो दस्तावेज प्राप्त हुए हैं, जो लावारिस सामग्री प्राप्त हुई है, उसकी जांच होनी चाहिए। जो उपलब्ध सामग्री है उससे नेताजी सुभाषचंद्र बोस या आजादी के मामले पर रोशनी पड़ सकती है।' ज्ञातव्य है कि श्री पाल बस्ती जिले से विधायक हैं और जहां गुमनामी बाबा लगभग 7–8 वर्षों तक रहे हैं।

सदस्यों की इतनी उत्सुकता पर विधान परिषद के सभापति महोदय की भी जिज्ञासा जाग उठी और उन्होंने सरकार से पूछा कि 'यह तो सारे देश और प्रदेश के लोगों की जिज्ञासा है। हम लोगों की भी जिज्ञासा है कि वह रहस्यमय व्यक्ति कौन था ? प्रश्न यह उठता है कि आखिर वह गुमनाम बाबा कौन था जो इतने रहस्यमय ढंग से रह रहा था ?'

और सरकार की ओर से इसका जवाब प्रदेश के राजस्व मंत्री श्री बलदेव सिंह आर्य ने यूं दिया—''मान्यवर, हमारे देश में साधु-संन्यासियों की कमी नहीं है। जितने भी तीर्थस्थान हैं सभी जगहों पर ये साधु-संन्यासी मिलते हैं। यह गुमनामी बाबा पहले नैमिष में रहे, उनके शिष्य भी थे, उनके शिष्य उनके चेहरे को जानते थे। उनके शिष्यों ने कहा है कि ये सुभाष बाबू नहीं हैं। इसके अलावा सरकार ने कलकत्ते की बस्तियों में, जहां ये रहे एवं अयोध्या में भी जांच की, सभी जगह मालूम हुआ कि ये सुभाष बाबू नहीं हैं।''

## जांच रिपोर्ट का सार्वजनिक प्रकाशन क्यों नहीं हुआ ?

मंत्री महोदय द्वारा बड़ी मासूमियत से दिये गये इस जवाब पर जब **सदस्यों ने मांग की कि कम से कम सरकार जांच रिपोर्ट को तो सदन पटल पर रख दे। लेकिन सरकार ने ऐसी कोई रिपोर्ट न तो सदन पटल पर रखी और न ही सार्वजनिक रूप से प्रकाशित ही की।** लेकिन सदन की उपरोक्त कार्रवाई से यह तो **सिद्ध होता ही है कि सरकार** ने इस मामले की गम्भीरता को समझा और विधिवत् गुप्त जांच भी करायी। मामला गम्भीर न होता तो फैजाबाद के पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री अजय राज शर्मा पत्रकारों से यह क्यों कहते कि **'बरामद होने वाले अभिलेखों से स्पष्ट होता है कि रामभवन में रहने वाला व्यक्ति राष्ट्र के प्रति काफी सम्मान रखता था और राजनैतिक दृष्टि से काफी जागरूक भी था। उन्होंने कहा कि सामानों में मिले नेताजी से सम्बंधित फोटो एलबम एवं नेताजी से सम्बंधित साहित्य एवं अन्य सामग्रियां काफी हद तक शंका में डालने वाली हैं कि रामभवन के बाबा कौन थे।**

उन्होंने आगे कहा कि गुमनामी बाबा की शिनाख्त होनी चाहिए। इसके लिए उनकी हस्तलिपि का नेताजी की हस्तलिपि से मिलान किये जाने के साथ ही नजदीक एवं दूरदराज स्थित हर उस सूत्र से सम्पर्क किया जाना भी जरूरी है जिसका जरा भी सम्बंध गुमनामी बाबा से होने का संकेत मिला है। उन्होंने आश्वस्त किया कि सम्पूर्ण मामले की व्यापक जांच होगी। वैसे अब तक जो जांच रिपोर्ट कुछ एजेंसी वाले ले चुके हैं फिर भी मामला गम्भीर एवं रहस्यपूर्ण होने के नाते यह कार्य लम्बा खिंच सकता है।'

पुलिस के इस उच्चाधिकारी के बयान से साफ झलकता है कि प्रशासन भी इस मामले को

गम्भीरता को समझ रहा था। तो क्या हस्तलिपियों का मिलान कराया गया ? उनके निकट सूत्रों से जानकारी प्राप्त की गयी ? सामान को सुरक्षित रखने का कोई उपाय हुआ ?

हुआ, काफी कुछ हुआ। देश-प्रदेश की कई गुप्तचर एजेंसियों ने फैजाबाद में आकर डेरा डाला, खोजबीन की। पुलिस दल कलकत्ता, नैमिष और बस्ती जिले में गया, जहां पेस्तर में गुमनामी बाबा रहे। 28 अक्टूबर, 85 को 'नये लोग' दैनिक में खबर छपने के एक दिन पूर्व ही कोतवाली पुलिस श्रीमती सरस्वती शुक्ला व उनके पुत्र राजकुमार शुक्ला को रात में रामभवन से पकड़कर कोतवाली ले गयी और काफी पूछताछ की। डॉ आर.पी. मिश्रा व उनकी पत्नी से पुलिस ने कई-कई दिन तक पूछताछ जारी रखी। डॉ. पी. बनर्जी को भी पुलिस उप-महानिरीक्षक ने बुलाकर पूछा। एक पुलिस दल कलकत्ता गया, जहां उसने आज़ाद हिंद फौज के गुप्तचर अधिकारी डॉ. पवित्र मोहन राय से लम्बी पूछताछ की। दूसरा दल बस्ती जा पहुंचा दुर्गा प्रसाद वकील से पूछताछ करने।

## वह रहस्य क्या है ?

"आप जो जानना चाहते हैं, अगर बता दूंगा तो पूरे मुल्क में आग लग जाएगी। जाओ एस.पी. और कलेक्टर से कह दो कि मामले को शांत करें। मैं इस विषय पर एक शब्द नहीं बोलूंगा, वचनबद्ध हूं।" खरा-सा जवाब दे दिया दुर्गा प्रसाद पांडेय ने पुलिस को।

**आखिर वह कौन सा रहस्य है जिसे दुर्गा प्रसाद नहीं खोलना चाहते और क्यों ? यह बात हर कोई जानना चाहता था। इस बात का जवाब मिलता है हमें उनके एक पत्र से—जिसे आज से 20 वर्ष पूर्व उन्होंने गुमनामी बाबा को लिखा था। 10 फरवरी 1967 को लिखा गया यह पत्र रामभवन में मौजूद है।** 'ग्रेट भगवन जी, जयहिंद !' के सम्बोधन से लिखे गये इस पत्र में दुर्गा प्रसाद लिखते हैं कि 'बस्ती के एक वृद्ध एवं धार्मिक प्रवृत्ति के भू.पू. सरकारी अधिकारी स्व. श्री ज्वाला प्रसाद मिश्र वकील ने अपने जीवन के अंतिम क्षणों में, मुझे अपने पूर्ण विश्वास में लेते हुए आपकी वास्तविकता इस शर्त के साथ बतायी थी कि मैं इस अति महत्वपूर्ण रहस्य की गोपनीयता को सदैव बरकरार रखूंगा।' वे आगे क्या लिखते हैं देखिये ज़रा—'सत्य को दबाया नहीं जा सकता, यह स्वतः स्फुटित हो जाता है। आप एक भू.पू. आई.सी.एस. हैं, जो प्रकांड विद्वता एवं धार्मिक विचारधारा के साथ ही साथ अंग्रेजी भाषा के ऊपर असाधारण रूप से सुंदर और कलात्मक लिपि के साथ अधिकार रखते हैं।'

▲ रामभवन में गुमनामी बाबा का नक्शा व [illegible]

"Truth can not be pressed in, it abruptly comes out, you had been ex–I.C.S. of whose profound scholar-ship deep deep religious thinking and for reaching commond over english marked with an enormously beautiful and elegent handwriting."

यही नहीं वे आगे और भी खुलकर स्पष्ट संकेत करने लगते हैं कि—'राष्ट्र का सर्वाधिक पवित्र दिन—23 जनवरी—जिस दिन इस भारत भूमि पर अमर जयघोष 'जयहिंद' का नारा गूंजा था—वह दिन यहां आपके जन्मदिन के रूप में मनाया गया।'

"Jan. 23 was celebrated as your birthday here; the most auspicious day of the country when the immortal words of 'Jai Hind' resounded through and through all flora and founa on the Indian soil."

इसी तरह अपने 26 फरवरी 1967 के दूसरे पत्र में वे लिखते हैं कि आप हमारे राष्ट्र की सम्पत्ति हैं—'You are the wealth of nation...' और अंत में वे कसम खाते हैं कि मैं आजीवन इस रहस्य को गुप्त ही रखूंगा।

"I pledge to keep the secret as long as I am in the world." वे फिर कहते हैं कि मुझे वह दिन, वह वाणी आज भी याद है जब मैंने लखनऊ के गंगा प्रसाद मेमोरियल हॉल में महाअभियान के समय आपका भाषण सुना था। यही नहीं मैंने अपने जीवन के एकमात्र लक्ष्य को पूरा करने के लिए पिछले दस वर्षों में दो बार हिमालय तथा कलकत्ता की तरफ आपको ढूंढ़ने का प्रयास किया—आप तो नहीं मिले लेकिन आपके मौजूद होने की 'आशा' बनती गयी और अब, जब आप यहां स्वयं मौजूद हैं तो मेरी आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि किसी भी तरह मुझे उस अस्तित्व का आभास करा दें, वर्ना तब तक मैं आपके दरवाजे पर अपना सिर पटकता रहूंगा।'

लगता है बड़ी विकट समस्या आ खड़ी हो गयी गुमनामी बाबा के सामने ! वे किसी से मिलते नहीं थे और खासकर ऐसे व्यक्ति से तो और भी दूर रहना चाहते थे, जो उनकी वास्तविकता जानना चाह रहा हो। लेकिन दुर्गा प्रसाद की दृढ़ निश्चयता के समक्ष उन्हें झुकना पड़ा, उन्होंने दूसरे की हस्तलिपि में उन्हें एक पत्र लिखवाया—'**इस बूढ़े यायावर के लिए आपकी भावना और चिंता ने मेरे अंतर्मन को छुआ है। साथ ही मैं** आपकी सदविनतो का भी बड़ा आभारी हूं। वास्तव में मैं एक दशनामी संन्यासी

...presence, it abruptly comes out. ... had been an ex. I.C.S. of whose profound scholarship ... deep religious thinking and far reaching ... English, marked with an unanimously beautiful and ... hand-writing at this stage, no tongue is silent ... your birth-day here, the ... January 23, was celebrated as ... auspicious day of the country when the immortal ... "Jai Hind", resounded through and through all ... on the Indian-soil ... and found ...

दुर्गा प्रसाद पांडेय के पत्र के एक अंश की फोटोस्टेट

I am a bonafide दशनामी संन्यासी; and you will know, that, a man under the Holy Orders incurs civil death according to the civil Laws and a संन्यासी is dead to his former life; it is in the keeping of Divine Mother Durga and Father Lord Shiva.

दुर्गा प्रसाद को गुमनामी बाबा द्वारा लिखवाये गये एक पत्रांश की फोटोस्टेट

ये पत्र रामभवन के सामानों में मौजूद हैं

**हूं, और आप भली प्रकार जानते हैं कि सामाजिक दृष्टि से एक संन्यासी को सामाजिक मृत्यु का वरण कर लेना पड़ता है और वह अपने पूर्व जीवन को मृत मान लेता है।'**

"I am a bonafide दशनामी संन्यासी, and you well know that a man under the Holy orders incurs civil death according to the civil Laws and a संन्यासी is dead to his former life."

लेकिन फिर वे एक पत्र में अपने बारे में लिखते हैं कि **मैं एक दीन-हीन फकीर हूं। तुम्हारी भावनाओं को समझ रहा हूं, लेकिन उससे अब क्या फायदा। वैसे मेरे जैसा एक दीन फकीर अपनी 'मां' (मातृभूमि) से कहां अलग रह सकता है। यह महान 'मां' ही तो है जो एक साथ हमारी सृजनकर्त्ता और संहारक है। यही सब कुछ देती है और वापस भी ले लेती है। यह बना-बिगाड़कर पुनः बनाती है।'** दूसरे की हस्तलिपि में लिखाये गये इन पत्रों को कई स्थानों पर सुधारा भी गया है जो सम्भवतः उन्हीं की हस्तलिपि में है। पत्र में कई जगह बंगला लिपि का भी प्रयोग है। चार-चार पृष्ठों के इन दोनों पत्रों में से एक के अंत में वे बहुत ही सारगर्भित शब्दों में लिखते हैं कि 'तुमको अपने सभी अनुमानित प्रश्नों, विचारों, कामनाओं, इच्छाओं, प्रार्थनाओं एवं आकांक्षाओं, दोनों—जो तुम्हारे पत्रों में प्रदर्शित हैं तथा वे जो तुम्हारे हृदय में बाकी बची हैं—का विश्वसनीय उत्तर प्राप्त हो जाएगा।'

"You shall find cogent answers to all your hypotheses, queries, thoughts, professions, wishes, desires, prayers and aspirations; both as expressed in your letters, and, which remain unexpressed in your heart."

लेकिन कैसे प्राप्त हो जाएगा? इसके लिए वे आगे स्वयं लिखते हैं कि—'शांतिपूर्वक प्रेम से एकाग्रचित्त हो, ध्यान से अध्ययन करने पर तुम्हें लगेगा कि मेरे प्रत्येक शब्द और वाक्य तुम्हारे लिए दिशा-निर्देशक हैं। ये सभी सम्भावनाओं से गर्भित हैं—तुमने खोजा तो अवश्य पाओगे।'

"Persue with your heart, calmly, quitly, lovingly.

Every word, phrase, sentence and their constritions are pointers for you : They are Pregnant with possibilities."

"Seek and thou shall find."

और दुर्गा प्रसाद पांडेय ने उन्हें खोजा भी था और पाया भी! एक दिन नेताजी सुभाषचंद्र बोस के परिवार के कुछ सदस्यों के समक्ष फैजाबाद में उन्होंने काफी कुछ बातें बतायीं। उन्होंने बताया कि जब नेताजी की मृत्यु के प्रश्न पर खोसला आयोग जांच कर रहा था तो उस समय उसके गवाहों के जवाब-सवाल सब यही बस्ती में तैयार किये जाते थे। कलकत्ते से आने वाले कुछ खास बंगाली घंटों बैठकर वह सब कुछ नोट किया करते थे जो भगवन जी बोलते थे। उन्होंने बताया कि कई-कई दिनों तक काफी बंगाली आकर यहां रुकते थे। **रहस्य की पर्तों को उधेड़ते हुए उन्होंने बताया कि जब पाक-बांगला देश युद्ध चल रहा था तो उस युद्ध का नेतृत्व भगवन जी यहीं बैठकर कर रहे थे। उनके द्वारा बतायी गयी रणनीति पर ही मुक्ति-वाहिनी ने यह संग्राम जीता।** पांडेय जी ने बताया कि युद्ध के समय भगवन जी अक्सर जिन युद्ध परिस्थितियों का जिक्र करते—ठीक एक दो दिन बाद उन्हीं युद्धक परिस्थितियों की खबर रेडियो से सुनाई देती। वे यहां से बैठकर मुझ

बताया करते कि देखो अब मुक्तिवाहिनी को फलानी जगह होना चाहिए—या अब मुक्तिवाहिनी वालों को यह करना चाहिए। ठीक उसके दूसरे या तीसरे दिन वैसी ही खबर रेडियो पर या अखबारों में आ जाती। उन्होंने तो यहां तक कहा कि भगवन जी भेष बदलकर कई बार युद्ध के मोर्चे पर भी गये थे। दुर्गा प्रसाद ने कहा कि मेरे पास बहुत ही विस्मयकारी जानकारियां हैं लेकिन उन्हें इस तरह कहना बेकार है। **लेकिन वे एक बात पर राजी हैं कि अगर वास्तव में कोई उच्चस्तरीय न्यायिक जांच होती है तो वे अपना मुंह खोलने की सोच सकते हैं।**

यह संयोग ही कहा जाएगा कि जब मैं इन बातों का जिक्र प्रख्यात साहित्यकार एवं पत्रकार श्री कमलेश्वर जी के समक्ष कर रहा था, तो मुझे लगा कि कमलेश्वर जी एकाएक कहीं खो से गये हैं। तंद्रा टूटने पर उन्होंने बताया कि बांग्ला देश युद्ध के समय में भी काफी दिन मोर्चे पर रहा हूं। मेरा सम्पर्क अपनी बी.एस.एफ. सेना के साथ-साथ बांग्ला देश की मुक्तिवाहिनी के साथ भी था। मैं दिन में अक्सर बांग्ला देश की सीमा में घुस जाता और रात को अपने खेमे पर लौट आता। उन्होंने बताया कि मुक्तिवाहिनी की रणनीति कौशल को देखकर अक्सर ताज्जुब होता कि बिना किसी संगठित क्षमता व नेतृत्व के ये लोग किस तरह पाक सेना के छक्के छुड़ा रहे हैं। तभी मुझे एक दिन बी.एस.एफ. के कर्नल सेन ने बताया कि इस मुक्तिवाहिनी को एक अति महत्वपूर्ण व्यक्ति से पूरी गाइडेंस मिलती है, लेकिन वह व्यक्ति कौन है, जिसे बांग्ला देश की इतनी भौगोलिक व रणनीतिक जानकारी है—यह बात कोई आज तक नहीं जान सका।

## अखंड भारत का सपना

गुमनामी बाबा के ही शिष्यों ने मुझे यह भी बताया था कि भगवन जी की **इच्छानुसार मुजीबुर्रहमान बांग्ला देश का भारत में विलय करने को तैयार हो गये थे। अगर मुजीबुर्रहमान की हत्या न हुई होती तो शायद भगवन जी का अखंड भारत का सपना पूरा हो जाता।** इस बात को याद करके मैं तब चौंक पड़ा था जब मैंने रामभवन में मौजूद श्री आशुतोष काली के पत्र में पढ़ा कि "आप त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती 'महाराज' के सम्बन्ध में जानते हैं कि वे पूर्वी पाकिस्तान में हैं। वहां पर काम का अवसर भी नहीं है। और स्वास्थ्य भी ठीक नहीं है। इसलिए वह भारत आकर रहने पर राजी हो गये थे परंतु आपका समाचार सुनने पर और विशेष रूप से आपके अखंड भारत के स्वप्न और साधना की बात जानकर उन्होंने पूर्वी पाकिस्तान में ही रहकर काम करने की इच्छा व्यक्त की है। वे इस समय आपके निर्देश की प्रतीक्षा में हैं।" अब यह पता लगाना चाहिए कि ये आशुतोष काली तथा त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती महाराज कौन हैं तथा क्यों इस तरह का पत्र गुमनाबी बाबा को लिख रहे हैं?
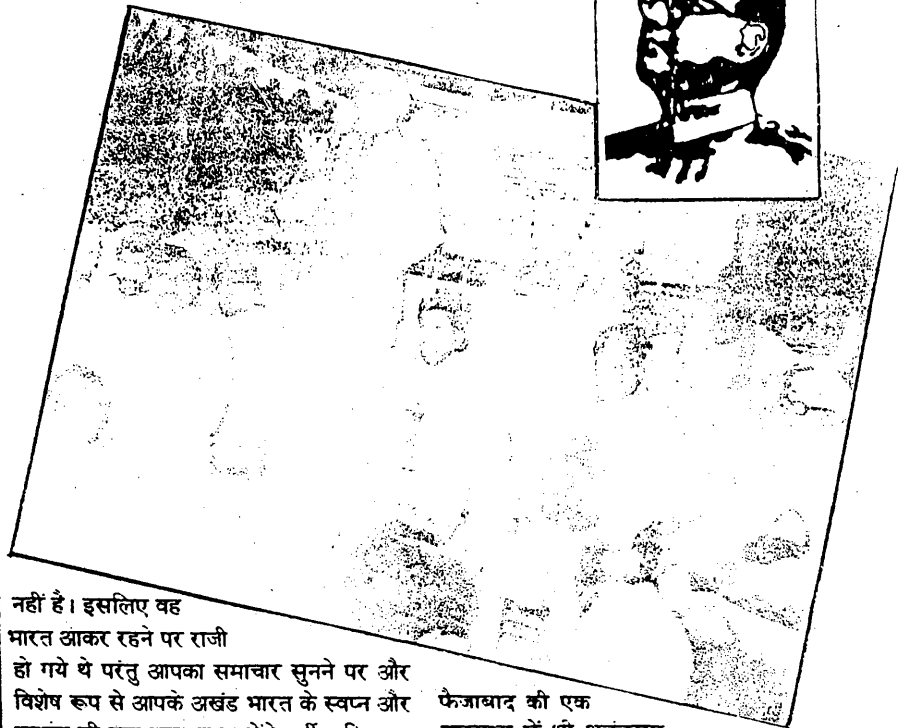
ज्ञातव्य है कि रामभवन में जहां पर बांग्ला देश संविधान (संशोधित 1977) की प्रमाणीकृत प्रतिलिपि, बांग्ला देश के 'एनमी लॉ' (शत्रु कानून) तथा अन्य संवैधानिक कानूनों तथा ढाका के मणींद्र नाथ के जिक्र वाले पत्र, बांग्ला देश के राष्ट्रपति जियाउर्रहमान की हत्या से सम्बन्धित 1981 के अखबारों की सात कतरनें मिलीं, वहीं पर जी.डी. खोसला कमीशन में 1977 में श्री द्विजेंद्र नाथ बोस द्वारा दिये गये बयान की प्रतियां भी। गवाहों के जवाब-सवाल की प्रति भी वहां पर मौजूद है।

## निर्णायक बिंदु पर पहुंचने के लिए

इस खोजयात्रा के बहुत से सबूतों व तथ्यों से मेल खाते तथ्य व घटनाएं पूरे देश में बिखरी पड़ी होंगी। हमारे द्वारा उन्हें जोड़ पाने की एक सीमा है। हम यहां के तथ्य, सबूत, कागजात, पत्र, आदतें व घटनाएं जो हमारे सामने से गुजरी हैं, उन्हें बताते चल रहे हैं। जिज्ञासु एवं सजग पाठकों से अनुरोध है कि वे मेल खाते तथ्यों को सतर्क निगाह से परखें तथा हमें भी सूचित करते चलें ताकि हमलोग शीघ्र ही किसी निर्णायक बिंदु पर पहुंच सकें।

फैजाबाद की एक जनसभा में श्री अनंतराम जायसवाल गुमनामी बाबा प्रकरण की न्यायिक जांच की मांग करते हुए

आइए एक बार फिर बस्ती चलते हैं। वैसे गुमनामी बाबा उर्फ भगवन जी का बस्ती आने का किस्सा कुछ यूं रहा कि श्री महादेव प्रसाद मिश्र थाना रुधौली ग्राम मिश्रोलिया के निवासी थे। श्री मिश्र संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे। इनका सम्बन्ध नेपाल राजघराने से भी था। इनके द्वारा नेपाल में कई संस्कृत पाठशालाएं चलायीं जाती रहीं। भगवन जी का सम्बंध श्री मिश्र से 'राज नेपाल' के माध्यम से ही हुआ। श्री मिश्र की लड़की सरस्वती शुक्ला का विवाह मेंहदावल ग्राम एकला शुक्ल निवासी स्व. श्री रामचरित्र शुक्ल के साथ हुआ था। पति की मृत्यु के बाद श्रीमती सरस्वती शुक्ला भी अपने पुत्र और पिता के साथ नेपाल में रहा करती थीं।

सन 1963–64 में अपने कुछ चकबंदी के मुकदमों के कारण श्रीमती सरस्वती शुक्ला को

You shall find cogent answers to all your hypotheses, queries, thoughts, wishes, desires, prayers and aspirations, professions, both as expressed in your letters, and which remain unexpressed in your heart. Peruse with your heart; calmly quietly lovingly. Every word, phrase, sentence and their constructions are pointers for you: they are pregnant with possibilities. "Seek and thou shall find"

गुमनामी बाबा द्वारा लिखवाये गये पत्रांश की फोटोस्टेट

बस्ती आना पड़ा।

उनके साथ उनके पुत्र, पिता तथा गुमनामी बाबा भी आ गये। सर्वप्रथम ये लोग बस्ती नगर के पठानटोला मोहल्ले में स्थित नयल किशोर श्रीवास्तव के मकान में रहे। फिर बस्ती राजभवन के ठीक सामने स्थित एक मकान में आ गये, जिसका अगला हिस्सा पक्का और पिछला हिस्सा खपरैल का था। यह मकान राजा बस्ती का था। इस मकान में भी कुछ इस तरह के परिवर्तन किये गये, जिससे स्वामी जी की गोपनीयता न भंग हो।

बस्ती के राजा श्री ओंकार सिंह का कहना है कि बाबा के पास अक्सर बाहर के लोग आया-जाया करते थे, जिनमें बंगालियों की संख्या अधिक होती थी। **तत्कालीन जिलाधिकारी श्री आर.के. भार्गव ने एक बार बाबा की जांच करनी चाही, लेकिन फिर न जाने किन कारणों से मौन साध गये।** बस्ती के ही श्री श्यामलाल का कहना था कि 'स्वामी जी के यहां अधिकतर बंगाली आते थे और कभी-कभार विदेशी भी। वे हमेशा पर्दे के पीछे से ही बात करते थे। उनकी आवाज़ बेहद गम्भीर और बुलंद थी। उनके यहां 23 जनवरी को सुभाष जयंती मनायी जाती थी। 15 अगस्त व 26 जनवरी को झंडा भी फहराया जाता था।

उस मोहल्ले के पोस्टमैन के अनुसार उनके पास नित्य भारत के कोने-कोने से डाक व पार्सल आया करते थे। **ज्यादातर डाक बंगाल से आती थी। विशेषकर 23 जनवरी को टेलिग्राम अधिक संख्या में आते थे।**

बस्ती के सक्सेरिया इंटर कॉलेज के अर्थशास्त्र के प्रवक्ता डॉ. प्रेमप्रकाश श्रीवास्तव ने बताया कि उस समय मैं बस्ती नगरपालिका में उपाध्यक्ष था। एक बार मुझे उसी मोहल्ले में एक मकान के नक्शे के विवाद के सम्बंध में जाना पड़ा। उस समय पुरानी बस्ती क्षेत्र के स्वास्थ्य निरीक्षक जगदीश प्रसाद त्रिपाठी थे। उस दिन श्री त्रिपाठी ने मुझे बताया कि वह देखो उस मकान में सुभाष बाबू रहते हैं। मुझे सुनकर उत्सुकता हुई, इसलिये त्रिपाठी जी के साथ मैं उनके मकान पर गया। बाहर एक बूढ़ा बंगाली बैठा था, जो त्रिपाठी को पहचानता था। त्रिपाठी ने मेरे बारे में उस व्यक्ति को बताया, उसने भीतर जाकर प्रसाद के रूप में मिठाई लाकर मुझे दिया। साधारणतया वह किसी को यहां रुकने नहीं देता था। त्रिपाठी जी के ही माध्यम से लगभग एक माह के प्रयास के बाद मुझे यह अवसर मिल सका कि मैं भीतर जा सकूं। कमरे में पर्दे के पीछे रहते हुए उन्होंने मुझसे कुछ मिनट तक धर्म की बातें कीं। **मेरा उद्देश्य केवल उनकी बातों को सुनना था। उनकी आवाज, बोलने के ढंग से मुझे पूरा विश्वास हो गया कि वे ही सुभाष बाबू हैं।**

डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ होने के पूर्व फारवर्ड ब्लॉक की स्थापना के अवसर पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस बस्ती आये थे और सक्सेरिया कॉलेज के प्रधानाचार्य स्व. विजयनाथ चक्रवर्ती के यहां ठहरे थे। वहीं सुभाष बाबू हम लोगों को बुलाकर देश की गुलामी तथा स्वतंत्रता प्राप्त करने के बारे में बताते थे। ऐसे कई अवसर मिलने के कारण मैं उनकी भाषा, बोलने के ढंग तथा विभिन्न हिंदी शब्दों के उच्चारण से परिचित था। और जब पुरानी बस्ती में स्वामी जी की बोली सुनी तो तुरंत पहचान गया कि वे ही सुभाष बाबू हैं। फिर मैं बहुधा आने-जाने लगा।

डॉ. प्रेमप्रकाश वरिष्ठ पत्रकार भी हैं। उन्होंने एक बार वाराणसी के दैनिक समाचार पत्र 'आज' में बाबा जी के नेताजी सुभाषचंद्र बोस होने की एक खबर छापी थी। जिसे पढ़कर तत्कालीन जिलाधिकारी श्री टी.के. चारलू भी उन्हें देखने व जांचने गये थे। लेकिन न जाने बाबा से क्या संकेत पाकर वे चुप्पी लगा गये। डॉ. श्रीवास्तव के अनुसार समाचार प्रकाशन से बाबा बेहद नाराज़ भी हुए थे।

ऐसा नहीं था कि बस्ती शहर में केवल कुछ खास लोगों को ही इस तरह का शक हुआ हो, बल्कि समाज के दूसरे वर्गों में भी जिज्ञासाएं पैदा हुईं। रामभवन में किसी मुस्लिम व्यक्ति द्वारा एक वकील साहब के माध्यम से गुमनामी बाबा के बारे में 12 पृष्ठों का एक पत्र मिला है। जिसमें लिखा है कि "आप शायद जानते ही हैं और सारी 'बस्ती' वाले जानते हैं, लखनऊ से हुजूर आई.जी. साहब बहादुर सपरिवार रात 12-1 बजे गुप्त रूप से भगवन जी से मिलने आते थे, साहब कलेक्टर साहब बहादुर का हर दूसरी रोज़ 12 बजे रात चौराहा में कार खड़ी करके गुप्त रूप से चारों तरफ देखना और मिलना हमलोग रोज़ देखते थे।"

यहां तक नहीं—अब्दुल हफीज़ साहब शहज़ादा कुटी, मुरदा अलाशाह मुहल्ला सरैया, मोहम्मदी उ.प्र. द्वारा प्रेषित एक और पत्र जो रामभवन में मौजूद है, ज़रा उसका मुलाहिज़ा फरमाइए। उसमें लिखा है कि "प्रिय श्री गुप्त जी, मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आपकी मनोकामना पूरी हो और जिस देश के सिद्धांत के कारण अपना जीवन जलाकर कोयला कर दिया है... मैं भलीभांति समझता हूं कि आप कौन हैं? क्या हैं? क्या थे? और क्या हुए?... अब बिना आपके संसार को कोई सुख प्राप्त नहीं हो सकता है...इसलिए संसार की ज्वाला को बुझाएं और जल्द से जल्द अपने रूप को बदलकर असली रूप धारण कीजिए।"

और दूसरी ओर, फैज़ाबाद में रामभवन में मौजूद गुमनामी बाबा के सामान को लावारिस करार देकर पुलिस उसे नीलाम करने की योजना बनाने लगी कि तभी नेताजी की भतीजी ललिता बोस फैज़ाबाद आ पहुंची। (क्रमशः)

फ़ैज़ाबाद के गुमनामी बाबा—3

'गंगा' के पिछले अंक में आपने पढ़ा कि किस तरह उ.प्र. सरकार ने गुमनामी बाबा को मात्र एक साधू-संन्यासी करार देकर इस प्रकरण पर पर्दा डालने की कोशिश की। एक मंत्री ने यह भी कहा कि गुमनामी बाबा इसके पूर्व नैमिष में भी रह चुके हैं, जिसकी जांच सरकार ने करायी है; और ये सुभाष बाबू नहीं हैं। ... तो ठीक है, आइए अब नैमिष चलकर देखा जाए वहां गुमनामी बाबा के संदर्भ में क्या जानकारी हासिल होती है!

# वे नेताजी नहीं थे तो कौन थे?

□अशोक टंडन

हिमालय की तलहटी में नेपाल की सीमा से सटा हुआ उ.प्र. का एक जिला है—सीतापुर। सीतापुर जिले में ही स्थित एक छोटा-सा धार्मिक नगर है—नैमिषारण्य। वहीं के एक प्राचीन शिव मंदिर के महंत थे स्व. पं. शिवराम शर्मा। श्री शर्मा की विधवा को जुलाई 1964 की वह रात आज भी याद है, जिस दिन पिछले छह वर्षों से रह रहे गुमनामी बाबा ने अचानक बिना किसी पूर्व सूचना के शिव मंदिर को त्याग दिया था। पं. शिवराम शर्मा के निकट सम्बंधी महंत बाबा लालदास के अनुसार गुमनामी बाबा मंदिर के ऊपरी हिस्से में अकेले ही रहते थे। आधी रात के अंधेरे में न जाने कहां से दो कारें मंदिर में आती थीं और फिर गायब हो जाती थीं। उन्होंने बताया कि बाबा के मंदिर छोड़ने के एक महीने पहले से ही मंदिर पर हर रोज कारें आया करती थीं। एक कार भोर होने से पहले आती थी और शाम को चली जाती थी। और दूसरी कार आधी रात को आती थी तथा सूर्योदय के पहले चली जाती थी।

कहा जाता है कि गुमनामी बाबा सन् 1958 में यहां आये। यहां भी उनका रहन-सहन गुप्त ही रहा। वे किसी से ज्यादा मिलते-जुलते नहीं थे। यहां भी उनकी प्रसिद्धि पर्दे वाले बाबा के रूप में ही रही। यहां उनके साथ् अमल राय नाम का एक व्यक्ति भी रहता था।

कहावत है कि—जहां न जाये रवि, वहां जाये कवि। कवि हृदय पं. श्रीकांत शर्मा 'कान्ह' वहां भी पहुंच गये, जहां गुमनामी बाबा अपने एकांतिक क्षणों में विचरा करते थे। लेकिन मंदिर की चौखट से पर्दे की आड़ तक पहुंचने में श्रीकांत शर्मा को एक कड़ी परीक्षा से गुजरना पड़ा। चालीस दिन तक सच बोलने के तप को जब वे नहीं निभा पाये, तो स्वयं ही छह महीने तक बाबा के पास नहीं गये। लेकिन कुछ खोज लेने, जान लेने व पहचान लेने की उत्कंठा ने उन्हें फिर बाबा के पास आने पर मज़बूर कर दिया। इस बार अनेकानेक शपथों के बाद उनको अक्सर मंदिर में आने की इजाज़त मिलने लगी।

अब तक शर्मा जी बहुत कुछ जान चुके थे। एक विराट व्यक्तित्व का सान्निध्य उनको रोमांचित कर रहा था। पर जब कभी उनके धैर्य की सीमा टूटती, तो वे कुछ अजीब-से प्रश्न पूछ डालते। एक बार उन्होंने बातों ही बातों में बाबा से पूछा कि वे छिपकर क्यों रहते हैं, तो उनको जवाब मिला था, "अभीष्ट को प्राप्त करने के लिए।" पं. शर्मा ने फिर कभी पूछा था, "क्या नेताजी का इस तरह गायब हो जाना ज्यादा महान त्याग था या फिर भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद की तरह प्राणोत्सर्ग

कर देना ?" जवाब देने के बजाय गुमनामी बाबा ने स्वयं प्रश्न कर डाला था, "तुम्हीं बताओ कि मनुष्य का आवेश की परिस्थितियों में प्राणोत्सर्ग कर देना ज्यादा श्रेयस्कर होगा, अथवा अपने अभीष्ट को प्राप्त करने के लिए जीवित रहना।" पं. शर्मा के सामने अब केवल इन दोनों अभीष्टों के भेद को जानना भर बाकी रह गया था।

श्री शर्मा आज भी वह दिन नहीं भूले, जिस दिन सुश्री लीला राय और समर गुहा बाबा से मिलने की जिद कर रहे थे।

## प्रसंग : लीला राय

सन् 1963 की होली के आस-पास का किस्सा है। ये लोग आकर एक धर्मशाला में रुके थे। इन लोगों ने गुमनामी बाबा से मिलना चाहा, लेकिन बाबा मिलने के लिए कतई तैयार नहीं थे। समर गुहा आवेश में आकर बोले कि मैं जाकर मिलता हूं—देखता हूं मुझे कौन रोकता है। श्रीकांत शर्मा ने उनका रास्ता रोक लिया था—"इससे पहले आपको मेरी लाश पर से गुजरना होगा।" लीला राय इन बातों से बहुत परेशान हो रही थीं। एक दिन उन्होंने पं. शर्मा से कहा कि मैंने कलकत्ते से डॉ. पवित्र मोहन.राय के माध्यम से कुछ सामान बाबा को भेजा है। हम केवल इतना जानना चाहते हैं कि वह सामान हमने 'जिनको' समझकर भेजा है, उन्हें मिल गया कि नहीं ? श्री शर्मा इस संदेश के आदान-प्रदान के लिए राजी हो गये। उस शाम करीब सात बजे श्री शर्मा मंदिर पहुंचे और उन्होंने लीला राय के प्रश्न को बाबा के समक्ष दोहराया था।

रात के दो बज गये। पर्दे के पीछे बैठे बाबा न जाने किन ख्यालातों में खोते चले गये। बोलते रहे, "शर्मा जी, लीला राय बहुत बड़ी क्रांतिकारी महिला हैं। 'इस शरीर' के साथ रहकर उन्होंने बंगाल की महामारी के दिनों में जनता की बड़ी

◀ श्रीमती लीला राय

सेवा की है। हर जगह साथ-साथ रहा करती थीं। बड़ी साध्वी महिला हैं। देवी हैं।" और न जाने कितने अंतरंग किस्से सुनाकर वे कहते कि उनसे जाकर पूछना कि उन्हें ये बातें याद हैं कि नहीं। दूसरे दिन सुबह पं. श्रीकांत शर्मा सुश्री लीला राय के सामने बैठे घंटों उन बातों का बयान करते रहे, और वे थीं कि लगातार आंसू बहाये जा रहीं थीं। लगता था, मानो शब्द अपना अर्थ खो चुके हैं।

श्री शर्मा को धाराप्रवाह बोलना सुनते हुए हमें भी ये सब बातें किस्सा-कहानी ही लग रही थीं। मगर हम चौंके थे राममवन में मौजूद बंगला अखबार में छपी यह खबर पढ़कर। 25 सितम्बर से 22 अक्टूबर 1974 तक लगातार 24 किस्तों में छपी लेखमाला का शीर्षक था—'क्या ताईहोकू की विमान दुर्घटना एक बनायी हुई कहानी थी ?' प्रख्यात पत्रकार श्री वरुणसेन गुप्त ने अपनी इस लेखमाला के अंतिम भाग में 'मृत्यु के पूर्व क्या देशनेत्री लीला राय ने नेताजी से साक्षात्कार किया था ?' शीर्षक के अंतर्गत लिखा है कि—"कुछ लोग मानते थे कि नेताजी जीवित हैं। उन्हीं लोगों की नेत्री स्वर्गीय लीला राय मृत्यु से पूर्व कुछ चुने हुए लोगों को लेकर नेपाल सीमांत में नैमिषारण्य में रह रहे एक साधू के पास गयी थीं। उन्हीं साधू की वाणी लीला राय ने 'जयश्री' नामक पत्रिका में प्रतिमाह छापी है।" बाद में 'वोई महामानव आर' नामक बंगला पुस्तक में भी उन्होंने वही बातें छापी थीं। परंतु उन्होंने 'वे महामानव या साधू जी' ही नेताजी थे, यह स्पष्ट नहीं कहा है। इस सम्बंध में होने वाली आलोचना व प्रश्नों को वे टाल जाती थीं। परंतु इतना जरूर कहती थीं कि नेताजी जीवित हैं। शॉलमारी के संन्यासी को लेकर काफी शोरगुल हुआ कि नेताजी जीवित हैं और वे प्रकट होंगे। परंतु सत्यगुप्त की मृत्यु के पश्चात (जिन्होंने शॉलमारी के संन्यासी को नेताजी कहकर प्रचारित किया था) संन्यासी शॉलमारी छोड़कर चले गये। उसके कुछ समय बाद ढाका के एक अध्यापक अतुल सेन स्वास्थ्य लाभ के लिए नैमिषारण्य पहुंचे। वहीं एक संन्यासी की नेताजी से मिलती हुई शक्ल देखकर वे चौंक गये। इस सम्बंध में उन्होंने नेहरू जी को भी एक पत्र लिखा था, लेकिन नेहरू जी टाल गये।

इसके पश्चात डॉ. पवित्र मोहन राय को भेजने का निश्चय हुआ। वही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अंतिम समय में नेताजी को पास से देखा था। महीने भर बाद डॉ. पवित्र मोहन राय ने लौटकर लीला राय को अपनी रिपोर्ट दी। संन्यासी को जो-जो सामान चाहिए था, वे उसकी एक लम्बी लिस्ट लाये थे, जिसमें एक 'क्रोमटोमीटर' भी था, जिसकी कीमत दस हजार रुपये थी। कुमार विश्वनाथ राय ने सभी सामान खरीद दिया। इसके बाद उन्होंने नेताजी अनुसंधान का पूर्ण दायित्व ग्रहण कर लिया। उन्होंने संन्यासी को अपनी एक गाड़ी भी दे दी। इसके बाद बीच-बीच में लीला राय, सुनील दास, पवित्र राय, विश्वनाथ राय गायब हो जाया करते थे। वे कहां गये हैं, पूछने पर मौन ही रहते थे। कभी-कभी वे लोग अलग-अलग भी आया-जाया करते थे। परंतु कर्मियों के लिये नैमिषारण्य में स्थायी कैम्प लगा था।

संन्यासी से मिलने के कुछ ही समय बाद अनुशीलन समिति के आसुक हाली और श्री संघ के कमल घोष कविराज की मृत्यु हो गयी। कमल बाबू लीला राय के निर्देश में संन्यासी की चिकित्सा करते थे। उनका मुंह वे नहीं देख पाते थे। केवल नब्ज देखकर दवा देते थे। संन्यासी से मिलने के कुछ समय बाद लीला जी अस्वस्थ हो गयीं। मृत्यु से पूर्व तीन साल तक वे बेहोशी की हालत में रहीं। संन्यासी किसी से

बात नहीं करते थे। पत्र लिखने पर उसका लिखकर जवाब देते थे, और संन्यासी का लिखा हुआ जवाब वापस कर देना पड़ता था। बाग बाजार के अमल राय एक बार संन्यासी की लिखी हुई कुछ चिट्ठियां संग्रह कर लाये थे, मगर बाद में टेलिग्राम पाकर वे भागे-भागे गये और क्षमा मांगते हुए सारी चिट्ठियां वापस कर दीं। अमल जी इस समय संन्यासी हैं। इस घटना के बाद संन्यासी नैमिषारण्य का घर बदल दिया। एकमात्र लीला राय और उनके घनिष्ठ सहकर्मियों के अलावा किसी को कोई जानकारी नहीं थी। सुनील दास अथवा पवित्र राय कुछ नहीं बताना चाहते। फलस्वरूप 'सुभाषचंद्र बोस की मृत्यु' जैसा ज्वलंत प्रसंग भी रहस्य में ही रहता है। सरकार को यह बात मालूम है कि नहीं, इसका भी पता नहीं चलता।''

ऊपर आये 'श्री संघ' और 'अनुशीलन समिति' नामों के बारे में पाठकों को मैं बता दूं कि ये विप्लवी संस्थाएं हैं जो देश के स्वतंत्रता संग्राम में नेताजी सुभाषचंद्र बोस का दाहिना हाथ थीं।

**इस खबर को पढ़ने के बाद हमें लगने लगा कि गुमनामी बाबा के आस-पास ऊपर से दिखने वाले शांत वातावरण के अंदर एक गरम हवा निरंतर बह रही थी।** और कभी-कभी उसकी गरमाहट वरुण सेनगुप्त जैसे प्रखर पत्रकारों ने भी महसूस की। लेकिन नैमिष से बाबा के गायब हो जाने के ठीक 12 वर्षों के बाद! आखिर इतने दिनों बाद क्यों?

लगता है जहां साधारण से समझे जाने वाले कुछ लोग बाबा के पास आसानी से पहुंच जाते थे, वहीं पर महत्वपूर्ण लोगों के लिये उन तक पहुंचना काफी कठिन था।

अब प्रश्न उठता है कि क्या वास्तव में लीला राय कभी बाबा से मिलने नैमिष गयी थीं। इस बात का जवाब हमें मिलता है रामभवन में मिले एक फटे हुए पत्र से। दिनांक 25 मार्च 1963 को लीला राय के लेटरपैड पर बंगला भाषा में लिखे गये इस पत्र में लिखा है कि—''सश्रद्ध अभिवादन ग्रहण कीजिए, मैं 30 तारीख को साढ़े 12 बजे यहां आ गयी हूं परंतु सम्पर्क करना असम्भव हो रहा है। क्रेडिंशियल (परिचय पत्र) यदि आवश्यक हो तो भेज सकती हूं। इसके पूर्व जो दो माह पहले रहकर गये हैं उनका इतना देर में...'' (पत्र के पृष्ठ भाग पर लिखा है कि—) ''पूर्ववर्ती लोगों के पास से कुछ भी जाना नहीं जा सका। आशा करती थी कि सम्पर्क स्थापित करने का निर्देश मिलेगा। परंतु क्यों नहीं मिला, समझ नहीं पायी।''

उपरोक्त पत्र तथा अखबार की खबर—रहस्य को गहराते चले जा रहे हैं। मैं सोच नहीं पा रहा हूं कि अपने प्रदेश के मंत्री महोदय की इस बात को कैसे मान लूं कि गुमनामी बाबा मात्र एक साधू या संन्यासी ही थे। खैर, हम अपनी खोज में आगे बढ़ते हैं। हमें लगता है कि जब नैमिष के संन्यासी की खबर कलकत्ता में कुछ ज्यादा ही सुगबुगाने लगती है तो उनके करीबी अमलराय चिंतित हो उठते हैं—(रामभवन में प्राप्त एक और पत्र)—''17 जून 1963 का बंगला भाषा का एक पत्र जिसमें अमलकर 16, साइनागाग स्ट्रीट का पता लिखा है पूरा पत्र यूं है :

श्री चरणकमलेषु

आप और माताजी मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिए। मधुपुर के पास ही कुमार साहब के सुंदर घर में दो दिन रहकर हम लोग कलकत्ता वापस लौट आये हैं। कुमार साहब से मैंने पूछा, कैसा लगा? उन्होंने बड़े मजे का जवाब दिया।

FORWARD BLOC
(OF THE INDIAN NATIONAL CONGRESS)

SUBHAS CHANDRA BOSE
LALA SHANKER LAL
H. V. KAMATH

50/2, Elgin Road,
CALCUTTA
Dated ...... January, 194

Mrs. Leela Roy, a very prominent member of the Bengal Provincial Congress Committee and the Forward Bloc, Editor of the "Forward Bloc" Weekly and a leader of the Women's Movement - is going to tour India on our behalf for supervising the organisation of the Forward Bloc. She will be visiting the United Provinces and Bihar at first. I shall be grateful if our comrades in different provinces, as well as the public in general, kindly assist her in her work.

Subhas Chandra Bose

नेताजी द्वारा श्रीमती लीला राय को जारी किया गया प्रमाणपत्र

बोले 'गांजा के अवसान पर सिद्दिलाभ।' (बंगला में सिद्धि भंग को भी कहते है। कार्यसिद्दि से भी इसका तात्पर्य है। इस तरह सिद्दिलाभ की व्यंजना स्पष्ट है—सं.) समर बाबू का मुझसे कहना है आपकी कोई पार्टी नहीं है, मगर मेरे पास है। अलग हो जाने पर भी सम्पर्क खत्म नहीं होगा। उनकी इस बात का मैंने जवाब नहीं दिया, लेकिन मन कह रहा था कि पार्टी को अब मेरी ज़रूरत नहीं रही। मेरा स्वार्थहीन उद्देश्य खुद को चोर कहलाने की बदनामी के बावजूद सार्थक हुआ है। अनपढ़ों पर पढ़े-लिखों की नहीं चली। मगर इसलिए नहीं चली क्योंकि मूल उद्देश्य में कोई खोट नहीं था। फिर भी मैं सारी बातें आपको नहीं बता रहा हूं, बतायी भी नहीं जा सकतीं।

पवित्रबाबू कह रहे थे कि वे लोग होते तो मामले को और भी तूल देते। मैंने कहा, मुझे तो मंत्री की गद्दी नहीं चाहिए, जिसकी जैसी मर्जी हो वह करे। यहां पर चार लोगों में पांच दल बन गये हैं, इससे शर्मनाक बात और क्या हो सकती है। बेचारे कुमार साहब जैसे भले आदमी का जीवन कंटकमय हो जाएगा। उन्हें ले जाकर अच्छा भी किया, बुरा भी किया। भगवान ही जानते हैं कि वे कितनों की आंखों में खटकेंगे।
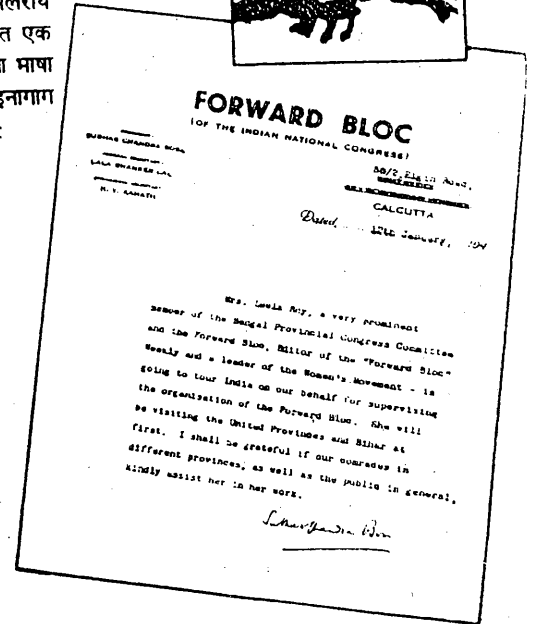
मैं उनसे कह दूंगा कि सारी गलतियों की जिम्मेदारी वे मुझ पर डालते रहें और मैं किसी से भेंट-मुलाकात नहीं करूंगा; सब झंझट खत्म हो जाएगा।

इति

प्रणत
अमल

इस पत्र में लिखी हुई बातों के अतिरिक्त एक बात ने हमें और चौंकाया, और वह है—इस पत्र के नीचे, हाशिये तथा पृष्ठ भाग पर अंग्रेजी के विभिन्न अक्षरों को लिखकर कुछ कोड वर्ड्स (गुप्त सांकेतिक भाषा) बनाये गये हैं। तथा एक स्थान पर लिखा है कि—

IF OUT, SHALL WIRE, 'AFFECTIONATE LOVE FATH KEEP WELL' तथा WHEN IN, SHALL WIRE 'TENDER BLESSINGS PROGRESSING.' (देखिए चित्र)

Calcutta the 17th June 1963
16, Synagogue Street.

अमल द्वारा
गुमनामी बाबा को लिखा गया पत्र

**वैसे इन्हीं सामानों में दफ्ती की एक फाइल भी मिली है जिसके ऊपर गुमनामी बाबा ने अपनी हस्तलिपि में 'कोड वर्ड्स' शब्द लिख रखा है। इसका मतलब यह हुआ कि गुमनामी बाबा अपने समर्थकों व भक्तों के बीच किसी गुप्त भाषा व संकेतों का इस्तेमाल करते थे। आखिर एक** साधु-संन्यासी को इसकी क्या जरूरत थी?'' लेकिन तभी एक दिन दिल्ली से प्रकाशित 'फारवर्ड ब्लॉक' पार्टी के प्रमुख पत्र ''जन गर्जन'' (अक्टू. 85) के एक लेख ''फारवर्ड ब्लॉक: अंग्रेज सरकार की निगाह से'' पढ़ते वक्त निम्नलिखित पंक्तियों पर मेरी नज़र अटक गयी—''मई 1943 में सांकेतिक भाषा में हो रहे पत्र व्यवहार का पता चला, जिसमें भूमिगत गुप्त कार्यकर्त्ताओं ने 29 मई 43 को अखिल हिंद फारवर्ड ब्लॉक की एक अत्यंत एवं आवश्यक बैठक बुलाई थी।''

**ज्ञातव्य है कि कांग्रेस से मतभेद होने के परिणामस्वरूप ही 'फारवर्ड ब्लॉक' पार्टी का गठन हुआ था, जिसके अध्यक्ष बने थे नेताजी सुभाषचंद्र बोस।** अध्यक्ष की हैसियत से 12 जनवरी 1941 को श्रीमती लीला राय को एक प्रमाणपत्र जारी करते हुए नेताजी ने लिखा था—''बंगाल प्रांतीय कांग्रेस की प्रमुख सदस्या व 'फारवर्ड ब्लॉक' साप्ताहिक की सम्पादिका एवं महिला आंदोलन की नेता श्रीमती लीला राय, फारवर्ड ब्लॉक के संगठन का पर्यवेक्षण करने के लिए हमारे प्रतिनिधि के रूप में भारतवर्ष का भ्रमण कर रही हैं। सबसे पहले वे संयुक्त प्रांत व बिहार का दौरा करेंगी। मैं आभारी होऊंगा यदि हमारे विभिन्न प्रांतों के कॉमरेड और जनता के लोग उनकी इस कार्य में मदद करेंगे।''

जी हां, यही ढाका के **प्रसिद्ध नाग परिवार की क्रांतिकारी नेता सुश्री लीलानाग हैं। जिनका विवाह कभी नेताजी सुभाषचंद्र बोस से होना तय हो रहा था। ये तभी से नेताजी को राजनीति में अपना आदर्श पुरुष मानने लगी थीं।** लेकिन नेताजी ठहरे जन्म से ब्रह्मचारी प्रवृत्ति के, उन्होंने अपने ही एक क्रांतिकारी सहकर्मी श्री अनिल राय से उनका विवाह करवा दिया। बाद में इन्हीं दोनों पति-पत्नी ने मिलकर विप्लवी संस्था 'श्री संघ' को जन्म दिया। यही श्रीमती लीला राय बंगाल की प्रसिद्ध क्रांतिकारी पत्रिका 'जयश्री' की संस्थापक सम्पादिका भी रहीं।

## बंदर की करामात

अजीब बात है कि गुमनामी बाबा ने भी अपने एक स्थानीय भक्त श्री रवींद्र शुक्ला के समक्ष अपने हृदय के कपाट कुछ यूं खोले थे, **'जानते हो लीला जी के साथ विवाह तय होने की रस्म के वक्त भी जब 'यह शरीर' घर नहीं पहुंचा तो घर वालों ने 'इस शरीर' के कपड़ों के साथ ही सगाई की रस्म अदा करनी चाही। बस फिर क्या था—एक बंदर आया और उसने समारोह में इतनी खलल डाली कि पुरोहित जी ही भाग खड़े हुए।'**

गुमनामी बाबा उर्फ भगवन जी के शिष्यगण जब भी ऐसे किस्से सुनाते हैं तो विश्वास और अविश्वास के झूले में झूलने लग जाते हैं हमलोग। क्या वास्तव में ऐसा भी कुछ हुआ होगा? लेकिन तभी हमारे अविश्वास का नशा काफूर हो जाता है, जब आगे चलकर टुकड़े-टुकड़े में बिखरे दस्तावेज उन पर प्रामाणिकता की मोहर

लगाते चलते हैं । हमारे पत्रकार साथी वी.एन. अरोरा को पं श्रीकांत शर्मा ने लीला राय व समरगुहा के वह पत्र भी दिखाये हैं जो उनके पास सुरक्षित हैं । श्री शर्मा ने बताया कि, उस दिन की घटना के बाद श्रीमती लीला राय लौटकर जब कलकत्ता पहुंची तो उन्होंने श्री शर्मा को एक पत्र में लिखा कि—"हां, हम भी हृदय से प्रार्थना करते हैं कि निकट भविष्य हम सबके लिए, और हम सबकी प्रिय मां जन्मभूमि के लिए बहुत बड़ी प्रसन्नता व राहत का कारण बने।" 6 अप्रैल 1963 को 312, गांगुली बागान, नकतला, कलकत्ता-47 के पते से लिखे गये इस पत्र में श्रीमती लीला राय ने यह भी लिखा है कि वे नैमिष से लौटकर 1 अप्रैल को कलकत्ता सकुशल पहुंच गयी हैं ।

श्री शर्मा के पास प्रो. समर गुहा का भी एक पत्र मौजूद है । 26 अप्रैल 1963 को 60/ए, राजा सुबोध मलिक रोड, कलकत्ता-32, के पते से श्री शर्मा को भेजे गये अपने हिंदी के पत्र में समर गुहा इस बात पर विशेष बल देते हैं कि श्रीमती लीला राय अथवा उनके किसी आदमी के जरिये गुमनामी बाबा से सम्बंध हर हालत में बना रहना चाहिए । प्रो. गुहा ने लिखा कि अपनी पार्टी की एक बैठक में भाग लेने के लिए वह 1 मई 1963 को दिल्ली जा रहे हैं, जहां पर वे राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन से भी भेंट करेंगे। प्रो. गुहा ने श्री शर्मा से निवेदन किया कि वे गुमनामी बाबा से विचार-विमर्श कर उन्हें तुरंत सूचित करें कि उनके सम्बंध में राष्ट्रपति से बातचीत कर, राष्ट्रपति के विचारों को जानना क्या उपयुक्त रहेगा ?

ऐसा लगता है कि बाबा के पास रहने वाले स्थानीय शिष्यों के पास तथ्यों व घटनाओं के जो भी किस्से मौजूद हैं, उनमें वास्तविकता रहती है । अगर ऐसा न होता तो, लीला राय ने नैमिष आने के पूर्व क्या वास्तव में कुछ सामान पवित्र मोहन के माध्यम से बाबा के पास भेजा था—इस बात की पुष्टि करता 'समर' का यह पत्र रामभवन में न मिलता ।

श्री समर गुहा द्वारा बंगला में लिखे गये उस पत्र (1897) जिसमें लिखा है कि—"गरम शाल आपके पास है या नहीं, जब पहले गया तो देखा नहीं उसको।" के साथ भेजे गये वस्त्रों व विभिन्न वस्तुओं की विस्तृत सूचियां—उनकी क्रम संख्या, तादाद, मूल्य, क्रयकर्त्ता रसीदें व टिप्पणियां के साथ संलग्न हैं, जिन पर अंकित है उक्त सामान को क्रय करके 20.1.63 को पी. राय को सौंपा गया तथा इस सामान के लिये धन किन-किन से कितना-कितना प्राप्त हुआ, उसका भी वर्णन है तथा एक सूची पर लिखा है कि इस सामान का कुल मूल्य श्रीयुत एल. राय द्वारा दिया गया है।"

गत वर्ष ही जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता व भूतपूर्व सांसद प्रो. समर गुहा की एक पुस्तक का विमोचन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने किया है । उस पुस्तक में श्री गुहा ने कुछ इस आशय की बात लिखी है कि अगर महात्मा गांधी व नेताजी सुभाषचंद्र बोस राजनीति में न आये होते तो गांधी जी किसी आश्रम में संत की तरह रहते तथा नेताजी जोगिया वस्त्र पहनकर साधू-संन्यासी हो गये होते । लगता है कि समर गुहा ने हार नहीं मानी है—वे नेताजी को प्रगट नहीं करवा सके—मगर पुस्तकों के सहारे इस विराट रहस्य की पर्तों को इतिहास के लिये सुरक्षित अवश्य करते जा रहे हैं ।
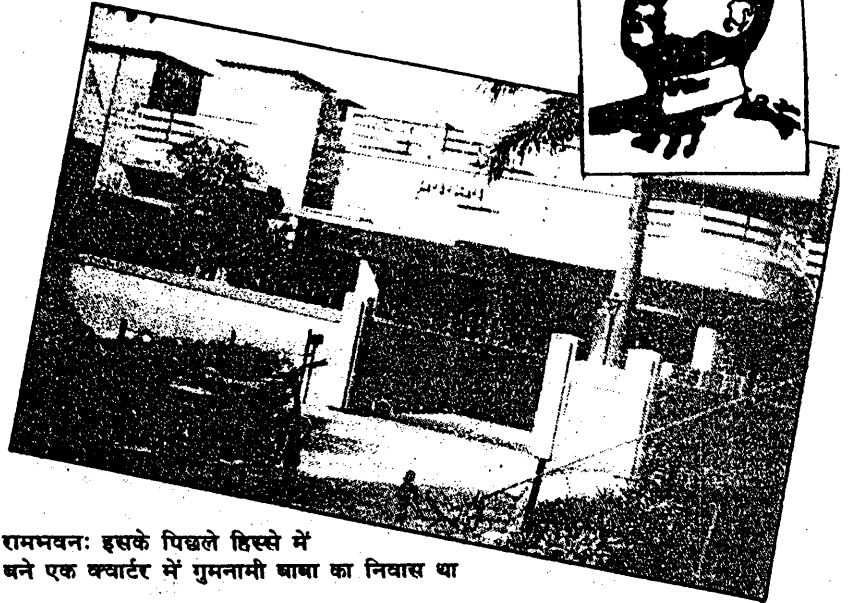
रामभवन: इसके पिछले हिस्से में बने एक क्वार्टर में गुमनामी बाबा का निवास था

ऐसा नहीं है कि रामभवन में हुई पुलिस-जांच के दौरान मिलने वाले अभूतपूर्व दस्तावेजों से केवल हमलोग तथा कुछ अखबार वाले ही चौंके थे। पुलिस द्वारा दिनांक 1.11.85 को रामभवन में संदिग्ध बाबा के सामानों की तैयार की गई सूची में कमरा नं.-2 के पृष्ठ सं.-4 की क्रमसंख्या 9 पर—'जिला 24 परगना के एडवोकेट कमिश्नर ने सुरेशचंद्र बोस को 24 परगना के जिला जज के सामने 17 अगस्त को उपस्थित होने के सिलसिले में सम्मन' दर्ज की खबर ने चौंकाया था—नेताजी सुभाषचंद्र बोस की सगी भतीजी सुश्री ललिता बोस को । ललिता जी अपने पिता स्व. श्री सुरेशचंद्र बोस के नाम ज़ारी सम्मन की वहां मौजूदगी की खबर से विचलित हो उठीं। वे नेताजी रिसर्च सैंटर की सचिव भी हैं ।

## जांच की मांग

4 फरवरी 1986 को सुश्री ललिता बोस ने उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री वीरबहादुर सिंह से भेंट करके मांग की, कि रामभवन में प्राप्त दस्तावेज व अन्य सामग्री भलीभांति सुरक्षित रखकर सक्षम एजेंसी से विस्तृत जांच कराई जाए । उन्होंने यह भी मांग की, कि जिस कमरे में वह बाबा रहते थे उसका ताला उनकी मौजूदगी में ही खोला जाए । सुश्री बोस ने बताया कि मुख्यमंत्री ने इस रहस्य की गुत्थी सुलझाने में सहयोग का आश्वासन दिया ।

इसी बीच अखिल भारतीय सोशलिस्ट पार्टी के उपाध्यक्ष डॉ. एम.ए. हलीम और सुभाष मुक्ति वाहिनी के श्री विश्वबांधव तिवारी ने फैजाबाद पहुंचकर वहीं के जिला मजिस्ट्रेट से भेंट करके लिखित प्रार्थना-पत्र दिया कि रामभवन के समस्त कागजात एवं सामग्री को सीलबंद करके जांच के लिए सुरक्षित रखा जाए और राष्ट्रीय हित में उपरोक्त स्थान की हिफाजत की जाए । जिलाधिकारी एवं एस.एस.पी. ने शायद मामले की गम्भीरता को आंकते हुए ही

**रामभवन पर सशस्त्र पुलिस तैनात कर दी—जो आज डेढ़ वर्षों बाद भी लगातार वहां मौजूद है।**

खैर, दूसरे दिन सुश्री ललिता बोस फैजाबाद आयीं। उन्होंने गुमनामी बाबा के निकटस्थ रहे लोगों—सर्वश्री रामकिशोर मिश्र, डॉ. आर.पी. मिश्रा, डॉ. पी. बनर्जी एवं श्रीमती पुष्पा बनर्जी, रीता बनर्जी व श्रीमती सरस्वती शुक्ला से मुलाकात की। बात-बात में अश्रु बहाती जोगिया बाना पहने ललिता जी ने बातों ही बातों में हम लोगों से कई बार न जाने यह क्यों पूछा कि सीने पर गोली खाने के लिये कौन-कौन तैयार है। हम लोग उनकी इस बात का अर्थ आजतक नहीं समझ पाये। उन्होंने हमलोगों को बताया कि उनके पिता के पास अक्सर कुछ लोग बस्ती से आया करते थे, जिनसे उनके पिता जी अकेले में बात करते थे। उन आगंतुकों के जाने के बाद वे कुछ रक्षाबंधन (राखियां) दिखाकर हमलोगों से कहा करते कि देखो इसे तुम्हारे चाचा सुवि ने भेजा है। सुश्री बोस ने कहा कि उन दिनों जिन बातों को हमलोग मजाक समझकर टाल देते थे, आज लग रहा है कि वे सही थीं।

## क्या शव गुमनामी बाबा का था ?

लखनऊ से ही ललिता बोस के साथ आये 'अमृत प्रभात' दैनिक के पत्रकार श्री रामदत्त त्रिपाठी ने 7 फरवरी 87 के अपने अंक में लिखा कि सुश्री ललिता बोस रुपये में बारह आना इस निष्कर्ष पर पहुंची हैं कि वह कोई और नहीं स्वयं नेताजी सुभाषचंद्र बोस थे। लेकिन आखिरी नतीजे पर पहुंचने से पहले उन्हें स्थिर चित्त से सोचना होगा और सीलबंद कमरे के अंदर रखी सामग्री तथा दस्तावेजों का अध्ययन करना होगा। **श्री त्रिपाठी ने यह भी लिखा कि सुश्री बोस को यह भी शक है कि कहीं ऐसा तो नहीं कि जिस व्यक्ति का दाह-संस्कार किया गया है—वह शव गुमनामी बाबा का न होकर किसी और का था, और बाबा अज्ञातवास के लिए डॉ. मिश्र की मदद से सबको चकमा देकर फिर कहीं खिसक गये।**

ज्ञातव्य है कि बाबा की मृत्यु की सूचना देने गये लोगों से कलकत्ता निवासीगण भी मृत्यु घटना की, बारीकी से पूछताछ कर रहे थे। यह भी पता चला है कि पुलिस ने डॉ. आर.पी. मिश्र से इस विषय पर काफी पूछताछ की है—लेकिन असलियत क्या है, इस पर स्थानीय प्रशासन व पुलिस पूरी तरह मौन है।

हमलोगों द्वारा नेताजी के एक भतीजे प. बंगाल के भूतपूर्व विधायक श्री शिशिर बोस का जिक्र करने पर ललिता जी बिगड़ पड़ी थीं। वे कहने लगीं कि—'वह कांग्रेस का दलाल है। उसने पैसों के खातिर झूठ बोला है, कि नेताजी मर गये। वह चाचा जी (नेताजी) की मृत्यु के नाम पर जापान में रखी किसी जानवर की राख को लाने के बहाने लाखों रुपये सरकार से ऐंठने की योजना बना रहा है।' तो क्या वास्तव में सरकार भी श्री शिशिर बोस की बातों का विश्वास नहीं करती, और तभी कांग्रेस ने गत वर्ष हुए अपने शताब्दी समारोह के अवसर पर श्री शिशिर बोस द्वारा लिखित नेताजी की जीवनी प्रकाशित करने से इंकार कर दिया।

सुश्री ललिता बोस जिस दिन फैजाबाद आयीं थीं, उसी दिन उन्होंने जिलाधिकारी श्री इंदुकुमार पांडेय को एक प्रार्थना-पत्र भी दिया था कि गुमनामी बाबा के निवास से प्राप्त सभी सामग्री व दस्तावेजों को सुरक्षित रखा जाए तथा अब कमरा उनकी उपस्थिति में ही खोला जाए। लेकिन लगता है कि इधर सरकार कुछ दूसरी ही योजना के तहत काम कर रही थी, और जिसका भंडाफोड़ कर डाला गोंडा जिले के प्रमुख पत्रकार एवं एडवोकेट श्री हनुमान सिंह सुधाकर ने। उन्होंने लखनऊ से प्रकाशित प्रमुख दैनिक 'स्वतंत्र भारत' में 24 जनवरी 1986 को लिखा कि "क्या रामभवन में पुलिस द्वारा सील किया गया गुमनामी बाबा का सामान भी निकट भविष्य में नीलाम कर दिया जाएगा ?" इसके लिए वे आगे विधिसम्मत तर्क भी देते हैं कि "विधि विशेषज्ञों की राय में रामभवन की तलाशी के लिए जो आदेश जिलाधिकारी और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा दिये गये थे, उससे कोई अपराध नहीं बनता और यदि किसी सूचना से कोई अपराध नहीं बनता तो पुलिस कोई विवेचना नहीं करती। यदि ऐसे मामलों में वह विवेचना करती भी है तो अर्थहीन है। इस कारण गुमनामी बाबा के विषय में कोई विवेचना नहीं हो रही है। एक दिन ऐसा आएगा, जब रामभवन का सारा सामान नीलाम हो जाएगा, क्योंकि रामभवन में ऐसा सामान, जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो, अकारण काफी दिनों तक रखा नहीं जा सकता। यदि पुलिस अपने-आप कुछ न भी करेगी तो भी एक-न-एक दिन मकान मालिक को स्वयं प्रशासन से कहना पड़ेगा कि उसका मकान खाली कर दिया जाए।

वैसे यह भी निश्चित है कि गुमनामी बाबा के विषय में कुछ और आगे जानने का एकमात्र मार्ग यही बचा है कि रामभवन में रखे सामानों की विधिवत् छानबीन और विश्लेषण किया जाए, क्योंकि उनके बारे में जानने वाले लोग मौन हैं।" वैसे पाठकों को हम बता दें कि ऐसा ही एक प्रार्थना-पत्र रामभवन के मकान मालिक ने जिलाधिकारी को दे भी दिया है।

## याचिका दायर

कुछ ही दिनों की दिल्ली-कलकत्ता से लखनऊ-फैजाबाद तक की भागदौड़ के बाद ललिता बोस को भी ऐसा लगा कि मंत्री और अधिकारी उन्हें मात्र कोरे आश्वासन ही दे रहे हैं। उन्होंने तुरंत डॉ. हलीम व विश्वबांधव तिवारी के साथ मिलकर इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ बेंच में एक याचिका दायर करके गुमनामी बाबा के सामानों को नीलामी से बचाने व सुरक्षित रखने की मांग कर डाली। याचिका दायर करने वाले उनके अधिवक्ता थे, हाईकोर्ट के प्रसिद्ध एडवोकेट श्री रोबिन मित्रा।

रिट पिटीसन नं.-929 सन 1986 'मिस ललिता बोस आदि बनाम उ.प्र. सरकार आदि' नामक याचिका की प्रार्थना-पत्र सं.-1412 (डब्ल्यू) 1986 पर दिनांक 10 फरवरी 1986 को इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच के द्वय न्यायमूर्तियों माननीय सै. सगीर अहमद तथा जी.बी. सिंह ने फैजाबाद के जिलाधिकारी को निर्देश दिया कि—

"(i) An inventory of the articles left by the nameless saint at Ram Bhawan, Faizabad, shall be prepared or get prepared through an Advocate Commissioner who may be appointed either by the District Magistrate himself or he may get such an Advocate Commissioner appointed by the District Judge, Faizabad and;

(ii) After the inventory has been prepared the articles shall be shifted from Ram Bhawan, Faizabad, to the treausury to be kept in a safe coustody under his own lock and seal."

अर्थात 'रामभवन' में रखी गुमनामी बाबा की समस्त सम्पत्ति की सूची एडवोकेट कमिश्नर द्वारा तैयार कराएं। सूची बनाने के बाद सामानों को रामभवन से हटाकर जिला कोषागार में नाफैसला सुरक्षित रखा जाए। इसी के साथ ही साथ उच्च न्यायालय ने उ.प्र. सरकार को रिट में अपना जवाब लगाने के लिए छह सप्ताह का अवसर भी प्रदान किया। □

(क्रमशः)

## फैज़ाबाद के गुमनामी बाबा-4

# वे नेताजी नहीं थे तो कौन थे?

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि गुमनामी बाबा की मृत्यु के बाद 'रामभवन' के सामान की नीलामी की खबर मिलते ही नेताजी की भतीजी ललिता बोस ने अदालत में याचिका दायर कर 'रामभवन' के सामान की सुरक्षा की मांग की। अब चौथी किश्त में पढ़िए आजाद-हिंद फौज के गुप्तचर अधिकारी और अंतिम समय में सुभाषचंद्र के साथ रहे डॉक्टर पवित्र मोहन राय के गुमनामी बाबा से सम्बंधों की दास्तान!

नेताजी की सगी भतीजी सुश्री ललिता बोस द्वारा इलाहाबाद उच्च न्यायालय में दायर याचिका में न्यायमूर्ति सै. सगीर अहमद एवं न्यायमूर्ति जी.बी. सिंह द्वारा जिला मजिस्ट्रेट फैजाबाद को जारी निर्देश कि, 'रामभवन में रखी गुमनामी बाबा की समस्त सम्पत्ति की सूची एडवोकेट कमिश्नर द्वारा तैयार करवा कर उसे ट्रेजरी में रखवाने की व्यवस्था करें", की प्रतिलिपि सुश्री ललिता बोस के स्थानीय अधिवक्ता मदन मोहन पांडेय एडवोकेट ने जिलाधिकारी इंदु कुमार पांडेय के समक्ष प्रस्तुत की।

जिलाधिकारी ने तुरंत उसे एडवोकेट की नियुक्ति हेतु जिला न्यायाधीश कृष्ण मोहन पांडेय की अदालत में भेज दिया। जिला न्यायाधीश ने फैजाबाद बार एसोसियेसन के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिवक्ता सत्य नारायण सिंह 'सत्य' को इस कार्य के लिये एडवोकेट कमिश्नर नियुक्त किया।

अब मेरे सामने सबसे बड़ी समस्या थी कि मैं कैसे इस रहस्यमयी कमरों में मौजूद सबूतों से साक्षात्कार करूं। ऐसे मौके पर मेरा कभी का वकील होना काम आया। मैंने एडवोकेट कमिश्नर के समक्ष उनके सहायक के रूप में कार्य करने का प्रस्ताव कर डाला, जिसे उन्होंने तत्काल स्वीकार कर लिया। फिर क्या था, अब मैं भी इस रहस्यमयी ऐतिहासिक घटनाक्रम के दस्तावेजों का चश्मदीद गवाह बन गया।

एडवोकेट कमिश्नर ने जिलाधिकारी के प्रतिनिधि आर.एन. उपाध्याय डिप्टी कलेक्टर, याचिका पक्ष के वकील तथा सब इंसपेक्टर हरिश्चंद्र सिंह के अतिरिक्त अन्य कई गवाहानों की मौजूदगी में रामभवन के उन दो कमरों में बंद गुमनामी बाबा के सामानों की इंवेंटरी (सूची) बनानी प्रारम्भ कर दी।

### गुमनामी बाबा का फौजी शिष्य

विभिन्न सामानों, पुस्तकों, पत्रों व दस्तावेज़ों के मध्य एक दिन हमलोगों के हाथ लगता है एक अजीबो-गरीब टेलीग्राम।'श्री सतगुरु देव, स्वामी जी महाराज, 530/रामकोट वार्ड, ब्रह्मकुंड, अयोध्या' के पते से किसी 'पवित्र' द्वारा भेजे गये टेलिग्राम में लिखा था कि—

Our Pranams. Recd registered. Instructions strictly observed —Pabitra अर्थात हमारा प्रणाम स्वीकारें। रजिस्टर्ड पत्र प्राप्त हुआ। आपके निर्देशों का कठोरता से पालन कर रहा हूं।

कहा जाता है कि आदमी चाहे जिन परिस्थितियों में क्यों न रहने लगे, उसके काम करने के तरीके व सलीके में उसके पुराने कार्य-व्यवहारों के लक्षण परिलक्षित होते ही रहते हैं। लगता है बाबा को प्रशासकीय एवं प्रबंधकीय तरीकों का ज्ञान व आदत थी तभी तो इन दोनों टेलिग्रामों के ऊपर बाबा ने प्राप्ति समय व दिनांक नोट किया हुआ है। बाबा ने उस पर लिखा—Recd 17.12 Hrs. Dt. 12.1.78 तथा दूसरे पर 18.1.78/11.20 Hrs। देखा आपने 17.12 Hrs लिखने वाला व्यक्ति या तो टेलिग्राफ विभाग की भाषा जानता है या फिर रेलवे की या फिर सेना की। खासकर इन्हीं विभागों में इस तरह समय लिखने की परम्परा है।

छाया : बी. एन. अरोरा

राममवन में इंवेंटरी तैयार करते समय बायें से— आर. एन. उपाध्याय डिप्टी कलेक्टर, दुर्गाप्रसाद पांडेय वकील, अशोक टंडन, कलाकार सूरज, एक बंगलाभाषी तथा सत्यनारायण सिंह एडवोकेट (कमिश्नर)

क्या आपको आश्चर्य नहीं होता है कि ये कौन सा साधू है, जिसके निर्देशों का पालन एक भूतपूर्व फौजी इस तरह रहा है।

खैर, आगे बढ़िये और देखिये एक दूसरा टेलिग्राम। यह भी कलकत्ता से 'पवित्र' द्वारा ही गुमनामी बाबा को भेजा गया है। इसमें लिखा है कि—

Our Pranams. recd registered and wire both lost evening stop. Understand everything informed everybody —Pabitra.

देखा आपने वही 'पवित्र' महोदय बाबा को फिर सूचित करते हैं कि सब कुछ समझ गया हूं और सभी को सूचित कर दिया गया है। लगता है जो निर्देश बाबा ने दिये थे, उसी के अनुसार कार्य शुरू हो गया है। इसी की सूचना टेलिग्राम द्वारा तुरंत दे दी गई है। और तो और टेलिग्राम भेजे जाने के बाद टेलिग्राम में प्रेषित 'टेक्सट्' को बाद में पत्र के माध्यम से भी बाबा के पास प्रेषित करने में 'पवित्र' बाबू नहीं चूकते हैं। गजब की व्यवस्था थी।

## नेताजी के सहयोगी, बाबा के शिष्य

बहरहाल अब हमें यह देखना चाहिये कि कलकत्ते में रहने वाले किस व्यक्ति का नाम 'पवित्र' है और वह इतने घनिष्ठ रूप से बाबा से क्यों जुड़ा हुआ है। इस बारे में हमें सबसे पहले जानकारी मिलती है, इस मामले की जांच करने कलकत्ता गये पुलिस दल द्वारा डॉ. पवित्र मोहन राय से पूछे गये सवाल और जवाबों से। इस मौके पर 'अमृत बाजार पत्रिका' ग्रुप के एक पत्रकार मिहिर गांगुली तथा उ.प्र. के एक अन्य पत्रकार भी वहां मौजूद थे। ये सारी बातचीत एक कैसेट में टेप करके पुलिस के पास सुरक्षित रखी है, जिसे मेरे अलावा वी.एन. अरोरा तथा हनुमान सिंह सुधाकर जैसे खोजी पत्रकारों ने भी सुना है।

इसी आधार पर एक अन्य स्थानीय दैनिक में छपी खबरों में कहा गया कि डॉ. पवित्र मोहन राय ने अपने को नेताजी सुभाषचंद्र बोस का सहयोगी होना तथा उनके लिए सिंगापुर व मलेशिया में काम करना तथा पनडुब्बी से हिंदुस्तान भागकर आना स्वीकारा है। अखबार आगे लिखता है कि डॉ. पवित्र मोहन राय ने कहा कि ''हमलोग हर साधू व रहस्यमय व्यक्ति के पास नेताजी की खोज में जाते रहे हैं, कोहिमा से पंजाब तथा शालमारी आश्रम तक हमलोग गये। ऐसे ही बस्ती, फैजाबाद और अयोध्या में बाबा के पास जाते थे... ।''

**पाठकगण जरा डॉ. राय के इस बयान पर गौर करें तो पायेंगे कि डॉ. पवित्र मोहन राय को भी इन बाबा पर नेताजी होने का शक हुआ था तभी तो ये नेताजी को खोजते हुये बस्ती, अयोध्या और फैजाबाद तक आये। अब अगर नेताजी के एक सहकर्मी को यह शक हो सकता है तो भला मुझे क्यों नहीं ?**

तो क्या डॉ. राय का शक दूर हुआ ? और अगर दूर हो गया तो फिर क्यों 25 साल तक उस 'बाबा' से ये जुड़े रहे ? इन सब प्रश्नों का उत्तर पवित्र मोहन राय सीधे नहीं देते हैं। जिस टेप को मैंने सुना है, उसमें टेप की हुई बातोंको जरा आप भी देखें—

डॉ. राय ने पहले दिन पुलिस से कहा कि अयोध्या उनके पास दवा लेने जाता था। "क्या आप उनको पैसा खर्चा देते थे ?" का उत्तर दिया डॉ. राय ने कि—''ऐसा याद नहीं कि कुछ दिया हो ?'' नेताजी से सम्बंधित एक प्रश्न के उत्तर में डॉ. राय ने कहा कि—''कोई बोलता है जिंदा हैं, कोई बोलता है नहीं हैं।''

**आपका माइंड क्या कहता है ?**

मेरे माइंड के बोलने से क्या फायदा !

**दुर्गाप्रसाद कहते हैं कि वे नेताजी थे ?**

दुर्गाप्रसाद बोल सकता है... हम केवल (...) प्रूफ नहीं दे सकता कि वे जिंदा हैं। जबकि डॉ. राय ने स्वीकारा कि वे बंगाली थे।

**आप डिनाई (इंकार) करते हैं कि वे नेताजी नहीं थे ?**

'क्या डिनाई करेगा, जो हमें बोलना था बोल दिया।'

लोग चिल्ला रहे हैं कि वे नेताजी थे

अभी जैसा माफिक होता है होने दो, उसके बाद...'

आपके साथ 4–5 बंगाली लोग जाते

कौन थे ?

मुझे याद नहीं।

**एक अन्य प्रश्न के उत्तर में डॉ. राय बोले—**

मैं यह नहीं कह सकता कि स्वामी किसकी तरह थे। मैं वहां दो-तीन बार गया लेकिन अपना मन नहीं बना पाया।... मेरा पहला सम्पर्क उनसे तब हुआ जब सुना कि बस्ती में नेताजी हैं।'

**आपका निष्कर्ष क्या है ?**

'मैंने उन्हें कभी नहीं देखा।'

**आप कभी फैजाबाद में राममवन भी गये ?**

मैंने ये नाम नहीं सुना। मैं वैसे फैजाबाद में उनसे एक बार मिला।... डॉ. आर.पी. मिश्रा को मैं जानता हूं।

**उनके निधन की सूचना आपको दी गई थी ?**

डॉ. आर.पी. मिश्रा के लड़के व एक अन्य डॉक्टर यह सूचना देने आए थे।... यहां अनुपम मिश्रा एक आदमी के साथ आया था... उसने कहा कि स्वामी जी के सामान का हमलोग क्या करें...।

**फैजाबाद की जनता को क्या बतायें ?**

'जो बोले हैं वही बोल देना।'

**स्वामी जी की रायटिंग (हस्तलिपि) नेताजी से मिल रही है क्या वे नेताजी थे... बताईये साफ-साफ ? कड़ककर पूछा था पुलिस दल ने।**

'He did not meet me in Basti.' कहकर हवा में उड़ा दिया प्रश्न को डॉ. राय ने।

डॉ. पवित्र मोहन राय के इस बयान का क्या अर्थ लगाया जाना चाहिए—क्या पाठकों को ऐसा नहीं लगता कि डॉ. राय बहुत कुछ छिपाते हुए तथा खुलकर न कहना चाहते हुए भी, बहुत कुछ कह गये हैं। वह जिस कारण इतना बड़ा रहस्य छिपा रहे हैं, क्या उस पीड़ा की झलक इन शब्दों में अंतर्निहित नहीं है कि—''मेरे माइंड के बोलने से क्या फायदा।'' शायद यह जवाब उन लोगों के लिए काफी होगा, जो यह कहते हैं कि आखिर डॉ. पी.एम. राय क्यों नहीं असलियत बता रहे हैं। डॉ. राय ने बहुत दुनिया देखी है वे इस बात को अच्छी तरह समझते होंगे कि उन्हें किस मौके पर मुंह खोलना चाहिए।

और वास्तविकता तो यह है कि डॉ. राय ने ''क्या डिनाई करेगा, जो बोलना था बोल दिया।'' कहकर बहुत कुछ कह दिया है हमारे आपके समझने के लिए।

## 'मैं सुभाष बोल रहा हूं'

डॉ. पवित्र मोहन राय के विषय में हमें और अधिक जानकारी मिलती है शैलेश डे द्वारा लिखित बहुचर्चित पुस्तक 'मैं सुभाष बोल रहा हूं' के इन पन्नों से—

**डॉक्टर पवित्र मोहन राय (बायें से दूसरे) अपने परिवार के साथ। इस तरह के दर्जनों छायाचित्र राममवन में मिले हैं।**

**''मास्टर चोपड़ा के नेतृत्व में जो दल दिसम्बर के महीने में सबमेरीन द्वारा भारत भेजा गया था, उसका समाचार मिल जाने से लोगों का मनोबल बढ़ गया। आंखों के सामने इतना जबदस्त प्रमाण देखकर जापानियों की यह आपत्ति टिक न सकी, कि गुप्तचरी की शिक्षा और संगठन पर सुभाष का नियंत्रण रहे।**

**—यद्यपि चोपड़ा पुलिस की पैनी नजरों से ज्यादा दिनों तक बच नहीं सके, वे अपनी पार्टी के साथ कुछ दिनों बाद ही पकड़ लिये गये।**

**बाद में डॉ. पवित्र मोहन राय के नेतृत्व में अमरसिंह गिल, महिंदर सिंह व तुहीन मुखर्जी आये थे। इन सबको पेनांग की सीक्रेट सर्विस में शिक्षा मिली थी। वे उसी तरह से सबमेरीन (पनडुब्बी) द्वारा पुरी के समुद्र के किनारे उतरे। फिर एक-एक लोग एक-एक तरफ चले गये। महिंदर सिंह पंजाब, तुहीन मुखर्जी बम्बई, पवित्र राय और अमर सिंह गिल गये कलकत्ता।**

**एक बार एल्गिन रोड नेताजी के घर जाना है। परंतु पुलिस की नजर बचाकर जाया कैसे जाए ? नेताजी के भाई सुनील बोस एक कुशल चिकित्सक हैं। अगर मरीज बनकर उन तक पहुंच जायें तो कैसा रहेगा ?**

**पवित्र राय रिवदिरपुर में मरीज बनकर पड़े रहे। और अमर सिंह गिल गये एल्गिन रोड वाले मकान में डॉक्टर को बुलाने। लेकिन डॉक्टर बोस थे कहां ? बहुत ज़रूरी काम से तब हजारीबाग गये थे।**

**—लेकिन हर चाल व्यर्थ हो गई। लाहोर में महिंदर सिंह गिरफ्तार कर लिये गये। पकड़े जाने पर पुलिस के सामने उन्होंने सब कबूल दिया। हां, मैं आजाद हिंद फौज की सीक्रेट सर्विस का आदमी हूं। पेनांग से यहां नेताजी का दूत बनकर आया हूं। परंतु वे बहुत पछताये कि उन्होंने नेताजी के साथ विश्वासघात किया है। उन्होंने इसी दुःख में आत्महत्या कर ली।**

**महिंदर सिंह की स्वीकारोक्ति के कारण ही शायद ज्योतिष बसु पकड़े गये। और उसके बाद एक-एक करके सभी। पवित्र राय पुरी के एक होटल में थे। हरिदास के पास से बहुत शक्तिशाली ट्रांसमीटर बरामद हुआ।**

**सबकी नजर बचाकर कमल स्ट्रीट के एक मकान में मुकदमा शुरू हुआ। तुहीन मुखर्जी सरकारी गवाह बन गये, वे छोड़ दिये गये। परंतु पवित्र राय, ज्योतिष बसु और हरिदास मित्र को प्राणदंड दिया गया।**

**अंत तक यद्यपि इनमें से किसी को भी फांसी नहीं हुई थी। श्रीमती बेला मित्र के प्रयास करने पर गांधीजी ने इस मामले में हस्तक्षेप किया और युद्ध समाप्त होने पर अन्य राजनीतिक कैदियों के साथ**

डॉ. पवित्र मोहन राय द्वारा बाबा को लिखे पत्रों में से एक पत्र

यह लोग भी छूट गये।''

**(मैं सुभाष... खंड तीन : पेज-106–109)**

उपरोक्त तथ्यों से पाठकों को पता चल ही गया होगा कि डॉ. पवित्र मोहन राय इस प्रकरण में कितने महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। डॉ. राय एक तो आजाद हिंद फौज के गुप्तचर अधिकारी हैं तथा नेताजी के इतने आज्ञाकारी सहयोगी रहे हैं कि उन्हें प्राणदंड का फैसला भी न डिगा सका था। और ये अधिकारी आज भी मात्र एक 'साधु' के लिये इतना सक्रिय होगा—बात समझ में नहीं आती है।
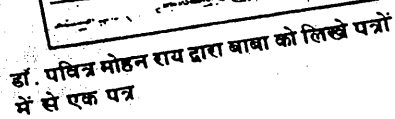
इस पूरे प्रकरण व इंवेंटरी बनने के दौरान हमारे जेहन में जो एक खाका उभर कर आया, उससे हमें लगता है कि स्थानीय लोगों को छोड़कर गुमनामी बाबा के करीब कलकत्ता के बंगालियों या विप्लवी लोगों के सम्पर्क का जो भी दायरा था—उसमें सबसे करीबी व्यक्ति डॉ. पवित्र मोहन राय ही थे। इनका सम्बंध बाबा से नैमिषारण्य से लगातार दर्शन नगर अयोध्या, बस्ती फिर अयोध्या व अंत में फैजाबाद तक बना रहा। जब भी बाबा एक स्थान से दूसरे स्थान या शहर चुपचाप स्थानांतरित होकर गये हैं तो स्थानीय लोगों से लेकर कलकत्ते तक के लोगों को बाबा के नये स्थान की जानकारी नहीं हुई है। जबकि डॉ. राय को हमेशा इन स्थानों की जानकारी रही है। और तो और बाद में कलकत्ता के अन्य लोगों को बाबा से सम्पर्क करना होता था, तो वे लोग पत्र लिखकर डॉ. राय को दे देते थे, जिसे डॉ. राय अपने किसी सूत्र या डाक द्वारा बाबा के पास भेजते थे। यह सारी बातें आपको वहां मिलने वाले पत्रों से स्पष्ट हो जायेंगी।

अपने ऐसे ही एक दिनांक 20.9.79 के पत्र (क्रम सं. 1614) में डॉ. पवित्र मोहन राय गुमनामी बाबा को लिखते हैं कि ''लेखक को जहां-जहां से जो-जो सूचनाएं प्राप्त होती रही हैं उसे बिना भय या पक्षपात के आपके पास भेजता रहा हूं, और इस सम्बंध में आपका यही स्टैंडिंग आर्डर रहा है।''

पाठकगण देख रहे हैं न, कि आई.एन.ए. का एक गुप्तचर अधिकारी किस तरह एक 'साधु' की बातों का कड़ाई से पालन कर रहा है। डॉ. पवित्र मोहन राय के यह सारे क्रिया-कलाप इतने गुप्त थे कि उनकी जानकारी उनके पुत्रों तक को नहीं थी। तभी तो वह 14.5.81 को स्वामी जी को एक अंतर्देशीय पत्र में लिखते हैं कि **''रथींद्र व रणेंद्र को आपने (स्वामी जी ने) जो कुछ कहा है, उसे उन्होंने सुन लिया है। अब रणेंद्र को 'सब कुछ बता दें' तो मेरे ख्याल से कोई परेशानी नहीं होगी।''**

## सांकेतिक भाषा में पत्राचार

इसी प्रकार अपने एक नौ पृष्ठीय बंगला भाषी पत्र में दिनांक 12 सितम्बर 1980 को डॉ. राय अपनी पत्नी श्रीमती रेनु के विषय में भगवनजी को लिखते हैं कि ''अबकी बार का reaction आपका पत्र पाने के बाद का—उधर मैंने ध्यान दिया—जब पत्र पढ़ने के बाद कहा कि 'मां की इच्छा से ही अबकी बार प्रकाशित—इत्यादि' फिर इसके बाद काफी देर की चुप्पी के बाद कहा कि 'मां की इच्छा से एक बार उसी दिन के लिए हूं। उसके बाद भी एक सुंदर reaction देखने को मिला।... फिर देखा कि दूसरे कमरे में श्रीमती जी अपनी पुत्रवधुओं को लेकर अचानक पुराने दिनों की, अर्थात उस पार की कहानियों में मस्त हैं—उनको सुना रही हैं कि कैसे क्या हुआ था। वही सब पुरानी कहानियां—छोटे पुत्र और पुत्री को गोद में लेकर—हाथ पकड़कर सबेरे पताका-अभिवादन से शुरू करके—रात में ट्रेंच में छिपने तक की कितनी ही कहानियां। '—' व family camp में आकर कितने थोड़े समय में सबको कैसे अपना लिये थे, वही सब कहानियां। इन सबसे पता चलता है कि वर्तमान घटना—अपने अंतिम लक्ष्य तक पहुंचने के लिये कितने आग्रह से प्रतीक्षा कर रही है।''

क्या पाठकगण पी.एम. राय से पूछना चाहेंगे कि उन्होंने 'वे' के पहले किस नाम के स्थान पर '—' इस तरह खाली जगह छोड़ दी है।

आइये इस पत्र का जरा प्रारम्भ देखते हैं—

''श्री चरण कमलेषु, आप मेरा भक्तिपूर्ण प्रणाम लीजिये। घर के श्रीमती रेनु सहित सभी का प्रणाम स्वीकार कीजिये व सभी को आशीर्वाद दीजिये। मां काली की कृपा से सब कुशल पूर्वक हैं। मुकुल बाबू, संतोष बाबू, पल्टू बाबू और ब्रजनंदन सब कुशल पूर्वक हैं।

मेरा 14/8 तिथि का पत्र आपको मिला, आपने लिखा है। फिर 4/9 को पत्र दिया हूं उसमें 'राखी' पाने की खबर है। मुकुल बाबू को उनका पत्र दिया—उनके साथ बैठकर आपका पत्र और paper cutting पढ़ा। फिर उसी दिन संतोष बाबू को उनका पत्र दिया—ये सभी बातें 4.9.80 के पत्र में लिखी हैं। आपका 4.9.80 का पत्र कल मिला, उससे पता चला कि उस दिन तक मेरा regd. पत्र आपको नहीं मिला, इस पत्र को मैंने 3.9.80 को post करने की कोशिश की पर सम्भव न हो सका। कारण लिखता हूं।

## इतनी गोपनीयता क्यों ?

आपने पत्र के पते पर 'P/P' C/o... लिखने को कहा था, पर Post Office वालों ने कहा कि 'परम पूजनीय' कोई नाम नहीं हो सकता, अतः regd. स्वीकार नहीं किया। मजबूर होकर नया envelope type करके stamp लगाकर दूसरे दिन regd. किया और 'परम पूजनीय' शब्द हटाना पड़ा।... कोई उपाय न रहने से पूर्व के 510 के पते पर ही regd. किया। आपको w... करने का और a/c due की बात नहीं थी, अतः ऐसा नहीं किया। आज सुबह टेलिग्राम भेज दिया है। यह पत्र नये पते पर जायगा—a/c due से भी दूंगा, सारी व्यवस्था कर ली है।

... आपका पहले वाला पता Test address समझकर लगातार पत्र देना नहीं चाहा। और Details देने का साहस नहीं हुआ। समयानुसार काम करना ठीक होगा, समझकर प्रतीक्षा कर रहा था।

**संतोष बाबू ने बताया कि उन्होंने छोटा सा पत्र लिखा है और मुकुल बाबू ने ऐसा ही कहा था, इसलिए कि N Test address—Test हो जाये। मेरा पत्र तो आपके हाथ लग ही गया है अतः चिंता की कोई बात नहीं।**

कल रात 11.9.80 को आपका regd. inland मिला, उसमें नया पता मिला। आज ही सुबह 10.50 मिनट पर मैंने Express telegram किया—जितना details दे सकता था दिया हूं। आशा करता हूं शीघ्र मिलेगा। Text of the telegram (True copy)—

Received Registered And Previous Letters And Wires stop last·letter posted on fourth stop convey our complete devotion total deducation and loyalty stop everything well here stop detail in registered letter tomorrow stop accept Pranams.

—PABITRA

**जानने भी ज़रूरी हैं। 1978 के जनवरी के अंतिम पक्ष में पत्र आना-जाना बंद होने के बाद—2/3 महीने बाद से ही उन-उन लोगों की तरफ से जो-जो घटनाएं घटनी शुरू हुई—उसकी पूरी report आपके पास**
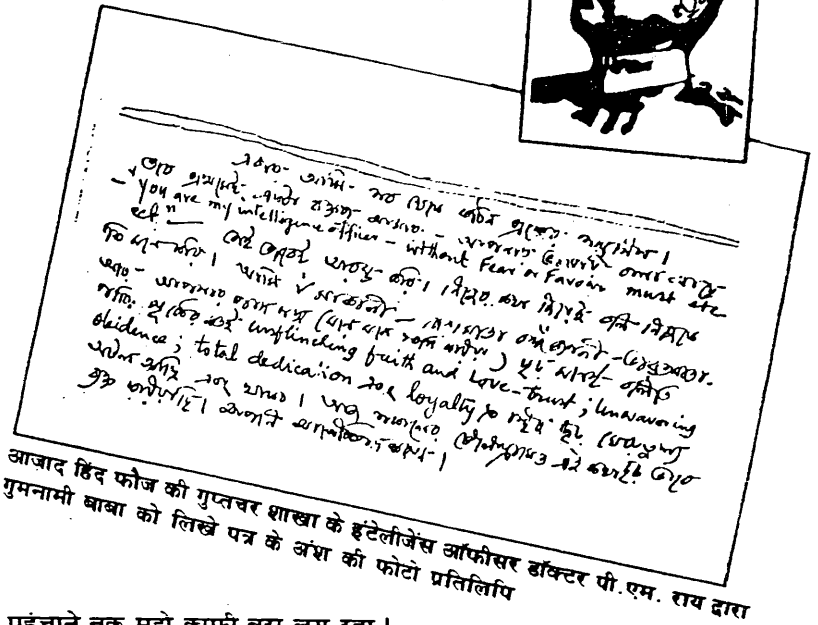
**आजाद हिंद फौज की गुप्तचर शाखा के इंटेलीजेंस आफीसर डॉक्टर पी.एम. राय द्वारा गुमनामी बाबा को लिखे पत्र के अंश की फोटो प्रतिलिपि**

**पत्र के उपरोक्त अंश को पढ़ने के बाद यह बात साफ हो चली है कि पवित्र मोहन राय इस साधारण से 'साधु' को पत्र भेजने में कितनी सावधानी बरतते हैं। उनके पतों को पहले टेस्ट करते हैं, तब उन पर पत्र भेजते हैं। फिर उस 'साधु' को कोई नाम न देकर 'परमपूज्य' ही लिखना चाहते हैं।** आखिर क्यों? टेलिग्राम भेजते हैं तो उसका Text भी पत्र में लिख देते हैं। आश्चर्य है कि एक साधू के प्रति पूर्ण आस्था, सम्पूर्ण समर्पण और वफादारी प्रगट करने के लिये डॉ. राय टेलिग्राम का प्रयोग करते हैं। लेकिन पत्र का अगला भाग कुछ चौंकाने वाला है। वह नेताजी के जीवित होने के बारे में चले पिछले किसी अभियान के समय घटी कुछ आंतरिक घटनाओं की ओर इंगित करता है। पाठकगण बड़े गौर से जरा इनका मनन तो करें। पवित्र बाबू आगे लिखते हैं कि—

**''मेरे पहले पत्र 14.8.80 में किसी-किसी के बारे में कुछ-कुछ लिखा है—स्वभाविक कारणों से संक्षेप में, सावधानी से लिखा हूं—उसी बारे में details मेरे पास day by day डायरी की तरह note है। अभी भेजने की हिम्मत नहीं है—आप कहेंगे तो समयानुसार दूंगा—वे details न पहुंचाने तक मुझे काफी बुरा लग रहा था—इसलिए पहले संक्षेप में बताने को बाध्य हुआ। उन्होंने अपना एक खतरनाक खेल (मेरे सद्गुरुदेव को लेकर) खेला—काफी दिनों तक—अंत में 1979 के शुभ दिन में—परिणाम कोर्ट केस और कई बदनामियां हुई।**

... यदि इसी के साथ-साथ '—' नुकसान पहुंचाने का, हेय आक्रमण करने की कोशिश न रहती। ये लोग किसलिए और किसकी प्रेरणा से ऐसा कर रहे हैं नहीं मालूम—पर काफी कुछ अनुमान मात्र कर सकता हूं। स्वार्थ के बिना कुछ नहीं किया है। असल में उनमें विश्वास नाम से कुछ नहीं बचा, Faith—विश्वास यदि होता तो ऐसी हरकत न करते।

... पर मेरा व्यक्तिगत मत है कि—इन्हीं लोगों ने नाना प्रकार से '—' (डॉ. राय के पत्र में इसी तरह निशान बना हुआ है—लेखक) लेकर बाजार गर्म रखा उससे कोई लाभ तो आज तक हुआ ही नहीं बल्कि नुकसान ही हुआ है—अतः ये लोग मुंह पर कालिख पोतकर अब घर में दुबकने को मजबूर हुए, इससे अच्छा ही हुआ। साधारण लोग 2+2=4 मिलाकर वर्तमान अवस्था में कुछ भी मिला नहीं पा रहे हैं। साधारण लोगों के अलावा असाधारण लोगों को नहीं गिना हूं।''

मैं समझता हूं कि हम लोगों को भी इस मामले को केवल दो धन दो बराबर चार जैसा सीधा सा सवाल न समझकर, बल्कि अपनी असाधारण बुद्धि का प्रयोग करना पड़ेगा। प्रबुद्ध पाठकगण मेरी बात से अवश्य सहमत होंगे।

डॉ. राय फिर आगे लिखते हैं कि—

''**परंतु मैं और हम लोग उक्त घटना के बाद और अधिक सर्तक हो गये हैं।** 1979 के अंत से ही जो घटनाएं देश के अंदर और बाहर घटित हो रही हैं—वह केवल मात्र बड़े समय का पूर्वाभास है—ऐसा अनुमान लगा पा रहा था।

... घटनाएं घटित नहीं होती हैं, उन्हें घटित किया जाता है—यह मूल सूत्र आपके पास से ही मिला था—उसी सूत्र को पकड़कर चिंता करने से इस धारणा पर पहुंचा हूं।

... **आपके दिये हुये hints इस समय अक्षरशः सत्य होकर सामने आ चुके हैं। इतने वर्षों में, इतने निकट और पदतल में बैठकर और इतना सब कुछ सुनने पर भी, ये बातें स्वप्न में भी घटित हो सकेंगी, हमलोग ऐसा सोचे ही न थे, चिंता ही ऐसी न थी। मैं तो सोच न सका था, औरों की**
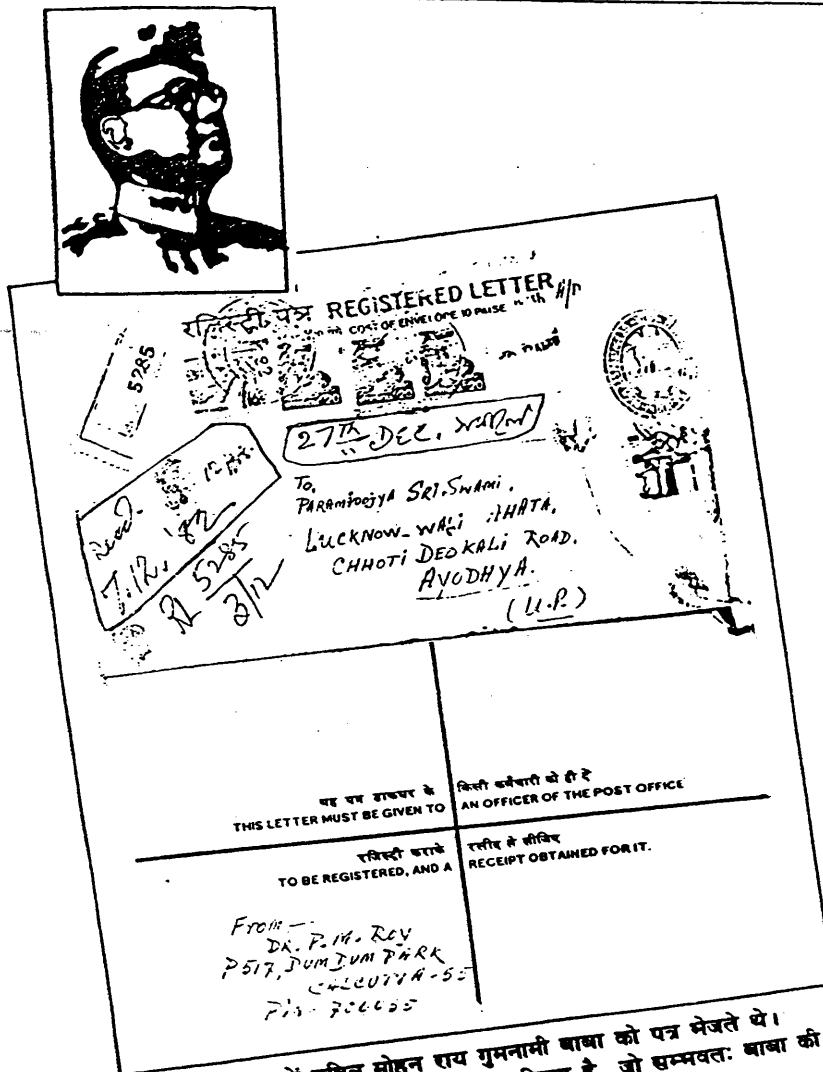
**रजिस्टर्ड लिफाफे : जिनमें पवित्र मोहन राय गुमनामी बाबा को पत्र भेजते थे। इनमें बायें तरफ 'रिसीव्ड' व तारीख मय समय लिखा है, जो सम्भवतः बाबा की हस्तलिपि प्रतीत होती है।**

बात नहीं जानता।''

डॉ. राय अपने इस लम्बे पत्र में अपनी पत्नी-लड़कों के बारे में लिखने के बाद अपने साथियों सर्वश्री संतोष बाबू, बज्रनंदन, पल्टू बाबू व मुकुल बाबू के बारे में अलग-अलग जिक्र करते हुए लिखते हैं—

''श्री संतोष बाबू—पिछले 2/3 वर्ष अर्थात 1978 जनवरी से जब हम लोगों की गहरे पानी में पड़े रहने जैसी अवस्था थी—लेकिन तब तो समस्त समय से संतोष बाबू और मैं एक साथ और एक ही मत के होकर रह सके थे। जब दूसरों ने काफी परेशान किया, तब भी हमलोग कभी-कभी प्रतिदिन—नहीं तो प्रति सप्ताह में 1/2 दिन सम्पर्क बनाये रखते थे।

Dedication & faith की कोई तुलना नहीं है। 100% complete faith लेकर ही वे इस कार्य में हैं।... उत्साह कई दिनों में ही काफी बढ़ गया है।

श्री बज्रनंदन—इनसे मुलाकात कम ही होती है—पर जब भी कलकत्ता आते हैं, संतोष बाबू के मार्फत सम्पर्क होता है और मुलाकात होती है। काफी सीधे-सादे आदमी हैं। व्यर्थ झगड़ों में नहीं रहते हैं। Complete faith लेकर बैठे हैं। घटना घटित होगी ही—इसमें कोई अन्यथा नहीं। ये हुए ब्रजनंदन, कोई भी काफी कोशिश करके भी हिला नहीं सकेगा।

श्री पल्टू बाबू—सभी कुछ जानते हैं, सभी कुछ समझते हैं। हम लोगों की दीदी के पास से अच्छी तरह से सब कुछ समझ लिये हैं। किसी भी प्रकार से किसी के बारे में डिगा देना किसी के द्वारा असम्भव है। 'प्रकाशन' को लेकर व्यस्त रहते हैं। ज़रूरत पड़ने पर हम सब एकत्र होते हैं अभी भी अगर कुछ जान न ले तो—'अंतिम दिन' के पहले क्या और सुअवसर मिलेगा—यही बात उन्होंने मुझसे कही।

श्री मुकुल बाबू—उनके बारे में कुछ कहना मेरे लिए अत्यंत कठिन है। दीदी के अत्यंत ही प्रिय पात्र हैं। विद्या, बुद्धि, सच्चाई सब तरह से कोई तुलना नहीं हो सकती। हम लोग कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकते—यह मैं मानता हूं।... उस समय अध्यापक को बिल्कुल दुत्कार देने में उन्होंने देर नहीं की—कटु भाषा का व्यवहार उन्होंने किया ऐसा सुना है।

... मोटे तौर पर आपने जो-जो बातें जाननी चाहीं थीं, उसका काफी भाग मैं स्पष्ट कर सका हूं ऐसा समझता हूं। अब अगर आपका यही पता और कुछ दिनों तक रहे तो और भी पत्र लिखूंगा, जब जो चीज़ नयी मालुम पड़ेगी, सब बातें सूचित कर सकूंगा।

... आपके इन दो-तीन पत्रों के बाद सभी कुछ स्पष्ट हो रहा है, फिर भी बहुत सी बातें जानने और समझने का आग्रह लेकर ही हम लोग प्रतीक्षा में बैठे हैं।... हम लोग तो कुछ भी नहीं कर सकते—और न कर पा रहे हैं—कोई संगठन बनाने की भी क्षमता नहीं है।... क्या करना है और क्या नहीं—आप बतायें या न बतायें, सब कुछ आप ही निश्चित करेंगे।

क्या-क्या एवं किस-किस प्रकार से हमलोगों को इस समय और इससे भी कठिन समय में चलना होगा, वह जिससे गलत न हो—कम से कम इतना तो हमलोगों को जानना होगा। सभी कुछ तो आप ही तय कर देते हैं—अबकी बार भी हमलोग इससे वंचित नहीं होंगे।''

## पत्र स्वयं गवाह है

अब इस पत्र के सबसे महत्वपूर्ण अंश पर मैं आता हूं। डॉ. राय अपने बारे में क्या लिखते हैं देखिए जरा—

**''इस समय मैं सबसे कठिन प्रश्न का सामना कर रहा हूं। पर पहले ही मेरा एक वक्तव्य है—आपकी भाषा में कहा गया है—"You are my intelligence officer—without Fear or Favour must etc. ect"—इसी रूप से शुरू करता हूं। अपनी बात से ही शुरू करूं कि मैं स्वयं को क्या सोचता हूं। मैं मां काली-देशमाता बंग-जननी—भारत माता और आपके चरण कमलों को स्मरण करके दृढ़ता के साथ कह सकता हूं कि पहले की ही भांति—Unflinching faith and love—trust, unwavering obidence, total dedication और loyalty में स्थिर और दृढ़ सुमेरु के समान अटल हूं और रहूंगा। आज प्रातः के टेलिग्राम में भी यह बात दृढ़ता के साथ मैंने व्यक्त की है। आप आशीर्वाद दें।''**

क्या इस देश के जागरुक नागरिक उस 'साधू' के बारे में जानने के इच्छुक नहीं हैं जो डॉ. पवित्र मोहन राय जैसे आई.एन.ए. के गुप्तचर अधिकारी को अपना Intelligence officer (गुप्तचर अधिकारी) कहता हो। और डॉ. राय इस वृद्ध अवस्था में भी उसके प्रति पूर्ण समर्पित हों।

उपरोक्त पत्र में ज्यादातर बातें अपरोक्ष रूप में कही गयी हैं, उनका अर्थ लगाना अब हमारा आपका काम है। पता लगाईये कि यहां वह कौन सा भेद पल रहा था जिसे न तो पी.एम. राय बताना चाहते हैं और न ही उनके साथियों से कोई पूछ सकता है क्योंकि वे किसी के प्रति पूर्णरुपेण समर्पित हैं।

डॉ. राय ने अपने इस पत्र में अपने जिन चार प्रमुख साथियों का जिक्र किया है। उनमें से श्री संतोष बाबू सम्भवतः श्री संतोष कुमार भट्टाचार्य, 77/1/w, इब्राहिमपुर रोड, कलकत्ता-700032, हैं। जिनके द्वारा गुमनामी बाबा से किये गये काफी पत्राचार राममवन में मिले हैं। इसी प्रकार श्री ब्रजनंदन का पूरा नाम ब्रजनंदन दुलाल है। इनका भी जिक्र राममवन में काफी है तथा इनके नाम गुमनामी बाबा द्वारा भेजे गये किसी पत्र का अंग्रेजी Text बाबा की ही हस्तलिपि में राममवन में मौजूद है। पत्र बड़ा ही महत्वपूर्ण है जिसका विवरण हम आगे फिर कभी देंगे। अगला नाम श्री पल्टू बाबू का आया है। राममवन में ही मिले एक पत्र के टुकड़े के अंत में देखने से लगता है कि कलकत्ता के किसी विजय कुमार नाग महोदय का संक्षिप्त नाम ही पल्टू है। इनका जिक्र भी राममवन के पत्रों में काफी है। इसी तरह श्री मुकुल के नाम के कई पत्र व टेलिग्राम व संदर्भ राममवन में हमें देखने को मिले। तभी हम शैलेश डे की पुस्तक ''मैं सुभाष बोल रहा हूं'' के द्वितीय खंड के पृष्ठ 53 पर पाते हैं कि स्वतंत्रता संग्राम के दिनों की क्रांतिकारी संस्था 'बंगाल वालेंटियर्स' (बी.वी.) के एक सक्रिय सदस्य अमलेंदु घोष का ही संक्षिप्त नाम था मुकुल, तथा (पृष्ठ 183 पर) यही अमलेंदु घोष, जो उस समय हिंदुस्तान इंश्योरेंस कम्पनी में काम करते थे, 1940 में ढाका में पकड़ लिये गये थे।

पाठकगण जरा यहां ध्यान दें कि इन्हीं डॉ. राय ने कलकत्ता जांच करने गये पुलिस दल से कहा था कि हमें नहीं पता कि वे बाबा कौन थे ?

## महत्वपूर्ण पत्र

लेकिन डॉ. राय का एक और पत्र (क्र.सं. 2150) जो राममवन में मौजूद है साबित करता है कि डॉ. राय इन गुमनामी बाबा की असलियत से पूरी तरह वाकिफ थे, तभी तो वे उन्हें लिखते हैं कि—

**''आपके सम्बंध में ज्योतिषी से मैंने पूछा था। उन्होंने कहा कि 1940 से 1945 तक कोई दुर्घटना नहीं हो सकती थी, जैसा कि प्रचलित है। उक्त ज्योतिषी ने यह भी बताया था कि 55 से 60 के बीच की आयु में किसी बड़े रोग से आक्रांत हो सकते हैं। जाने के समय बड़ी धर्मशाला में जो आप बीमार पड़े थे, उससे मुझे ऐसा समझ पड़ा कि ज्योतिषी ने ठीक ही बताया था।''**

एक बात और पवित्र मोहन राय ने अपने लोगों के लिये महत्वपूर्ण बताई कि आगामी 6 महीने के बीच हो सकता है कि प्रत्यक्ष रूप से अर्विभाव हो। संतोष, मुकुल, दुलाल, विजय बाबू व सुकृत से उनका सम्बंध बना हुआ है।

यही नहीं डॉ. राय ने पुलिस दल को एक और चकमा दिया था। उन्होंने कहा था कि बाबा के बारे में सबसे पहले उन्हें बस्ती में पता चला था। जबकि उनके एक अन्य पत्र से साफ जाहिर होता है कि डॉ. राय का गुमनामी बाबा से नैमिषारण्य से ही सम्बंध बना हुआ था।

14.7.77 को अपने लेटरपैड पर बंगला भाषा में लिखे इस पत्र (क्र.सं. 2151) में डॉ. राय लिखते हैं कि—''... ठीक नीमसार के समय से लेकर जब भी मेरे सत्‌गुरुदेव बीमार पड़ते हैं। तब-तब मैं मां काली से उनकी रोग मुक्ति की प्रार्थना करता हूं।'' **(क्रमशः)**

---

लघुकथा

## गरीबी हटाओ !

**□डॉ. मधुसूदन पारेख**

एक दरबारी बापू थे। एक दफा कुछ झोंपड़पट्टियों में घूम कर आये। उन्होंने सोचा, गरीबी तो हटानी ही चाहिए। सारे राज्य से गरीबी हट जानी चाहिए। उन्होंने कार्यकर्ताओं को बुलाया। कार्यकर्तागण बापू से बेहद घबराते थे। क्योंकि वे कभी भी किसी भी कार्यकर्ता पर बरस पड़ते तो उससे इस्तीफा ले लेते थे।

कार्यकर्ताओं ने सोचा, आज बापू किस पर बरसनेवाला है ? किसकी विकेट गिरेगी ? बापू की बोलिंग जोरदार है। कई बार तो हैट्रिक भी कर लेते हैं। बापू गम्भीरतापूर्वक कहने लगे—

''हमें एक बड़ा कार्यक्रम पूरा करना है। गरीबी हटाने के लिए जो कुछ करना चाहिए, कर डालो।''

सभी कार्यकर्ता आनंद-विभोर हो गये, कि चलो बच गये। उन्होंने बापू के साथ सलाह-मशविरा की और एक बड़ा अधिवेशन करने का निश्चय किया। बड़े शहर में बापू ने झकाझक तैयारी शुरू कर दी। मंडपवाले, कुर्सीवाले, माइकवाले... अधिवेशन के काम में जुट गये। व्यवस्थापकों ने भी धूमधाम कर दी। हर गांव से बापू के प्रशंसक, पत्रकार इकट्ठा हुए। सबके लिए मुफ्त भोजन की व्यवस्था की गयी।

बापू ने लोकमेदनी में बुलंद आवाज से घोषणा की कि, हमने गरीबी हटाने का निर्णय किया है। अधिवेशन में गरीबी हटाने का प्रस्ताव धूमधाम से पारित किया गया। कितने ही कार्यकर्ता, मंडपवाले, माइकवाले, कंट्रैक्टर आदि... कई लोगों की गरीबी हट गयी! □

गुजराती से अनुवाद :
सुशीला जोशी

आवरण कथा-2

फ़ैज़ाबाद के गुमनामी बाबा-5

# वे नेताजी नहीं थे तो कौन थे?

अशोक टंडन

जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता प्रोफेसर समरगुहा ने कलकत्ते से प्रकाशित साप्ताहिक 'रविवार' पत्रिका के 22 से 28 जनवरी 1978 के अंक में प्रकाशित आमुख लेख 'नेताजी अभी ज़िंदा हैं' में लिखा कि "क्या नेताजी जीवित हैं या उनकी मृत्यु हो गयी है? यह अर्थ गर्भित प्रश्न पिछले तीन दशकों में अनुत्तरित रहा। इसका एक निश्चित उत्तर पाने के लिए दो बार जांच हो चुकी है, पर इन जांचों के परिणाम से कोई संतुष्ट नहीं हो सका—सिवाय उनके, जो पहले से ही इस विषय पर संतुष्ट थे। सरसरी तौर पर की गई इन दो जांचों के जो नतीजे निकले वे सारहीन थे और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वीरतम नायक की मृत्यु के इर्द-गिर्द लिपटे रहस्य, रहस्य ही रह गये। हाल ही में 'सत्ता का हस्तांतरण—1942-47' पर प्रकाशित 'टाप सीक्रेट' ब्रितानी दस्तावेज़ों ने इस रहस्य के कम-से-कम एक हिस्से को आधारहीन साबित कर दिया है। इन दस्तावेज़ों से साफ जाहिर होता है कि ब्रितानी अधिकारियों ने कभी इस अनुश्रुति पर यकीन नहीं किया कि नेताजी की मृत्यु 18 अगस्त 1945 को ताईहोकू (ताइपेइ) की कथित विमान-दुर्घटना में हुई। साथ ही, इन दस्तावेज़ों ने यह रहस्योद्घाटन भी किया है कि ब्रितानी सरकार को नेताजी के रूस चले जाने का शक था, लेकिन उसके बाद क्या कुछ हुआ—रहस्य का यह हिस्सा अब भी कोहरे में है।"

आगे चलकर इस लेख में प्रो. समरगुहा ने कई दस्तावेज़ों का हवाला दिया और अंत के दो पैराग्राफों में लिखा कि **"अब यह बात पूरी तरह ज़ोर देकर कही जा सकती है कि नेताजी की तथाकथित विमान-दुर्घटना में मृत्यु नहीं हुई, बल्कि वे अपनी मृत्यु की खबर के आवरण में रूसी क्षेत्र में सुरक्षापूर्वक पलायन कर सके। लेकिन सवाल यह है कि उसके बाद क्या हुआ? यह प्रश्न आज भी उतना ही अनुत्तरित है, जितना कभी था। इतना तय है कि नेताजी के इर्द-गिर्द लिपटे रहस्य-जाल को छिन्न-भिन्न करने में नेहरू और उनकी बेटी—दोनों ही विफल रहे या उन्होंने ऐसा चाहा ही नहीं।**

यह दुखद है कि जिस व्यक्ति ने हमारी आज़ादी को साकार करने के लिये अपना सब-कुछ होम कर दिया, उसके साथ क्या बीती, इस सवाल ने 30 साल तक हमारी चेतना को आंदोलित नहीं किया। **हम आशा करते हैं और प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हमारे प्रिय नेताजी, भारतीय स्वतंत्रता के तीर्थ, स्वदेश लौटें।** लेकिन यह एक सपना है और एक विश्वास। अब जबकि 'टाप सीक्रेट' ब्रितानी दस्तावेज़ों के प्रकाशन ने सनसनीखेज़ रहस्योद्घाटन किये हैं, क्या जनता सरकार हमारे देश के महानतम क्रांतिकारी और महाकाव्यात्मक नायक की नियति के रहस्य-जाल को खंड कर सच्चाई को सामने लाने की आप्राण चेष्टा करेगी?"

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि आज़ाद हिंद फ़ौज के गुप्तचर अधिकारी और अंतिम समय में नेताजी के साथ रहे डॉक्टर पवित्र मोहन राय के गुमनामी बाबा से कितने घनिष्ठ सम्बंध थे। इसी की अगली कड़ी में पढ़िए गुमनामी बाबा के संदिग्ध सम्बंधों का खुलासा करती पवित्र मोहन राय की वह डायरी जिसके पन्ने रामभवन में मौजूद हैं।

## समरगुहा की घोषणा

और इसके ठीक एक वर्ष बाद प्रो. समरगुहा ने कलकत्ता की एक प्रेस कांफ्रेंस में नेताजी की एक ताज़ी फोटो जारी की थी, जिसे कलकत्ते से प्रकाशित कई समाचार-पत्रों ने 23 जनवरी 1979 को ज़ोरदार ढंग-से छापा था। (पाठकगण हमारी इस किस्त में प्रकाशित उक्त फोटो का अवलोकन करें)। इस फोटो को जारी करते हुये उन्होंने कहा था कि एक वर्ष पहले भारत के एक मंदिर में खींची गई यह नेताजी की फोटो है और आज 82 वर्ष की उम्र में नेताजी पूरी तरह स्वस्थ हैं। उन्होंने कतिपय कारणों से वह स्थान बताने से इंकार कर दिया था जहां नेताजी उस समय रह रहे थे। इस फोटो के साथ प्रो. गुहा ने जो लिखित बयान जारी किया था, समाचार-पत्रों में वह कुछ इस तरह छपा: "**भारतवासी 23 जनवरी को हमारे वक्त के महान विप्लवी वीर नेताजी सुभाषचंद्र बोस का जन्मदिन मनाएंगे। इस अवसर पर वे और ज़्यादा आनंदित होंगे अगर उन्हें यह पता चल जाए कि उनके प्रिय नेता ज़िंदा हैं।** इस वक्त वह बिल्कुल स्वस्थ हैं। 18 अगस्त 1945 को फारमोसा के ताईहोकू हवाई अड्डे पर एक विमान-दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गयी थी; इस घोषणा के अलावा आज तक कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिले हैं जिससे यह साबित हो पाता कि नेताजी की मृत्यु हो गयी है। दरअसल विमान-दुर्घटना वाली कहानी बनायी गयी थी ताकि तत्कालीन मित्र राष्ट्रों (एलाइड फोर्सेस) को चकमा देकर नेताजी भाग सकें। 17 अगस्त 1945 को नेताजी ने सायगान छोड़ा था, उसी दिन शाम को वे टयूरिन पहुंचे थे और वहां से वे आगे नहीं बढ़े? यहीं से उनके अज्ञातवास अध्याय की शुरुआत होती है। **नेताजी जिस पुण्य क्षण अपने-आपको प्रकट करेंगे—उसी दिन भारत के लोग उनसे यह जान सकेंगे कि अज्ञातवास के दिनों में उन्होंने क्या किया!"**

उपरोक्त बातों से तो यह सिद्ध होता है कि समरगुहा को मालूम था कि उस वक्त नेताजी ज़िंदा हैं और कहां पर हैं! अब क्या 'अध्यापक समरगुहा' के बंगला भाषी पैड पर लिखा गया वह पत्र (जिसे हम 'गंगा' में पहली किस्त के साथ प्रकाशित कर चुके हैं) भ्रम में नहीं डालता—जिसमें जनवरी 67 को समरगुहा गुमनामी बाबा को 'श्री चरणेषु' से सम्बोधित करते हुये लिखते हैं कि "**इस शुभ दिन को मेरा, मेरी पत्नी और हमारे सभी मित्रों की ओर से सश्रद्ध प्रणाम स्वीकार करें। भगवान से प्रार्थना है कि आप स्वस्थ रहें। सूर्योदय की प्रतीक्षा में हम सभी बेहद उतावले हैं।**" दुनिया जानती है कि 23 जनवरी नेताजी का जन्मदिवस है और किसी के जन्मदिन पर बधाई या प्रणाम उसी को किया जाता है न कि किसी दूसरे को। और फिर ये किस सूर्योदय की प्रतीक्षा में बेहद उतावले हैं—सोचने को बाध्य करता है।

और जब समरगुहा उपरोक्त फोटो को जारी करते हुये यह कहते हैं कि यह फोटो लगभग साल भर पहले भारत के एक प्राचीन मंदिर में खींची गयी थी... जहां वे योगाभ्यास और समाधि-साधना कर रहे हैं। ठीक उस वक्त गुमनामी बाबा अयोध्या के एक लखनऊवा नामक पुराने मंदिर में निवास कर रहे थे। तथा कलकत्ते में इन दो वर्षों में समरगुहा एंड पार्टी क्या कुछ कर रहे हैं इसकी पूरी जानकारी बाबा को है। जानकारी देने वाले हैं उनके परम शिष्य आज़ाद हिंद फौज़ के भूतपूर्व गुप्तचर अधिकारी डॉ. पवित्र मोहन राय।

## रहस्यमयी डायरी

पाठकों ने पिछली किस्त में डॉ. पवित्र मोहन राय के 12 सितम्बर 1980 के पत्र में पढ़ा होगा कि उन्होंने बाबा को लिखा था कि "मेरे पहले पत्र 14.8.80 में किसी-किसी के बारे में कुछ-कुछ लिखा है—स्वाभाविक कारणों से संक्षेप में, सावधानी से लिखा हूं—उसी के बारे में डिटेल्स मेरे पास डे-बाई-डे डायरी की तरह नोट हैं। अभी भेजने की हिम्मत नहीं है—आप कहेंगे तो वो समयानुसार दूंगा—वे डिटेल्स जानने भी ज़रूरी हैं।" तो क्या गुमनामी बाबा ने वे डिटेल्स मंगाये थे और डॉ. राय ने उन्हें भेजा? जी हां डॉ. राय ने उन डायरीनुमा पन्नों को भेजा। 22 फरवरी 87 को रामभवन में गुमनामी बाबा के सामानों की इन्वेंटरी बनाते समय हम लोगों को वह पत्र देखने को मिला जो इन्वेंटरी के क्रमांक 2448 पर भी दर्ज है। लीजिये आप भी उसका अवलोकन कीजिए—

"1978

10 जन: आज रजि. पत्र मिला। मुकुल

# नेताजी: एक पक्ष ज्योतिष का

**क्रां**ति पुरुष शेरे हिंद नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु जितनी विवादास्पद रही है, उनकी जन्म कुंडली, उसका फलादेश एवं प्रख्यात ज्योतिषाचार्यों का मत भी विभिन्न एवं विवादास्पद रहा है। अब यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस का निधन हो चुका है। भले ही उन्हें विभिन्न बाबाओं के वेश में फंसी ड्रेस करवाते रहकर उन्हें ज़िंदा रखने व मानने की प्रक्रिया जारी रखी जाए और बहुरूपिया बनाकर उन्हें जीवित रखा जावे:

**48 वर्ष की आयु में हवाई दुर्घटना में मरे नेताजी की आयु वर्तमान में 90 वर्ष होती है। कुछ समय के लिए उन्हें ज़िंदा मान भी लिया जाए तो सन् 1945 में लापता हुए (?) नेताजी को आज 42 वर्ष हो गये हैं। इतने वर्षों में व्यक्ति की जिंदगी ही नहीं दुनिया भी बदल जाती है। फिर भला अगर कोई उन्हें जीवित मानने का प्रचार करे तो उन्हें उम्र के इस दौर में पहचानने वाला कौन है? वस्तुतः नेताजी की संकलन रूप में जितनी जन्म कुंडलियां उपलब्ध हुई हैं वे निम्न हैं।**

**इन कुंडलियों का फलादेश भी अलग-अलग है। वैसे भी विभिन्न ज्योतिषाचार्यों से किसी भी कुंडली का फलादेश पूछा जाए, किसी का भी मतैक्य नहीं होगा।**

**राधेश्याम कौशिक ने नेताजी का जन्म लग्न वृष माना है एवं जन्म समय सवेरे 11.24 बजे।**

**डॉ. बी.वी. रमन, सम्पादक 'एस्ट्रोलोजिकल' ने भी वृष लग्न माना है।**

**(विश्व के भाग्यवानों की कुंडलियां) ले. भगवान दास मित्तल.**

**ज्योतिष मार्तण्ड 1971 जनवरी-फरवरी**

**ज्योतिष डायरेक्टरी,**

बाबू को भी पत्र दिया है, मिलकर जानने-समझने को कहा है। अगला पत्र आ रहा है उसमें संतोष बाबू, और 'प्रसाद' मास्टरजी का पत्र रहेगा—उन लोगों को खबर करके रखना है—दोनों को ही खबर कर दिया गया। प्रसाद को कहा गया कि अकेले ही आवें।

13 जन: 'मास्टरजी' (प्रसाद) अकेले ही आये। पर कोई पत्र नहीं आया, मैंने बताया—पर शीघ्र ही जान जायेंगे—वे अकेले ही आकर मिलें क्योंकि दूसरों के न रहने की बात है सो असुविधा होगी।

और भी मैंने पूछा मास्टरजी से कि उन्होंने 'किताब' का पैकेट मुझे नहीं दिया, पर पत्र में क्यों लिखा है कि मुझे दिया ? उन्होंने बताया कि भूल हो गई है, पैकेट बनाकर सुनील के यहां रखी हुई है, अबकी जाते समय दे देंगे।

16 जन: वायर और पत्र आया कि वर्तमान स्थान पर फिर जाना सम्भव नहीं है।

17 जन: मास्टरजी आये खबर लेने कि उनका पत्र है कि नहीं, पर साथ में सु-कृ-त को लाये हैं।

उनको हमलोग कहीं जायेंगे या नहीं, कोई खबर मिली या नहीं, इस विषय में कुछ न बताकर सिर्फ इतना कहा कि—मास्टरजी को देने के लिये कोई पत्र नहीं आया है। उन्होंने कहा—अगले सोमवार को आकर पता करेंगे।

यही अंतिम बार था, और नहीं आये, और किसी ने कुछ खबर भी नहीं लिया।

डॉ. राय द्वारा डायरी के रूप में लिखा गया 10 पृष्ठीय यह वर्णन बंगला भाषा में है। इन्वेंटरी बनाते समय हमलोगों के सामने जो सबसे बड़ी दिक्कत आई, वह थी—बंगला भाषा। क्योंकि वहां पर ज़्यादातर पत्र-दस्तावेज़ आदि बंगला भाषा में हैं और हमलोगों में से किसी को बंगला भाषा नहीं आती। शुरू के कुछ दिनों डॉ. टी.सी. बनर्ज़ी के परिवार के सदस्यों के आने से कुछ काम चला, लेकिन फिर उन लोगों के न आने तथा जिलाधिकारी द्वारा कोई बंगला भाषी उपलब्ध न कराये जाने से काफ़ी परेशानी होने लगी। बाद में एक अन्य प्रसिद्ध होमियोपैथ डॉ. आनंद की पत्नी श्रीमती गीता बनर्जी ने हमलोगों के अनुरोध पर काफ़ी समय देकर बंगला भाषा के पत्रों को पढ़कर—भेजने व पाने वाले का नाम पता इन्वेंटरी में दर्ज कराया। इसी बीच कई पत्रों को जल्दी-जल्दी पढ़वाकर मैं जो कुछ नोट कर लिया करता था, उसी के आधार पर यह रपट लिख रहा हूं। होना तो यह चाहिये कि शोधकर्त्ता उन पत्रों को विधिवत् पढ़ें तभी उनकी पूरी अर्थगर्भिता एवं प्रासंगिकता जाहिर हो सकती है।

वैसे इन पत्रों में कइ स्थान पर 'मुकुल' नाम आया है। कहीं ये वही मुकुल तो नहीं जिनका वर्णन शैलेश डे अपनी पुस्तक 'मैं सुभाष बोल रहा हूं' के द्वितीय खंड के पृष्ठ 53 पर करते हैं कि—"इधर बी.वी. (बंगाल वालेंटियरर्स नामक क्रांतिकारी संस्था-ले.) के प्रमुख नेता सत्य बख्शी अत्यंत व्यस्त थे। सुभाष ने जो इश्तेहार भेजा था उस पर लिखा था 'मेसेज़ टू माई कंट्री मेन' उसके नीचे बस इतना ही लिखा था 'फ्राम समव्हेअर इन यूरोप।' सुभाष के कहे मुताबिक उसकी हज़ारों-हज़ार प्रतियां बंट गई थीं। हर जगह। ...इस मामले में अमलेंदु घोष (मुकुल), निर्मल राय, कमलादास गुप्ता, जैसे दल के लोगों की भूमिका उल्लेखनीय है।" ज्ञातव्य है कि यहां पर मिले ज्यादातर पत्रों में लोगों ने अपने संक्षिप्त नामों का ही प्रयोग किया है। जैसे सुनील कृष्ण गुप्त का संक्षिप्त नाम बनता है 'सु-कृ-त'। जिसमें 'त' शब्द गुप्त के अंत से लिया गया प्रतीत होता है।

आइये अब हम इन डायरी के पन्नों के सबसे महत्वपूर्ण अंश पर आते हैं जो कलकत्ता में उन दिनों घटित घटना की अंदरुनी जानकारी देता है।

"1978

**4 सितम्बर: जनवरी माह के बाद सु-कृ-त पहली बार मिलने आये। बहुत सी बातों में असली बात बताई कि उनके हाथ में (जबकि उनकी भाषा थी कि कुछ लोगों के हाथों में) एक फोटो आई है। फोटो 'उनकी' है। और उसके बाद फोटो का विवरण दिया। फोटो भारत के किसी एक घने जंगल के पास एक पुराना मंदिर—उसी के द्वार पर 'वे' खड़े हैं। कैसे खड़े हैं, हाथ का फ़ेस क्या है, कपड़ा जो पहने हैं उसके अंतर से एक खूब मोटा ऊनी कपड़ा या मफ़लर है। देखने से ही फोटो पहचानने में कोई परेशानी न होगी, ऐसी बात है—मुख की आकृति देखकर—**

---

स्व. ह.ने. काटवे ने अपनी पुस्तक 'आध्यात्म ज्योतिष विचार' में इनका जन्म समय 4.20 बजे प्रातः माना है। नागपुर आगमन के समय काटवे ने नेताजी से उनका जन्म समय पूछा था। इनके अनुसार धनु लग्न निकलता है। उस समय 16.8.1945 को गुरु नेपचून कन्या राशि में जन्मस्थ चंद्र पर से भ्रमण कर रहे थे। हर्शल छठे स्थान में, शनि शुक्र और राहु मिथुन राशि में, मंगल वृष तथा चंद्र वृश्चिक राशि में थे। उस दिन शनि, राहु, मंगल, हर्शल से पृथक थे। अतः उनकी मृत्यु नहीं हुई। इनके अनुसार 70 वर्ष की आयु में मृत्यु का योग था।

केदारनाथ प्रभाकर: काटवे के अनुसार उस दिन चंद्र व्ययस्थान (महासागर) का प्रतीक और वृश्चिक (जल) राशि में था। इसके अतिरिक्त उस दिन रवि (शरीर स्वामी) अष्टम स्थान से भाग्य (नवम) स्थान में चला जाता है और तिथि 5.9.1945 को रवि जन्मस्थ गुरु से जा मिलता है। इससे यही सिद्ध होता है कि तथाकथित हवाई दुर्घटना के समय नेताजी जलमार्ग द्वारा अन्यत्र प्रस्थान कर गये थे।

पं. राधाकृष्ण त्रिपाठी: जन्म कुंडली के अनुसार नेताजी शतायु होंगे।

ओंकारनाथ त्रिवेदी: जन्म कुंडली के अनुसार नेताजी जीवित नहीं हैं।

बालकृष्ण इंदोरिया: ज्योतिष विद्या, विद्या न रहकर व्यवसाय मात्र रह गया है। जिससे जितनी अधिक प्राप्ति की आशा होती है, फलादेश भी उसी मुताबिक जारी कर दिया जाता है। जन्म कुंडली के अनुसार नेताजी के जीवन चिन्ह दृष्टिगोचर नहीं होते। कुंडली के अनुसार युवावस्था में किसी दुर्घटना में इनकी मृत्यु होगी।

निष्कर्ष—दृढ़ता किसी में भी नहीं है। अटकलों के रूप में राशियों की बैसाखी और कुंडलियों का दामन थामें ज्योतिषाचार्य चले जा रहे हैं, मगर नेताजी को पकड़ नहीं पा रहे हैं। लगता है नेताजी दूर, बहुत दूर जा चुके हैं। □

□ दिलचस्प

जोधपुर 1982-83

नेताजी की जन्म कुंडली. डॉ. बी.वी. रमन

देशदूत 13-1-1946 (कटक-उड़ीसा)

समरगुहा द्वारा प्रेस को जारी की गयी नेताजी की फोटो

जबकि उम्र तो काफी हुई है इसीलिये—उसी हिसाब से उम्र का परिवर्तन तो होगा ही, उनका कहना है कि फोटो 'उन्होंने' ही दिया है इन लोगों के हाथ में—जिससे कि इसे भारतवर्ष में प्रकाशित किया जाय। फोटो भी उनके पास है—पर तभी मुझे नहीं दे पा रहे हैं, परंतु जिन लोगों ने इसके प्रचार की व्यवस्था की है, उनको प्रचार की अनुमति ठीक ही मिली है—पर कब प्रकाशित करना है इसका ग्रीन सिगनल 'वे' ही शीघ्र देंगे—इसकी प्रतीक्षा करना एवं अन्यान्य कार्यादि सब ठीक कर लेना—पर अब और देर नहीं है। उन्होंने और भी कहा है कि यह वस्तु 3-4 माह पूर्व ही उनके हाथ में आई है। सब तैयारी के काम में ही दिल्ली में वे लोग व्यस्त थे—इसलिये इधर हमलोगों से नहीं मिल सके। मुझे बार-बार यही समझाना चाहे कि मुझे भी एक फोटो अवश्य मिलेगी। और भी कहा कि ठीक हुआ है और करीब 150 फोटो तैयार (कापी) हैं उनके हाथों में। किन-किनको दी जायेगी, इसकी लिस्ट भी तैयार हुई है। यह भी बताया कि—उन्होंने लिस्ट देखा है, जिसमें मेरा नाम और श्री सुनील दास का नाम भी है। बहुत से चुने हुये मंत्री, एम.पी., एम.एल.ए. लिस्ट में हैं। समाचार-पत्रों के लिये भी पूरी लिस्ट है, ज़रूरत पड़ने पर और फोटो तैयार की जायेगी। पर किसी को हाथों-हाथ नहीं दिया जायेगा बल्कि पोस्ट द्वारा भेजी जायेगी। ग्रीन सिगनल न आने के कारण उनको प्रतीक्षा करनी पड़ रही है—उपयुक्त अवसर पर 'वे' स्वयं सिगनल देंगे—अर्थात् 'उनके' साथ पूरा सम्पर्क बना हुआ है ही, तथा इसी तरह की तीन फोटो और आनी हैं—एक के बाद एक प्रकाशित की जायेंगी। प्रत्येक फोटो के नीचे 'उनकी' हस्तलिपि में कुछ वाणी रहेगी। वह लिपि न मिलने के कारण भी देर हो रही है। मिलते ही फोटोस्टेट कापी करके फोटो के साथ छापी जायेगी।

इन दूसरे लोगों में अध्यापक जी भी हैं, यह भी मालूम पड़ा।''

उपरोक्त पत्रांश में पाठकगण विशेष रूप से लिखे गये 'वे', 'उनके' व 'उनकी' आदि शब्दों पर ज़रा गौर करके देखें कि यहां पर किस शब्द का प्रयोग होना था ? आगे चलकर शायद यह बात और अधिक स्पष्ट हो।

## महत्वपूर्ण पन्ने

डॉ. पवित्र मोहन राय की डायरी के ये पन्ने बहुत महत्वपूर्ण हैं—इनमें उन महत्वपूर्ण लोगों का भी ज़िक्र है जिनके नाम बार-बार उठने वाले नेताजी प्रकरणों में अक्सर आते रहे हैं—ये लोग हैं श्रीयुत बारिन सेन व श्री एच.वी. कामथ। वे लिखते हैं:—

"27 अक्टूबर: श्री अतुल कृष्ण गुप्त जी मिलने आये। काफी बातें बताई। पता चला कि फोटो वाली बात उन्हें भी मालूम है। काफी दिनों से सु-कृ-त कलकत्ता में नहीं हैं—अधिकतर दिल्ली रहते हैं—इसलिये हमलोगों से मुलाकात नहीं होती है। उसके बाद... उन्होंने बताया कि बीच-बीच में वे श्री बारिन सेन के पास जाते हैं। श्री बारिन सेन की बात आज पहली बार अतुल कृष्ण बाबू के साथ की—पहले तो वे हिचके—बाद में जब मैंने ज़ोर देकर कहा कि सु-कृ-त के साथ बारिन बाबू के बारे में मेरी बहुत-सी बातें, बहुत दिनों से होती आ रही हैं—तभी अतुल कृष्ण बाबू ने मुंह खोला। उसके बाद बारिन बाबू के साथ कई दिनों पहले क्या-क्या बातें और घटनायें हुई, वे एक के बाद एक बताई। बारिन बाबू की बहुत-सी अद्भुत क्षमताओं के बारे में भी बताया। बारिन बाबू के साथ प्रधानमंत्री इंदिरा जी का क्या सम्बंध है, उसकी बात हुई।... ...उसके बाद अतुल कृष्ण बाबू ने बताया कि बारिन बाबू के साथ उनके पारिवारिक सम्बंध भी हैं... कुछ दिन पहले की घटना है—अतुल कृष्ण बाबू, बारिन बाबू के घर गये... अतुल कृष्ण बाबू को आता देखकर बारिन बाबू ने 'आइये अतुल बाबू' कहा और बगल बैठे सज्जन से परिचय कराया—

बारिन बाबू—'ये हैं श्री एच.वी. कामथ एम.पी.। और ये हैं सुनील बाबू के बड़े भाई अतुल बाबू।'

श्री कामथ—'कौन हमारा सुनील।'

बारिन बाबू—'हां।'

उसके बाद अतुल कृष्ण बाबू बैठे—दिल्ली और देश की राजनीति के बारे में बातें शुरू हुई। तभी तो जनता पार्टी का अंतिम समय नाना प्रकार से निकट आ रहा था—ये सब बातें बहुत देर तक हुई। अंत में—बारिन बाबू—'मि. कामथ एक बात है, जो हाल है—यदि राष्ट्रपति रेड्डी—बड़ा कुछ करके प्रधानमंत्री का दायित्व ले लेते हैं तो क्या आप उस समय राष्ट्रपति होना स्वीकार करेंगे।' थोड़ा चुप रहकर मि. कामथ बोले—'अगर ऐसा कुछ हो गया तो क्या आप लोगों के साथ अब जैसा मित्रतापूर्ण व्यवहार रहेगा—आप लोग भी क्या उसी निगाह से देखेंगे ?'

इसके बाद सबके हंसी-मज़ाक में समाप्ति। कम-से-कम मुझे और जानने को कुछ न था।''

मैं समझता हूं कि गुमनामी बाबा की वास्तविकता के अलावा भी, ये सारे गोपनीय पत्र दशकों से चले आ रहे नेताजी प्रकरण की अंदरूनी राजनीति व सोच पर भी काफी कुछ प्रकाश डाल सकते हैं। यह बात सही है कि यहां जो कुछ भी प्रो. समरगुहा एंड पार्टी कर रही थी—वह सब पवित्र मोहन राय को अच्छा नहीं लग रहा था। उनकी डायरी का अगला पन्ना—

"1978—12 दिसम्बर: सु-कृ-त आये। कई बातों के बाद एक फोटो निकाल कर दिखाया। जैसी फोटो की बात पहले बताई थी—वैसी ही देखी।

सु-कृ-त की इच्छा थी कि अपना मतामत दूं—पर मैं चुप रहा। फोटो देखकर बहुत अच्छा नहीं लगा। फिर भी कुछ नहीं बोला। उसने फोटो अपनी जेब में रख ली।

मेरे दफ्तर में दो और डॉ. बैठते हैं, और उनमें से एक डॉ. देवेश मुकर्जी हैं। इनकी देवेश बाबू से जान-पहचान है। हमलोग थोड़ी दूर पर बैठकर बातचीत कर रहे थे। अचानक सु-कृ-त ने फोटो निकालकर मुझसे कहा कि इसे डॉ. मुकर्जी को दिखाऊं। तब मुझे काफी क्रोध आया—मैंने साफ कहा, "देखिये आपलोगों की जो इच्छा हो, कर सकते हैं—मैं इन बातों में कोई हिस्सा नहीं लूंगा। और यहां आप मेरे सामने बैठकर किसी को भी नहीं दिखा सकते हैं।''

सु-कृ-त मेरी बातों से बिल्कुल खुश नहीं हुये। क्योंकि उनकी इच्छा थी इस मामले में मुझे फंसाना—सो हो नहीं सका। इसके बाद की जानी हुई बात है कि प्रो. मुकर्जी बहुत से लोगों से यह बात ज़रूर कहेंगे—और दूसरों की बातें छोड़कर—कि मैं और मेरे मित्र फोटो दिखा रहे हैं—यही प्रचार भी होगा। लगता है प्रचार का मौका लेना और मुझे फंसाने की इच्छा लेकर ही आये थे, पर ऐसा न हो सका।

फिर जाने से पहले कुछ बोले—जो असल में इस ओर इशारा था कि—हमलोगों से सम्पर्क टूट गया है और ये लोग ही असली सम्पर्क के अधिकारी हैं। समझ गया—पर मुंह बंद ही रखना पड़ा। अगले दिन ही संतोष बाबू को सब बताया। मुकुल बाबू को भी सूचित करने को कहा।''

अब देखिये घटना के असली दिनों की जानकारी किस प्रकार दी गई है गुमनामी बाबा को—

"1979—19 जनवरी: इतने दिनों बाद श्री अतुल कृष्ण बाबू आये। इस समय खोज़ खबर लेने आना स्वाभाविक ही है—कि कहीं बाहर जा रहा हूं या नहीं—खैर पूछा नहीं।

इसके बाद असली समाचार दिया। सु-कृ-त इस समय दिल्ली में हैं, अगले दिन ही आयेंगे। पहले बात थी कि 23 जनवरी के अवसर पर दिल्ली में ही फोटो प्रकाशित की जायेगी—पर वह बात बदल गई है। तय हुआ है कि यहां पर 22 जनवरी को ही प्रेस कांफ्रेंस करके फोटो व बयान ज़ारी किया जायेगा। अध्यापक, सु-कृ-त और भी कई लोग एक साथ इस मामले में तैयार होकर दिल्ली से आ रहे हैं।

यहां 22 जनवरी को प्रेस कांफ्रेंस बुलाने से 23 जनवरी को सभी समाचार-पत्रों में काफी शोरगुल होगा—देश में भी काफी हो-हल्ला होगा—जबकि दिल्ली से इतनी अच्छी पब्लिसिटी नहीं भी हो सकती है।

सब सुना—फिर से चले गये।

श्री दुलाल बाबू कलकत्ता आये हैं, उसी दिन संतोष बाबू को मिलाकर हम तीनों के मिलने की बात है। ...हमलोगों ने तय किया कि—स्वयं किसी भी मामले में नहीं पड़ेंगे—सिर्फ देखना है कि ये लोग क्या करते हैं।''

1979—22 जनवरी: दिन एक बजे सु-कृ-त आये, मुझे एक कापी फोटो की देकर बोले कि दिन 2.30 पर वे लोग प्रेस कांफ्रेंस करेंगे। प्रधान वक्ता अध्यापक जी हैं। साथ में गाड़ी भी थी—मुझसे चलने का आग्रह भी किया—पर मेरे राजी न होने पर वे चले गये।

बाद में रात में टी.वी., रेडियो में काफी भली प्रकार से इस प्रेस कांफ्रेंस और फोटो की बात को प्रचार मिला।

23 जनवरी: कलकत्ते के सभी समाचार-पत्रों में काफी अच्छे ढंग-से इस घटना का प्रचार हुआ देखा। फोटो के साथ अध्यापक के वक्तव्य को भी काफी अच्छा प्रचार मिला।''

पाठकों को अब तो अवश्य स्पष्ट हो गया होगा कि पवित्र बाबू यहां किस अध्यापक की बात कर रहे हैं। हम पहले ही बता चुके हैं कि 23 जनवरी 1979 को ऐसी ही एक फोटो अध्यापक समरगुहा ने ही ज़ारी की थी। डॉ. राय आगे भी उस समय की एक और महत्वपूर्ण घटना का ज़िक्र करते हैं—

"30 जनवरी: इस दिन समाचार-पत्र में कांग्रेस (आई) के अन्यतम नेता सुब्रत मुखर्जी का बयान छपा। साथ में 2-3 फोटो छपी हैं। और इससे यह प्रमाणित किया गया कि अध्यापक की फोटो नकली है। दूसरी फोटो से फोटो मिलाकर यह तैयार की गई है। उनका कहना है कि नेताजी के मझले भाई श्रद्धेय शरतचंद्र बोस महाशय की एक फोटो लेकर, उनके सिर का अंश काटकर—वहां नेताजी का एक मुख जोड़ दियां गया है। यह कानून के अनुसार लोगों को ठगने का मामला है और इससे नेताजी का सम्मान नष्ट किया गया है, इत्यादि। कांग्रेस (आई) की तरफ से यह भी कहा गया कि वे लोग कोर्ट में इस अन्याय के विरुद्ध केस दायर करेंगे।''

31 जनवरी: दो सज्जनों ने 2 केस दायर किया। अदालत में अध्यापक के विरुद्ध।

4 फरवरी: एक केस कोर्ट ने खारिज़ कर दिया। बाद में दूसरा केस भी खारिज़ होगा। अन्य पक्ष की ओर से और विशेष कुछ न हुआ। उनका उद्देश्य सफल रहा।

1979—6 अप्रैल: इस दिन अचानक शिशिर आ पहुंचे। कई बातों के बीच उनसे ज्ञात हुआ कि कुछ दिन पहले उनके बड़े भाई (मिहिर) से सु-कृ-त ने कहा है कि शीघ्र ही और भी तीन फोटो प्रकाशित होंगी, जिससे सब-कुछ साफ हो जायेगा—इस फोटो की एक कापी उनको भी दिया है।

17 अक्टूबर: श्री श्री सद्गुरुदेव का तार मिला।

19 जुलाई: अतुल कृष्ण बाबू आये। स्वयं ही Burma-Chain की बात F.B.—

डॉ. पवित्र मोहन राय की डायरी का पन्ना

84 की प्रशंसा की।

1980—22 सितम्बर: मास्टरजी का पत्र मिला। पत्र इसी के साथ है। वे 20.10.80 को चार लड़कों को लेकर आयेंगे। उद्देश्य—वे लड़के मुझसे ''—'' सम्बंध में बहुत-सी बातें जानना चाहते हैं। वे लड़के मास्टरजी या सु-कृ-त के साथ बारिन बाबू के पास गये हैं। अब भी जाते हैं—साधु-दर्शन के लिये—अर्थात् बारिन बाबू साधू हैं—वे ही उपदेश देते हैं।

23.9.80 को मैंने प्रश्नोत्तर में लिखा—न आये। ज़रूरत पड़ने पर मैं मास्टरजी को सूचित करूंगा—उससे पहले न आयें। और लड़कों से कोई बात करने की मुझे आवश्यकता नहीं है।''
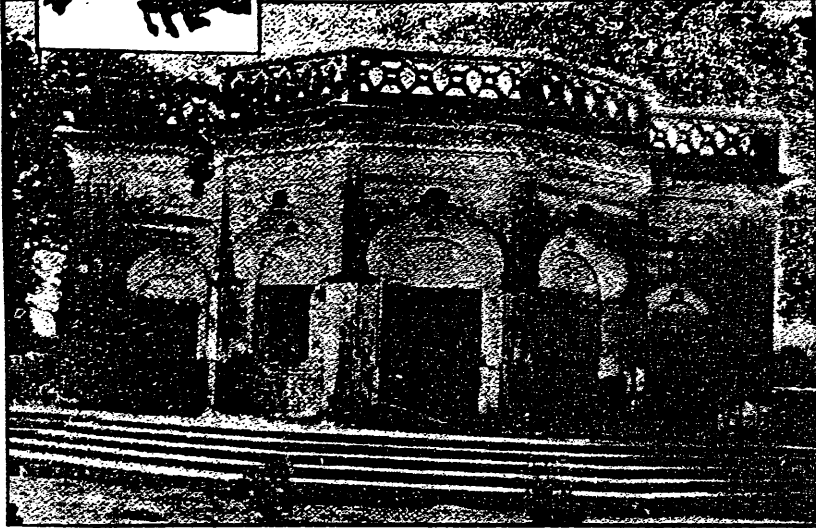
अयोध्या स्थित लखनऊवा कोठी : गुमनामी बाबा का पूर्वनिवास स्थान

और इस डायरी के आखिरी पृष्ठ पर 11 अक्टूबर को डॉ. पी राय लिखते हैं कि—

**"11 अक्टूबर: आज फिर बहुत दिनों बाद अचानक अतुल कृष्ण बाबू आये । डेढ़ घंटे तक बहुत-सी बातें करते रहे । असल में जानने की कोशिश कर रहे थे कि मैं कहीं (विशेष स्थान पर) बाहर पूजा पर जा रहा हूं या नहीं । इसी असल उद्देश्य से आये थे । काफी बातों के बीच बोले, "इतने दिनों से आपको भी कोई समाचार-खबर आदि दे रहे हैं—यह बहुत आश्चर्य की बात है—"**

**जवाब में कहा कि आश्चर्य होने की क्या बात है—लीडर तो मैं नहीं हूं । हमलोग कोई नहीं हैं । अतएव लीडर ही ठीक करेंगे । हमलोग अपनी-अपनी इच्छानुसार लीडर के काम की या तो आलोचना करते हैं या खुशी से काम करते हैं—इसलिये यह सब बातें उनलोगों के मुख से शोभा पाती हैं । या तो लीडर को मानिये नहीं तो अपने-आप लीडरी कीजिये । ऐसी ही कुछ बातें हुई ।"**

डॉ. पवित्र मोहन राय की डायरी के पन्नों के ये अंश कितने महत्वपूर्ण हैं इसका अंदाज़ा अब पाठकों को स्वयं ही लग गया होगा । आखिर में डॉ. राय यह सब-कुछ लिखकर एक साधू बाबा के पास क्यों भेजेंगे । डॉ. राय किसे लीडर कह रहे हैं ? आपको डॉ. राय का पिछला पत्र याद होगा जिसमें उन्होंने लिखा था कि..."उन्होंने अपना एक खतरनाक खेल (मेरे सतगुरुदेव को लेकर) खेला—काफी दिनों तक—अंत में 1979 के शुभ दिन में—परिणाम कोर्ट केस और कई बदनामियां हुई।" दुनिया जानती है 1979 के शुभ दिन यानि 23 जनवरी (नेताजी का जन्मदिन) को समरगुहा ने नेताजी की फोटो ज़ारी की थी और कहा था कि नेताजी जिंदा हैं । आश्चर्य है कि इससे डॉ. राय के सद्गुरुदेव (यानि गुमनामी बाबा) को क्या लेना-देना—उनका इस घटना से क्या सम्बंध ? यह विचारणीय प्रश्न है। रामभवन में हमलोगों को 23 जनवरी 1979 को कलकत्ता के प्रसिद्ध बंगला दैनिक 'जुगांतर' में छपी फोटो व खबर के साथ फोटो की एक मूल प्रति भी वहां मिली है।

## चित्र को लेकर विवाद

लेकिन इन सब तथ्यों के बाद अगर यह माना जाये कि यह फोटो समरगुहा या सु-कृ-त को स्वयं गुमनामी बाबा ने दी थी तो फिर दोबारा क्यों नहीं दी तथा हस्तलिपि क्यों नहीं दी । जबकि इन दोनों ही व्यक्तियों का गुमनामी बाबा से स्वयं सम्पर्क था । लेकिन गुमनामी बाबा की परिचारिका श्रीमती सरस्वती शुक्ला का कहना है कि एक बार समरगुहा से किसी बात पर भगवन जी बहुत नाराज़ हो गये थे और फिर आने के लिये मना भी कर दिया था । यह किस्सा अयोध्या के लखनऊवा मंदिर का ही है और उन्हीं दिनों बाबा ने गुप्त रूप से अयोध्या का वह मंदिर रातोंरात छोड़ दिया तथा रामभवन चले आये थे । तब से समरगुहा रामभवन (फैज़ाबाद) कभी नहीं आये ।

इसी तरह की एक और फोटो के बारे में 5.1.81 को पवित्र मोहन राय अपने 21 पृष्ठों के बंगला भाषी पत्र में गुमनामी बाबा को डॉ. देवेश, सुनील गुप्ता व बारिन सेन के साथ ही समरगुहा के बारे में लिखते हैं कि आई.एन.ए. के किसी मृत पंजाबी कैप्टन की पत्नी द्वारा समरगुहा को एक फोटो दिये जाने का समाचार है। फोटो जिनका है, उनका नाम न लिखकर फोटो. शब्द के आगे एक लाइन खींचकर उसे इन्वरटेड कॉमा से पवित्र बाबू घेर देते हैं । पत्र में वे आगे लिखते हैं कि मृतक कैप्टन की पत्नी ने वह फोटो. समरगुहा को इस निवेदन के साथ दिया था कि उनकी अर्थात् उन अनाम संत की कीर्ति वही फैला सकते हैं—उन पर ऐसा विश्वास है । समरगुहा ने फोटो देखकर कुछ शंका व्यक्त की, तो उक्त कैप्टन की पत्नी ने यह कहकर शंका को निर्मूल कर दिया कि ठंडक के कारण ढीले वस्त्र पहनने के फलस्वरूप फोटो में अंतर समझ पड़ता है । डॉ. राय ने आगे लिखा कि समरगुहा जब उक्त बात उन्हें बता रहे थे तो वह चुपचाप सुनते रहे, उन्होंने इस पर कोई मतामत व्यक्त नहीं किया । डॉ. पवित्र मोहन राय का यह पत्र इंवेंटरी में क्रमांक 1901 पर दर्ज है।

प्रसंगवश पाठकों को यहां यह याद दिलाना ज़रूरी है कि गुमनामी बाबा हमेशा पर्दे में रहा करते थे । उनकी परिचारिका श्रीमती सरस्वती शुक्ला का कहना है कि कलकत्ते से आने वाले व्यक्तियों को भी कमरे में जाने की इज़ाजत नहीं थी, एक बार कलकत्ते से आये एक डॉक्टर ने कमरे के अंदर जाकर बाबा को चेक किया था तो उन्होंने अपने मुंह पर 'मंकी कैप' पहनकर पूरा मुंह ढक लिया । उनका कहना है कि समरगुहा ने भी भगवन जी का प्रत्यक्ष-दर्शन नहीं किया था, लुके-छिपे किया हो तो और बात है। □

(क्रमशः)

## फैजाबाद के गुमनामी बाबा—6

# वे नेताजी नहीं थे तो कौन थे?

□ अशोक टंडन

आज से ठीक दो वर्ष पूर्व—18 सितम्बर 1985 की शाम फ़ैजाबाद में सरयूतट पर स्थित पवित्र गुप्तार घाट से सटे हुए सरकारी उद्यान में गुमनामी बाबा की जलती हुई लाश को देखकर पं. रामकिशोर मिश्र के मुंह से एक आह निकल पड़ी थी—''जहां आज 13 लाख की भीड़ होनी चाहिए, वहां आज सिर्फ 13 आदमी !''

गुमनामी बाबा उर्फ भगवन जी के बारे में कुछ न बताने की कसम खाये हुए शहर के प्रसिद्ध होम्योपैथ डॉ. पी. बनर्जी की भी उस समय यही इच्छा हो चली थी कि अब तो सब कुछ जनता के सामने खोल दिया जाना चाहिए। उन्होंने 'नये लोग' के वरिष्ठ पत्रकार श्री शिवराम शुक्ला से उस दिन कहा भी था—''ही वाज़ ही !''

सवाल उठता है, आखिर कौन पूछता—'हू वाज़ ही ?'

उस समय यह सवाल पूछा था एक छोटे से दैनिक पत्र 'नये लोग' ने। मैं उस वक्त 'नये लोग' का सम्पादक था। प्रमुखता से समाचार छापा गया। पुलिस ने जांच कराई। अधिकारियों व कांग्रेसियों ने मौन साध लिया ! बाद में देश की अन्य पत्र-पत्रिकाओं ने भी मामले को उठाया। उ.प्र. विधान परिषद् में भी सवाल पूछे गये। पुलिस दल कलकत्ता, बस्ती और नैमिषारण्य गया। मंत्री ने कह दिया कि 'वे नेताजी नहीं थे !' लेकिन हाईकोर्ट के आदेश से रामभवन फिर खुला—चौंकाने वाले पत्रों व दस्तावेजों ने इस 'खोजी खबर' को हवा में उड़ने से रोका। कहने का मतलब कि पिछले इन दो वर्षों में जहां पवित्र 'गंगा' में बहुत पानी बहा, वहीं इस विचारमयी 'गंगा' ने भी काफी कुछ सम्भावनाओं की उत्ताल तरंगे प्रवाहित कर इस अनकहे इतिहास को समुद्र-मंथन से निकालने का भगीरथी प्रयास किया है।

लेकिन उत्तर प्रदेश से लेकर दिल्ली की सरकार भी—अभी तक यह नहीं बता पा रही है कि फैजाबाद के गुमनामी बाबा अगर नेताजी नहीं तो वे कौन थे ? लेकिन अब यह बात पुख्ता तौर पर कही जा सकती है कि जब तक इस सवाल का जवाब नहीं मिल जाता कि गुमनामी बाबा आखिर थे कौन ? तब तक रामभवन से प्राप्त पत्रों-दस्तावेजों-सबूतों से पुष्ट होती यह सम्भावना अधिक बल पकड़ती जा रही है कि कहीं वह नेता जी ही तो नहीं थे ! देखा जाए तो पिछले चालीस वर्षों से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के आखिरी हिस्से को लगातार यह प्रश्न मथे डाल रहा है कि क्या वास्तव में नेता जी 18 अगस्त 1945 को हवाई दुर्घटना में नहीं मरे थे ? और अगर नहीं मरे थे तो वे कहां छिपे रहे इतने दिनों तक और क्यों छिपे रहे ?

### शॉलमारी प्रकरण

कुछ ने कहा रूस में हैं ! विदेशों में रहे ! हिमालय में हैं ! सबसे जोरदार शब्दों में कहा गया कि शॉलमारी आश्रम में हैं शारदानंद के रूप में। सन् 1960 के आस-पास दो-तीन वर्षों तक यह प्रकरण जोरों पर था। कईयों ने शॉलमारी आश्रम की यात्रा की और विभिन्न मत दिये। लेकिन हमें मिली जानकारी के अनुसार गुमनामी बाबा सन् 1958 में नैमिषारण्य आये और सन् 1964 तक वहीं रहे, फिर अयोध्या होते हुए बस्ती चले गये, जहां वे सन् 74 तक रहे। अब यहां यह प्रश्न उठ सकता है कि कहां शॉलमारी वाला प्रकरण और कहां ये गुमनामी बाबा ! इन दोनों में कैसा साम्य ? बहरहाल यह सब तो एक बहुत बड़े शोध का विषय है जिसे सच्चा इतिहासकार ही सुलझा सकता है। लेकिन हो न हो गुमनामी बाबा का कुछ सम्बंध ज़रूर शॉलमारी प्रकरण से रहा होगा। क्योंकि अगर न रहा होता तो यह पत्र वहां क्यूंकर मिलता ?

पिछले अंक में आपने गुमनामी बाबा को लिखी गयी डॉक्टर पवित्र मोहन की महत्वपूर्ण डायरी एवं उनके घनिष्ट सम्बंधों के बारे में पढ़ा। इसी की अगली कड़ी में पढ़िए शालमॉरी आश्रम एवं नेताजी के अनन्य सहयोगी श्री सुनील दास से गुमनामी बाबा के सम्बंधों की जानकारी—

नेताजी सुभाष चंद्र बोस के अनन्य सहयोगी, भक्त एवं 'जयश्री' पत्रिका के सम्पादक तथा सुभाष रचनावली (पांच खंड) के प्रधान सम्पादक श्री सुनीलदास द्वारा आज से 23 वर्ष पूर्व यानि 20.1.64 को लिखा गया यह महत्वपूर्ण पत्र अपने आप में एक सशक्त दस्तावेज है। यह पत्र उच्च न्यायालय के निर्देश पर बनी इंवेंटरी की क्रम संख्या 2372 पर पूरा का पूरा यूं दर्ज है—

"20 जनवरी सन् 1964 की सुबह अचानक मेरी मुलाकात श्री सुरेंद्र मोहन घोष एम.पी. (मधु घोष ऑफ जुगांतर ग्रुप) से बंगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रफुल्ल चंद्र सेन के कक्ष में हो गयी। उस समय मेरे साथ अन्य मित्रों के अलावा श्री हेमंत बोस भी उपस्थित थे। हम सब वहां पर सरकार द्वारा नेताजी के जन्म दिवस 23 जनवरी पर सभाओं, जुलूस आदि पर लगाये गये प्रतिबंध को समाप्त किये जाने के संदर्भ में मुख्यमंत्री से वार्तालाप हेतु गये थे।

इस संदर्भ में मुख्यमंत्री ने हमलोगों को बताया कि सरकार उक्त प्रतिबंध को उठाने हेतु गम्भीर रूप से पशोपेश में है। तथा ढाका में हुए किसी हादसे का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इस संदर्भ में अभी कोई निर्णय लेकर सरकार कोई खतरा नहीं उठाना चाहती है।

जब मुख्यमंत्री कक्ष से बाहर चले गये तो हमलोगों ने सुरेंद्र मोहन घोष से शॉलमारी आश्रम तथा नेताजी के संदर्भ में काफी देर तक विचार-विमर्श किया। श्री सुरेंद्र मोहन घोष कुछ ही दिनों पूर्व शॉलमारी आश्रम गये थे और वहां पर अपने दो दिनों के प्रवास के दौरान उन्होंने श्री शारदानंद जी से लगभग आठ घंटे वार्ता की थी। तथा शॉलमारी जाने से पहले श्री घोष श्री जवाहरलाल नेहरू, डॉ. राजेंद्र प्रसाद तथा श्री मोररजी देसाई से मिलकर गये थे।

**श्री घोष ने अपनी शॉलमारी यात्रा के संदर्भ में बताया कि उन्होंने जिस दिन रेडियो पर नेताजी की ताईहोकू में हवाई दुर्घटना के बारे में सुना**—उसी रात को श्री **सुभाष चंद्र बोस ने उनके स्वप्न में दर्शन दिया। स्वप्न में नेताजी को पाकर श्री घोष ने उनसे प्रश्न किया कि क्या आपने अपने लिये निवास का स्थान सुनिश्चित कर लिया है। इस पर नेताजी ने बगैर कोई उत्तर दिये उन्हें अपने गले से लगा लिया और श्री घोष की निद्रा टूट गई।** तब से वे **(सुरेंद्र बाबू) मानते हैं** कि नेताजी अब **जिंदा नहीं है। लेकिन विमान दुर्घटना से शॉलमारी आश्रम की कहानी की तह में जाने पर वे मानने लगे कि नेताजी जीवित हैं तथा वे कारण भी जान गये हैं जिसके कारण नेताजी सामने नहीं आ रहे हैं!**

उसके बाद श्री घोष ने बताया कि मित्र देशों (एलाइड पावर्स) ने आपसी सहमति से अधिकारिक रूप में यह घोषित किया है कि नेताजी का नाम युद्ध-अपराधियों की लिस्ट से हटा दिया जाए, क्योंकि उनकी मृत्यु हो चुकी है। इन परिस्थितियों में अगर नेताजी कभी भविष्य में कहीं पर प्रकट होते हैं तो मित्र राष्ट्र उन्हें बहुरूपिया (इम्पोस्टर) करार देंगे।

श्री सुरेंद्र मोहन घोष की सम्पूर्ण बातों को सुनकर लगा कि वे नेताजी के सम्बंध में मित्र राष्ट्रों की नहीं बल्कि भारत सरकार की नीति की ही अभिव्यक्ति कर रहे हैं।

लेकिन जब श्री घोष को लगा कि हमने उनकी उपरोक्त अभिव्यक्ति का कुछ दूसरा ही अर्थ लगा लिया है, तो उन्होंने हमारी इस अवधारणा को समाप्त करने के लिए कहा कि शॉलमारी जाने से पहले वे श्री जवाहरलाल नेहरू से मिले थे! और श्री **नेहरू ने उनको यह अधिकार प्रदान किया था कि अगर शॉलमारी के बाबा श्री शारदानंद ही नेताजी साबित होते हैं तो उन्हें यानी श्री घोष को यह अधिकार है कि वे नेताजी की उपस्थिति को अधिकारिक रूप से घोषित कर दें।** साथ ही साथ श्री घोष ने यह भी कहा कि अगर उन्हें पक्का विश्वास हो जाता कि शॉलमारी के बाबा ही नेताजी हैं तो यह भी निश्चित कर लिया गया था कि श्री राजेंद्र बाबू तुरंत शॉलमारी जायेंगे तथा श्री मोरारजी देसाई—जो उस समय लंदन में थे—को तार द्वारा सूचित करके यह निर्देश दिया जाएगा कि वह ब्रितानिया सरकार से इस संदर्भ में बातचीत करें। लेकिन शॉलमारी से वापस आने के बाद श्री घोष को यह पूरा विश्वास था कि शॉलमारी के बाबा श्री शारदानंद सिलहट के रहने वाले हैं और वे नेताजी नहीं हैं।

**इस तरह श्री घोष की बातों से तीन बातें उभर कर आती हैं। एक तो उन्हें नेताजी के जीवित होने का पूर्ण विश्वास है। और दूसरे अगर नेताजी अपना अज्ञातवास खत्म करके प्रकट होते हैं तो, उन्हें बहुरूपिया (इम्पोस्टर) करार दिया जायेगा। अगर नेताजी के अज्ञातवास के स्थान का श्री घोष को पता चल जायेगा तो वे उनसे सम्पर्क करने की कोशिश करेंगे। यह सर्वविदित ही है कि श्री सुरेंद्र मोहन घोष सब जगह श्री जवाहरलाल नेहरू के दलाल (एजेंट) के रूप में कार्य करते हैं!**

ह. सुनील दास
20.1.64"

मैं समझता हूं कि श्री सुनील दास का यह पत्र नेताजी प्रकरण में इतिहासविज्ञों के चिंतन के लिए एक नया आयाम खोल रहा होगा। पत्र पढ़ने के बाद साधारण से पाठक के मन में भी यह बात पैदा हो रही होगी कि शॉलमारी प्रकरण के समय भी नेताजी किसी और ही स्थान पर अज्ञातवास कर रहे थे। साथ ही यह बात भी पुख्ता होती है कि जरूर कहीं किसी ऊंचे स्तर पर कोई ऐसा कारण था कि जिस कारण नेताजी को जिंदा रहते हुए भी

सरयू का गुप्तार घाट: ईंटों से घिरा गुमनामी बाबा का अंत्येष्टि स्थल

सुनील दास का पत्र : सशंक दस्तावेज
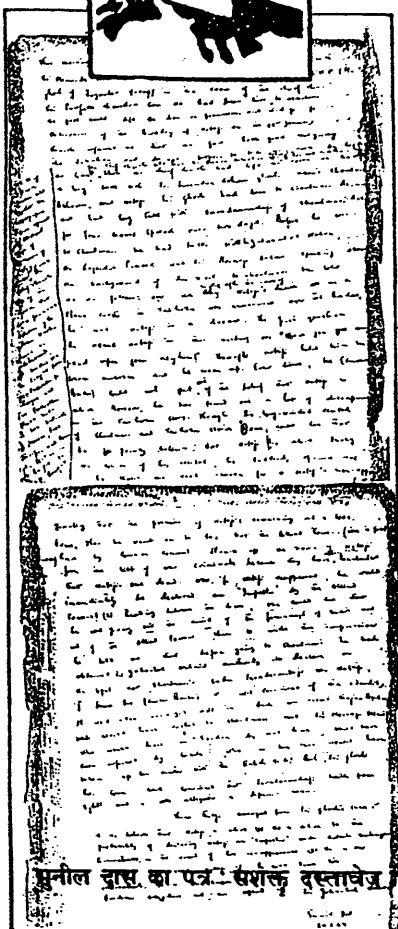
अज्ञातवास करना पड़ा।

वैसे यह भी सही है कि यह पत्र किसी को सम्बोधित नहीं है, लेकिन यह तय है कि यह पत्र (या विवरण) गुमनामी बाबा को ही लिखकर भेजा गया है, क्योंकि श्री सुनील दास द्वारा बाबा के पास कई पत्र व सामान आदि भेजने के अन्य प्रमाण भी यहां मौजूद हैं। अब प्रश्न उठता है कि नेताजी सुभाषचंद्र बोस को समर्पित एक व्यक्ति यह सब जानकारी इन 'बाबा' के पास क्यूंकर भेज रहा है। कहा जाता है कि उन दिनों शॉलमारी आश्रम में एक ही समय में तीन व्यक्ति शारदानंद के नाम से रहा करते थे। जब नेताजी उर्फ शारदानंद कहीं चले जाते थे तो 'दूसरा' व्यक्ति स्वामी शारदानंद बनकर पूरे आश्रम का संचालन किया करता था। इसका तो यह मतलब हुआ कि नेताजी किसी अन्य स्थान पर गुप्तवास किया करते होंगे उस समय। वैसे यह बात प्रो. अतुल सेन द्वारा तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू को लिखे गये बहुप्रचारित पत्र से भी स्पष्ट होती नज़र आती है।

## नेहरू जी से सवाल-जवाब

20 अगस्त सन् 1962 को कलकत्ते से भूतपूर्व विधायक प्रो. सेन नेहरू जी को उस पत्र में लिखते हैं कि—''प्रिय जवाहरलाल, **मैं सामान्य जन में फैले इस विश्वास कि नेताजी सुभाषचंद्र बोस की मृत्यु नहीं हुई है,. के सम्बंध में आपसे यह अर्ज करना चाहता हूं कि मेरा केवल विश्वास ही नहीं है बल्कि मुझे इस बात की पूरी जानकारी है कि नेताजी जीवित हैं तथा भारत में ही कहीं आध्यात्मिक साधना कर रहे हैं। लेकिन वह कूच बिहार स्थित शॉलमारी आश्रम के वह साधू नहीं हैं** जिसे लेकर **कलकत्ते के कुछ राजनीतिज्ञों ने हंगामा खड़ा कर रखा है। मैंने जानबूझ कर उस गुप्त स्थान का पता नहीं लिखा है। क्योंकि पिछले दिनों जब मेरी उनसे बातचीत हुई तो मुझे भी लगा कि वे आज भी मित्र-राष्ट्रों के द्वारा नं. 1 के दुश्मन माने जाते हैं तथा भारत सरकार मित्र राष्ट्रों के साथ एक ऐसे गुप्त समझौते से बंधी है कि उनके जीवित मिल जाने पर उन्हें मित्र राष्ट्रों को सौंपना होगा। अगर आप मुझे यह आश्वस्त कर सकें कि उनकी यह सूचना गलत है, या अगर यह सही है तो उनके प्रकट होने पर मित्र राष्ट्रों की किसी भी ऐसी कार्रवाई का सरकार जोरदार विरोध करेगी, तो मैं उन्हें प्रकट होने के लिए तैयार कर सकता हूं। कृपया आप जल्द उत्तर देने की कृपा करें।**

**आपका ए. सेन।''**

उपरोक्त पत्र की उन पंक्तियों को देखा आपने—जिसमें लिखा है कि वे जानबूझकर उनका सही पता नहीं बता रहे हैं जबकि उन्हें उस स्थान की जानकारी है। अर्थात प्रो. सेन को मालूम था कि नेताजी शॉलमारी में नहीं बल्कि कहीं और हैं! तो क्या उस समय वह जगह नैमिषारण्य ही तो नहीं थी?

बहरहाल लगे हाथ नेहरू जी द्वारा इस पत्र के सम्बंध में दिये गये उत्तर को भी आप जान लें। यह दोनों पत्र मुझे 'जयश्री' नामक पत्रिका में ही देखने को मिले हैं। 31 अगस्त 1962 को नेहरू जी ने प्रो. अतुल सेन को लिखा कि—

**''प्रिय प्रो. सेन, आपका 28 अगस्त का पत्र मिला। नेताजी सुभाषचंद्र बोस से सम्बंधित किसी गुप्त समझौते के बारे में मैंने कभी कुछ नहीं सुना है। और भारत सरकार ऐसे किसी समझौते से किसी तरह बाध्य भी नहीं है। और अगर ऐसा होने पर कोई देश उनके समर्पण की मांग करता भी है तो हम उसके लिए तैयार नहीं हैं।**

**आपका—जवाहरलाल नेहरू।''**

मैं समझता हूं कि नेहरू जी का यह पत्र बड़ा ही संक्षिप्त और शुष्क लगा होगा आपको भी। नेहरू जी अगर चाहते तो प्रो. सेन से पूछ सकते थे कि नेताजी कहां पर हैं और मैं उनसे मिलना चाहता हूं। लेकिन उन्होंने ऐसा कुछ नहीं पूछा प्रो. सेन से। न जाने क्यों? तो क्या हम यह मान लें कि नेहरू जी को यह पता ही नहीं चल पाया कि नेताजी शॉलमारी में न होकर कहां हैं? शायद उन्हें पता चल गया था, क्योंकि रामभवन से ही प्राप्त 28.9.63 को लिखे गये एक अन्य बंगलाभाषी पत्र (इंवेंटरी की क्रम संख्या 2695 पर दर्ज) के फटे हुए टुकड़ों पर लिखा है कि—''मैंने 40–45 लोगों के साथ नेताजी के बारे में आलोचना की है। प्यारेलाल नायर कलकत्ता जा रहे हैं, वह वहां से नैमिषारण्य जाएंगे। नेहरू भेज रहे हैं। यह सम्वाद बहुत ही... (पत्र फटा है)... मेजर सत्यगुप्त के साथ सुबोध चक्रवर्ती का परिचय है... ढाका से फारवर्ड ब्लॉक के सम्पादक थे। 1941 के शुरूआत में अपने को छिपाकर रखा और नेताजी के भेजे हुए आदेश के मुताबिक काम किया।''

पत्र देखने से पता नहीं चला कि किसने किसको लिखा है, क्योंकि कई टुकड़ों में फटा हुआ है लेकिन इतने से ही वह अपनी सारगर्भिता तो प्रगट कर ही रहा है।

इन सब बातों को लेकर मेरे दिमाग में भी तरह-तरह के प्रश्न उठते रहते हैं कि क्या नैमिषारण्य में गुपचुप रूप से 'साधु' बने गुमनामी बाबा ही नेताजी सुभाषचंद्र बोस थे जो वहां बैठकर शॉलमारी आश्रम प्रकरण के संचालक या सूत्रधार थे? या फिर वे कौन-कौन से लोग थे जिनके द्वारा ये कार्य संचालित हो रहे थे, या फिर उनके लिये काम कर रही हर विंग अलग-अलग थी और एक का दूसरे से कोई लेना-देना नहीं था? बहरहाल इन सारे प्रश्नों का हल बिना विस्तृत खोज व शोध के निकलना मुश्किल है, क्योंकि यहां मौजूद पत्रों की पल भर की झलक मात्र से हम कितना निष्कर्ष निकाल सकते हैं। लेकिन फिर भी ये झलक ही

हमें किसी विराट रहस्य के द्वार तक तो ले ही जाती प्रतीत होती है।

## रहस्यमय पत्र

इसी संदर्भ में एक और चौंकाने वाला पत्र काफी कुछ सोचने पर मजबूर करेगा आपको। वैसे मैं तो समझता हूं कि यह तो परोक्ष रूप से मेरी उपरोक्त बात को सिद्ध करता हुआ ही पत्र है कि गुमनामी बाबा ही शॉलमारी प्रकरण के मुख्य कारक थे। इवेंटरी की क्रम संख्या 1694 पर दर्ज बंगला भाषा के दो पृष्ठों के पत्रांश में 'इस आशय का उल्लेख है कि **शॉलमारी आश्रम के साधू को कुछ व्यक्ति नेताजी कहकर उसका प्रचार कर रहे हैं और ऐसे प्रचार से धनलाभ कर रहे हैं, और इस प्रकार के प्रचार में नेताजी के अंतरंग साथियों के नामों का उल्लेख कर रहे हैं जिसके सम्बंध में हमलोग कुछ कह नहीं सकते। परंतु लीला राय से यह अपेक्षा कर रहे हैं कि वह खुद कुछ क्यों नहीं बोल रही हैं, इस प्रकार के गलत प्रचार के खंडन करने के लिए आपके क्या निर्देश हैं।** पत्र के अन्य भाग में देश की तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों की चर्चा व जानकारी दी गई है, और उक्त परिस्थितियों में मार्गदर्शन हेतु निर्देश मांगा गया है।'

## निर्देशक कौन है?

मेरी समझ में नहीं आता कि ये नेताजी का कौन सा भक्त है, जो शॉलमारी आश्रम की खबर व क्रियाकलाप से क्षुब्ध है और उसकी खबर इन 'बाबा' को क्यों दे रहा है? तथा उस सम्बंध में या खंडन करने हेतु इनसे 'निर्देश' (पाठकगण जरा 'निर्देश' शब्द पर गौर करेंगे) व मार्गदर्शन क्यों मांग रहा है?

अब मैं इस किस्त के सबसे महत्वपूर्ण पहलू पर प्रकाश डालना चाहता हूं। श्री सुनील दास के उपरोक्त पत्र के पृष्ठ भाग यानी नं. 2 पर ऊपर तथा बाएं तरफ बंगला भाषा में कुछ इबारत अंग्रेजी रोमन लिपि में लिखी गई हैं (देखें चित्र में)! एक बात और स्पष्ट कर दूं कि ये इबारत पत्र लेखक की हस्तलिपि में नहीं प्रतीत होती है तथा मूल पत्र की स्याही से भी इसकी स्याही इतर ही है। पत्र काफी पुराना है तथा किनारे की तरफ कुछ गल-गल कर फट रहा था, लेकिन जितना हम उसे पढ़कर नोट कर सके, वह यह था—

"S.C.B. BEN CHAY—I AACHEN EBONG, SADHUR–BESHAY–AACHEN–TINI–SAKOLER–MODDHAY–ELAY. "AAMRAA–KHOOSHI–i HAUBO" (AARTHO SHOOSPASTOOO "ALL's FAIR IN LOVE AND WAR")

पत्र के बाएं तरफ लिखा है—

"NACHHODBAANDAA—HAA–BAATAY" JE, "PELLARD—ER'—MOTO, BENCHAY—i AACHAY : E–KATHAA TEEN—POKKHO–i PAAKKAA–i JAANAY. SHOODHOO 'CHAAR–FELAY BONDSHEETAY–KHE–Li–AY "DYANGAAY–TOOLTAY PAAR–CHENAA... U.S.A.R. SARBOCHCHA ODHIKARI—RAA–O ,..

अर्थात एस.सी.बी. जिंदा है और साधू के छद्म वेश में है! यदि वह सबके बीच आ जाएं तो हम लोग बहुत खुश होंगे।

(अर्थ सुस्पष्ट है... युद्ध और प्यार में सब जायज़ है!)

पत्र के बाएं तरफ लिखा है—

"चिपको-कंगाल" जो कि "प्रहलाद की तरह" जिंदा ही हैं; यह बात तीन पक्ष ही पक्की तरह से जानते हैं। सिर्फ चारा डालकर बैठा हूं पर मछली कांटे से फंसाकर पानी से ऊपर ला नहीं पा रहा हूं... यू.एस.ए. के सर्वोच्च अधिकारी भी...

बहरहाल, पत्र के ऊपर व बगल में लिखी गई इन पंक्तियों का अर्थ विशेषज्ञ ही निकाल सकते हैं कि क्या लिखा है और इसका अर्थ व संदर्भ क्या है तथा यह इस पत्र पर किसने लिखा है? क्यों लिखा है? क्या 'गुमनामी बाबा ने स्वयं लिखा है? या फिर किसी और ने लिखा है? यह सब बातें बड़ी ही विचारणीय व पूरा शोध व विवेचन मांगती है।

लेकिन मैं अपनी खोज से थोड़ी सी आपकी मदद कर दूं। उपरोक्त लिखावट के संदर्भ में मैं दो बातें स्पष्ट करना चाहूंगा! एक तो यह कि उक्त पत्र में ये चंद पंक्तियां जिस तरह बंगला भाषा को अंग्रेजी रोमन लिपि में लिखा गया है उस तरह गुमनामी बाबा की लिखने की आदत रही है क्योंकि बीसियों स्थान पर हमलोगों ने देखा है कि बाबा ने इसी तरह लिखा है इसका प्रमाण हम आगे चलकर आपको देंगे। दूसरी बात जो मुझे महत्वपूर्ण लगती है वह यह है कि 7.12.37 को नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने श्री अशोक को जो पत्र लिखा है (पत्र पुस्तकों में प्रकाशित हैं) उसमें पत्र के प्रारम्भ के दूसरे पैराग्राफ में ही उन्होंने पत्र के अगल-बगल दो स्थानों पर अंग्रेजी में एस.सी.बी. (S.C.B.) लिखकर लघु हस्ताक्षर बनाया है जबकि पूरे पत्र के अंत में केवल 'सुभाष' (अंग्रेजी में) लिखकर हस्ताक्षर किया है। अर्थात नेताजी की यह आदत रही है कि वे अपने को एस.सी.बी. लिखकर भी प्रगट करते थे।
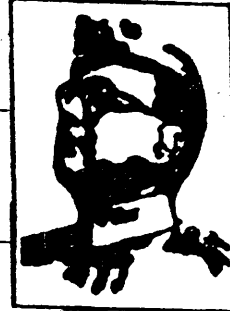
अतुल सेन और नेहरूजी के पत्र की फोटोप्रति

फिर वही मूल प्रश्न उभर कर हमारे और आपके सामने आ जाता है कि यह सब लिखा हुआ पत्र 'बाबा' के पास क्योंकर मौजूद है? आखिर वह कौन सा 'साधू' था जिसके पास नेताजी से सम्बंधित इतनी जानकारियां मौजूद थीं? कुछ लोगों के मुंह से बेसाख्ता निकल जाता है कि वह कोई नेताजी का 'सहयोगी' या 'अनुयायी' रहा होगा! ऐसा ही कहा है आजाद हिंद फौज के मशहूर कर्नल पी.के. सहगल (सम्प्रति—नेताजी रिसर्च ब्यूरो, कलकत्ता के अध्यक्ष) तथा फारवर्ड ब्लॉक के प्रमुख पत्र 'जन गर्जन' के सम्पादक श्री देवव्रत शास्त्री ने।

जहां कर्नल सहगल ने गोलमाल शब्दों में इंकार करने की औपचारिकता निभाई है वहीं पर श्री देवव्रत शास्त्री ने कहा कि वे नेताजी के सहयोगी या अनुयायी थे। अर्थात न तो कर्नल सहगल यह बताते हैं कि वे अगर नेताजी नहीं थे तो कौन थे और न ही शास्त्री जी उस अनुयायी या सहयोगी का नाम ही बताते हैं। **(क्रमशः)**

लक्ष्मणपुरी, फैजाबाद

## फ़ैज़ाबाद के गुमनामी बाबा—7

अक्टूबर का महीना—जहां एक ओर रूस की महान क्रांति व हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जैसी विभूति का जन्मदाता माना जाता है। वहीं पर भारत को अंग्रेजों से आज़ाद कराने वाली ताकतों में सबसे अहम भूमिका निभाने वाले महान क्रांतिकारी सुभाषचंद्र बोस की 'आजाद हिंद सरकार' एवं 'आजाद हिंद फौज' (I.N.A.) का स्थापना दिवस भी इसी अक्टूबर की कोख से ही जन्मा था। आज हम उसे भूलते जा रहे हैं शायद !

☐

इससे पहले कि हमलोग आज़ाद हिंद फौज के कर्नल सहगल व फारवर्ड ब्लॉक के श्री शास्त्री की प्रतिक्रियाओं का छिद्रांवेषण करें—हम आपको शैलेश-डे की पुस्तक 'मैं सुभाष बोल रहा हूं' (तृतीय खंड) के पृष्ठ 226–27 पर ले चलते हैं—

''बाकी बातें अय्यर साहब की जुबानी सुनो :

परंतु नेताजी कहां जाएंगे, यह सवाल हममें से किसी ने नहीं पूछा। पर हम जानते थे कि यह हवाई जहाज मंचूरिया की तरफ जाएगा। नेताजी सोच रहे थे, हम लोग जानते हैं, इसलिए उन्होंने भी कुछ नहीं कहा।

उन्होंने बगल वाले कमरे में जाकर बात की और वापस चले आये। बोले, 'और एक सीट मिल गई है। हबीब, तुम मेरे साथ चलो। तुम सब भी हवाई अड्डे तक चलो। क्या पता, दो-एक सीटें और मिल सकती हैं।'

''पर सामान। इन सब चीज़ों का क्या होगा? साथ में कुछ ज़रूरी कागजात भी तो कुछ कम नहीं हैं—उनका क्या होगा?''

'जो बहुत ज़रूरी हैं, वह साथ जाएंगे। बाकी को नष्ट कर डालो।'

देवदास ने जल्दी से एक पैकेट उनकी तरफ बढ़ाते हुए पूछा, ''इसका क्या होगा सर!''

'यह क्या है?' सुभाष ने कौतुहल के साथ पूछा।

'आपके हेड क्वार्टर का राष्ट्रीय झंडा है।'

क्षणभर के लिए सुभाष ने सोचा। फिर बोले, 'इसे अभी अपने ही पास रहने दो। खूब सम्भाल कर रखना।'

फिर उसी पुस्तक के पृष्ठ 240 पर लिखा है—

''हां, देवनाथ दास, गिरफ्तार किये जाने से पहले, सतर्कता का ध्यान रखकर, नेताजी का वही राष्ट्रीय झंडा हो ची मिन हेड क्वार्टर के प्रिंस सूफानोव के पास रख आये थे।

बाद में 1948 में वियतनाम से प्रतिनिधियों का एक दल भारत के साथ मैत्री सम्बंध स्थापित करने आया था। वे लोग अपने साथ नेताजी के हेड क्वार्टर पर फहराया जाने वाला यह राष्ट्रीय झंडा साथ लाए थे और उन्होंने देवनाथ दास को अपने हाथों से झंडा वापस सौंप दिया था।''

अब आइये एक बार हमलोग फिर चलें फ़ैज़ाबाद। यहां लोग अभी तक यही जानते व मानते रहे कि पर्देवाले गुमनामी बाबा मात्र एक 'साधू बाबा' हैं। जी हां—वे एक 'साधू-संत' ही थे। उनके पास कमली-कम्बल, रुद्राक्ष-तुलसी की माला, गेरुआ वस्त्र-झंडा-डोरी सब था। लेकिन, चौंकाने वाली बात—वहां पर एक राष्ट्रीय झंडा भी था। बहुत करीने से ट्रंक में सुरक्षित रखा हुआ। मैं नहीं जानता कि यह वही झंडा है, जिसे देवनाथ दास को रखने के लिए नेताजी ने दिया था। मगर यहां भी एक बड़ा राष्ट्रीय झंडा मौजूद है, जिसे भारत मां की चरणों में गुमनाम पड़े एक 'साधू-संत' ने बड़ा सहेज कर रख छोड़ा है। हाईकोर्ट इलाहाबाद की लखनऊ बेंच के आदेश से फ़ैज़ाबाद के रामभवन में गुमनामी बाबा के सामानों की बन रही इंवेंटरी के क्रमांक 1025 पर यह राष्ट्रीय ध्वज सूचीबद्ध है।

सामान के साथ ही मिला है चार पृष्ठों का, चार टुकड़ों में फटा हुआ एक बंगला भाषा का पत्र (क्रमांक



पिछले अंक में आपने नेताजी के अनन्य सहयोगी सुनील दास के गुमनामी बाबा से घनिष्ठ सम्बंधों के बारे में पढ़ा। अब इसी की अगली कड़ी में पढ़िए कलकत्ता स्थित 'नेताजी रिसर्च ब्यूरो' की भूमिका और इसके अध्यक्ष कर्नल सहगल के गुमनामी बाबा से सम्बंधित विचार—
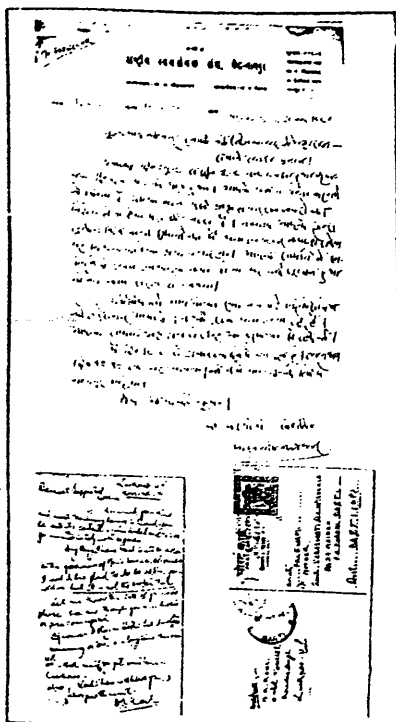
**रामभवन से प्राप्त आर.एस.एस. के सरसंघचालक गोलवलकर का पत्र एवं बी.के. कौल द्वारा लिखित पोस्टकार्ड की फोटो प्रति**

1742) भी। श्री चरणेषु से सम्बोधित इस पत्र के लेखक का नाम हमलोग नहीं पढ़ पाये हैं। इस पत्र में लेखक ने 'नेताजी की हवाई दुर्घटना' की खबर के बाद अपने व देवनाथ दास द्वारा किये गये कार्यों व घटनाक्रमों का वर्णन किया है, जिसमें कई स्थानों पर अंग्रेजी में लिखे हिकारी किकान, वायरलेस सेट, रिवाल्वर्स, पिस्टल, स्टेनगन, ब्रिटिश करेंसी, ब्रिटिश मिलिट्री, बैंकॉक, प्लेन एम्सीडेंट, सीक्रेट ऑर्गेनाइजेशन, हनोई, लाओ, प्रिंस, थाई मिनिस्टर, कर्नल थान, आर्म्स-अम्यूनिशन, सरेंडर, आई.एन.ए. आदि शब्दों का कई बार प्रयोग किया गया है।

अब उपरोक्त वर्णित शैलेश-डे की उसी पुस्तक के बारे में, आजाद हिंद सरकार के मंत्री एवं इंडियन इंडीपेंडेंस लीग, पूर्वी एशिया के जनरल सेक्रेट्री श्री देवनाथ दास के विचार पढ़िये—"पूजा स्थल के नियोन लाइट पर ही हमारी नज़र रहती है, मां के चरणों के पास मिट्टी का दिया जल रहा है या नहीं, उधर कोई नहीं देखता है।"

काश ! कोई तो पूछे इस क्रांतिकारी से, कि वह 'दिया' कौन है ? और कहां जल रहा है ?

## कर्नल सहगल का तर्क

विगत दो वर्ष पूर्व 'नये लोग' में इस समाचार के उद्घाटित होने के बाद लखनऊ से प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक 'नार्दन इंडिया पत्रिका' ने भी जब महीने भर तक इस घटनाक्रम को विस्तार से छापा, तो कलकत्ता स्थित नेताजी रिसर्च ब्यूरो के अध्यक्ष एवं आई.एन.ए के कर्नल पी.के. सहगल ने रस्म अदायगी के रूप में एक खंडन अखबार को भेज दिया, जो 31 जनवरी 86 के अंक में छपा है।

कर्नल सहगल अपने पत्र में उक्त समाचार पत्र के सम्पादक को लिखते हैं कि, "महोदय, 'फैजाबाद के बाबा' के सम्बंध में खोज कर रहे, आपके सम्वाददाताओं द्वारा लिखे गये लेखों की एक श्रृंखला हाल ही में 'पत्रिका' में देखने को मिली।

यद्यपि उनलोगों ने साफ शब्दों में तो नहीं कहा है, लेकिन वे लोग अपने लेखों के माध्यम से यह कहना चाह रहे हैं कि फैज़ाबाद के बाबा नेताजी सुभाषचंद्र बोस हो सकते हैं। मैं दृढ़ता के साथ उन खोजकर्त्ताओं के बारे में कहना चाहता हूं कि अगर वे लोग वास्तव में नेताजी के स्वभाव व चरित्र के बारे में जानते, तो ऐसी आधारहीन बात न कहते।"

पत्र में आगे कर्नल सहगल ने अंग्रेजों द्वारा भारत विभाजन की योजना पर नेताजी की धारणा व उन पर मुस्लिम लीग के भरोसे का वर्णन करते हुए लिखा है कि, "यदि सन् 1946 में नेताजी जीवित होते तो बंटवारे के ऐसे माहौल में वह भारत की रक्षा करने ज़रूर आते, और फिर उन्हें दुनिया की कोई ताकत भारत लौटने से नहीं रोक सकती थी।"

पाठकगण, यहां ध्यान अवश्य देंगे कि नेताजी के जिंदा न रहने का बस, यही एक कारण कर्नल सहगल साहब मानते हैं !

वे फिर कहते हैं कि, "जब से ताइवान में नेताजी की हवाई दुर्घटना में हुई मृत्यु की खबर आई है, तब से लेकर बहुत से 'स्वामियों व बाबाओं' के अनुयायी यह अफवाह फैलाते आ रहे हैं कि उनके 'बाबा लोग' ही नेताजी हैं। इन अफवाहों का बहुत से खुदगर्ज राजनीतिज्ञों ने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए फायदा उठाया है। और ऐसा करके वे नेताजी की स्मृति को बदनाम कर रहे हैं। नेताजी के जन्म-दिवस 23 जनवरी के अवसर पर मैं कलकत्ते स्थित नेताजी भवन गया था। अपनी कलकत्ते की इस यात्रा के दौरान मैं उनके परिवार के कई सदस्यों तथा पुराने अनुयायियों से मिला। उन सभी लोगों का कहना था कि, 'फैजाबाद के बाबा' से उनका कभी कोई सम्पर्क नहीं था। तथा वे सभी लोग हृदय से मेरी इस भावना के साथ है कि these Pretenders and their Promoters [अर्थात ऐसा झूठा दावा करने वाले (या कपटी) तथा उनके प्रोत्साहक लोग] नेताजी की स्मृति को बदनाम कर रहे हैं।

## नेताजी रिसर्च ब्यूरो की भूमिका

कर्नल सहगल साहब आई.एन.ए. के बहुत बड़े सेनानायक रह चुके हैं। इन्होंने ही इम्फाल के रणांगन में पांच हज़ार फुट ऊंची पोपा पहाड़ियों पर आज़ाद हिंद फौज के मुक्ति संग्राम में वीर जवानों का नेतृत्व किया था। और आज कलकत्ता स्थिति 'नेताजी रिसर्च ब्यूरो' के अध्यक्ष भी हैं। लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि उनका ब्यूरो कैसा रिसर्च कर रहा है ? किसे खोज रहा है ? क्या खोज रहा है ?

मेरा कहना है कि अगर कर्नल साहब को पूरी तरह से यकीन था, कि नेताजी की मृत्यु ताईवान की हवाई दुर्घटना में हो चुकी है, तो फिर एक 'बाबा' की खबर से विचलित होकर वह क्यों दौड़े-दौड़े कलकत्ते चले गये नेताजी के परिवार वालों या उनके साथियों से 'कुछ' पूछने ? इससे तो यह सिद्ध होता है कि उन्हें भी हवाई दुर्घटना में हुई नेताजी की मृत्यु वाली खबर पर विश्वास नहीं है। इसीलिए उन्होंने कलकत्ता जाकर सबसे सलाह-मशविरा करके उपरोक्त बयान जारी कर दिया। वैसे सहगल साहब ने भी स्पष्ट रूप से इस पत्र में कहीं नहीं कहा है कि 'फैज़ाबाद के बाबा, नेताजी नहीं थे !'

हम यह माने लेते हैं कि सहगल साहब को भी अभी तक पूरी तरह यकीन नहीं हो पाया है कि नेताजी की मृत्यु हो ही गई है। तब फिर, जब फैजाबाद में इस तरह की खबर आई, विवाद उठा, संदेहात्मक प्रमाण मिले तो क्यों नहीं सहगल साहब ने फैजाबाद आकर, सब कुछ अपनी आंखों से देख लेने की जहमत उठाई, जबकि वे देश के सबसे बड़े 'नेताजी रिसर्च ब्यूरो' के अध्यक्ष भी हैं ? सहगल साहब के शहर कानपुर से फैजाबाद मात्र 25–30 रुपये किराये की दूरी पर ही स्थित है, जबकि कलकत्ता हज़ारों मील दूर। और फिर रामभवन जाने का कष्ट उठाये बगैर, तथा वहां मिले सामानों, दस्तावेजों व कलकत्ता निवासी नेताजी के अनुयायियों के पत्र आदि देखे बगैर, उन्होंने कैसे कह दिया कि उनके अनुयायियों या परिवार वालों का 'फैजाबाद के बाबा' से कोई सम्पर्क नहीं था ?

क्या कर्नल सहगल कलकत्ते में डॉ. पवित्र मोहन राय, प्रो. समर गुहा, विश्वनाथ राय, अमल राय, जगतजीत दास, आशुतोष काली, देशबंधु चितरंजन दास की पत्नी श्रीमती वासंती देवी, कौशल किशोर, अमलेंदु घोष, सुनील कृष्ण गुप्त, अतुल कृष्ण गुप्त, त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती 'महाराज', साधनचंद्र दास, शैलेंद्र कुमार, नंदलाल चक्रवर्ती, संतोष कुमार भट्टाचार्य, जगत जितेंद्र भूप बहादुर, सुरजीत, तरुण कुमार मुखर्जी, मिहिर दास, शैला सेन आदि में से किसी से भी मिले थे ? इसमें काफी लोग अभी भी जिंदा हैं। और ये सभी लोग नेताजी के करीबी आई.एन.ए., श्री संघ, बंगाल वालेंटियर्स (बी.वी.) से सम्बंधित हैं या फिर नेताजी के अनुयायी ही हैं, और इन सभी के द्वारा गुमनामी बाबा से किये गये पत्राचार रामभवन में मौजूद हैं। जो यह दर्शाते हैं कि ये सभी लोग गुमनामी बाबा की असलियत से परिचित थे तथा इन सभी का पिछले कई वर्षों से उनसे लगातार सम्बंध बना हुआ था।

वैसे एक बात और हो सकती है कि कर्नल सहगल यह सब कुछ जानते हों ? और जान-बूझकर, या फिर

किसी कारणवश वास्तविकता को प्रगट ही न करना चाहते हों ! मेरे ख्याल से ये वही राष्ट्रभक्त कर्नल सहगल साहब हैं, जिन पर अंग्रेज़ों ने दिल्ली के लाल किले में राजद्रोह का ऐतिहासिक मुकदमा चलाया था। और इनको छुड़ाने वाले प्रमुख वकीलों में पं. जवाहरलाल नेहरू भी एक थे।

अंग्रेजों को मजबूर होकर उस मुकदमे से मेजर जनरल शाहनवाज़ खां, कर्नल सहगल और मेजर ढिल्लन को बरी करना पड़ा था। पूरा देश अपनी इस विजय से उल्लसित था। बाद में इन्हीं शाहनवाज खां ने अपनी जांच में नेताजी को मृत घोषित किया था और नेहरू मंत्रीमंडल के पार्लियामेंट सेक्रेट्री हो गये थे। लेकिन कर्नल सहगल ?

## साधू नेताजी का सहकर्मी था ?

मुझे लगता है, कि सिर्फ आई.एन.ए. के अधिकारीगण ही नहीं, नेताजी की फारवर्ड ब्लॉक पार्टी के नेता व अनुयायीगण भी बहुत कुछ—जान-बूझकर छिपा रहे हैं ! वर्ना फारवर्ड ब्लॉक पार्टी के प्रमुख प्रवक्ता मासिक पत्र 'जन गर्जन' के सम्पादक श्री देवदत्त शास्त्री अपने नवम्बर 85 के अंक की सम्पादकीय में यह क्यों लिखते कि... "अयोध्या, जिला फैजाबाद में एक बंगाली साधू रहा करते थे—वे विरक्त थे, पर जवानी के दिनों में वे 'नेताजी' के न केवल भक्त थे, बल्कि उनके सहकर्मी थे।"

अब, अगर हम, शास्त्री जी की बात को ही मान लें, कि वह व्यक्ति नेताजी का कोई अंधभक्त बंगाली सहकर्मी ही था। तो प्रश्न उठता है कि वह बंगाली व्यक्ति इस तरह अपने को छिपाकर क्यों रखता था ? क्यों पर्दे की आड़ में रहता हुआ भी देश-दुनिया की सारी सम-सामायिक हलचलों से वाकिफ भी रहना चाहता था ? फिर, नेताजी से सम्बंधित साहित्य या प्रकरण में अभी तक किसी बंगाली या व्यक्ति विशेष का नाम क्यों नहीं आया, जो इस तरह इतिहास की बीच-धारा से अचानक ही गायब हो गया हो ? या फिर, दुनिया में नेताजी का ऐसा कौन-सा भक्त था, जिसका जन्मदिन भी वही हो—जन्म समय भी वही हो, जो नेताजी सुभाषचंद्र बोस का था ? क्योंकि उपरोक्त वर्णित अनेकों बंगाली 23 जनवरी को ही उसका जन्मदिन मनाने अयोध्या, बस्ती व फैज़ाबाद आते थे, या फिर, पत्र या टेलिग्राम से जन्मदिन की बधाईयां भेजते थे ! और फिर जब श्री देवदत्त शास्त्री जी उस व्यक्ति के बारे में इतना कुछ जानते ही हैं, तो क्यों नहीं उसका नाम बता देते हैं ? क्योंकि सिर्फ मैं ही नहीं, आज पूरा राष्ट्र उसका नाम जानना चाहता है।

लेकिन ऐसा कोई 'नाम' हो तब बताएं शास्त्री जी ! ऐसा कोई नाम आज तक इतिहास की पकड़ में भी नहीं आया है ! आखिर उस व्यक्ति (गुमनामी बाबा) का भी तो कोई न कोई नाम, पता व ठिकाना अवश्य रहा होगा, जिसे कम से कम सरकार तो ढूंढ़ ही निकाल सकती है। लेकिन आज सरकार भी उस व्यक्ति की कोई जानकारी देने से कतरा रही है ! आखिर क्यों ? क्योंकि शायद यहां, ये दोनों बिंदु एक न हो जाएं कहीं—

"एक गुमनामी था
नाम की तलाश में,
एक नाम—
खोजता रहा गुम हुए को !
—गुमनामी सुभाष !"

याद है आपको, शॉलमारी वाले बाबा ने भी कहा था कि, "मैं वह प्राणी नहीं हूं, जिसे अचानक आसमान से डाला गया हो। निश्चित ही मेरा कुछ इतिहास है।" ठीक इसी तरह गुमनामी बाबा का भी पूर्व का कुछ इतिहास होगा ? नाम होगा ? पता होगा ? आखिर पता तो चले कि ये बाबा कौन थे ?

मेरे उपरोक्त कथन पर बहुत से पाठकगण यह सोच रहे होंगे, कि आखिर ये लोग ऐसा क्योंकर चाहेंगे, कि नेताजी की गुमनामी जिंदगी के रहस्य के बारे में दुनिया को पता ही न चले ? कई कांग्रेसियों, फारवर्ड ब्लॉक के लोगों व नेताओं तथा नेताजी के अनुयायियों आदि की बातों, प्रतिक्रियाओं व उनके लेखों आदि से मुझे भी ऐसा ही लगा है। उन लोगों का कहना है कि नेताजी जैसे महान विप्लवी क्रांतिकारी द्वारा 40 वर्ष तक गिरफ्तारी के भय से छिपकर रहने, या संन्यास लेकर चुपचाप जिंदगी बिताने के बारे में अगर दुनिया को पता चल गया, तो इससे उनकी साख व समर्थकों को धक्का लग सकता है। क्योंकि आप लोगों ने भी देखा होगा कि आज भी बहुत से ऐसे लोग हैं—जो यह कहकर कि 'नेताजी जैसा आदमी इस तरह, इतने दिनों तक छिपकर (या डर कर) रह ही नहीं सकता'—अपने दिलो-दिमाग पर एक चस्पा लगाकर, बहस (या मौजूदा तथ्यों) से अपना मुंह मोड़ लेते हैं। क्या एक चिंतनशील मानव का यह 'आदमियता' से पलायन नहीं कहा जाएगा ?

## जब रहस्य से पर्दा उठेगा ?

मगर, ऐसे लोगों से मेरा सिर्फ इतना भर कहना है कि, आज आप इस बात को छिपाना ही चाहते हों, तो जरूर छिपा लें। लेकिन दस-पंद्रह वर्ष से ज़्यादा नहीं छिपा पाएंगे। क्योंकि वह दिन दूर नहीं है, जब इंग्लैंड स्वयं वह सब गुप्त दस्तावेज जारी करेगा—जिसका बहुतों को इंतजार है ? अंग्रेज इतिहासकार लियोनार्ड मोसले की वह बात आपको याद है न—"Official documents dealing with transfer of power in India will not be officially released untill 1999.—Leonard Mosley" अर्थात हम-आप छिपा भी लें, मगर इतिहास नहीं छिपायेगा। आगे चलकर यह रहस्य उद्घाटित होना ही है—हां, यह हो सकता है कि तब तक शायद ही कोई सहकर्मी नेताजी का बचा हो, यह सब जानने-सुनने के लिए।
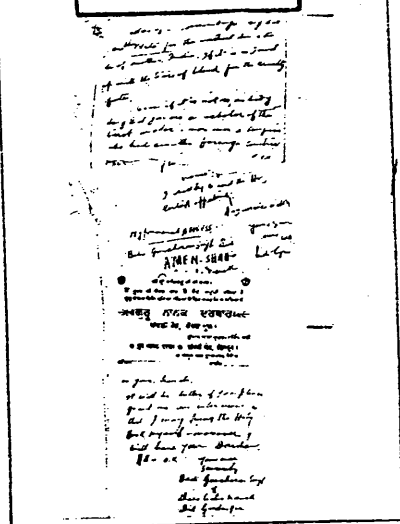
बेदी गुरुचरन सिंह के पत्रों की फोटो प्रति

लेकिन, अगर मान लीजिए कि नेताजी ने सब-कुछ त्यागकर 40 वर्ष तक एक संन्यासी की तरह राष्ट्रधर्म का व्रत लेकर कोई साधना ही की हो (अगली किस्त में इसी विषय पर 'तथ्यों' सहित हम विचार करेंगे) तो क्या वह हमारे उन महान ऋषि-मुनियों की श्रेणी में नहीं आ जाते हैं, जिनके तपस्वी व त्यागी जीवन के आदर्शों को जानकर हम उनका अनुगमन कर सकें ? या फिर, इससे भी इतर कोई अद्वितीय उदाहरण रहा हो, जिसे हम जानने से वंचित ही रह जाएं ! या फिर, उस क्रांतिकारी योगी ने मात्र हमारी और आपकी खातिर अपने जीवन की—इतनी बड़ी कुर्बानी कर एक परित्यक्त के रूप में ही निर्वासित जिंदगी बिता दी हो, तो क्या हम सब, या पूरा राष्ट्र इतना कृतघ्न हो चला है कि भारत के इस महान क्रांतिकारी को उसके जीवन बलिदान का यही सिला दें ? उसके त्यागमय जीवन को गुमनामी के अंधेरे में यूं ही खो जाने दें ? सर्वविदित है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम अपने निर्वासित जीवन (जंगल के), तथा महात्मा बुद्ध अपने त्यागी जीवन एवं अरविंद घोष अपने संन्यासी जीवन के कारण ही आज भगवान व महर्षि की उपाधि से विभूषित हैं। इसलिए, अगर ऐसा ही कुछ हमारे प्रिय नेताजी के

साथ भी घटित हो गया हो—तो उसे पहले जानिए, भेदिये तो! कौन जाने किसी विराट सत्य का साक्षात्कार हो जाये हम-सबको! याद है न आपको, ऐसी ही खोज कर रहे अपने एक शिष्य से गुमनामी बाबा ने क्या कहा था—"Seek and thou shall find." अर्थात तुमने खोजा तो अवश्य पाओगे! □

## गोलवलकर और गुमनामी बाबा

तो आइये, हम लोग फिर चलते हैं अपनी उसी खोज-यात्रा पर। प्रश्न उठता है कि क्या सिर्फ कलकत्ते के कुछ बंगाली ही बाबा के बारे में जानते थे, और उनके सम्पर्क में थे? राममवन से जवाब मिलता है, नहीं! ऐसा नहीं था! इस महान भारत-भूमि की और भी कई हस्तियां थीं, जिनसे बाबा की खतो-किताबत थी, और उसके कुछ सबूत राममवन के सामानों में मौजूद भी हैं। उनमें से प्रमुख हैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघ चालक मा.स. गोलवलकर जी का एक पत्र।

गुरु गोलवलकर जी द्वारा गुमनामी बाबा को श्री विजयानंद जी महाराज के सम्बोधन से अपने पैड पर लिखा गया सन् '72 का ये पत्र इंवेंटरी की क्रमांक 2369 पर दर्ज है। पूरा पत्र इस प्रकार है—

"पूज्यपाद श्रीमान स्वामी श्री विजयानंद जी महाराज

सेवा में शतशः प्रणाम।

आपका दि. 25–8 से दि. 2–9 तक लिखा हुआ कृपा पत्र दिनांक 6–9–72 को प्राप्त हुआ। आपके पवित्र अंतःकरण में जो चिंता है, उसी का बल मुझे प्राप्त होकर सब संकटों का निरास होगा, ऐसा मेरा विश्वास है तथापि आपके द्वारा सूचित किये तीनों स्थानों का मैं पता लगाकर क्या हो सकेगा, यह निश्चय करने का प्रयत्न करूंगा। आपकी सम्मति में इन तीनों में से उपकारक क्या होगा, यह यदि सूचित हुआ तो मेरा काम सरल हो जाएगा।

इसी विषय में आप श्री का एक पत्र मेरे निजी सचिव को उद्देश्य कर आया है। वे भी सब पता लगा रहे हैं। आपकी सम्मति प्राप्त होने से उन्हें भी सुविधा हो सकेगी।

मैं दिनांक 18–9 से प्रवास के लिए जा रहा हूं। लगभग 12–10 तक यह चलेगा। बीच में तीन दिन के लिए नागपुर आऊंगा। शेष श्री मां की कृपा। श्री चरणों में—

विनीत—(ह.) मा.स. गोलवलकर।"

पत्र बड़ा ही अंतर्निहित अर्थों वाला लगता है। एक तो देखिए कि स्वयं गुरु गोलवलकर जी गुमनामी बाबा को कितने आदर सूचक शब्दों में पत्र लिख रहे हैं। यह बात स्वयं में इस बात का द्योतक है कि वह व्यक्ति (यानि गुमनामी बाबा) ज़रूर ऐसा उच्चकोटि का व्यक्ति होगा जिसे गुरु गोलवलकर जी ने इस तरह पत्र लिखा। दूसरी बात इस पत्र की मूल प्रति की फोटो स्टेट देखने पर पत्र के एक कोने पर Dr. HEDGEWAR लिखा हुआ मिलता है। यह हस्तलिपि सम्भवतः भगवन जी उर्फ गुमनामी बाबा की प्रतीत होती है। क्योंकि इस पत्र के पुश्त पर भगवन जी की हस्तलिपि में गुरु गोलवलकर जी की जन्मतिथि विचारने सम्बंधित कई वाक्य लिखे हैं, जिसे हम फिर कभी हस्तलिपि श्रृंखला में देंगे।

आप लोगों को गुमनामी बाबा के लिए श्री विजयानंद जी महाराज के सम्बोधन के बारे में स्पष्ट करने के संदर्भ में बता दूं कि गुमनामी बाबा स्वयं को श्री विजोया से भी सम्बोधित करते थे। इसका पता हमें चलता है उनके बस्ती के पते पर आये हुए कई लिफाफों से तथा इंवेंटरी क्रमांक 1771 व 1851 पर दर्ज इस इबारत से—"दि. 27.6.72 का एक ईक्नालेजमेंट बनाम पूज्य श्री गुरु गोलवलकर जी, नागपुर, प्रेषक श्री विजोया, श्रीमती माता जी सरस्वती शुक्ला, बस्ती।" तथा "एक्नॉलेजमेंट दि. 6.9.72 जो प.पू. श्री गुरु गोलवलकर जी, हेडगेवार भवन, नागपुर के पते पर—जो स्वामी जी द्वारा सरस्वती देवी शुक्ल पुरानी बस्ती द्वारा प्रेषित है।" लीजिए इन दोनों एक्नॉलेजमेंट के जिक्र से गुरु गोलवलकर जी वाली उस बात की भी पुष्टि हो गयी कि गुमनामी बाबा ने भी अपने बस्ती प्रवास के दौरान उन्हें पत्र भेजे थे।

जागरूक पाठक एवं शोधकर्ता इस पत्र का चाहे जो विश्लेषण करें, लेकिन मुझे एक बात तो निश्चित लगती है कि गुरु गोलवलकर जी को बाबा की आईडेंटिटी के बारे में ज़रूर पता था, पत्र से यह सिद्ध हो जाता है।

ठीक इससे एक वर्ष पूर्व—किन्हीं श्री बी.के. कौल द्वारा, अपने लखनऊ के कैसरबाग स्थित होटल टूरिस्ट के प्रवास के दौरान 7 नवम्बर 71 को बाबा के नाम बस्ती भेजा गया पोस्टकार्ड क्या कहता है उसे भी देखिये जरा। ये इंवेंटरी के क्रमांक 2370 पर यूं दर्ज है—"एक पोस्टकार्ड जो 7 नवम्बर 1971 को लखनऊ से डाक द्वारा बी.के. कौल द्वारा श्री स्वामी जी के बस्ती के पते पर प्रेषित किया गया। पत्र अंग्रेजी भाषा में लिखा गया है, जिसमें अनाम संत के प्रति असीम आदर प्रदर्शित करते हुए लिखा गया है कि जो पत्र अनाम संत का उक्त श्री कौल को मिला था, उसे पढ़ते ही उन्हें उबाल आ गया और उन्होंने यह आकांक्षा व्यक्त की है कि अनाम संत की इच्छाओं की पूर्ति करके उन्हें प्रसन्नता होगी, परंतु समय उक्त कार्य के लिए अभी उपयुक्त नहीं है।" और इस पैरे की अंतिम पंक्ति को पत्र लेखक ने स्वयं अंडरलाइन कर दिया है।

## गुरुचरण का पत्र गुमनामी बाबा के नाम

तो क्या सब लोग गुमनामी बाबा को इसी तरह गोलमोल सम्बोधन से ही पत्र लिखते थे? नहीं, ऐसा भी नहीं था—बाबा गुरुचरण सिंह बेदी से सब्र नहीं हुआ तो उन्होंने बाबा को लिखा कि—"**कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि आप भारत माता की सर्वश्रेष्ठ संतान नेताजी हैं। यदि ऐसा हो तो भाग्य की इस क्रूरता के लिए खून के आंसुओं को बहा दिया जाए। यदि ऐसा नहीं है, तो भी, कोई यह इंकार नहीं कर सकता कि आप सर्वोच्च स्तर के एक विद्वान है.(You are scholar of the first water) एक संन्यासी से भी ऊपर, जिसने विदेशों का भ्रमण किया है।**" बाबा गुरुचरण का अपने गुरुमुखी व हिंदी के लेटरपैड पर गुमनामी बाबा के नाम भेजा हुआ एक पत्र और भी मौजूद है जिसमें उन्होंने गुरुग्रंथ साहेब का हिंदी अनुवाद भेजने के बारे में लिखा है।

आखिर वह कौन सा ऐसा कारण था जिसने बाबा गुरुचरण को उनके नेताजी होने का आभास दिया? जबकि यह बात पग-पग पर प्रमाणित होती है कि गुमनामी बाबा जहां भी रहे, वहां का माहौल एकदम गुपचुप रहा, और सार्वजनिक तौर पर अन्य चाहे कितनी ही जगह पर नेताजी का प्रकरण उछला हो, लेकिन गुमनामी बाबा को लेकर, वे जहां भी रहे (छिटपुट एक-दो खबरों को छोड़कर) कहीं भी ऐसा कोई प्रदर्शन, या नेताजी होने का दावा कभी किसी ने नहीं किया! आखिर क्यों! जबकि आज हम देख रहे हैं कि राममवन से प्राप्त सामानों, पत्रों-दस्तावेजों से यह तो सिद्ध ही हो रहा है कि वहां सब कुछ 'सुभाषमय' था। उनका हर अंतरंग साथी, विप्लवी लोग उन्हें 'नेताजी' समझकर ही पूज रहे थे। और वह भी अपरोक्ष (Indirect) रूप से, ताकि कोई दूसरा न भांप ले। आखिर ऐसा क्योंकर वहां हो रहा था? ये सब लोग उस व्यक्ति या साधू को क्योंकर मन ही मन 'नेताजी सुभाषचंद्र' मान बैठे थे? और दुनिया में कहीं भी हल्ला हो रहा हो—लेकिन उसे लेकर हल्ला नहीं मचाते थे कि देखो, ये देखो, ये रहे—नीमसार में, अयोध्या में, बस्ती में, राममवन (फैज़ाबाद) में नेताजी! आखिर उनको प्रदर्शित किये बगैर, उनको लेकर कोई दावा किये बगैर मैं नहीं समझ पा रहा हूं कि वे कौन से राजनीतिज्ञ या अनुयायी लोग थे जिन्होंने फायदा उठा लिया है। जैसा कि कर्नल साहब व अन्य कुछ लोग आरोप लगा रहे हैं।(क्रमशः) □

लक्ष्मणपुरी, फैज़ाबाद

## फैज़ाबाद के गुमनामी बाबा–8

पिछली किस्तों की तरह इस बार भी प्रस्तुत है गुमनामी बाबा के सामानों की इंवेंटरी बनाते समय वे सूत्र और सम्बंध, जिनके आधार पर लेखक ने गुमनामी बाबा और नेताजी सुभाषचंद्र बोस के अंतर्सूत्रों को समझाने की कोशिश की है। रामभवन के कमरों में रखे ढेरों बक्सों में से जो विविध चीज़ें मिली हैं, वे वाकई हैरत में डालने वाली हैं !

# वे नेताजी नहीं थे तो कौन थे ?

अशोक टंडन

आखिर ऐसा कुछ, अगर गुमनामी बाबा के आसपास, अंदर ही अंदर पिछले चालीस वर्षों से घट रहा था, तो क्या हमारा फर्ज नहीं बनता कि हम उसका पर्दाफाश करके देखें ! असलियत जानें ! कौन जाने, अनजाने इतिहास की कुछ गुत्थियां ही हमारे हाथ लग जाएं ! लेकिन नहीं, रामभवन आये बगैर, दूर ही दूर बैठे रह कर हमारे नेताजी रिसर्च ब्यूरो के अध्यक्ष ने कयास लगा लिया कि यह सब कुछ, 'कपटी' लोग कर रहे हैं। सुभाष-भक्त कर्नल सहगल साहब को ज़रा फैज़ाबाद आने का कष्ट तो करना था। खैर, वे नहीं आये तो क्या हुआ, हम ही आपकी पेशेनज़र करते हैं कुछ और पत्र जो यह साबित करेंगे, कि कलकत्ते के बहुत से लोगों का गुमनामी बाबा से सम्बंध व सम्पर्क बना हुआ था, तथा वे लोग उन्हें नेताजी ही मानकर चल रहे थे—

इंवेंटरी के क्रमांक 1678 पर दर्ज है—'जगतजीत दास द्वारा बंगला में श्री परम पूजनीय श्री श्री ठाकुर को लिखा एक पत्र। पत्र में लिखा है कि आपकी 87वीं जन्म वार्षिकी की इस पुण्यतिथि पर आपको शतकोटि प्रणाम भेजता हूं।''

**1691**—''कौशल किशोर द्वारा 2 मार्च 1983 को प्रेषित एक बंगला भाषी पत्र, जिसका हिंदी में सारांश यह है कि ''हम लोग प्रार्थना करते हैं कि भारत, दुनिया में एक श्रेष्ठ आसन में पुनः प्रतिष्ठित हो और मां जननी जन्मभूमि से यह प्रार्थना करते हैं कि वह अपने घर के लड़के को स्वस्थ रूप में जल्दी वापस बुला ले।''

**1692**—एक 6.9.84 का बंगला भाषा में लिखा अधूरा पत्र, जिसमें लेखक ने लिखा है कि ''कोटि-कोटि भारतवासी आपके ऊपर नज़र रखे हैं और भगवान स्वयं एक दिन सबके दुःख को हर लेंगे, दुष्टों का दमन होगा और श्रेष्ठ की प्रतिष्ठा होगी। आप ही हमारे मनुष्य रूपी भगवान हैं...''

**2499**—''21 जनवरी 1977 का बंगला भाषा का पत्र जो 9 पृष्ठों का है, जो मुकुल द्वारा लिखा है। पत्र इस इबारत से प्रारम्भ है कि 23 जनवरी के दिवस की प्रथम किरण को मेरा प्रणाम... ।''

**2517**—''तरुण कुमार मुखर्जी, कौशल किशोर के बंगला भाषा में लिखे पत्र तथा जगतजीत दास का 15.4.83 के एक पत्र में लिखा है कि आपका अभीष्ट शीघ्र पूर्ण हो। और हम देशवासी आपके आशीर्वाद से धन्य होने का गौरव प्राप्त करें तथा सुरजीत व सुकृत के 5 बंगला भाषी पत्र।''

क्या अब भी कर्नल सहगल के मन में यह उत्कंठा नहीं जागी कि आखिर ये इतने बंगाली किसे 23 जनवरी पर बधाई दे रहे हैं तथा वह कौन व्यक्ति हो सकता है—जिसके ऊपर कोटि-कोटि भारतवासियों की नज़र है ? जननी-जन्मभूमि का वह कौन-सा लड़का है जो अपने 'किसी' अभीष्ट

को पूरा करने में-लगा है ? उसका अभीष्ट क्या है ?

**2519**—"16.4.85 का 'चारण' का बंगला भाषी पत्र। जिसमें लिखा है कि, "मेरे आराध्य का दृश्यकरण जल्दी हो।" ये गुप्त नाम 'चारण' किसका है ? पता लगाईए। नेताजी प्रकरण में यह व्यक्ति बड़ा महत्वपूर्ण है क्योंकि इस व्यक्ति ने नेताजी पर काफी कुछ साहित्य लिखा है। लीजिए साहब एक महाशय ने तो काफी कुछ खुलकर लिख दिया है और ये हैं श्री अतुल कृष्ण गुप्त, सुनील कृष्ण गुप्त (सुकृत) के बड़े भाई—अपने बंगला भाषी पत्र (2523) में श्री श्री मां जगदम्बे। श्री श्री चरण कमलेषु के सम्बोधन से लिखते हैं कि सारे वर्ष भर हमलोग व्याकुल होकर जिस दिन की प्रतीक्षा करते हैं, आज वही 23 जनवरी है। मेरे परम आराध्य जगत वरेण्य "महामानव" के श्री चरण कमलों में अनंत कोटि प्रणाम। कब हमलोगों की इच्छा पूर्ण होगी, इसी प्रतीक्षा में दिन गिन रहा हूं।"

फिर वही 23 जनवरी ! किस इच्छा की पूर्ति के लिये ये महाशय दिन गिन रहे हैं, कर्नल साहब शायद जानना चाहें ? मैं अपने पाठकों को याद दिला दूं कि ये श्री अतुल कृष्ण गुप्त—उन्हीं सुनील कृष्ण गुप्त के बड़े भाई हैं जिन्होंने प्रो. समर गुहा के साथ मिलकर 23 जनवरी 79 को घोषणा की थी कि नेताजी जिंदा हैं ! लेकिन आपको यह भी याद होगा कि इन लोगों ने उस समय भी 'इन' बाबा के बारे में किसी को (या जनता को) कुछ भी नहीं बताया था, अर्थात इनको (यानि गुमनामी बाबा को) लेकर इन लोगों तक ने उस समय भी कोई लाभ नहीं उठाया था। प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि आखिर क्यों ?

अतुल कृष्ण गुप्त के कुछ और महत्वपूर्ण पत्र—

**2621**—"28.9.76 का अतुल कृष्ण गुप्त का बंगला भाषा में एक पत्र जिसमें अनाम संत को सम्बोधित करके लिखा गया है कि हम सब के कोटि-कोटि प्राणों के बदले में एक आपके प्राण की रक्षा हो यही हमारी प्रार्थना है।"

**2474**—"श्री चरणकमलेषु के सम्बोधन से बंगला भाषा में लिखा गया अतुल कृष्ण गुप्त का बंगला वर्ष 1392 में पहली वैशाख का एक पत्र। पत्र में अनाम संत के दीर्घायु होने की कामना की गयी है और लिखा गया है कि 'देश की वर्तमान अवस्था में एक बड़े परिवर्तन की आवश्यकता है और आपके आगमन की शुभ घड़ी की प्रतीक्षा में हम लोग बैठे हैं। 45 वर्ष पहले आपके चरणकमलों के दर्शन का और स्पर्श का अवसर मिला था, पर आज भी मैंने आशा नहीं छोड़ी है।"

उपरोक्त पत्र से गुमनामी बाबा उर्फ भगवन जी की सेविका श्रीमती सरस्वती शुक्ला की इस बात की भी पुष्टि होती है कि कलकत्ते या कहीं से आने वाले किसी भी व्यक्ति को भगवन जी ने कभी भी दर्शन नहीं दिया। इन सारे सम्बंधों के बावजूद वे सभी से पर्दे के पीछे से ही बात करते थे। आश्चर्य होता है कि आखिर उस 'साधु या 'बाबा' के पास ऐसा क्या था कि उसका दर्शन किये बगैर ये लोग उसे चालीस वर्षों से 'नेताजी' ही मानते व जानते चले आ रहे थे और वह भी गुपचुप तरीके से ? क्योंकि यहां आने की पहली शर्त थी परम गोपनीयता।

**2629**—"प्रसाद का बिना तिथि का एक पत्र जो अनाम संत को सम्बोधित है, जिसमें यह उल्लेख किया गया है कि आपका 87वां जन्मदिन प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी हमलोग मनाएंगे।"

**2642**—"अतुल कृष्ण गुप्त का बंगला भाषा का एक और पत्र, जिसमें लिखा है कि 81 वां शुभ जन्म दिवस के अवसर पर शुभ कोटि प्रणाम, कोटि प्रणाम..."

**1749**—"मुकुल का दिनांक 20.1.81 का बंगला भाषी पत्र। पत्र के कुछ अंश—"तृप्ति जा रही है, उनसे आपको सब कुछ मालूम चलेगा। वहां पर आपको जो अकल्पनीय कष्ट है, वह कब समाप्त होगा ? यही प्रश्न है। इस 'वेदगर्त' परिस्थिति का समापन कब होगा—यही प्रश्न है ?"

प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि, आखिर किसकी और कैसी 'वेदगर्त' परिस्थिति का जिक्र कर रहे हैं ये नेताजी सुभाषचंद्र बोस द्वारा बनायी गयी क्रांतिकारी संस्था 'बंगाल वालेंटियर्स' के सक्रिय कार्यकर्ता श्री अमलेंदु घोष यानि मुकुल बाबू ?

पाठकों को मैं यहां बता दूं, कि इन दिनों गुमनामी बाबा अयोध्या के सुनसान इलाके में स्थित लखनऊ कोठी में रह रहे थे, जहां न तो बिजली थी और न पानी। यहीं सीढ़ी से फिसल जाने से उनके पैर की हड्डी भी टूट गयी थी। उन्हें नेताजी मानने वाले मुकुल बाबू के लिये, इतने महान सपूत की यह दुर्दशा 'वेदगर्त' नहीं थी तो और क्या थी ?

**हु-ब-हु नेताजी के चश्मे की तरह का गुमनामी बाबा का चश्मा**

## नेताजी का जन्मदिन

17 जनवरी 77 को 'प्रसाद' बाबू गुमनामी बाबा को लिखते हैं कि—"आपका जन्मदिन

हमलोग मनाएंगे' (क्रमांक 2403)! तो क्या ये लोग कलकत्ते में किसी का जन्मदिन मनाते थे?

जी हां मनाते थे जन्मदिन ये लोग! और उसकी फोटो भी खींचते थे। तथा उस फोटो को यहां भी भेजते थे। लेकिन वह जन्मदिन तो, होता था नेताजी का! रामभवन में हमलोगों को काफी फोटोग्राफ्स् मिले हैं। फोटोग्राफ्स् के पीछे बंगला भाषा में उन चित्रों का परिचय भी लिखा है। लेकिन कुछ चित्रों को जिनपर कुछ नहीं लिखा था, उसे सुश्री ललिता बोस ने देखकर पहचाना। जिन कुछ चित्रों पर पीछे चित्र परिचय लिखा था उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—ये सभी 43 चित्र इंवेंटरी के क्रमांक 37 पर यूं दर्ज हैं—

(1) डॉ. पवित्र मोहन राय बीच में—कार्यकर्त्ताओं के साथ सभापति।
2() 'चंडीपाठ'—नेताजी की फोटो के सामने।
(3) डॉ. नरेशचंद्र घोष, अजीत नागर, रेवा

रामभवन में प्राप्त नेताजी की तरह की गोल जेबी घड़ी

(अजीत की पत्नी), राना (अजीत का बड़ा पुत्र)।
(4) लीला राय की फोटो को माल्यार्पण।
(5) समरगुहा—लीला राय की फोटो के पास एक अन्य वृद्ध के साथ।
(6) समरगुहा लिखते हुए (बायें से पांचवें)
(7) यज्ञ आरम्भ होने से पूर्व 1971 का एक फोटो।
(8) 'अखंड भारतवर्ष'—एक फोटो।
(9) डॉ. रमेशचंद्र मजूमदार, प्रफुल्लचंद्र सेन Ex. C.M.—लीला राय की फोटो के साथ—एक फोटो।
(10) एक फोटो—दो लोग पूजन करते हुए।
(11) एक फोटो—श्री सुरेशचंद्र बोस की लीला राय की फोटो को माल्यार्पण करते हुए।
(12) एक फोटो—लीला राय की फोटो के साथ कुछ लोग।
(13) एक फोटो—लीला राय की फोटो के साथ संतोष भट्टाचार्य।
(14) एक फोटो—बायें प्रथम समर गुहा व अन्य लोग।
(15) 'यज्ञ के बाद'—डॉ. पी.एम. राय कई लोगों के साथ।
(16) एक फोटो—लीला राय की फोटो के साथ एक व्यक्ति।
(17) एक फोटो—नरेंद्र घोष के बड़े लड़के लीला राय को माल्यार्पण करते हुए।
(18) उपरोक्त फोटो की एक और प्रति।
(19) 'यज्ञ आरम्भ 1972'—एक फोटो।
(20) एक फोटो—श्री बंकिमचंद्र चक्रवर्ती—एक परिचित एकदम दायें।
(21) डॉ. पी.एम. राय लड़के-लड़कियों के साथ।
(22) एक फोटो—लीला राय के श्राद्ध में उपस्थित लोग।
(23) एक फोटो—डॉ. रमा चौधरी (भू.पू. कुलपति विश्वभारती वि.वि.) लीलाराय की फोटो के साथ।
(24) एक फोटो—समर गुहा लीला राय की फोटो के साथ।
(25) एक फोटो—महाराज त्रैलोक्य चक्रवर्ती लीला राय की फोटो को माल्यार्पण करते हुए।
(26) एक फोटो—समर गुहा को टीका लगाती एक लड़की।
(27) समर गुहा, प्रफुल्लचंद्र सेन सी.एम., श्री सुरेशचंद्र बोस आदि।
(28) एक फोटो—'शंखध्वनि 12.15 मिनट' जन्मदिन।
(29) 'यज्ञ का आहुति दान'—1972—पवित्र राय की फोटो।
(30) 'जन्म समय घोषणा 1972'—शंखध्वनि करती महिलाएं।
(31) 'यज्ञ स्थल' 1972—डॉ. पी.एम. राय पूजा करते हुए।
(32) डॉ. पी.एम. राय सात लोगों के साथ।
(33) 'यज्ञ समाप्ति' पी.एम. राय।
(34) नेताजी की फोटो।

(35) नेताजी जन्मदिन दीप सज्जा का फोटो।
(36) शंखध्वनि।
(37) यज्ञ स्थल 1973।
(38) बैंड पार्टी नेताजी जन्मदिन 1973।
(39) यज्ञ स्थल।
(40) शंखध्वनि नेताजी जन्मदिन।
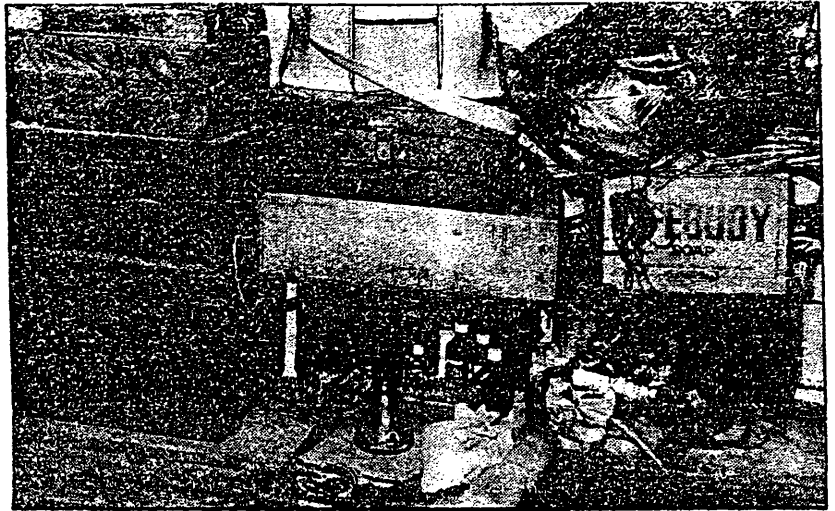
सर्वप्रथम पुलिस द्वारा खोले गये रामभवन में यथास्थिति में रखे हुए गुमनामी बाबा के सामानों का एक दृश्य।

(41) जन्म समय तोप घोषणा—1973
(42) शंखध्वनि नेताजी जन्मदिन।
(43) यज्ञ-स्थल पूजन।

उपरोक्त फोटोग्राफ्स् को रामभवन में पाकर सुश्री ललिता बोस सहित हमलोग पर क्या गुजरी होगी? इसका अंदाजा कर्नल सहगल सहित, नेताजी के सहयोगियों, अनुयायियों व उनके बारे में जानकार लोगों ने अवश्य ही लगा लिया होगा।

फिर भी हम अपने सामान्य पाठकों को बता दें कि ऊपर जिन श्रीमती लीला राय की श्राद्ध पर इतने लोग एकत्र हुए थे, वह नेताजी की परमभक्त व उनकी क्रांतिकारी सहयोगी थीं तथा अपने अंतिम समय तक वह नेताजी के अभियान में ही लगी रहीं और गुमनामी बाबा से सदा सम्पर्क बनाये रहीं। और आपने देखा कि उनके श्राद्धकर्म से सम्बंधित समारोह के सभी फोटोग्राफ हमारे इस 'फैजाबाद के बाबा' को ही विशेष तौर पर भेजे गये हैं। आखिर क्यों?

मैं सोच रहा हूं कि कहीं 'गंगा' में मेरी इस रपट श्रृंखला छपने के बाद, कर्नल सहगल साहब उपरोक्त समाचार पत्र की भांति यहां भी एक औपचारिक खंडन भेजकर मुझे भी 'कपटी' (Pretenders) करार न दें, इसलिए उपरोक्त चंद दृष्टांत मैंने उनके पेशेनजर किये हैं, और

रामभवन में इवेंटरी बनाने के पूर्व गुमनामी बाबा के कमरे खोले जाने के इंतजार में—(दायें से) सुश्री ललिता बोस, श्रीमती सरस्वती शुक्ला, नेताजी की बहन स्व. तरुबाला राय के लड़के श्री जितेंद्रनाथ राय, श्री अरुणाभ राय (श्री जितेंद्रनाथ राय के चचेरे भाई), श्री पी. बनर्जी, डॉ. बी. राय।

आशा करता हूं कि अब वे अपने वर्तमान पद (अध्यक्ष—नेताजी रिसर्च ब्यूरो, कलकत्ता) के अनुरूप इस ऐतिहासिक घटना को उजागर करने की पहल करेंगे।

□

सन् 1937 में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने विदेश से अपने भतीजे अशोक को एक पत्र में लिखा कि, "क्या तुम मुझे पुस्तक में प्रकाशनार्थ मेरे माता-पिताजी का एक बढ़िया-सा फोटोग्राफ तथा एक पूरे परिवार का बढ़िया-सा फोटो एवं मेज दादा (मंझले भैया) की एक अलग से फोटो भेज सकते हो? इसको तुम साधारण डाक से, लेकिन जितनी जल्दी सम्भव हो सके, भेज दो।"

अगर मैं यहां आपसे यह प्रश्न करूं कि नेताजी ने अपने माता-पिता व परिवार आदि के चित्र क्यों मंगवाये? तो आप बेसाख्ता कह उठेंगे कि—यह जनाब, क्या कोई अपने माता-पिता, भाई-परिवार का चित्र नहीं मंगवा सकता?

बिल्कुल ठीक कहा आपने। हम भी यही कहना चाहते हैं। छापने के लिए तो, नेताजी के माता-पिता, भाई-परिवार के फोटोग्राफ कोई भी लेखक या प्रकाशक भी मंगा सकता है। लेकिन रखने के लिए...?

□

और उधर रामभवन में गुमनामी बाबा के सामानों की इवेंटरी बनाते हुए एडवोकेट कमिश्नर श्री सत्यनारायण सिंह 'सत्य' क्या लिखते हैं, देखिए जरा—

"आज दिनांक 28 मार्च 86 को... पिटीशनर सुश्री ललिता बोस तथा उनके योग्य अधिवक्ता श्री मदनमोहन पांडेय एडवोकेट, श्री हरिश्चंद्र सिंह सब इंसपेक्टर एवं श्री आर.एन. उपाध्याय डिप्टी कलेक्टर प्रतिनिधि जिला मजिस्ट्रेट, फैजाबाद, श्री रामकिशोर मिश्र, श्रीमती रीता बनर्जी, श्री कृष्णगोपाल श्रीवास्तव... (आदि) की मौजूदगी में... सील तोड़कर कमरा खोला गया। तथा निम्न प्रकार से इवेंटरी बनायी गयी।

क्रमांक 9—एक शीशे में मढ़ी फोटोग्राफ, जिसे सुश्री ललिता बोस पिटीशनर ने स्व. श्री जानकीनाथ बोस (अपने बाबा) का फोटोग्राफ बताया।

10—एक फोटोग्राफ प्लास्टिक में मढ़ा हुआ है, जिसमें एक भद्र स्त्री व पुरुष हैं। सुश्री ललिता बोस ने इसे देखकर बताया कि इस फोटो में पुरुष का फोटो स्व. श्री जानकीनाथ बोस तथा स्त्री स्व. श्रीमती प्रभावती बोस का फोटो है।

**11—एक फोटोग्राफ शीशे में मढ़ा हुआ, जिसके नीचे बंगला में 'पिता-माता : जानकीनाथ बोस, प्रभावती बोस' लिखी स्लिप शीशे के अंदर लगी है। यह चित्र क्रम संख्या 10 के समान है।**

12—एक प्लास्टिक कवर में दो फोटोग्राफ लगे हैं। पहला संयुक्त फोटोग्राफ जिसे सुश्री ललिता बोस ने नेताजी व उनके पिता श्री जानकीनाथ बोस का बताया। तथा दूसरा फोटोग्राफ नेताजी सुभाषचंद्र बोस की माता श्रीमती प्रभावती बोस का बताया।

13—एक प्लास्टिक में मढ़ा वृद्ध महिला का फोटोग्राफ है, जिसे देखकर सुश्री ललिता बोस ने स्व. श्रीमती प्रभावती बोस का बताया।

14—एक शीशे के गोल्डन कलर के फ्रेम में मढ़ा संयुक्त फोटोग्राफ एक स्त्री व पुरुष के हैं, इसे भी सुश्री ललिता बोस ने स्व. श्री जानकीनाथ बोस व श्रीमती प्रभावती बोस का बताया।

5—एक प्लास्टिक में मढ़ा संयुक्त फोटोग्राफ, एक नवयुवक व एक वृद्ध का है, जिसे सुश्री ललिता बोस ने स्व. श्री जानकीनाथ बोस व नेताजी सुभाषचंद्र बोस का बताया। इस फोटो के हाशिये पर नीचे 'स्टूडियो डीलक्स साक्ची' लिखा है।

16—एक प्लास्टिक कवर में लगे दो फोटोग्राफ। एक सिरमुंडित व्यक्ति का फोटोग्राफ है जिसे सुश्री ललिता बोस ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस का बताया। दूसरा संयुक्त फोटोग्राफ नं. 15 की भांति एक युवा तथा एक वृद्ध का है।

17—एक संयुक्त फोटोग्राफ प्लास्टिक में मढ़ा हुआ। जिसमें स्त्री-पुरुष व बच्चों को मिलाकर 22 व्यक्तियों के चित्र हैं, और जिसके नीचे अंग्रेजी में छपा है—'जानकीनाथ विथ हिस फैमिली (सुभाषचंद्र ऑन एक्सीट्रीम राइट)। इस फोटोग्राफ में सुश्री ललिता बोस

के बांये से पीछे की कतार में सर्वश्री सुधीरचंद्र, सतीशचंद्र बोस, शरतचंद्र बोस, सुरेशचंद्र बोस, सुनीलचंद्र बोस, सुभाषचंद्र बोस। दूसरी लाइन में स्व. श्री जानकीनाथ बोस व श्रीमती प्रभावती देवी तथा उनकी तीन पुत्रियां तथा नीचे कतार में उनकी आठ नाती-नातिन हैं।

18—एक प्लास्टिक कवर में दो फोटोग्राफ मढ़े हुए हैं, जिनमें एक फौजी पोशाक में नेताजी सुभाषचंद्र बोस झंडे को सैल्यूट करते हुए। दूसरा सुश्री ललिता बोस के अनुसार श्री जानकीनाथ बोस व उनकी पत्नी श्रीमती प्रभावती बोस का है।

विस्मय होता है कि नेताजी सुभाषचंद्र बोस के माता-पिता व परिवार के ये चित्र आखिर गुमनामी बाबा के पास क्यों थे? क्यों मंगवाये थे उन्होंने ये चित्र? वे कोई लेखक या प्रकाशक भी तो नहीं थे? तो फिर ये चित्र उन्होंने क्यों मंगवाये? और फिर ढेर सारे चित्रों में यही चित्र बाकायदा मढ़े हुए भी क्यों हैं?

## माता-पिता के चित्र

और अगर, ये गुमनामी बाबा नेताजी के सहयोगी या समर्थक या प्रशंसक ही थे, तो नेताजी के चित्र रखते, मंगवाते व सम्भालते तो बात समझ में आती, लेकिन उनके परिवार, उनके माता-पिता का भी चित्र क्योंकर मंगवाते। कोई विवेकानंद या महात्मा गांधी को पूजने या मानने वाला उनके माता-पिता व परिवार के फोटोग्राफ मंगवाकर नहीं रखेगा। बहुत होगा तो किसी पुस्तक वगैरह में छपे किसी महान व्यक्ति के माता-पिता व परिवार के चित्र तो लोगों के यहां मिल सकते हैं। लेकिन यहां पर फोटोग्राफ की स्लिप पर लिखा है कि 'पिता-माता : जानकीनाथ बोस, प्रभावती बोस।' प्रश्न उठ सकता है कि किसके माता-पिता? अर्थात गांधी, नेहरू, विवेकानंद या सुभाषचंद्र किसके माता-पिता? कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को किसी तीसरे व्यक्ति के माता-पिता का फोटोग्राफ भेजेगा तो उस तीसरे व्यक्ति का नाम ज़रूर लिखेगा। न लिखने पर समझा जाएगा कि या तो भेजनेवाले के माता-पिता का चित्र है या जिसे भेजा गया है उसके माता-पिता का चित्र है। अर्थात ये फोटोग्राफ भेजने वाले या पाने वाले दोनों में से किसी एक के माता-पिता का होना चाहिए! मगर ये तो हैं नेताजी सुभाषचंद्र बोस के पिता व माता जी—स्व. श्री जानकीनाथ बोस व श्रीमती प्रभावती बोस! तो फिर, ये चित्र भेजा किसने था? ये चित्र भेजा था नेताजी के परम समर्थक श्री सुनील दास ने। और इनके पिता-माता का नाम श्री जानकीनाथ बोस व प्रभावती नहीं था। गुमनामी बाबा उर्फ भगवन जी को जिन सामानों की ज़रूरत पड़ती थी, उन्हें श्री सुनील दास कलकत्ते से पूरी एक लिस्ट बनाकर भेजते थे। लिस्ट भी कैसी? अगर आप सुन लें तो आश्चर्यचकित रह जाएं। कलकत्ते से आने वाले सामानों की लिस्ट पूरी मुकम्मल होती थी अर्थात क्रमांक, वस्तु का नाम, अदद, मूल्य, रिमार्क सहित। वह भी कई-कई पृष्ठों में टाइप्ड। उसी तरह की एक लिस्ट इंवेंटरी के क्रमांक 1940 पर यूं दर्ज है। लेकिन नहीं—इसके पहले हम आपको ले चलते हैं, शैलेश डे की वही चिरपरिचित पुस्तक 'मैं सुभाष बोल रहा हूं' खंड एक की इन पंक्तियों पर—

"सुभाष अंतर्ध्यान हुए 1941 की 17 जनवरी को।... आज 31 जनवरी है। आज ही रास्ते की सारी कठिनाइयों का अंत हो जाएगा... अब दूरी बची ही कितनी है? काबुल आया ही समझो। जाते-जाते जाने क्या हुआ, भगतराम ने सुभाष के हाथ से घड़ी उतारकर अपने हाथ में बांध ली। जाते-जाते जाने क्या हुआ, भगतराम ने सुभाष के हाथ से घड़ी उतारकर अपने हाथ में बांध ली। (पेज50)... पांचवें दिन ही उनके पीछे एक अफगान गुप्तचर लग गया। ये दोनों हैं कौन? आज कई दिनों से इस धर्मशाला में क्यों ठहरे हुए हैं? इनका इरादा क्या है?—"ठीक है, थाने चलिये।"

"क्या कह रहे हैं सिपाही जी?"

"चलिये थाने। हालांकि अगर कुछ..."

"क्या चाहिए?"

"चाहिए तुम्हारे हाथ की वह घड़ी।"

घड़ी! भगतराम सन्नाटे में आ गये निष्पंद। कहता क्या है यह? पिता की स्मृति से सराबोर यह सोने की घड़ी तो असल में सुभाष बाबू की है।

सुभाष भी खामोश! क्या कहते? कहने को है ही क्या? इशारा समझकर अनिच्छापूर्वक भगतराम ने हाथ से घड़ी खोलकर दे दी।
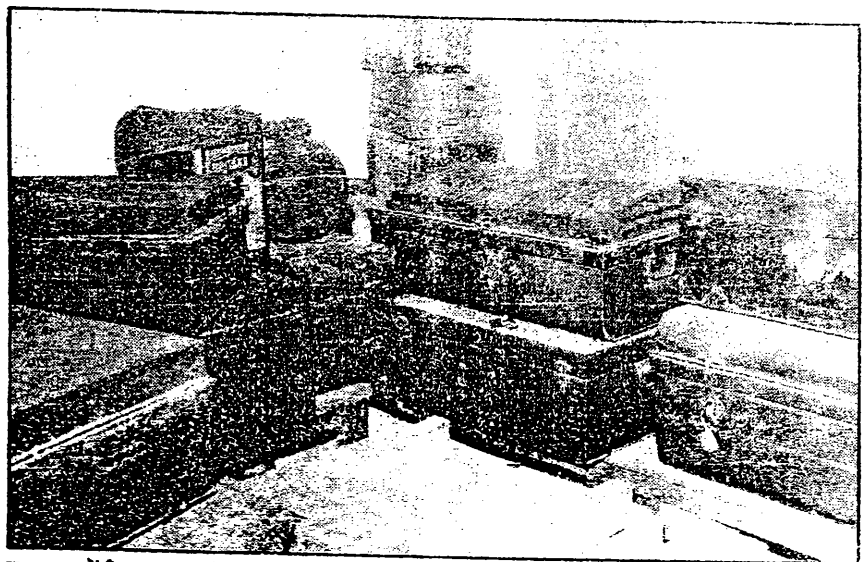
**रामभवन में स्थित गुमनामी बाबा के एक कमरे में रखे बक्सों का एक तरफ का दृश्य : एक साधु के पास इतने सारे बक्स?**

## पिताश्री का स्मृति-चिन्ह

इसका मतलब यह हुआ कि ऐसे दुर्दांत क्षणों में, जबकि नेताजी सब कुछ छोड़कर, त्याग कर जंगल व बीहड़ों के रास्ते अपने महाअभियान पर जा रहे थे, तब भी उनके पास पिताश्री के स्मृति चिन्ह के रूप में एक घड़ी मौजूद थी। और वह भी

बहुमूल्य सोने की। अजीब इत्तिफ़ाक है—यहां भी कई घड़ियां मिली हैं। उसमें एक महंगी गोल्डन घड़ी भी है। लेकिन सुनील दास द्वारा उस दिन भेजे गये सामान का ज़िक्र अब पढ़िए ज़रा—

**''19 जून सन् 1966 को भेजे गये सामानों की एक सूची—जो द्वारा एस.डी. भेजे गये हैं। इसमें चश्मा, जीलेट ब्लेड व रेजर, डनलप पिलो गद्दी, उनके कवर व वाटर प्रूफ कोट व बंगला भाषा का कैलेंडर, स्वर्गीय पिता जी की छतरी व स्वर्गीय माताजी व स्वर्गीय पिताजी की दो ग्रुप फोटो व डी.डी., के.जी.पी.आर.एस. सेन व एस. गुहा आदि की 25 चिट्ठियां, पत्रिका 'जयश्री' व पेपर कटिंग उल्लेखनीय है। कुल 39 क्रम संख्याओं की वस्तुएं इस सूची में दर्ज हैं।''**

अब आप बताइए कि ये किसकी छतरी यानि छाता है? किसके पिताजी की छतरी है। किसके स्वर्गीय माताजी व स्वर्गीय पिताजी का ये दो ग्रुप फोटोग्राफ हैं? आपको याद है न इंवेंटरी के क्रमांक 10 व 11 पर दर्ज 'पिता-माता : जानकीनाथ बोस व प्रभावती बोस' के दो ग्रुप फोटोग्राफ। जी हां ये वही फोटोग्राफ हैं जिसे सुनील दास ने 19 जून 1966 को गुमनामी बाबा को भेजा है। और वह छतरी? वह छतरी है स्वर्गीय जानकीनाथ बोस की। तो क्या ये छतरी यहां मौजूद मिली? नहीं हमलोगों को तो अब तक नहीं मिली।

**कि तभी मेरी नज़र में गुमनामी बाबा के बिस्तर के सिरहाने की तरफ वाली खिड़की के पैलमेट में कोई वस्तु डोरे में बंधी लटकी हुई दिखाई पड़ी।** हमलोगों ने उसे उतारा—वह किसी कपड़े में लपेटकर रखा हुआ कोई पुराने-जमाने का छाता ही था। छाते का कपड़ा विदेशी तथा मूंठ गोल नक्काशीदार थी। अर्थात यही थी वह पिताजी की छतरी, जिसे बड़ा सम्भालकर, आदर देने के भाव से सिरहाने वाली खिड़की के ऊपर पेलमेट से दोनों तरफ बांधकर रखा गया था। बाबा की सेविका ने बताया कि उस छतरी का प्रयोग भगवन जी कभी नहीं करते थे। अब आप ही बताइए कि गुमनामी बाबा के पास स्वर्गीय जानकीनाथ की छतरी क्यों थी? वह उसे इतने आदर से क्यों रखे हुए थे? **कहा जाता है कि आदमी सूरत व शक्ल के अलावा अपनी आदत से ही पहचाना जाता है। तो हमने देखा कि एक ओर जहां नेताजी की आदतों में शुमार था कि अपने पिताश्री के स्मृति चिन्ह को अपने पास रखना; अपने माता-पिता व परिवार के फोटोग्राफ मंगवाना। वहीं हम पाते हैं कि गुमनामी बाबा में भी ठीक वहीं आदतें शुमार थीं। आखिर क्यों?**

इधर इंवेंटरी में फोटोग्राफ्स जारी हैं।

19—एक शीशे में मढ़ा एक व्यक्ति का चित्र, जिसकी शिनाख्त न हो सकी।

20—एक चित्र जिसे सुश्री ललिता बोस ने योगिराज श्यामाचरण लाहिड़ी का बताया।

21—एक संयुक्त फोटोग्राफ जिसमें आठ सदस्य हैं, जिसकी पुस्त पर लिखा है—'बांयें से खड़े—पल्टू, सागारिका घोष, संतोष भट्टाचार्य, हेलेना दत्त, रामादास, सिस्टर डेनियल। बैठे हैं, सुनील दास! 2 अक्टू. 68।'

22—एक ग्रुप फोटोग्राफ जिस पर पीछे लिखा है—**'पहली कतार बांये से श्रीमती जवाहर नंदी, डॉ. अरुण नंदी, भूपेन रक्षित, शैलाव गुप्त, परमपूज्य सुरेश चंद्र बसु, अमूल्य सेन, अमियनाथ बसु। तीसरी कतार में बांये से—सागरिका घोष, बाबू (पल्टू का भांजा), मनु (पल्टू की भांजी), आरती नाग (अजीत नाग की बहन), शेबू, मोनिका (मिठू की वाइफ), मिठू, धीरेंद्र कुमार मजूमदार (पल्टू के बहनोई)।**

23—एक संयुक्त फोटोग्राफ जिसके पुस्त पर बंगला में लिखा है—बांयें से खड़े पल्टू, सागरिका, संतोष, हेलेना, रोमा, सिस्टर डेनियल। बैठे—सुनील दास।

24—एक फोटोग्राफ जिसके नीचे लिखा है—बांयीं तरफ से समरगुहा, त्रिपुराशंकर सेन, दक्षिणारंजन बसु, सोमेंद्र नाथ बसु।

25—एक फोटोग्राफ जिसके पुस्त पर—'सिस्टर डेनियल 2 अक्टू. 69—' लिखा है।

26—एक फोटोग्राफ जिसके पुस्त पर बांयें से खड़े—संतोष भट्टाचार्या, सागरिका घोष, हेलेना दत्त लिखा है।

27—एक फोटोग्राफ जिसके पुस्त पर लिखा है—'मंच की तस्वीर, समरगुहा भाषणरत, त्रिपुराशंकर सेन, सोमेंद्र नाथ ठाकुर, दिलीप राय किताब पढ़ते हुए।'

28—एक फोटोग्राफ—'मंच पर सज्जित श्रीयुक्ता लीला राय का एक चित्र।'

29—एक फोटोग्राफ जिसके पुस्त पर लिखा है—श्रोताओं के पीछे से लिया गया चित्र।

30—एक फोटोग्राफ—बांयीं ओर से समर गुहा, त्रिपुराशंकर सेन शास्त्री, दिलीप राय (रजनीकांत सेन का नाती), सोमेन्द्रनाथ ठाकुर।

**31—एक वृद्ध व्यक्ति का चित्र, जिस पर कोई नाम अंकित नहीं है। इसके सम्बंध में योग्य अधिवक्ता श्री मदन मोहन पांडेय ने बताया कि यह वही चित्र है, जो गत 23 जनवरी 1979 को समर गुहा ने नेताजी जिंदा हैं, कहते हुए जारी किया था।**

32—एक लिफाफा जिस पर बंगला में लिखा है—''1978 जनवरी से 11 अक्टूबर 1980 तक विभिन्न समय की डायरी के मुताबिक समर गुहा, सुनील गुप्ता आदि के विषय के ऊपर तस्वीर साथ।''

**इन उपरोक्त फोटोग्राफ्स में से कुछ चित्र गुमनामी बाबा के लिए बहुत महत्वपूर्ण भी थे, तभी तो (क्रमांक 2052)—'लैंस डाउन आर्ट स्टूडियो, 17, सैय्यद अमीर अली एवेन्यू, कलकत्ता-17, के एक लिफाफे पर उन्होंने स्वयं लिख रखा था—'वेरी इम्पार्टेंट'।**

नेताजी की सगी भतीजी (स्व. श्री सुरेशचंद्र बोस की पुत्री) सुश्री ललिता बोस ने ही उपरोक्त चित्रों के पीछे लिखी बंगला इबारत को पढ़ा था। वे ये सब चित्र वहां देखकर आश्चर्यचकित हो रही थीं। आश्चर्यचकित तो मैं भी हूं, कि नेताजी के परिवार को भी गुमनामी बाबा के बारे में ज़रूर जानकारी रही होगी? कारण स्पष्ट है—ऊपर के फोटोग्राफ्स की परिचय पंक्तियों में आपने नेताजी के बड़े भाई श्री सुरेशचंद्र बोस का भी नाम पढ़ा। और उनके साथ वाले नाम व व्यक्तिगण वही लोग हैं अर्थात पल्टू वगैरह, जिनके कि बहुतायत पत्रादि रामभवन में मौजूद हैं। अर्थात् जो व्यक्ति इधर गुमनामी बाबा से जुड़ा है, वही व्यक्ति दूसरी तरफ श्री सुरेशचंद्र बोस से जुड़ा है, (यह बात फोटोग्राफ से सिद्ध होती है) तब यह कैसे मान लिया जाए कि इतने बड़े रहस्य को श्री सुरेशचंद्र बोस यानी नेताजी के बड़े भाई नहीं जानते रहे होंगे?

बाद में सुश्री ललिता बोस ने भी स्वीकारा था कि बस्ती से कुछ लोग राखी लेकर मेरे पिताजी के पास आते थे, जिसके बारे में उनके पिताजी कहा करते थे कि इसे सुवि (सुभाषचंद्र बोस) ने भेजा है। □

**(क्रमशः)**

9, M.I.G. लक्ष्मणपुरी, फैज़ाबाद (उ.प्र.)

फैजाबाद के गुमनामी बाबा—9

# वे नेताजी नहीं थे तो कौन थे?

□अशोक टंडन

**रामभवन में गुमनामी बाबा के कमरे में ढेरों-ढेर सामान बक्से-दर-बक्सों में भरा मिला है। यह देशी और विदेशी सामान नेताजी के चरित्र, स्वभाव, आदत, रुचि व पसंद के अनुरूप है। साथ ही वहां बिखरे तमाम सूत्र शंका में डालते हैं कि आखिर रामभवन के बाबा कौन थे? इन विवादास्पद प्रकरणों पर प्रकाश डाल रहे हैं पत्रकार अशोक टंडन अपनी इस नौवीं किस्त में!**

एक दिन श्री सुरेशचंद्र बोस— नॉन ऑफिसियल मेम्बर नेताजी इंक्वायरी कमेटी—(जन. 1961) द्वारा लिखित अंग्रेजी पुस्तक 'डेस्नशेंट रिपोर्ट' की एक प्रति रामभवन में हमलोगों को मिली (क्रमांक 101)। जिस पर बंगला भाषा में हाथ से लिखा था—''परम कल्यानिय देवर चिरजीवेषु—प्राणाधिक स्नेह आशीर्वाद''।

ये कौन देवर हैं? जो अपनी भाभी को प्राणों से भी अधिक प्यारा है और वह उसके कल्याण व दीर्घायु की कामना कर रही हैं। आखिर ये भाभी कौन हैं?

मैंने कई जगह पढ़ा है कि नेताजी अपनी बड़ी भाभियों को बहुत सम्मान देते थे व मां की तरह आदर देते थे। तो क्या यह नेताजी की भाभी ही तो नहीं हैं, जिन्होंने अपने पति द्वारा लिखित पुस्तक को अपने देवर को खुद ही उपरोक्त पंक्तियां लिखकर भेंट किया हो तथा गोपनीयता बनाये रखने के लिए अपना नाम भी नहीं लिखा। लेकिन यह पुस्तक तो गुमनामी बाबा के पास मौजूद मिली! तो क्या, वे ही उनके देवर थे?

काश उस दिन सुश्री ललिता बोस वहां होतीं, तो शायद अपनी मां की रायटिंग को पहचान पातीं।

□

यहां से लेकर वहां तक—सूत्र व सम्भावनाएं बहुत बिखरी पड़ी हैं। उन्हें जांचना व परखना आपका काम है। इतिहासकारों का काम है। मैं तो बस उन सूत्रों को थोड़ा-बहुत जो जोड़ पा रहा हूं, उसे आपलोगों के समक्ष रखे दे रहा हूं।

यहां ढेरों-ढेर सामान बक्से-दर-बक्सों में भरा मिला है। आप भी सोचते होंगे—एक साधू और इतना सामान? लेकिन थोड़े से सामानों का जिक्र करने के पहले आप लोगों को एक बात और बता दूं, कि यहां पर ट्रंकों में जिस करीने से किताबें, कपड़े व अन्य सामान सुरक्षित ढंग से रखा हुआ हमलोगों को मिला था—उतने करीने से शायद हमारे आपके घर की गृहिणियां भी न रख पातीं। वह चाहे कपड़ा सिलने वाली सुइयां हों, डोरा हो, बटन हो या रुद्राक्ष या टूटा हुआ दांत या रुपये-पैसे वाला डिब्बा। बड़े-बड़े चौकोर, मजबूत बक्सों में हर एक में पर्याप्त फिनायल की गोलियां। गोलियां भी ऐसी कि चौकोर व बड़े साइज की। ऐसी गोलियां बहरहाल हममें से तो किसी ने भी अभी तक न देखी थीं। लेकिन अब सब

सामान उल्टा-पुल्टा जा चुका है. एक बार पुलिस द्वारा. दूसरी बार इंवेंटरी बनाते समय।

लीजिए थोड़े सामानों की संक्षिप्त सूची—चंदन की लकड़ी (3 अदद). यार्डले—विदेशी शेविंग सोप. नेप्थलीन की गोलियों का पैकेट. पूल टेप फिलिप्स का. दो जीलेट—इंगलैंड का सेफ्टी रेजर. तुलसी की दो मालाएं. तीन रुद्राक्ष की मालाएं. 2 जाप वाली थैली. अगरबत्ती. टिकोजी. एक दर्जन पर्ल टायलेट साबुन. 12 अदद चश्मों के केस जिसमें 7 में चश्में हैं **(इसमें एक चश्मा धूप वाला ठीक वैसा ही है जैसा 1979 में समर गुहा द्वारा जारी नेताजी के चित्र में पहने हुए दिखाया गया है—लेखक)**. छोटी पेट्रोमैक्स की दो अदद चिमनी. 2 स्मोकिंग पाइप (पाइप क्लीनर व स्टिक्स के 6 बंडल सहित). डेढ़ दर्जन क्यूटी क्योरा साबुन. स्फटिक की माला. जवाकुसुम तेल. इंडोर नेट एरियल. पेट्रोमैक्स पार्ट्स. लाइटर रिफिल्स. पेंसिल रिफिल्स. सिगार पेपर्स. अगरु सेंट की 7 शीशियां. यू.डी. कोलोन सेंट. मैसूर संदल-33-ऑयल 4 शीशी. काले पत्थर की दो खरल. 5 विभिन्न प्रकार के ब्रश. 2 कपड़ा झाड़ने का ब्रस. 1 जीलेट सेविंग ब्रुस. तीन अदद इरेजिंग रबर ब्रश सहित. 5 स्टील चम्मच. स्क्रू ड्राइवर. आचमनी. अर्घा. टेप रिकार्डर हेड क्लीनर. हवन सामग्री. जेवरात के खाली डिब्बे 4 अदद। पाठकगण ज़रा घबड़ाएंगे नहीं। इन्हीं सामानों में कुछ चौंकाने वाले सामान भी आपको मिलते चलेंगे। कृपया उनका संदर्भ उनकी उपस्थिति आदि का अर्थ लगाते चलें तो आपको काफी विचित्रता नज़र आती जाएगी कि महज एक 'साधू बाबा' के पास. ऐसा सामान क्या दर्शाता है? बाबा के पास तीन शीशी चेरी ब्लासम जूते की क्रीम. एक डिब्बा चेरी ब्लासम शू-पालिश तथा एक डिब्बा सिल्वर पालिश ही केवल नहीं थी बल्कि उनके पास **इंगलैंड का बना इम्पायर करोना अंग्रेजी टाइप राइटर** (क्रमांक 810) भी था, जो उनकी पर्सनैल्टी की ओर इंगित करता है। साधना ब्यूटी क्रीम सहित दर्जनों तरह की इत्र व सेंट की दर्जनों शीशीयां. **स्मोकिंग पाइप दो अदद. मैगनीफाइंग ग्लास (मेड इन स्वीट्ज़रलैंड) तथा स्टील की मोटी लेड पेंसिल जिसमें टॉर्च भी फिट है।** हम यहां फिर एक बार रुककर पाठकों को बताना चाहेंगे कि ये मैगनीफाइंग ग्लास नक्शे आदि पढ़ने में प्रयोग होता है तथा ये जिस स्टील की मोटी लेड पेंसिल का वर्णन आया है. उसके बारे में हमारे पत्रकार साथी श्री वी.एन. अरोरा. जो अवध विश्वविद्यालय में सैन्य विभाग के प्रवक्ता भी हैं ने हमें बताया कि **यह वह पेंसिल है जिससे रात्रि के समय कहीं अंधेरे में नक्शा देखते हुए पेंसिल से निशान लगाया जाता है। इसमें से जलने वाली टॉर्च केवल बहुत ही थोड़ी-सी जगह पर रोशनी देती है। ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि यह टॉर्च किसी पेन में नहीं बल्कि पेंसिल में ही लगी है। और नक्शे में निशान लगाते समय पेंसिल का ही प्रयोग किया जाता है। अब आप भी सोच रहे होंगे कि ऐसी पेंसिल और इस साधू के पास?** खैर चलिए आगे बढ़ते हैं।

केसरिया रंग की सिल्क की दसियों धोतियां. कुर्ते. केसरिया बनियाइन. पायजामे. अंडरवीयर. सिल्क की केसरिया रंग की कमीजें. सिल्क की चादरें. एक इंगलैंड की बनी ऊनी बनियाइन. संन्यासी लोग के प्रयोग में आने वाला गेरूए रंग का झोलेदार चादर सिला हुआ. सिल्कन शॉल. **एक मक्खनजीन की सफेद पैंट इस्तेमाली**. क्यूटी-क्योरा साबुन. 19 पैकेट जीलेट ब्लेड तथा चमड़े का दस्ताना. एक डिब्बा कार्बन पेपर. एक लाल डिब्बे में दो फाइन स्क्रूड्राइवर. एक अदद चिमटी. दो लोहे की बड़ी पिन और एक इंग्लैंड का बना हुआ चाकू रामभवन में मौजूद मिला। **वहीं पर जर्मनी की एक बड़ी दूरबीन (बाइनाकुलर) चमड़े के केस में भी रखी मिली। आश्चर्य है कि हमारे राज्य के मंत्री महोदय जिस व्यक्ति को मात्र 'साधू' कहकर टाल देना चाहते हैं उसके पास इतनी बड़ी व महंगी विदेशी दूरबीन क्योंकर मौजूद है! इसका जवाब कौन देगा?**

## परिष्कृत रुचि वाले सामान

इस तरह वहां मिले सामानों का यहां जिक्र करने का मेरा मतलब सिर्फ इतना है कि पाठकगण उस व्यक्ति की विविधता. परिष्कृत रुचि का अनुमान लगा सकते हैं। क्योंकि वहां पर. जहां एक ओर संन्यासियों के प्रयोग तथा साधारण व्यक्तियों के प्रयोग में आने वाले बर्तन. पतीला. भगौना. कलछुल. गिलास. खुरपी. कुल्हाड़ी. गमछा. माला आदि मिले हैं. वहीं **पर जापान निर्मित चीनी मिट्टी की क्रॉकरी (जिसमें केतली, शुगर पॉट, मिल्क पॉट, कप-प्लेट आदि हैं)** तथा बंगाल निर्मित चाय की क्रॉकरी. फिलिप्स का 'इंफ्राफिल' इलेक्ट्रिक हीटर. एक बैटरी लैम्प. कई थर्मस. एक रेडीमेड स्पन टेरीकॉट की फुल शर्ट. बनियाइनें (36 नम्बर). अंडरवियर (38 नम्बर). एक बड़े साइज का ऊलेन कंटोप. 4 पियर्स साबुन. 13 अदद पांड्स कोल्ड क्रीम साबुन. निको साबुन. 3 लैवेंडर लक्सरी सोप. दो और रेडिमेड सिल्क की बड़ी साइज की कमीजें जिसमें चंदन की बटन लगी हुई हैं. एवरेडी के तीस सेल. टेप रेकार्डर की लीड. 11 पैकेट पेट्रोमैक्स की एसेसरीज पैक्स. एवरेडी टॉर्च के बल्ब एक पैकेट. एक मैगनेट बाक्स मैगनेट सहित (एक डॉ. के अनुसार मात्र इस मैगनेट का दाम कई हज़ार है). कलकत्ता निर्मित रेनबो बटर चुर्न (मथानी). तीन डिब्बे मेंटल पेट्रोमैक्स के. एक फुटबॉल ब्लैडर तथा एक टिन शहद जैसी हजारों वस्तुएं भी मौजूद मिलीं।

एक डिब्बा ब्रॉसों न जाने क्या चमकाने के लिए वहां मौजूद है. तो 1000 एस्प्रीन की टैबलेट से भरा हुआ एक डिब्बा भी वहां मौजूद मिला। वैसे मौजूद तो वहां पर **एक खाकी सूती पैंट (32 x 44) तथा आसमानी रंग की एक हाफ शर्ट (साइज 15½) जिनपर टेलर का नाम लिखा है—टी.डीज. ड्रेसर्स।** 12 अदद ढाका मलमल की मर्दानी धोती. तीन विवेकानंद मार्क की बड़ी सिल्क की कलर कमीजें. **दो अदद रेनकोट मय टोपी के विभिन्न रंग के. तीन और मैग्नीफाइंग ग्लास विदेशी तथा (क्रमांक 1355पर—) अल्यूमिनियम के डिब्बे में तीन अदद विदेशी लाइटर जिनमें गोल्डन कलर वाले लाइटर में हल्की संगीत ध्वनि बजती है, तथा 3 अदद थर्मामीटर के साथ ही और लीजिए मिल गया नेताजी द्वारा पहने जाने वाले चश्मे की तरह का एक टिन के केस में रखा गोल फ्रेम का गोल्डन कलर का चश्मा।**

पाठकगण जरा चौंकें नहीं तो मैं उन्हें बताऊं कि वहां पर सरौते. बड़ा चाकू. खुरपी. रेती. कुल्हाड़ी. हथौड़ी के साथ-साथ एक अदद छोटा गड़ांसा भी मिला है। (क्रमांक 1480)! इस सब वस्तुओं का अभी हम संदर्भ चाहे न जोड़ पाएं लेकिन कभी न कभी इनके संदर्भ महत्वपूर्ण हो सकते हैं। जैसे. आप देखें कि नेताजी ने अपनी आत्मकथा (नेताजी सम्पूर्ण वांग्मय : खंड 1 के

पृष्ठ 55 पर) में एक जगह पर लिखा है कि—"कटक लौटने पर... मुझे अपने कुछ मित्रों के साथ जाने का निमंत्रण मिला, जो हैजे की महामारी वाले एक देहाती क्षेत्र में परिचर्या के लिये जा रहे थे। इस दल के साथ कोई डॉक्टर नहीं था। इसके उपकरण के अंतर्गत होम्योपैथिक की एक किताब, होम्योपैथिक दवाईयों का एक बक्स और ढेर-सी सहज बुद्धि थी।"

भगवन जी के यहां कलकत्ते से दो ही अवसरों पर लोग आया करते थे—और वह अवसर थे, 23 जनवरी, यानि नेताजी का जन्मदिवस तथा दुर्गापूजा। दुर्गापूजा का त्यौहार भगवन जी काफी श्रद्धा से मनाते थे। इन अवसरों पर कलकत्ते से फूल-माला व बंगाली मिठाईयों के अलावा ढेरों सामान आता था। खाने का सारा सामान बड़े-बड़े टिफिनों में बड़े करीने से पैक करके आता था। रामभवन में भी हमें ऐसे अनेक पत्र (क्रमांक-2504, 2657, 2658 आदि) मिले हैं जिनमें 23 जनवरी के अलावा अक्टूबर माह में ही डॉ. पवित्र मोहन राय, सुकृति व संतोष भट्टाचार्य आदि के अयोध्या आदि स्थानों पर बाबा के पास आने का जिक्र है।

और उधर नेताजी अपनी प्रसिद्ध कृति 'द इंडियन स्ट्रगल 1920–42' में क्या लिखते हैं देखिये ज़रा—

"अक्टूबर 1925 में हमारा राष्ट्रीय धार्मिक त्यौहार दुर्गापूजा आने वाला था। हमने सुपरिटेंडेंट को त्यौहार मनाने और इसके लिए आवश्यक धन प्राप्त करने की अर्ज़ी दी। सरकार ने हमारी मांग नहीं मानी और फरवरी 1926 में हमने अनशन शुरू कर दिया।... खैर, सरकार ने फौरन ही आदेश जारी कर दिया कि हमने जो खर्च किया है, वह उसकी मंजूरी देती है, और भविष्य में भी इस प्रकार की धार्मिक आवश्यकताओं के लिये धन दिया जायेगा।" यह किस्सा बर्मा की जेल का है, जब नेताजी वहां पर अंग्रेजों द्वारा बंद किये गये थे, और उन्होंने 'दुर्गापूजा' जैसे त्यौहार को मनाने हेतु अनशन तक किया था।

## वह तमन्नायें क्या थीं ?

ऐसी छोटी-मोटी बातों, तथ्यों व घटनाओं का एक अम्बार-सा बिखरा पड़ा हुआ है रामभवन से लेकर, रह आये उन स्थानों व व्यक्तियों तक—जो कभी न कभी बाबा के सम्पर्क में आये। ऐसे ही एक दिन रामभवन में हमें कागज़ का एक ऐसा भी टुकड़ा मिला था, जिस पर बाबा ने एक प्रसिद्ध फिल्मी गीत के मुखड़े की पहली पंक्ति को हिंदी में यूं नोट कर रखा था—"मैंने तो चांद और सितारों की तमन्ना की थी.." आश्चर्य है कि एक साधू (जैसा कि उ.प्र. सरकार व कुछ लोग कह रहे हैं कि वह मात्र एक साधू थे) अपने पूर्व दिनों की तमन्नाओं को आज भी पाले हुए हैं ! अर्थात उसके दिल में आज भी (यानि की 'साधू' हो जाने के बाद भी) उन तमन्नाओं के पूरा न हो पाने की कसक बाकी है। आखिर वह तमन्नायें क्या थीं ? क्या उसकी एक झलक हमें आशुतोष काली द्वारा बाबा को लिखे गये पत्र की इन पंक्तियों से नहीं मिलती ?—"आपके अखंड भारत के स्वप्न और साधना की बात जानकर उन्होंने (श्री त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती महाराज ने—ले.) पूर्वी पाकिस्तान में ही रहकर काम करने की इच्छा व्यक्त की है।" और गुमनामी बाबा, काशी नरेश को लिखे अपने पत्र में यह लिखकर स्वयं अपनी तमन्नाओं का इज़हार करते हैं—"**आपका भारतवर्ष जग रही है, जगेगी, उठेगी; और पूर्ण पूर्व शाश्वत गौरव-शक्ति-मर्यादा पुनः प्राप्त करेगी—और—फिर भी करेगी।**"

सोचिये ज़रा, ऐसी तमन्नायें रखने वाले व्यक्ति को अगर छिपकर, पर्दे की ओट में रहते हुए शहर-शहर, जगह-जगह भटकना पड़ा हो, दुनिया के सामने खुलकर न आ पाने की मज़बूरी रही हो, दुनिया उसके स्वरूप को न जानने के कारण पहचान तक न पा रही हो—तो क्या उपरोक्त फिल्मी गीत के मुखड़े की दूसरी पंक्ति... "मुझको तो रातों की सियाही के सिवा कुछ न मिला"—बाबा द्वारा झेले जा रहे कष्ट को नहीं दर्शा देती ? और तो और बाबा ने स्वयं श्रीमती पुष्पा बनर्जी से अपने बारे में जो कहा था, वह तो आपको याद ही होगा कि—"मेरा नाम दुनिया के रजिस्टर से हटा दिया गया है।" (देखें प्रथम किस्त)।

## रामभवन में नज़रूल इस्लाम के रिकार्ड

इसका मतलब यह हुआ कि बाबा की भी रुचि गीत व संगीत में थी। तभी तो हमें रामभवन में जहां एक फिलिप्स का चार बैंड वाला बैटरी चालित रेडियो (क्रमांक 1537), एक फिलिप्स का ही सुपर एफ.एम. ऑटोमेटिक फ्रीक्वेंसी कंट्रोल ट्रांजिस्टर, दो 'हिज मास्टर वॉयस' तथा H.M.V. फियेस्टा पापुलर रेकार्ड प्लेयर (1221, 22), एक फिलिप्स का (हॉलैंड निर्मित) स्पूल टेप रेकार्डर ट्रांजिस्टर सहित (1464), तथा नेशनल

ललिता बोस और उनके वकील : सलाह-मशविरा करते हुए

पैनासोनिक (जापान निर्मित) का एक टेप रेकार्डर मिला, वहीं पर छोटे-बड़े कुल मिलाकर विभिन्न आर.पी.एम. के 81 रेकार्ड्स भी मिले।

गुमनामी बाबा के इस रेकार्ड क्लेक्सन में स्व. के.एल. सहगल, जुथिका राय, उस्ताद फैय्याज़ खां साहेब व रजनीकांत, पन्नालाल भट्टाचार्य, पंकज मलिक, सुमित्रा सेन (टैगोर सांग), देवव्रत विश्वास, सुचित्रा मुखर्जी, प्रो. गोविंद गोपाल मुखर्जी, मंजू गुप्ता, सुविन राय और अतुल प्रसाद सेन के गीतों के अलावा बिस्मिल्ला खां व विलायत खां की शहनाई, रविशंकर की राग व सितार और सहगल की आवाजों के साथ-साथ पन्नालाल घोष का बांसुरी वादन भी मौजूद है। मौजूद तो वहां पर श्यामा संगीत, महिषी मर्दिनी स्त्रोत, सव्यसांची, संकलन लालन फकीर, कृष्णा चट्टोपाध्याय, मंजू गुप्ता, दिलीप कुमार राय कमला, हेमंत कुमार के गीतों के साथ-साथ तीन फिल्मों—'सुभाषचंद्र', 'परिचय' तथा 'देसेर माटी' के रेकार्ड्स भी हैं। वहां पर स्वामी विवेकानंद तथा नेताजी रिसर्च ब्यूरो द्वारा प्रस्तुत नेताजी की टोकियो स्पीचों के रेकार्ड्स भी हमें मिले हैं। लेकिन इतने सारे रेकार्डों में हमें वहां पर सबसे ज्यादा जो रेकार्ड मिले, वे थे या तो रवींद्र संगीत, टैगोर सांग तथा वॉयस आफ रवींद्रनाथ टैगोर के, या फिर, काज़ी नज़रुल इस्लाम, नज़रुल के गीत, व फिरोजा बेगम द्वारा गाये गये नज़रुल के गीतों के।

अब तो हमारे पाठकों को बाबा की रुचि का कुछ न कुछ आभास तो अवश्य हो गया होगा। इसका तो अर्थ ये हुआ कि बाबा को जहां उपरोक्त वर्णित लोगों के गीतों व संगीत में रुचि थी, वहीं पर उनके पसंदीदा लोगों में बंगाल के दो महान व्यक्तियों—गुरुवर रवींद्रनाथ टैगोर तथा महान क्रांतिकारी कवि काज़ी नज़रुल इस्लाम का नाम

जोर-शोरों से शुमार था।

अजीब इत्तिफाक है। नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने जब आज़ाद हिंद फ़ौज का गठन किया और देश की स्वाधीनता की अलख जगायी, तब उन्होंने इस महान क्रांतिकारी कवि को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुये कहा था—''युद्ध में हम नजरुल के गीतों की लय पर बढ़ते जाएंगे। जेल की कोठरियों में हम नजरुल के गीत गायेंगे।'' और 9 जुलाई सन् 1942 को लकवे के आक्रमण से वाणी बंद हो जाने के कुछ दिनों पूर्व ही सन् 1941 में नेताजी के कलकत्ते से अंतर्ध्यान हो जाने पर, जानते हैं महाकवि नजरुल इस्लाम ने नेताजी के बारे में क्या कहा था? उन्होंने कहा था कि—''जो सोचते हैं कि सुभाष भाग गये हैं वे उन्हें नहीं पहचानते हैं, जो सोचते हैं कि सुभाष संन्यासी हो गये हैं, वे भी उन्हें नहीं पहचानते हैं।'' कवि आगे कहता है—**''मैं उन्हें जानता और समझता हूं, इसलिए मैं कहता हूं कि सुभाष डरपोक नहीं हैं, जो भाग जाएंगे, अपनी मां को बंदिनी की दशा में छोड़कर—सुभाष हिमालय में भी, तपस्या में भी शांति नहीं पाएंगे... ।''** इसका मतलब ये हुआ कि काजी नजरुल इस्लाम नेताजी से परिचित थे और नेताजी भी उस महान कवि से परिचित थे, तभी तो दोनों ने बाम्बे टॉकीज द्वारा निर्मित बहुचर्चित फिल्म 'अछूत कन्या' एक साथ बैठकर देखी थी (अमृत प्रभात : 15 अगस्त 1981) । तो क्या गुमनामी बाबा भी नजरुल इस्लाम से परिचित थे? यह बात तो मैं नहीं जानता, मगर जहां उपरोक्त दसियों रेकार्ड काजी नजरुल इस्लाम के रामभवन में मिले हैं वहीं पर काजी नजरुल इस्लाम के उपरोक्त बयान की बंगला भाषा के अखबार की कटिंग रामभवन में ही हमें मिली थी, तो हाईकोर्ट कटिंग रामभवन में ही हमें मिली थी, जो हाईकोर्ट के आदेश पर बनी सामानों की इंवेंटरी के क्रमांक 2683 पर दर्ज है।

रामभवन में सामान—दो रेकार्ड बक्स तथा दो ग्रामोफोन के बक्से

## रवींद्रनाथ टैगोर और नेताजी

और महाकवि रवींद्रनाथ टैगोर तथा नेताजी के भावनात्मक सम्बंधों को तो दुनिया जानती ही है। कविवर ने एक बार सन् 1939 में सुभाषचंद्र बोस को एक पत्र में लिखा था कि—''सारा देश तुम पर आस लगाये बैठा है। ऐसा अनुकूल मौका अगर द्विविधा में तुम खो बैठे, तो दोबारा नहीं मिलेगा।... इतनी बड़ी गलती कभी मत करना। तुम्हारे लिये नहीं कह रहा हूं, देश के लिए कह रहा हूं।'' (मैं सुभाष : भाग 1) गुरुदेव ने इससे भी पहले कभी कहा था कि सुभाष, आज मैं बंगाल के नेता के रूप में तुम्हारा वरण कर रहा हूं। साथ ही नेताजी की गुरुदेव रवींद्रनाथ के प्रति आसक्ति जग-जाहिर है। लेकिन बाबा भी रवींद्रनाथ की स्पीच, रवींद्र संगीत व उनके गीतों से इतना प्रभावित थे—ज़रूर उनकी भी रवींद्रनाथ में रुचि का परिचायक है।

चलिये यहां तक तो ठीक है कि नेताजी का सम्बंध व सानिद्ध गुरुवर रवींद्रनाथ और महाकवि नजरुल इस्लाम से था। लेकिन क्या नेताजी की गीत और संगीत में भी रुचि थी—पता लगाना चाहिये! नेताजी ने कभी अपने किसी मित्र को लिखा था—''मित्र, देश के कोने-कोने को संगीत की स्वर-लहरी से आप्लावित कर दो और जिस सहज आनंद को हम खो बैठे हैं, उसे लौटा लाओ। जिसके हृदय में आनंद नहीं है, संगीत से जिसका हृदय तरंगित नहीं होता, क्या वह व्यक्ति जगत में कोई महान कार्य कर सकता है। मेरे विचार से जिस व्यक्ति के हृदय में संगीत का स्पंदन नहीं है, वह चिंतन और कर्म द्वारा कदापि महान नहीं बन सकता।'' क्या तभी इस महान कर्मयोगी ने अपने उस महासंग्राम में भी अपनी आजाद हिंद फौज को गीतों व संगीतों की स्वर-लहरी से रोमांचित व उल्लासित किया था! पर गुमनामी बाबा को इसकी क्या आवश्यकता आन पड़ी थी कि वे एक 'साधू व संन्यासी' का जीवन जीते हुए भी 'गीत व संगीत' से इतना जुड़े रहे? क्या वे भी 'गीत व संगीत' सुनकर महान बनना चाहते थे, या फिर उनकी भी आदत ही थी, जो इतनी उम्र में भी साथ चली आई।

लेकिन इसी संदर्भ में एक बात और, जो हमें काबिले-गौर लगी। वह यह थी कि बाबा के पास अगर उपरोक्त रेडियो, ट्रांजिस्टर, टेप रेकार्डर, ग्रामोफोन व रेकार्ड्स थे, तो उनके साथ ही साथ उनके पास एक इंडोर नेट एरियल, ट्रांजिस्टर एरियल, दर्जनों पूल टेप, दो साऊंड रेकार्डिंग टेप दो मैगनेटिक टेप आदि सामानों के अलावा आकाशवाणी का फ्रीक्वेंसी चार्ट भी वहां मिला। एक बात और है, कि बाबा गाना सुनने, रेकार्ड बजाने **या फिर 'कुछ टेप करने' में अनाड़ी नहीं साबित होना चाहते थे।** और इसके लिए ज़रूरी था कि वे इन यंत्रों की कार्यप्रणाली से पूर्ण वाकिफ रहते। इसके लिए उनके पास (क्रमांक 1882) एक टेप रेकार्डर इंसट्रक्सन बाबात इस्तेमाल वास्ते मॉडल E–L 3586/00 फिलिप्स रेकार्डर के सम्बंध में था। और यह जानकारी अर्थात रेकार्डर की पूरी मशीनरी का एकदम वास्तविक हाथ से बनाया गया 18 पृष्ठों में डायग्राम था। खैर! बाबा की संगीत रुचि के कारण—'ए गैलरी ऑफ ग्रेट्स इन हिंदुस्तानी म्यूजिक' शीर्षक वाला नये व पुराने गीतकारों के चित्रों से भरा एक कैलेंडर (क्रमांक 1653) ही केवल वहां मिलता, तो कोई बात न थी, लेकिन वहां तो बाबा 'उषा फोन इंटरकम्यूनीकेशन सिस्टम' तक खरीदने की सोच रहे थे—प्रश्न उठता है आखिर क्यों? □

9, एम.आई.जी., लक्ष्मणपुरी, फैजाबाद

**रामभवन में मिले ढेरों सामान के अलावा गुमनामी बाबा के कमरे में उन्हीं की हस्तलिपि में एक ऐसा नक्शा भी मिला है जिसमें दर्शाया गया यात्रा मार्ग और बिखरे तमाम सूत्रों को जोड़ने से लगता है कि इस नक्शे को बनाने वाला व्यक्ति कोई साधारण आदमी या साधू-संन्यासी नहीं था। आखिर वह कौन था? इसका जवाब पाठक स्वयं तय करें।**

यह जनवरी का महीना है। इसकी 23 तारीख को भी कुछ लोग अपने-अपने तरीके से नेताजी सुभाषचंद्र बोस का जन्मदिन मनाने की औपचारिकता निभायेंगे। वह चाहे 'अभी नेताजी जिंदा हैं, और एक न एक दिन भारत पर राज करने जरूर आयेंगे' मानने वाले आज़ाद हिंद सम्मेलन के लोग हों, या ज्ञानी जैल सिंह जैसा कोई भूला-भटका।

ज्ञानी जी पिछली 23 जनवरी को कलकत्ता जाकर नेताजी भवन में शीश नवा आये थे।

मगर इस बार, इससे पहले कि लोग रामभवन की घटना को भी भूल जाएं, हम उनके सामने 'ताईहोकू विमान दुर्घटना' के बाद नेताजी आखिर गए कहां? जैसे प्रश्न को हल करता एक महत्वपूर्ण दस्तावेज प्रस्तुत कर रहे हैं।

## महत्वपूर्ण नक्शा

गत्ते के एक टुकड़े पर, कुछ जुड़े हुए कागज का हाथ से बना एक नक्शा रामभवन में मिला है। बालारपुर पेपर मिल के इस गत्ते के टुकड़े को देखने से लगता है कि इसमें कोई पुस्तक या सामान कलकत्ते से पैक होकर यहां आया था। उसी पर यह नक्शा स्याही वाले पेन से बनाया गया है। यह पूरा नक्शा एक ही हस्तलिपि में है, केवल फ्रॉम बेला शब्द की स्याही व राईटिंग मूल नक्शे से कुछ इतर लगी।

इंवेंटरी बनाते समय हमलोगों की आपसी बातचीत के बीच यह भी प्रश्न उठा कि आखिर ये नक्शा किसकी राईटिंग में है? वहां मौजूद बाबा के स्थानीय शिष्यों का कहना था कि ये नक्शा उनके भगवान जी (यानि गुमनामी बाबा) की ही राईटिंग में है। फिर हमलोगों ने भी वहां मौजूद बाबा की सेकड़ों हस्तलिपि के नमूनों से मोटा-मोटा मिलान किया—तो हमें भी लगा कि ये नक्शा बाबा की ही राईटिंग में है और उन्हीं के द्वारा बनाया गया है। यह नक्शा इंवेंटरी के क्रमांक 1922 पर दर्ज है और इसी नक्शे का एक छोटा प्रारूप भी हमें वहां मिला, जो क्रमांक 1923 पर दर्ज है।

**नक्शे तो रामभवन में कई मिले। उत्तर-पूर्वी रेलवे का नक्शा (क्रमांक 1996), अयोध्या का नक्शा (1997), रोड मैप ऑफ इंडिया (1998), बांग्ला देश का एक हाथ से बना नक्शा—जिसमें पद्मा, धनेश्वरी व इच्छुमती नदियों व रायबाड़ा का बंगला भाषा में जिक्र है (2450), तथा एक 'ए लिटरेरी एंड हिस्टारिकल एटलस ऑफ एशिया' द्वारा जे.जी. बरथाबलोम्यू एल. एल.डी. लंदन एडीसन (1570), रेलवे मैप ऑफ इंडिया (1573), सर्वे ऑफ इंडिया का 14 भागों में विभक्त भारत का एक नक्शा मय रसीद के (2428)**—मगर ये नक्शा बिल्कुल नया पेक किया

रखा मिला था। इसके साथ ही बनारस के शंकुलधारा मोहल्ले में मकान बनाने हेतु एक बिल्डिंग प्लान का नक्शा भी हमें वहां मिला। अपने पहले साक्षात्कार में ही पं. रामकिशोर मिश्रा ने हमको यह बताया था कि बाबा ने बनारस या कलकत्ते में कहीं एक मकान बनवाया है।

डॉ. पवित्र मोहन राय के ही एक पत्र से हमें यह भी लगा कि बाबा को नक्शों की महत्ता का पूरा अहसास था। क्योंकि डॉ. राय अपने इस पत्र में पूर्वी बंगाल, पं. बंगाल, बिहार व आसाम आदि के कुछ पुराने व विस्तृत नक्शों का जिक्र करते हुए बाबा को लिखते हैं कि, "आपने कभी कहा था कि पुराने नक्शे बहुत काम के होते हैं (2527)।" और उधर हम पाते हैं कि नेताजी भी नक्शों के प्रति काफी सचेत व जानकार थे। तभी तो शैलेश डे लिखते हैं कि, "25 अप्रैल 1945... इस समय शाम के चार बजे हैं। नेताजी एक नक्शा लेकर कुछ देख रहे थे" (मैं सुभाष... तृतीय : 198)। और उसी पुस्तक में पृष्ठ 219 पर लिखा है कि, "सुभाष नक्शे हाथ में लिये बैठे रह गये। खो गये सपनों की दुनिया में।" कहीं बाबा भी कभी सपनों की दुनिया में तो नहीं खो गये थे, जिसकी यादों का ही परिणाम हो यह नक्शा? तो क्या बाबा की ऐसी कोई आदत थी कि वह कोई बात याद करके उसे नोट कर लेते थे? हां जरूर थी! इसका भी एक प्रमाण हमें मिला है। पुष्कर धाम से ब्रजनंदन दुलाल को लिखे गये अंतिम पत्र के मजमून को याद करते हुए गुमनामी बाबा ने एक कागज पर लिखा है कि—As far as I remember, text of the Lost Letter from Sri pushkar Dhaam— ।

## विवादास्पद हवाई दुर्घटना

यह बात आज भी विवादास्पद है कि उस दिन यानि 18 अगस्त 1945 को ताईहोकू हवाई अड्डे पर हुई तथाकथित विमान दुर्घटना में नेताजी की मृत्यु हुई थी या नहीं? या फिर वे कहीं अज्ञात स्थान पर चले गये? इस विषय को लेकर जहां सरकार ने दो-दो कमीशन बैठा डाले, भारतीय व विदेशी लेखकों तथा नेताजी के सहयोगी व अनुयायियों ने सैकड़ों पुस्तकें लिख डालीं, वहीं पर आज भी लोग कयास पर कयास लगाते चले आ रहे हैं। आखिर ये कयास क्या है?

सबसे पहले हम श्री शैलेश डे के ही लेते हैं। श्री डे अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "मैं सुभाष बोल रहा हूं" के तृतीय खंड के आखिरी पृष्ठों में एक जगह लिखते हैं कि, "तब फिर क्या हुआ था? कौन-सा नाटक खेला गया था ताईहोकू हवाई अड्डे पर?"

16 अगस्त को सुभाष ने हजारों लोगों के सामने सिंगापुर एयरपोर्ट छोड़ा था। बैंकाक से सायगन गये थे, यह भी सच है। उसके बाद ही असली नाटक शुरू हुआ था। (पेज 307)

... एक बार सायगन एयरपोर्ट पर नजर डालो।... ठीक पांच बजकर पंद्रह मिनट पर 97.2 शैली बम्बर सुभाष और कर्नल हबीबुर्रहमान को लेकर आसमान में अदृश्य हो गया। सारे साथी दुखी हृदय से वापस चले आये।

परंतु क्या कोई कह सकता है कि यह हवाई जहाज पुनः सायगन हवाई अड्डे पर थोड़ी देर बाद वापस नहीं उतरा था? किसी न किसी ने देखा ही होगा। एक अमरीकन सम्वाददाता ने बाद में वहां सुभाष को देखा था। लंदन के 'संडे ऑब्जर्वर' ने भी लिखा कि बाद में सुभाष सायगन शहर में दिखाई पड़े।

यही वक्तव्य था सायगन के प्रत्यक्षदर्शी गवाह रमणी गोसाई का। उन्होंने कमेटी के सामने दृढ़ स्वरों में कहा था, "हां, मैंने नेताजी को देखा है।" (पेज 308)

अब प्रश्न उठता है कि फिर सुभाष कहां गये? वही रहस्यमय जहाज उन्हें लेकर गया कहां?

इस प्रश्न का उत्तर एक ही आदमी दे सकता है—और वह है स्वयं सुभाष। (पेज 309)

तो क्या इसका उत्तर दिया सुभाष ने?

## अटकलों से घिरे नेताजी!

'रहस्यों से घिरे नेताजी' नामक पुस्तक में श्री कुबेरनाथ सिंह लिखते हैं कि, "लेखक को इटावा जनपद के स्व. श्री शुकदेव, जिन्होंने 'नेताजी जीवित' भाग-2 प्रकाशित कराया था के द्वारा यह सूचना मिली थी कि सन् 1945 की कथित विमान दुर्घटना के तुरंत बाद नेताजी सेगांव होते हुए साइबेरिया पार करके रूस गये थे। और 1950 में रूस से चीन पहुंच गये।" (पेज 131)

नेताजी प्रकरण के विभिन्न मुद्दों को अपने तरीके से काफी लम्बे समय तक उठाने वाले श्री आई.बी. सक्सेना ने अपनी पुस्तक 'खुली किताब बनाम कांग्रेस के शिकार' में लिखा है कि, "... परंतु नेताजी उस विमान द्वारा जनरल शीदेय के साथ डायरेन गये या नहीं, और वहां पहुंचे या नहीं, इस बात को प्रमाणित करने के लिए श्री श्यामलाल जैन टाइपिस्ट (जो कि उस समय में पं. जवाहरलाल नेहरू, आसफ अली तथा भूलाभाई देसाई के एक अत्यंत विश्वासपात्र टाइपिस्ट थे) का कहना है (और उन्होंने यही बयान कु. कमलिनी सेन गुप्ता, सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट के न्यायालय में भी एक मुकदमे में गवाह की हैसियत से दिया) कि पं. जवाहरलाल नेहरू ने एक अत्यंत गोपनीय पत्र मुझसे टाइप कराया था, जो नेताजी के पास से आया था, जिसमें लिखा हुआ था, अर्थात जिसके द्वारा पंडित जी को यह सूचना प्राप्त हुई थी कि आज 23 अगस्त 1945 को नेताजी सायगन से हवाई जहाज द्वारा मंचूरिया के डायरेन हवाई अड्डे पर दोपहर के 2 बजकर 30 मिनट पर उतरे, और उसके पश्चात नेताजी ने केलों और चाय का नाश्ता लिया। उसके पश्चात वह एक जीप में चार आदमियों सहित बैठे, जिनमें से एक आदमी जनरल शीदेय था।... जीप में बैठकर नेताजी रूस की सरहद तक पहुंच गये।" (पेज 29)

यही नहीं, डॉ. सत्य नारायण सिन्हा ने भी अपनी पुस्तक 'नेताजी मिस्ट्री' में लिखा है कि नेताजी सकुशल डायरेन (मंचूरिया) पहुंच गये थे, और कोई हवाई दुर्घटना 18 अगस्त 1945 को फारमोसा में नहीं हुई।" (पेज 30)

श्री सक्सेना अपनी इसी पुस्तक में यह भी लिखते हैं कि सन 1945 के बाद नेताजी के बड़े भाई श्री शरतचंद्र बोस ने मद्रास एसेम्बली के सदस्य श्री मथुरालिंगम थेवर को गुप्त रूप से सीमा पार कर 'सिकियांग' भेजा, जो काफी समय तक नेताजी के पास रहे। (पेज 49)। और वापस आने पर श्री थेवर ने बताया कि नेताजी से सम्बंधित एक स्वामी शिव प्रणवा जी रहते थे। और स्वामी जी के भारत आने के पश्चात यह प्रचार आरम्भ हुआ कि नेताजी जीवित हैं, तथा भारत में साधु-भेष में घूम-फिर रहे हैं, किन्हीं ने यहां देखा, वहां देखा, इसने देखा, उसने [illegible] आदि-आदि समाचार दिन पर दिन बढ़ते ही चले गये। (पेज 52)।"

इसी तरह लखनऊ के श्री जंग बहादुर जौहरी द्वारा प्रकाशित 'नेताजी सुभाषचंद्र बोस' नामक बुकलेट में लिखा है कि, "संसार को अपनी दुर्घटना से मौत के रहस्य में उलझाकर नेताजी मंचूरिया से रूस रवाना हो गये... कभी-कभी वहां से नेताजी तिब्बत होकर भारत आया-जाया करते थे। (पेज 54)।" तथा—"सितम्बर 52 के बाद नेताजी पुनः भारत आ गये। उन्होंने सम्पूर्ण भारत का पैदल भ्रमण किया। यह उनका भारत का दूसरा पैदल भ्रमण था।"

## अखबारी रिपोर्ट

और 16 जून 1985 को 'राजस्थान पत्रिका' दैनिक में प्रकाशित अपने एक लेख में प्रो. बी.एन. तालेकर ने डॉ. नंदलाल शर्मा द्वारा राजस्थान हाईकोर्ट में दायर एक मुकदमे का हवाला देते हुए उसमें अंकित दस्तावेजों के आधार पर लिखा कि नेताजी दरअसल ताइवान के लिये गये ही नहीं, बल्कि उनके जापानी पायलट ने जहाज से जापानी निशान मिटाकर उसे ब्रिटिश वायुयान का रूप दे दिया। और इसी जहाज से उन्हें मलेशिया के पेनांग नगर ले गया। यहां से नेताजी और अंग्रेजों के बीच लुका-छिपी का खेल शुरू होता है।"

अर्थात श्री शैलेश डे का कहना है कि इस पूरे रहस्य की सारी कहानी सायगन से ही शुरू होती है, और प्रो. तालेकर ने कहा कि नेताजी सायगन से ताईवान न जाकर मलेशिया के पेनांग शहर आ गये और यहीं से उन्होंने आगे की अज्ञात यात्रा प्रारम्भ की।

उपरोक्त कुछेक उद्धरणों को यहां प्रस्तुत करने का मेरा मकसद सिर्फ इतना है कि, 18 अगस्त 1945 के बाद भी काफी लोगों का यह मानना रहा है कि नेताजी ने पूरे भारत का कई बार भ्रमण किया है, और वे रूस, चीन, तिब्बत व हिमालय के विभिन्न स्थानों पर भी

दिखे व रहे हैं।

तो आईये, देखें कि यह नक्शा इन लोगों की बातों की कितनी पुष्टि करता है!

रामभवन से प्राप्त इन महत्वपूर्ण नक्शों की फोटोस्टेट कॉपियों में पाठकों की सहूलियत के लिए हमने इन पर 1 से लेकर 26 तक नम्बर डाल दिये हैं।

इन नक्शों में एक बात, जो बहुत गौर करने लायक हमें लगी, वह है इसमें बने तीर के निशान। और इन निशानों का रुख भी एक ही ओर बढ़ती हुई रेखा को इंगित करता है। अर्थात हिंदुस्तान के विभिन्न भागों, नगरों से होती हुई यह रेखा पाकिस्तान, अफगानिस्तान, रूस, चीन, तिब्बत और फिर चीन में जाकर समाप्त हो जाती है। नक्शा देखने से लगता है कि जैसे कोई यात्री अपने किसी यात्रा मार्ग को दर्शा रहा हो। अब अगर हम बड़े नक्शे में बने तीर के निशानों के सहारे चलें तो यह यात्रा हमें बंगाल की खाड़ी में स्थित अपने पड़ोसी देश बर्मा के 'चेडूब' नामक द्वीप से प्रारम्भ करनी होगी। क्योंकि सबसे पहला तीर का निशान वहीं पर है।

लेकिन इस स्थान से पहले भी गुमनामी बाबा ने नक्शे में कुछ बनाया है। इसलिए सबसे पहले हमें उन बिंदुओं पर विचार कर लेना चाहिए। आप जरा गौर से दोनों नक्शों का मिलान करें, और छोटे नक्शे में नं. 2 के पास लिखे S.Vn. (साउथ वियतनाम) के इर्द-गिर्द बनायी गई Longitude तथा Latitude को विश्व के मानचित्र पर देखें तो नं. 2 के तीर से हमने जिस बिंदु को इंगित किया है—वह 'सायगन' शहर ही आता है।

आपको याद होगा कि 1945 के बाद की सारी कहानियों का उद्गम स्थल 'सायगन' ही था। तो क्या गुमनामी बाबा ने भी इस नक्शे में बनी यात्रा-रेखा को 'सायगन' से ही शुरू किया ? और Longitude व Latitude द्वारा सायगन की सही स्थिति निकालने के लिए ही केवल N.Vn. (नार्थ वियतनाम) का सहारा लिया ? लेकिन लगता है, यहां भी बाबा ने 'सायगन' न लिखकर अपनी गोपनीय प्रवृत्ति का परिचय दे ही दिया। **अगर हम यह मानकर चलें कि बाबा ने स्वयं जिन-जिन स्थानों की यात्रा की, और उसी आधार पर ही यह नक्शा बनाया, तो यहीं पर दो प्रश्न उठने स्वाभाविक हैं। पहला यह कि क्या बाबा ने भी अपनी कोई यात्रा नार्थ या साउथ वियतनाम से ही शुरू की थी ? और की ही थी, तो उन स्थानों के नामों को दर्शाया क्यों नहीं ? क्या जान-बूझकर छिपाया ? आखिर क्यों ? दूसरा प्रश्न उठता है कि, बाबा अगर नेताजी के कोई सहयोगी या अनुयायी थे, और वे नेताजी के 1945 के अंतर्ध्यान के आधार (या जानकारी) पर ही कोई नक्शा बना रहे थे—तो उन्होंने 'सायगन' शब्द लिखने में कोताही क्यों की ? क्या उन्हें किसी राज के खुल जाने का डर था ? प्रश्न उठ सकता है कौन-सा राज ?**

**इन नक्शे ने तालेकर साहब की इस बात की पुष्टि कर दी कि नेताजी सायगन से ताईवान न जाकर पेनांग चले गये।... लेकिन यह नक्शा तो प्रो. तालेकर की कहानी से भी आगे के राज़ को खोलता नज़र आ रहा है!**

बड़ कयास लगाये जा सकते हैं। आपलोग भी लगाइए, और मैं भी लगाता हूं। कहीं ऐसा तो नहीं था, कि गुमनामी बाबा ही नेताजी रहे हों और अपने इस दूसरे अंतर्ध्यान को याद करके ही उन्होंने स्वयं यह नक्शा बनाया हो और तभी उस महत्वपूर्ण विवादास्पद स्थल 'सायगन' का नामकरण जान-बूझकर न किया हो ?

खैर, चलिये, शैलेश डे की तरह हम भी एक कयास, यानी अंदाज लगाकर, अर्थात यह मानकर चलते है कि, यदि नेताजी ने ही स्वयं यह नक्शा बनाया, हो तो ? तो हम उस रहस्यमयी विवादास्पद प्रश्न 'कि नेताजी सायगन से कहा गये ?' का सीधा उत्तर इस नक्शे से यह पाते हैं कि वह दुनिया को भ्रम में डालकर अपनी अत्यंत गुप्त योजना के अनुसार 'सायगन' से सीधे (या कम्बोडिया होते हुए) मलेशिया के 'पेनांग' शहर जा पहुंचे। वैसे यही कयास प्रो. तालेकर ने भी लगाया था। मगर इन कयासों को, यह नक्शा सच में बदलता नज़र आया!

हमने ऊपर 'सायगन से सीधे, या कम्बोडिया होते हुए' इसलिए लिखा कि छोटे नक्शे में नं. 2 के पास जहां केवल तीन बिंदु दर्शाये गए हैं, और केवल "Cm" (कम्बोडिया) लिखा हुआ है, वहीं पर बड़े नक्शे में इन तीनों बिंदुओं के पास कम्बोडिया के किसी स्थान को भी एक अलग बिंदु से दर्शाया गया है, और जिस पर यात्रा-रेखा गुजरी हुई है।

अब अगर आप छोटे नक्शे में नं. 2 और नं. 3 के बीच देखें, तो आपको एक टेल (पूंछ) की तरह 'मलेशिया' नज़र आयेगा, जिसको यात्रा-रेखा पार करके नं.3 के समीप बने बिंदु तक आई है। यहां बने Longitude व Latitude के आधार पर, अगर आप एटलस में वह स्थान खोजें, तो यह बिंदु स्थान 'पेनांग' ही नज़र आएगा। नक्शे में थोड़ा-बहुत इधर-उधर होना स्वाभाविक ही है, क्योंकि यह नक्शा बिना नाप-जोख के हाथ से बनाया गया है। अब हमारा कहना है कि इसी आधार पर बड़े नक्शे में नं. 3 के समीप का बिंदु भी 'पेनांग' ही है।

अर्थात इस नक्शे ने तालेकर साहब की इस बात की पुष्टि कर दी कि नेताजी सायगन से ताईवान न जाकर पेनांग चले गये। अब यह बात तो हम नहीं जानते कि नेताजी ने यह यात्रा हवाई जहाज से ही की या पानी के जहाज से। क्योंकि कहीं हमने पढ़ा है कि पहली बार जापान जाते हुए 'पेनांग से सायगन' तक की गुप्त यात्रा उन्होंने जलमार्ग से की थी।

लेकिन यह नक्शा तो प्रो. तालेकर की कहानी से भी आगे के राज को खोलता नज़र आ रहा है। बड़े नक्शे में आपको नं. 4 के पास From S.G. लिखा हुआ मिलेगा। कईयों ने कहा ये S.G. सायगन का ही संक्षिप्त नाम है। लेकिन मुझे यह Saim Gulf (या Gulf of Saim) का ही संक्षिप्त नाम लगा। अर्थात सायगन से कम्बोडिया होते हुए समुद्र मार्ग द्वारा गल्फ ऑफ सायम की तरफ से ही मलेशिया (पेनांग) की ओर जाया जा सकता है। बड़े नक्शे में From S.G. वैसे नं. 3 के ऊपर लिखा जाना चाहिए था। लगता है नक्शा बनाने के प्रारम्भ में ही गलत जगह लिखा गया। वैसे भी इतना बड़ा नक्शा बनाना आसान नहीं है। कोई भी व्यक्ति अगर ऐसा नक्शा बनाने बैठेगा, तो अवश्य ऐसी गलतियां करेगा। जैसे आप देखें कि (नं.22) चीन की 'रेड रीवर' छोटे नक्शे में 'चेडूबा' द्वीप के बिल्कुल करीब है और बड़े नक्शे में काफी दूर। इसी तरह छोटे नक्शे में Ghatia तिब्बत में घुस गया है जबकि बड़े नक्शे में ऐसा नहीं है। अर्थात अंदाज से बनाये गये विश्व मानचित्रों में छोटे-छोटे स्थानों को दर्शाने से ऐसी स्थितियां आ जाना स्वाभाविक है।

## 'पेनांग' का रहस्य

खैर, अब हमलोग 'पेनांग' तक आ गये। यहां फिर प्रश्न उठता है कि नेताजी आखिर 'पेनांग' क्यों आये ? आपको याद है न, कि नेताजी जापानी समर्पण के बाद रूस जाना चाहते थे, और अगर रूस न जा सके, तो उनकी इच्छा भारत आने की ही थी। अतः उन्होंने भारत आने के लिए सबसे सुरक्षित, गुप्त तथा जापानियों द्वारा जाने-समझे मार्ग को ही चुना। यही पेनांग शहर था, जहां I.N.A. के गुप्तचरों को ट्रेनिंग दी जाती थी और यहीं से जापान तथा हिकारी किकान संस्था के जासूस सबमैरीन (पनडुब्बी) द्वारा भारत की सीमा में प्रवेश करते थे। और इसी पेनांग के बारे में एक अंग्रेज लेखक Gerard H. Corr ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "The War of the Springing Tigers" में लिखा है कि—'Penang was the main base for the boats operating in the Indian Ocean, and it was convenient for the Kikan to put agents on the Submarines before they departed on their hunting mission in the Bay of Bengal and in the waters around Celon and India.

तो क्या जापानियों ने नेताजी को पेनांग से सबमैरीन द्वारा बर्मा के 'चेडूबा आइलैंड' तक पहुंचा दिया, जहां से आगे की गुप्त यात्रा नेताजी ने अकेले की? क्योंकि इसी 'चेडूबा' द्वीप से ही हमें नक्शे में तीर के निशान मिलने शुरू होते हैं। अर्थात आगे की मूतलीय यात्रा यहीं से प्रारम्भ हुई। अब आप बड़े नक्शे में नं. 3 के पास बने 'पेनांग' बिंदु से देखें कि बाबा ने नं. 5 के पास बने चेडूबा आईलैंड (I Cheduba) तक एक हल्की-सी रेखा खींची है। लेकिन लगता है कि उन्होंने पेनांग से चेडूबा तक की समुद्र यात्रा वाया अंडमान निकोबार की और वह भी पनडुब्बी से। तभी तो उन्होंने उस यात्रा को अलग से भी दोनों नक्शों में विस्तृत रूप से तथा Longitude व Latitude के सहारे बनाया है। हमें एक सैन्य विशेषज्ञ ने यही बताया कि इतने सूक्ष्म तौर पर बने Longitude व Latitude का प्रयोग साधारणत: समुद्र मार्ग में ही पनडुब्बी व जहाजों द्वारा किया जाता है।

एटलस में अगर आप बर्मा के इस चेडूबा द्वीप की स्थिति को देखें तो सामने ही आपको बर्मा की अराकान पहाड़ियों का दर्शन होगा। जी हां वही अराकान की पहाड़ियां जहां कभी नेताजी सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिंद फौज ने अंग्रेजों से युद्ध किया था। कहावत है कि आदमी कहीं भी चला जाये, पुराने रह आये स्थानों पर एक बार पुन: जाने की कसक उसमें ज़रूर उठती है। इसका मतलब यह हुआ कि लोग जब नेताजी को उधर रूस और मंचूरिया में तलाश रहे थे, तो वे यहां थे चेडूबा में! अब चेडूबा से 'रामरी द्वीप' (देखें नक्शे में लिखा है—I Ramree (Burma)], और रामरी से 'कर्णफुली' व 'हयरारी' होते हुए भारत के 'हटिया' नामक स्थान से नेताजी ने बूढ़ी डिहिंग (Buri Dihing) व निआ डिहिंग (Nea Dihing) नदियों को पार करते हुए Ft. Dihing स्थान से अपनी यात्रा जारी रखी। फिर 'ब्रह्मपुत्र नदी' के समीप से गुजरते हुए 'घुटिया' से 'औरांग' (सम्भवत: आसाम का कोई रेलवे जंक्शन) पहुंच गये।

क्या यहां आपको ऐसा नहीं लगता कि नेताजी अपने चिरपरिचित स्थानों बंगला देश, नागालैंड, मिजोहिल्स के समीप से होते हुए आसाम जा पहुंचे। आपने ऊपर देखा भी था कि कईयों ने 1945 से 47 के बीच नेताजी की इन स्थानों पर उपस्थिति का दावा भी किया है। और इसी आसाम के समीप ही पं. बंगाल के जलपाईगुड़ी में स्थित है शॉलमारी क्षेत्र—जहां पर सन् 1960 के आसपास नेताजी के रहने का बड़ा बवेला मचा था।

## उत्तर प्रदेश की यात्रा

औरांग से आगे चलकर इस 'स्प्रिंगिंग टाइगर' ने 'रंगिया' से एक लम्बी छलांग लगाई और जा पहुंचे 'डुंडवा रेंज' (Dundwa Range) में। उत्तर प्रदेश का यह इलाका हिमालय के तराई क्षेत्र में स्थित है। नं. 7 के पास अगर आप ध्यान से देखें, तो आपको यह रेखा-यात्रा उ.प्र. के बलरामपुर नगर से (सम्भवत:) बस्ती

**नेताजी ने अपनी इस गुप्त यात्रा में बादशाह खान से भी मुलाकात की थी। 1970 में एक पत्रकार से बादशाह खां ने कहा था कि वह दिन ज़रूर आएगा जब सुभाष इस महाद्वीप में अपने देशवासियों के समक्ष प्रकट होंगे।**

होते हुए गोंडा जिले के 'नवाबगंज' से 'घाघरा नदी' को पार करते हुए बाराबंकी जिले के 'हेदरगढ़' स्थान से सुल्तानपुर जिले के 'जगदीशपुर' से तथा रायबरेली के 'डलमऊ' कस्बे होते हुए सीधे रायबरेली रोड से 'बांदा' जिले के 'कामासिन' नामक स्थान पर जा पहुंचती है। यहीं कुछ बंगला भाषा में भी लिखा है जिसे मैं नहीं पढ़ पाया। यात्रा यहां से आगे चलकर मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड इलाके के 'मानगंज' पहुंचती है। नक्शे में M.P. के बाद (c.i.) का मतलब क्या Central India लगाया जाए? बहरहाल मानगंज से बाबा ने 'जिला जौनपुर के जफ़राबाद' कस्बे से होते हुये फैजाबाद जिले की 'टांडा' तहसील में प्रवेश किया। इसका मतलब यह हुआ कि सन् 1963–64 (स्थानीय शिष्यों के अनुसार जब बाबा फैजाबाद आये) से पहले भी गुमनामी बाबा फैजाबाद जिले से होकर गुजर चुके थे।

तो क्या नेताजी ने भी 1945 के बाद फैजाबाद की यात्रा की थी? इस प्रश्न का उत्तर हमें स्वामी निर्वाणानंद की अंग्रेजी पुस्तक 'Netaji At Nehru's Funeral' के पृष्ठ 59 पर यूं मिलता है—'Before Netaji finally reached Sholmari and established himself there, he had to do a lot of travelling of times being harassed and hounded by the minions of the law, in particular the S.P. of Faizabad.' अर्थात इनका कहना है कि नेताजी ने शॉलमारी आश्रम की स्थापना के पूर्व (यानि 1960 के पहले कभी) फैजाबाद की यात्रा की थी, और वहां के एस.पी. ने उन्हें परेशान भी किया था।

टांडा से फिर घाघरा नदी को पार कर (नक्शे में भी है) बाबा हस्ती की 'डुमरियागंज' तहसील होते हुए गोंडा जिले के 'बलरामपुर' नगर फिर जा पहुंचे। यहां से एक लम्बी यात्रा कर वे राजस्थान के 'बीकानेर' के समीप 'अनूपगढ़' और 'सांखी' नगर होते हुए बॉर्डर लाइन को पार करके पाकिस्तान की सीमा में प्रवेश कर जाते हैं। अब यह क्या बिना पासपोर्ट के विदेश यात्रा? लेकिन नेताजी के लिए कौन-सा और कैसा बंटवारा? सन् 1947 तक तो न कोई बंटवारा था और न कोई बॉर्डर लाइन। बल्कि अफगानिस्तान की सीमा तक फैला था हिंदुस्तान—अखंड भारत! लेकिन ये नक्शा तो बाबा ने हाल ही में बनाया है, जबकि हिंदुस्तान-पाकिस्तान का मुकम्मल तौर पर बंटवारा हो चुका था। सिर्फ यादें ही पुरानी थीं, जिन्हें कोई अक्श कर रहा था।

यहां आप पाएंगे कि पाकिस्तान के 'मीरगढ़' से होकर बाबा फिर भारत के Lunka (बीकानेर) होते हुए, दोबारा पाकिस्तान के 'फिरोजा' नगर चले जाते हैं। फिर फिरोजा से 'इलाहाबाद' व 'गुड्डू बैराज' के बगल से गुजरते हुए 'इंदुस नदी' के किनारे-किनारे 'गाजी घाट', 'कोट अड्डा', 'लेह', 'डेरा फतेहखान' के बगल से 'सिंध दोआब' से 'मारी इंदुस' के पास से इंदुस नदी को अंतिम बार पारकर 'कालाबाग' होते हुए 'कोहट' (KOHAT) तक चले आए।

मैं आपको नक्शे के इन स्थानों के नाम इसलिए गिनाता चल रहा हूं ताकि आप इन नामों से जुड़े पुराने इतिहास की कड़ियां जोड़ सकें। जैसे कि आप देखें 'कोहट' के पास ही नक्शे में 'चरसद्दा (पेशावर)' लिखा हुआ है। मैंने कहीं पढ़ा है कि 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के तहत ही सीमांत गांधी खान अब्दुल गफ्फार खां ने इसी 'चरसद्दा' में अपने अनुयायियों के साथ एक प्रदर्शन किया था। और सम्भवत: बादशाह खान इसी क्षेत्र के रहने वाले भी हैं।

## बादशाह खान का बयान

तो क्या नेताजी ने अपनी इस गुप्त यात्रा में अपने पुराने कांग्रेसी साथी बादशाह खान से भी मुलाकात की थी? ज़रूर की होगी तभी तो 1970 में अफगानिस्तान गये टाइम्स ऑफ इंडिया के एक पत्रकार श्री के.एन. कुलकर्णी से बादशाह खां ने कहा था, कि वह दिन ज़रूर आयेगा, जब इस महाद्वीप में सुभाष अपने देशवासियों के समक्ष प्रकट होंगे। (इस खबर की एक टाइप्ड कॉपी रामभवन में भी मौजूद है)। खैर, अब तो आपको 'चरसद्दा' नामक स्थान के महत्व का अंदाजा हो गया होगा। चरसद्दा ही नहीं मैं समझता हूं कि नक्शे में दिये प्रत्येक स्थान व नाम की ज़रूर कुछ न कुछ महत्ता होगी। लेकिन उसके लिए एक विस्तृत शोध व खोज की ज़रूरत है, जो या तो आप सब लोग मिलकर ही कर सकते हैं, या फिर कोई शोधार्थी ही कर सकता है। और सरकार?

बहरहाल 'कोहट' से 'डेरा फतेहखान, डेरा इस्माइल खान' होते हुए बाबा ने अफगानिस्तान की सीमा में (देखें नं. 11) भी प्रवेश कर लिया। कहा जाता है कि नेताजी ने 1941 में इधर से ही अफगानिस्तान की सीमा में प्रवेश किया था और काबुल

गये थे। अब आप पाएंगे कि बाबा ने पाकिस्तान व अफगानिस्तान की सीमा रेखा को कई स्थानों पर आर-पार करते हुए 'मेजर, वाजिरिस्तान, साब कादर तथा चिग्गा सराय' तक की यात्रा की। पाठकगण इस नक्शे में बने 'Zadran Range, Besud, कुनार नदी, काबुल नदी, सफेदखोह रेंज' आदि को अगर ध्यान से देखें तो वे बाबा की इस क्षेत्र की जानकारी के बारे में सहज ही अंदाजा लगा सकते हैं। देखिए उन्होंने कैसे 'चिग्गा सराय' से काबुल के समीप 'बेसुद' स्थान तक का मार्ग बना दिया है। लेकिन उधर न जाकर वे 'कुनार नदी' के किनारे-किनारे 'सफेदखोह' की पंद्रह हजार फिट की ऊंचाईयों को पार करते हुए 'हिंदूकुश' पहाड़ों की 22 हजार से 24 हजार फिट की ऊंचाइयों के बीच Kach Peak' से 'पामीर पहाड़ों' के समीप Mustang, Oata' स्थानों के जरिए रूस में प्रवेश कर गये। अफगानिस्तान की सीमा पर बसे रूस के 'खोरोठा' (बड़े नक्शे में नं. 13 के पास Badak के नीचे लिखा है—Kharec). 'कलायखाम' (नं. 14) की ओर जाने से पहले बाबा ने Karakul' (नं. 16) तक की यात्रा की और फिर उसी बिंदु तक लौट आये। The Readers's Digest Great World Atlas की मदद से भी मैं इस स्थान को नाम नहीं दे पा रहा हूं।

उस अनाम बिंदु से Badak (एटलस में Badakhashan) के खोरोग शहर से Tazhik (एटलस में Tadzhikskaya) प्रांत के Stalinabad (हमें एटलस में Leninabad मिलता है) के बगल के समीप बने बिंदु तक गए, और फिर खोरोग शहर लौट आए। आगे फिर खोरोग से कलायखाम (नं. 14) के बगल से निकल कर पश्चिम की तरफ रूस में न जाने कहां चले गये? इन बिंदु स्थानों का नामकरण तो कोई मानचित्र विशेषज्ञ ही दे सकता है। लेकिन मुझे लगता है कि रूस के इस पश्चिम क्षेत्र से Uzbek व Tazhik प्रांतों व Alma Ata शहर होते हुए वे फिर उसी बिंदु (नं. 13) तक लौट आते हैं, और वहां से 'काराकुल' (नं. 16) होते हुए चीन की सीमा में प्रवेश कर जाते हैं।

लेकिन चीन की सीमा में घुसने से पहले, मुझे एक बात और याद आई। मैंने जंगबहादुर जौहरी की बुकलेट 'नेताजी जीवित हैं' (भाग 1) में पढ़ा है कि 'भारत में योगी सुभाष' नामक पुस्तक में भारतीय राजदूत के.पी.एस. मेनन द्वारा स्टालिन से लिए गए एक इंटरव्यू के रहस्य के अनुसार कहा गया है कि नेताजी जीवित हैं, लेकिन स्टालिन के कैदी नहीं हैं। वह रूस में 'मैगनीटोर्गास्क' के समीप एक गांव में आरामप्रद कैम्प में रहने को प्राथमिकता दे रहे हैं।

आपको याद है न कि सन् 1945 के बाद नेताजी के जीवित रहने की ज्यादातर सम्भावनाएं रूस में ही व्यक्त की गयी है। कहा जाता है कि 1949 में रूस में भारत की राजदूत श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित ने जब बम्बई आकर देशवासियों को स्वतंत्रता से भी अधिक खुशी वाली एक सूचना देनी चाही, तो पं. नेहरू ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया था। लोगों का मानना है कि यह सूचना नेताजी के उस समय रूस में मौजूद होने के
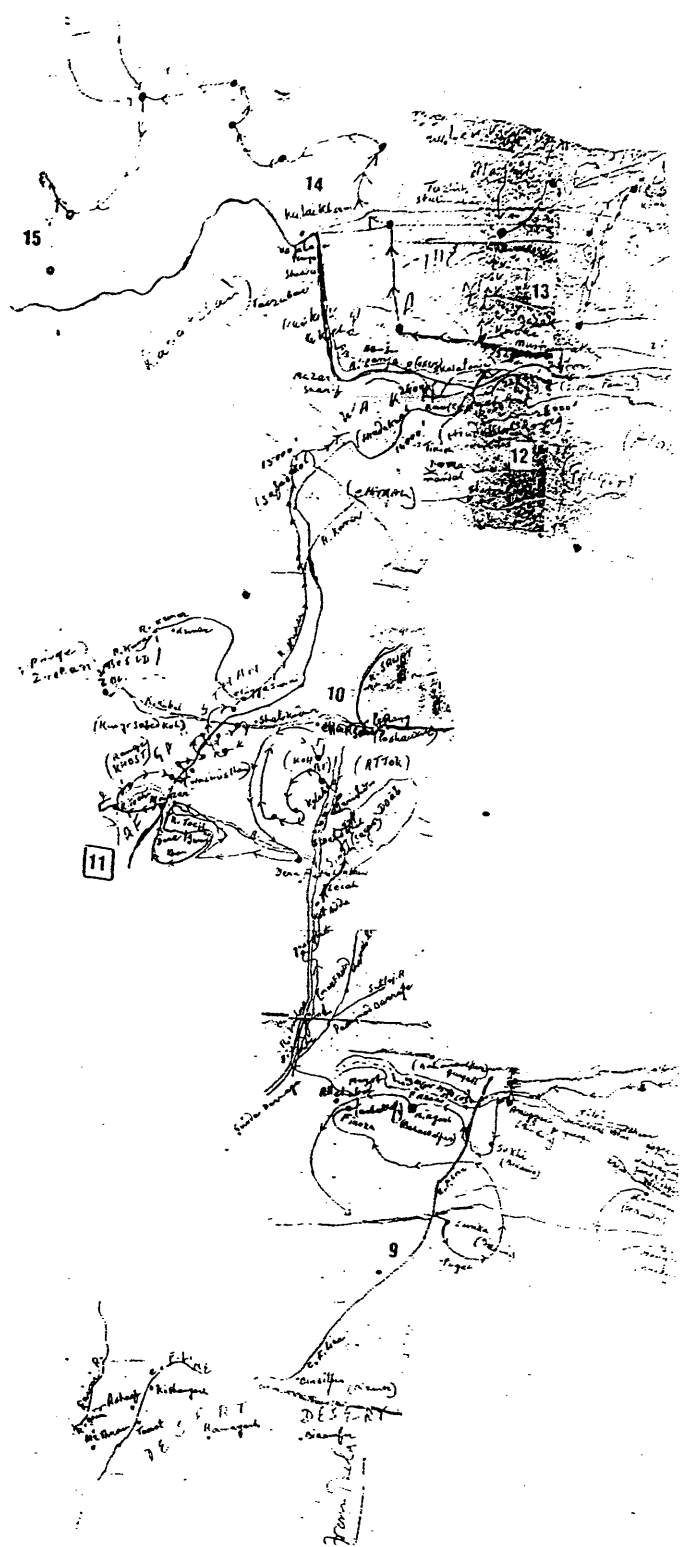
गुमनामी बाबा की हस्तलिपि में रामभवन से मिला महत्वपूर्ण नक्शा

बारे में ही थी।

ये तो हुई नेताजी सुभाषचंद्र बोस की बात। लेकिन यहां तो बाबा अपने नक्शे में रूस के अंदर अपनी यात्रा-रेखा में इतने तीर के निशान लगाते चल रहे हैं कि जैसे उन्होंने भी रूस के इन स्थानों का चप्पा-चप्पा छाना हो। तो क्या बाबा रूस के इन स्थानों पर भी कभी गये थे ? हमें तो लगा कि गये थे ! नहीं तो कैसे सम्भव था कि उनके यादों के पिटारे से ये शब्द निकलते— ''ताजिकिस्तान, उज्बेक, ताशकंद, बुखारा समरकंद तथा अरमेनिया—खूब सुन्दर युवतियों के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। फ्लाइंग ओवर काकेसस रेंज टू रीच अजरबैजान, लैंड ऑफ वेरी गुड लुकिंग पीपुल।'' देखा आपने ! और आगे देखिए क्या लिखते हैं, ''उज्बेकिस्तान ! दी हर्ट लैंड ऑफ एशिया के ताशकंद शहर में कोई भी सैनिक स्प्लैंडर नहीं है। बिल्कुल सीधा-सादा है।'' बाबा यहीं बस नहीं करते, बल्कि एक शेर भी जड़ देते हैं और वह भी एक टुर्के के साथ— ''अगर आन तुर्क-इ-सिराजी बदस्त आरद (या आदाद-ले.) दिलई मां'—हाफिज की इस कम्पलेंट को सुनकर तीमूर बेहद नाखुश हुए थे।''

बहरहाल ये शेर उर्दू में है, या अरबी में या फ़ारसी में—हम नहीं जानते। लेकिन रामभवन में प्राप्त उन कागजों में से एक कागज (क्रमांक 2422) पर अंग्रेजी व बंगला लिपि में (सम्भवतः बाबा की हस्तलिपि) यह भी लिखा मिला। अब तो आपको यकीन हो गया होगा कि उधर नक्शे में उज्बेक, ताजिक प्रांत बने हैं और इधर बाबा उन्हीं प्रांतों व उनके शहरों का ऐसा जिक्र कर रहे हैं, जिसे कोई व्यक्ति वहां गये बगैर नहीं कर सकता— ''ताशकंद में कोई सैनिक स्प्लैंडर नहीं है'' अर्थात वहां कोई सुन्दर भव्य स्थान नहीं है। कुछ लोगों को जरूर मेरे इस तर्क पर भी एतराज हो रहा होगा। और अगर मैं उनके सामने पड़ जाऊं तो वे जरूर मुझसे सवाल कर बैठेंगे कि आपके पास क्या सबूत है कि बाबा कभी विदेश भी गये थे ?

लेकिन ऐसे लोग अगर रामभवन में आने का कष्ट करते तो जरूर उन्हें जवाब मिल जाता कि बाबा ने केवल रूस ही नहीं, बल्कि और भी दुनिया भर के कई देशों की यात्राएं की हैं—क्योंकि उन्होंने खुद श्री हंसराज भाटिया की एक किताब 'आगरा रेड फोर्ट इज ए हिंदु बिल्डिंग' (क्रमांक 100) में— '...टू री एक्जामिन द एंटीसिडेंट ऑफ ऑल मेडवल बिल्डिंग्स इन इंडिया एंड अदर रीजनस ऑफ द वर्ल्ड।'' पंक्तियों को अंडर लाइन करके बगल में पेन से लिखा कि, ''राइट, आई हैव सीन माई सेल्फ।'' तथा 'इन ए नम्बर ऑफ कंट्रीज अबोर्ड टू' को अंडर लाइन करके बगल में अंग्रेजी में लिखा कि, ''Correct आई नो माई सेल्फ, सीन देयर।''

इतना ही नहीं भारत-चीन युद्ध पर ब्रिगेडियर दल्वी की बहुचर्चित पुस्तक 'द हिमालियन

रामभवन से प्राप्त गुमनामी बाबा द्वारा बनाये गये रहस्यमयी छोटे नक्शे का फोटोस्टेट।

लैंडर' (क्रमांक 1656) के पृष्ठ 152 व 153 पर भी दो जगह बाबा ने स्वयं लिखा—"An exact picture in all Countries almost."

अर्थात बाबा ने विदेशों में केवल ऐतिहासिक इमारतें, मध्य स्थान व सैनिक गतिविधियां ही नहीं देखीं, बल्कि नारी खूबसूरती की ओर भी उनका ध्यान गया। लेकिन नेताजी तो बाल ब्रह्मचारी थे ? तो क्या हुआ ! नेताजी के निकटजनों द्वारा प्रस्तुत विवरणों के आधार पर नेताजी के स्वभाव के बारे में श्री पतंजलि लिखते हैं कि, "इसके बावजूद सौंदर्य भावना में वे शून्य नहीं थे। वे तड़क-भड़क से घृणा करते थे, पर प्रकृति, परिवेश व आकार की सहज सुंदरता के प्रेमी थे।" (दैनिक जागरण : 18 जून 87)।

छोटे नक्शे में आप नं. 25 के पास देखें तो आपको 'CH' लिखा मिलेगा। अर्थात बड़े नक्शे में यहीं से चीन में प्रवेश करती यात्रा-रेखा में तीर के निशान मिलते हैं, जो Tannuola, Nor, Ulan, Daba, तथा काशगर के समीप से Yarkand होते हुए 16 हजार फिट के पामीर पहाड़ों को इंगित करते हुए, सिक्यिांग प्रदेश के Kobdo(नं. 18) तक जाते हैं। लेकिन यात्रा-रेखा आगे अन्य दो स्थानों पर होते हुए तिब्बत के 'गारटोक' तक Sigatsi (एटलस में Shigatse) नगर को पार कर पुनः चीन के Lop Nor (नं. 19) से उसके इनर मंगोलिया पार्ट में 'लांगचो' तथा 'चुगछो' (एटलस में Chengchow) से होते हुए चीन के Nanning शहर (नं. 21) तक बड़े नक्शे में खींची गई है। फिर चीन के ही Mentz (एटलस में Mengtzu) से Red River को निकालकर Haifang Gulf (एटलस के अनुसार सम्भवतः Gulf of Tongking के पास उत्तरी वियतनाम का नगर Haiphong) तक दर्शाया गया है। मगर छोटे नक्शे में Nanning (नं. 21) से Mentz (नं. 22) तक यात्रा-रेखा को जारी रखते हुए तीर का निशान बनाया हुआ है।

बहरहाल, यहीं आप यह भी जान लें कि चीन के ये दोनों Mentz व Nanning शहर उत्तरी वियतनाम तथा बर्मा की सीमा रेखाओं के पास ही स्थित हैं। बर्मा देश, जिसकी मांडले जेल में अंग्रेजों ने कभी नेताजी को कैद कर रखा था। रूस के बाद चीन, मंगोलिया, सिक्यिांग तथा तिब्बत आदि स्थानों के बारे में आपको पता ही है कि ये वह स्थान हैं, जहां पर भी नेताजी के रहने, प्रकट होने आदि की चर्चाएं अक्सर की जाती रही हैं। रामभवन में हमें एक कागज पर (क्रमांक 2472) चीनी भाषा के कुछ शब्द लिखे हुए मिले, जिनके नीचे उनके अक्षरों का बोध बंगला में लिखा हुआ था।

नक्शे में बने कुछ दुर्गम स्थानों, जैसे नं. 12 के पास गिलगिट, हाजरा, कराकोरम रेंज तथा पहाड़ों की ऊंचाइयों आदि के वर्णन के साथ ही साथ, हर देश के क्षेत्र विशेष की नदियों का जिक्र एवं रूस को 'R' (नं. 15) तथा छोटे नक्शे में पाकिस्तान को 'P' (नं. 26) बंगाल की खाड़ी को B.O.B.L. (नं. 24) से इंगित करना, क्या यह साबित नहीं करता कि इस नक्शे को बनाने वाला व्यक्ति कोई साधारण आदमी या मात्र साधू-संन्यासी ही नहीं था ? तो फिर वह कौन 'अंजान पथिक' था ? इसका जवाब अब हम आपसे ही पूछते हैं ? (क्रमशः) □

9, एम.आई.जी., लक्ष्मणपुरी, फैजाबाद

फ़ैज़ाबाद के गुमनामी बाबा–11

**फैज़ाबाद में गुमनामी बाबा के सामानों में प्राप्त नेताजी से सम्बंधित साहित्य एवं बक्सों में बंद तमाम वस्तुएं और दस्तावेज काफी हद तक शंका में डालते हैं कि आखिर रामभवन के बाबा कौन थे ? इस तथ्यपरक श्रृंखला को लेकर हमारे तमाम पाठकों ने अपनी प्रतिक्रियाओं में कई सवाल भी पूछे हैं। अब पढ़िए एक पाठक के प्रश्नों पर आधारित अशोक टंडन की 11 वीं किस्त!**

# वे नेताजी नहीं थे तो कौन थे ?

□ अशोक टंडन

'गंगा' के एक पाठक श्री कुमार भाभा ने दहिया, बरौनी से एक पत्र लिखकर मुझसे पांच प्रश्न पूछे हैं। प्रश्न भी हैं बड़े वाजिब। मैं श्री भाभा को 'गंगा' के विशाल पाठक वर्ग का एक प्रतिनिधि मानकर, उनके द्वारा उठाये गये सवालों को आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं। उन्होंने मुझे लिखा कि—'ये पांचों प्रश्न मेरे मानस के क्षितिज तल पर ज्वलंत प्रश्नचिन्ह बनकर उभर रहे हैं, और मैं आपसे अपेक्षा रखता हूं कि, आप इनका चिंतन व निराकरण कर मुझे बताने की कृपा करेंगे।' उनके प्रश्न हैं—

"1. क्या नेताजी का चरित्र ऐसा प्रतीत होता है कि वे यहां की सरकार से भयभीत होकर प्रकट नहीं हुए ? आदयंत उनके जीवन का अनुशीलन करने से यह शंका तो निर्मूल ही सिद्ध होती है।

2. नेताजी के सम्भावित आगमन से भीताकुल होकर यहां के धूर्त सत्तासीन राजनीतिज्ञ क्या नकली नेताजी का प्रतिमान खड़ा नहीं कर सकते हैं ?

3. क्या कारण है कि आपके खोजबीन सम्बंधित आलेखों से वर्तमान सरकार या नेताजी के सहयोगी आकृष्ट नहीं हो सके हैं ?

4. क्या आपने अभी तक उनके हस्तलिखित कोई पत्र, लेख, डायरी अथवा अन्य कोई सामग्री प्राप्त की है ? जिस आधार पर इन्हें (गुमनामी बाबा को) नेताजी करार दिया जा सके ?

5. नेताजी अपने अंतिम गुमनामी जीवन के चरण में अगर कुछ भी नहीं लिखे, तो इसका क्या कारण हो सकता है ?"

आईए अब उपरोक्त प्रश्नों को लेकर विचार करें। वैसे श्री भाभा का तीसरा प्रश्न मुझे भी लगातार उद्वेलित करता आ रहा है कि यहां, यानि रामभवन में, इतना कुछ मिलने के बाद भी सरकार व नेताजी के सहयोगियों के कान में जूं तक नहीं रेंगी ? उससे भी बड़ा आश्चर्य तो यह है कि सरकार तो सरकार, सांसदरूपी देश के सैकड़ों नुमाईंदों के कानों में भी जूं नहीं रेंगी—वह चाहे

पक्ष के हों या विपक्ष के ! क्योंकि ऐसा हो नहीं सकता कि दिल्ली में छपनेवाली और लगभग दिल्ली के हर बुकस्टॉलों से फुटपाथों तक में बिकने वाली 'गंगा' पर किसी भी (कम से कम हिंदी भाषी) 'सांसद' की नज़र ही न पड़ी हो ? शायद 'दुष्यंत कुमार' ने इन्हीं जैसे कर्णधारों वाले इस मुल्क के लिए ही कहा था कि—

**''यहां तो सिर्फ गूंगे**
**और बहरे लोग बसते हैं,**
**खुदा जाने यहां पर**
**किस तरह जलसा हुआ होगा !''**

क्या आज आपको आश्चर्य नहीं होता कि हमारे जिन अग्रजों ने अंग्रेजों से मुतवातिर एक सौ साल तक, स्वाधीनता प्राप्त करने का संग्राम लड़ा था—ये उन्हीं के वारिस हैं, जिन्होंने पूरे एक साल में लगभग सौ दिन लोकसभा में (इस प्रश्न पर) गूंगे रहकर ही बिता डाले ? अभी न जाने कितने दिन और बिता डालेंगे ? हम-आप ही नहीं, इतिहास भी इन्हें लानत देगा !

अब, जहां तक नेताजी के सहयोगियों के न बोलने का प्रश्न है, उस पर काफी कुछ हम (7वीं किस्त में) विचार कर चुके हैं और आगे फिर करेंगे।

लेकिन भाभा साहब, एक बात और है। आपके इस तीसरे प्रश्न का एक उत्तर तो आपके ही दूसरे प्रश्न में भी अंतर्निहित है। अर्थात आपके ही अनुसार कहीं वास्तव में ऐसा ही तो नहीं है कि ''नेताजी के सम्भावित आगमन से भीताकुल होकर... वर्तमान सरकार इस प्रकरण की ओर आकृष्ट नहीं हो रही है ?'' यानि कि, आपके मन में भी यह आशंका है कि नेताजी के सम्भावित आगमन से वर्तमान सरकार 'भीताकुल' है। भीताकुल क्यों है—क्या इस पर भी आपने कभी सोचा ?

खैर ! अब जब ऐसी शंका आपके-हमारे व सारे देशवासियों सहित दुनिया के मन में है, तो क्या ऐसा नहीं हो सकता कि 1945 के बाद उनकी मौजूदगी (या जिंदा रहने की खबर) को लेकर सत्तासीन राजनीतिज्ञ भीताकुल होकर कुछ ऐसे चक्रव्यूह चलाते रहे हों (जिसमें आपके ही प्रश्नानुसार, नकली नेताजी का प्रतिमान भी खड़ा करते रहे हों—इस पर हम आगे फिर कभी चर्चा करेंगे) जिनसे निपटने में ही नेताजी को छिपकर (भयभीत होकर नहीं, बल्कि रणनीति के तहत) अपनी योजना चलाते रहना पड़ा हो ?

वैसे इतने सब गूढ़ प्रश्नों का निष्कर्ष निकालने का काम इतिहासकारों का है। यहां तो बस एक-एक घटना ऐसी खबर के रूप में हमारे सामने आयी, कि जो इतिहास के झरोखों में झांकती दीखी। हमने उन क्षणों को सहेजा—शायद कभी गुजरे जमाने को खोजता इतिहास हमारी दहलीज़ पर न आ गुजरे।

## महत्वपूर्ण सूत्र

लेकिन फिर भी, भाभा साहब को मुझसे इतना तो जानने का अधिकार है ही, कि वहां (यानि रामभवन में) ऐसा कोई सूत्र या दस्तावेज मिला—जिसको देखने से यह लगे कि गुमनामी बाबा सिर्फ बाबा ही नहीं थे, बल्कि उनके पास भी कुछ गुप्त योजनाएं थीं, आदमी थे, फौज थी या फिर अपनी सरकार थी ? हमें वहां पर एक ऐसा कागज भी मिला है। हाईकोर्ट के आदेश पर बनी सामानों की इंवेंटरी के क्रमांक 1676 पर एक लगभग ऐसा ही चौंकाने वाला पत्र दर्ज है। इस दस्तावेज के अनुसार—बाबा ने श्री पुष्करधाम से ब्रजनंदन दुलाल को स्वयं द्वारा लिखे गये किसी पत्र के मज़मून को याद करके उसे पुनः एक कागज पर जनवरी 1978 में नोट कर लिया। क्यों नोट कर लिया, इसका उत्तर तो मैं नहीं दे सकता, लेकिन उनकी इस तरह याददाश्त पर कुछ नोट कर लेने वाली बात पर मुझे याद आया कि इसी तरह अपनी याददाश्त के सहारे ही नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने भी अपनी प्रसिद्ध कृति 'द इंडियन स्ट्रगल 1920–1942' की रचना की थी। क्योंकि उस पुस्तक की प्रस्तावना में उन्होंने स्वयं लिखा है कि—

> ''आवश्यक कागजात और संदर्भ पुस्तकें आदि के मिलने में कठिनाई होने के कारण मेरे काम में बड़ी बाधा आई। यदि लिखने के समय मैं भारत या इंग्लैंड में भी होता तो मेरा काम बहुत आसान हो गया होता। ऐसी हालत में मेरे पास अपनी ही स्मृति पर अधिकाधिक निर्भर करने के सिवा कोई चारा नहीं था।''

नेताजी ने यह पुस्तक यूरोप में बीती अपनी निर्वासन अवधि में लिखी थी, और यहां पर गुमनामी बाबा अपने इस गुप्तवास (या अपने ही देश में निर्वासन) में **AS FAR AS I REMEMBER** करके श्री पुष्करधाम से लिखे गये अंतिम पत्र के **TEXT** को कुछ यूं लिखते हैं—**''नितांत व्यक्तिगत, अत्यंत गोपनीय ! मंत्रगुप्ती !!**

**परम कल्यांबर दीर्घ जीवेषु, प्राणप्रिय स्नेहेर ब्रजनंदन दुलाल: श्री श्री मां काली तोमार कल्याण कोरुन, तोमार सुपुत्र के एबोंग सौभाग्यवते मां-के भालो राखुन।**

**परमप्रिय ब्रजनंदन ! मां काली की साधना** हेतु मैं अपनी शक्तियों (FORCES) और सरकार (GOVT.) का तुरंत आवाहन करने जा रहा हूं।। डरने की जरूरत नहीं है, हमलोग अवश्य विजयी होंगे। तुम्हारे लिए कोई खतरा नहीं है। तुम सुरक्षित रहोगे।

ब्रजनंदन दुलाल !

अगर तुम्हारे लिए मेरा प्यार सच्चा है; तुम पर अगर मेरा विश्वास सच्चा है; अगर तुम्हारे प्रति मेरा भरोसा सच्चा है; तो तत्काल एक छोटे से बक्से में 19 हजार रुपये सील बंद करके (हमारे जैसे मातृसेवकों के लिए), स्वयं सहित तैयार हो जाओ।

मुझे अपने आदमियों के लिये इसकी बहुत ज़रूरत पड़ेगी।

यह बात अत्यंत गोपनीय है। यह कार्य भी अत्यंत गुप्त है।

इस पत्र को धीरे-धीरे, पूरी तरह समझकर दस बार ध्यानपूर्वक पढ़ना। फिर इसे अच्छी तरह जला देना।

तुम्हारा खास अपना—पथिक फकीर

**तुम्हारे लिए मेरा असीम स्नेह ।।**
**तुम पर मुझे पूर्ण विश्वास व भरोसा है।।**
**मां काली का वरद व आर्शीर्वाद तुम्हारे साथ है !**
**आमीन''**

उपरोक्त पत्र देखा आपने ! बाबा ने पत्र के अंत में अपना नाम क्या लिखा है—पथिक फकीर ! आपको याद है न, कि पिछले अंक में एक नक्शे की चर्चा करते हुए हमने आपसे पूछा था कि इसको बनाने वाला आखिर वह कौन-सा 'अनजान पथिक' था ? अनजान हमने उसे इसलिए कहा,

**हमारे जिन अग्रजों ने अंग्रेजों से मुतवातिर एक सौ साल तक, स्वाधीनता प्राप्त करने का संग्राम लड़ा था—ये उन्हीं के वारिस हैं, जिन्होंने पूरे एक साल में लगभग सौ दिन लोकसभा में (इस प्रश्न पर) गूंगे रहकर ही बिता डाले ! अभी न जाने कितने दिन और बिता डालेंगे ! हम-आप ही नहीं, इतिहास भी इन्हें लानत देगा !**

क्योंकि हम उस व्यक्ति या शख्सियत का नाम, पता व ठिकाना नहीं जान पा रहे हैं। और पथिक इसलिए कि इतने देश-देशांतरों की पग-पग यात्रा करने वाला यात्री आखिर पथिक ही तो कहलाएगा। अजीब संयोग है—नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने अपने को भी एक यात्री, भारतीय यात्री ही माना था। तभी तो उन्होंने अपनी आत्मकथा का नाम रखा—AN INDIAN PILIGRIM अर्थात एक भारतीय यात्री। एक भारतीय पथिक।

बाबा ने पथिक के आगे 'फकीर' शब्द भी लिखा है। शीलभारी आश्रम के अधिष्ठाता श्रीमत शारदानंद जी का भी कहना था कि—"करो सब निछावर, बनो सब फकीर।" (नेताजी रहस्यों... पेज 147)। यानि की इन दोनों को ही 'फकीर' शब्द से आत्मीयता थी। एक ने 'फकीर' शब्द को हृदयांगम करने की बात की थी, तो दूसरे ने किया था। मगर लगता है इन लोगों से काफी दूर बैठकर भी एक और व्यक्ति ने इस शब्द के मर्म को समझाने के लिए अपनी आत्मकथा के फुटनोट में उसे ठीक से परिभाषित किया था। जी हां नेताजी ने अपनी उसी आत्मकथा में एक जगह लिखा—"भारत में जो लोग संसार का त्याग करके अपना सम्पूर्ण जीवन आध्यात्मिक उन्नति के लिए समर्पित कर देते हैं, और देश भर में तीर्थाटन करते रहते हैं... उन विरक्तों की दो श्रेणियां होती हैं (इन्हें संन्यासी, साधु या फकीर भी कहा जाता है, यद्यपि फकीर आमतौर पर मुस्लिम धर्मावलम्बी होते हैं। इन्हें पुरोहितों से अलग करके देखना होगा।)" (नेताजी सम्पूर्ण वांगमय: खंड एक, पृष्ठ 36)।

यहां केवल यही न मानते हुए कि इन तीनों व्यक्तियों को 'फकीर' शब्द की अहमियत की वाकफियत थी, इसलिए तीनों एक ही व्यक्ति थे, बल्कि हम यहां An Indian Piligrim के शब्दों में ही यह सम्भावना व्यक्त करें कि—'नेताजी ने भी कहीं संसार (अर्थात राजनीति आदि) का त्याग करके अपना सम्पूर्ण (यानि शेष) जीवन आध्यात्मिक उन्नति के लिए ही तो नहीं समर्पित कर दिया था और फकीर बन गये थे ? भाभा साहब अपने पहले प्रश्न का एक सम्भावित उत्तर इसे भी मान सकते हैं। (वैसे इस विषय पर, कि क्या गुमनामी बाबा कोई आध्यात्मिक जीवन भी जी रहे थे, हम आगामी किस्त में विचार करेंगे।)

अब आईए, जरा इस पत्र के मजमून यानि TEXT पर भी हमलोग कुछ विचार कर लें। अगर मात्र एक साधू-संन्यासी को अपनी किसी धार्मिक पूजा या अनुष्ठान अर्थात् मां काली की साधना

[illegible] DEAD SECRET! [illegible] — January [illegible]

As far as I remember; Text of the lost letter [illegible] :—

[illegible], PRANAPRIYA SNEHER [illegible]; [illegible]

Dearest [illegible]! I am starting on urgent call of my forces and Govt. for [illegible] Sadhana // Do not be afraid; we will will win. No danger for you; you are protected!

[illegible],
If my love for you is true; if my faith in you is true; if my trust in you is true; — then, from this time, put-aside 19 thousand only, in a closed sealed [illegible], (for us [illegible]) ready. [illegible] I will need it very urgently for my men //

This is a dead-secret // The work is dead secret!

Read [illegible] this letter 10 times, slowly; understand fully; then burn it completely.

Your very own. [illegible] Faquir.

My secret love-blessings to you [illegible]

**गुमनामी बाबा द्वारा ब्रजनंदन दुलाल को लिखे गये पत्र की फोटोप्रति**

आदि के लिए ही अपने किसी शिष्य या प्रिय व्यक्ति से मात्र 19 हजार रुपये ही चाहिये थे, तो इसमें इस पत्र को इतना गोपनीय, अत्यंत गुप्त बताने की क्या जरूरत थी ? ठीक से पढ़, समझकर पत्र को अच्छी तरह से जला देने का निर्देश क्यों दिया था बाबा ने ? लेकिन आपने देखा यहां, कि बाबा ने कहा है कि यह रुपया उन्हें अपने आदमियों के लिए चाहिए, क्योंकि वे मां काली की साधना (?) हेतु अपनी FORCES और गवर्नमेंट का आवाहन करने जा रहे हैं। GOVT. का अर्थ सिर्फ सरकार से होता है यह आप भी जानते हैं। फिर तो इसका मतलब यह हुआ कि बाबा की भी कोई अपनी 'सरकार' थी ? सरकार यानि GOVT. शब्द के साथ यहां प्रयुक्त हुए FORCES शब्द का अर्थ यकीनन सुविज्ञ लोग 'फौजों' से ही लगाएंगे !

और दूसरी तरफ सन् 1945 के बाद भी नेताजी को जिंदा मानने वाले लोगों द्वारा प्रचारित साहित्य में यह बात अक्सर दोहराई जाती है कि द्वितीय विश्व युद्ध में जापान ने अंग्रेजों के आगे समर्पण किया था, न कि नेताजी की आजाद हिंद फौज ने। और नेताजी आज भी जिंदा हैं तथा उनके द्वारा बनायी गयी आजाद हिंद सरकार आज भी बरकरार है और नेताजी आज भी उसके प्रमुख हैं। तो क्या हम यह मानकर चलें कि गुमनामी बाबा भी उसी अपनी आजाद हिंद सरकार और फौज का ही यहां जिक्र कर रहे थे ? क्योंकि यहां के सुभाषमय सबूत और नजदीकी लोग उन्हें ही नेताजी होने की सम्भावनाओं से परिपूरित कर रहे हैं।

## यह कैसी साधना है ?

बाबा ने न सिर्फ इस पत्र को अत्यंत गोपनीय (Dead Secret) बताया, बल्कि उस कार्य यानि मां काली की साधना को भी अत्यंत गुप्त (Dead Secret) बताया। ये कैसी और कौन-सी मां काली की साधना है, इसका आपको पता लगाना ही चाहिए ? क्योंकि यह ऐसी-वैसी साधना नहीं है—इसमें खतरा भी है। तभी तो बाबा ने ब्रजनंदन, दुलाल से कहा है कि तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है। तुम्हारे लिए कोई खतरा नहीं है। तुम सुरक्षित रहोगे। मां काली तुम्हें बचायेंगी। मैं तो नहीं समझता कि मां काली या किसी देवी की पूजा-पाठ करने में भी कोई खतरा होता है ! और फिर पूजा-पाठ में किसी तरह की कोई हार या जीत का भी प्रश्न नहीं उठता है ! लेकिन यहां तो बाबा ने कहा है कि हमलोग अवश्य विजयी होंगे (We will win.)।

पुनश्च: ब्रजनंदन दुलाल के तो बारे में हमारे पाठकगण (4वीं किस्त में) पढ़ ही चुके हैं कि डॉ. पवित्र मोहन राय ने श्री दुलाल के बारे में कहा था कि वे Complete faith (पूर्ण विश्वास) लेकर बैठे हैं। घटना घटित होगी ही—इसमें कोई अन्यथा नहीं। कोई भी काफी कोशिश करके भी हिला नहीं सकेगा।

आखिर कौन-सी घटना के घटित होने का पूर्ण विश्वास लेकर बैठे हैं ये श्री ब्रजनंदन दुलाल, इसका उत्तर कौन देगा ? भाभा साहब आपके दूसरे प्रश्न का प्रथमांश यानि की 'नेताजी का सम्भावित आगमन...' ही तो कहीं इसका उत्तर नहीं है ?

**(क्रमशः)** □

9, एम.आई.जी. फ्लैट्स,
लक्ष्मणगंज, फैजाबाद

## फैज़ाबाद के गुमनामी बाबा–12

आपने पिछले अंक में देखा, कि ब्रजनंदन दुलाल को लिखे गये पत्र में बाबा ने अपने को लिखा था, तुम्हारा—'पथिक फ़कीर'!

इसी तरह बस्ती प्रवास के दौरान अपने एक अनन्य भक्त दुर्गाप्रसाद पांडेय को उनके पत्र का जवाब देते हुए भी बाबा ने अपने को एक Humble Fakir कहते हुये लिखा कि—"मैं एक दीन-हीन फ़कीर हूं। मैं तुम्हारी भावनाओं को समझ रहा हूं, लेकिन उससे अब क्या फायदा। वैसे मेरे जैसा एक दीन फकीर अपनी 'मां' से कहां अलग रह सकता है। यह महान मां ही तो है, जो हमारी सृजनकर्ता और संहारक है।" (देखें किस्त-2)।

बाबा का अपने को 'पथिक' व 'फ़कीर' कहना तो समझ में आता है, लेकिन अपने को 'अनजान' भी कहने का क्या मतलब निकाला जाए? सामान्य अर्थों में ही अगर हम 'अनजान' शब्द को लें—तो इसका अर्थ होगा कि बाबा अपने बारे में भी अनजान थे शायद? लेकिन ऐसा हो नहीं सकता कि कोई व्यक्ति अपने (देह-रूप-नाम के) बारे में भी अनजान हो (आध्यात्मिक अर्थों को छोड़कर)। फिर तो, इसका दूसरा मतलब यही हुआ कि वह अपने को 'अनजान' कहकर अपनी असलियत (परिचय) छिपाना चाहते थे। लेकिन होता यह था कि, अगर आप उन्हें जान ही गये हैं तो आपको गोपनीयता बरकरार रखने की वचनबद्धता के बंधनों में बंधकर उसकी रक्षा करने का वचन देना ही होगा। और ऐसा करने के लिए बाबा अपने खास 'शुभचिंतकों' को रक्षा कवच स्वरूप रक्षाबंधन भेज दिया करते थे—'रेशम की विभिन्न रंगों की 17 अदद राखियां, जिन पर लिपटे हुए कागज पर अंग्रेजी के शब्द 'S' 'S' 'S' 'N' लिखा गया है, तथा 'केयर ऑफ 'सुकृत' बंगमातार देवी स्वरूप कन्या' लिखा है। और उसी के अंदर बंगला भाषा का एक लघु पत्र भी है जो रोमन अंग्रेजी में लिखा गया है—"मैं भूल नहीं सका अपनी चिर आराध्य साधना की इष्ट देवी बंगमाता की स्नेह, प्रेम, दया, प्रीति, प्यार की मूर्तरूप। आपलोगों का ही आशीर्वाद। इस दिन को रक्षा कवच में ढककर रखना ही मेरा सब कुछ, आपलोगों की सेवा। सब साधनाओं की मूर्तिमती स्नेह, प्रेम, प्यार का आधार, बंगमाता की आदरणीय देवीश्री सरिति, सुनीति, सुरमा, नीलिमा, बंगश्री की करकमल पर सश्रद्धय अर्पण।

—एक अनजान पथिक फ़कीर।"

हाईकोर्ट के आदेश पर गुमनामी बाबा के सामानों की बनी इंवेंटरी के क्रमांक 1675 पर ये दस्तावेज यूं ही पूरा दर्ज है।

अब क्या हमारे पाठकगण, इस बात का पता नहीं लगाना चाहते कि ये कौन 'अनजान पथिक

**फ़ैज़ाबाद के गुमनामी बाबा के कमरे में मिले सामानों, नक्शों और महत्वपूर्ण दस्तावेजों के अलावा 'पथिक' व 'फकीर' के नाम से लिखे तमाम पत्रों की फोटो प्रतिलिपि प्राप्त हुई है। यह पत्र नेताजी के सहयोगियों और आई.एन.ए. के अधिकारियों को लिखे गये हैं।**

**आखिर कौन हो सकता है वह अनजान 'पथिक'? इस पर प्रकाश डाल रहे हैं अशोक टंडन इस बारहवीं किस्त में!**

☐अशोक टंडन

62

॥ योगी का आदेश विश्व भारत में ॥

**रामभवन से ही प्राप्त एक अजीबोगरीब हैंडबिल की फोटो प्रति!**

फकीर था, जो अपनी चिर-आराध्य साधना की इष्टदेवी बंगमाता को भूल नहीं पा रहा है ? किसने बाधित किया है इस पथिक के पथ को ? किसने डाला है इसको बंगभूमि से दूर ? ऐसा जीवित व्यक्ति कौन है, जो कल ही बीते इतिहास से लेकर आज भी इतिहास बनकर जिंदा रहने पर मज़बूर था ? ये कौन-सा भारत मां के बंग आंचल का लाल है, जो मां की गोद में रहकर भी मां की ममता से दूर है ?

पाठकों को बताता चलूं कि यह छोटा-सा पत्र हमलोगों की नज़रों से बच निकल जाने वाला ही था—क्योंकि 17 राखियों को एक छोटे से कागज में जिस तरह लपेटा गया था, उससे यही लग रहा था कि ये कागज केवल लपेटने के लिए ही प्रयोग हुआ है, लेकिन हममें से न जाने किसी को क्या सूझा कि ये बंधन खोल दिया, और फिर हमारे सामने था यह पत्र।

रामभवन में ही मुझे एक अजीबोगरीब पर्चा (हैंडबिल) भी मिला था, जिसका शीर्षक है—"योगी का आदेश विश्व भारत में"। इस पर्चे में क्या लिखा है, और यह वहां क्यों मिला, यह सब बात अब मैं आप पर छोड़ता हूं। आप स्वयं (साथ के चित्र में) उसकी सांकेतिक भाषा के वाक्यों का अर्थ इतिहास के पन्नों में खोजें, तो बेहतर होगा। मैं केवल इतना ही इंगित करना चाहूंगा कि इसमें भी 'फ़कीर' पर्दे में ही है। इस पर्चे को जारी करने वाले ज्ञानचंद मिस्त्री जिला होशियारपुर यानि पंजाब के जिला गुरुदासपुर के समीप के ही रहने वाले हैं, आपको याद ही होगा कि यहां के (गुरुदासपुर के) बाबा गुरुचरन सिंह बेदी ने गुमनामी बाबा को लिखा ही था कि—"कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि आप भारत माता की सर्वश्रेष्ठ संतान नेताजी हैं।" (देखें किस्त-7)।

खैर, अब हमलोग पहले वाले बिंदु पर फिर लौट आते हैं। ब्रजनंदन दुलाल जिस घटना के अवश्य घटित होने का पूर्ण विश्वास लेकर बैठे हैं, उसी घटना के बारे में मुकुल बाबू कहते हैं—"... आंधी आ रही है, और उसके संकेत भी दिखाई पड़ रहे हैं (2487)।" प्रश्न उठता है कैसी आंधी ? कौन-सी आंधी ? कौन है इसका जनक ? आगे इसका भी खुलासा कर देते हैं अतुल कृष्ण गुप्त—"**चिर आराध्य बंग जननी की आशा, आकांक्षा के मूर्त प्रतीक रूप आप हमलोगों की परमायु लेकर दीर्घजीवी हों यही कामना है... हमलोग आपकी प्रतीक्षा में दिन गिन रहे हैं (2411)**)।

ये क्यों और कैसी प्रतीक्षा है ? क्या बाबा कहीं आने वाले थे ? हां सिंहासन खाली था किसी का—उसी पर विराजने शायद ! तभी तो पल्टन ने अपने पत्र में लिखा कि, "... कब खाली आसन भरेगा... चिर सम्भव कब सम्भव होगा (2447))।" आखिर ये सब क्या है ? ये लोग कौन हैं ? किस खाली आसन पर किसके बैठने की प्रतीक्षा में दिन गिन रहे हैं, समझना बड़ा मुश्किल हो गया है मेरे लिए ! मैं दिग्भ्रमित-सा न हो जाऊं कि तभी 'चारण' कुछ संकेत कर देते हैं—

"**मैं निरंतर इसी प्रतीक्षा में हूं कि कब आप सशरीर सबके सामने प्रगट होंगे। इसी दीर्घ प्रतीक्षा में मैं कभी व्याकुल और कभी चंचल हो जाता हूं... (1745)।**" अब मन की व्याकुलता और चंचलता तो मेरी भी बढ़ती जा रही है कि ये लोग आखिर किस 'साधू' को सशरीर सबके सामने प्रगट कराना चाहते हैं ? क्या कोई शरीर से छिपा हुआ था कहीं ? कौन था वो ? इन पहेलियों का अंत कैसे होगा, इसी उधेड़बुन में मन जा अटका पत्र की अगली पंक्तियों पर—"**शुभ जन्मदिन पर मैं प्रणाम करता हूं (1745)।... सारे वर्ष भर हमलोग व्याकुल होकर जिस दिन की प्रतीक्षा करते हैं, आज वही 23 जनवरी है। मेरे परम आराध्य जगत वरेण्य 'महामानव' के श्री चरण कमलों में अनंतकोटि प्रणाम। कब हमलोगों की इच्छा पूर्ण होगी। इसी प्रतीक्षा में दिन गिन रहा हूं (2523)।**"

अरे भाई, अगर कुछ लोगों के ही कोई गुरु, सशरीर प्रगट ही होने वाले हों तो इससे हमलोगों को क्या लेना-देना ? लेकिन नहीं, किसी ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि—"... कोटि-कोटि भारतवासी आपके ऊपर नज़र रखे हुए हैं (1692)।" अब प्रश्न उठता है कि कोटि-कोटि भारतवासियों का चहेता यह 23 जनवरी को जन्मा कौन था ?

यह सही है कि उधर कुछ लोग अगर किसी खास घटना के घटित होने के लिए दिन गिन रहे थे तो इधर बाबा ने भी 'मां काली की साधना' (?) हेतु अपनी Govt. व Forces का आवाहन ही केवल नहीं कर रखा था, बल्कि उनकी FORCES के सच्चे सिपाही तैयार भी थे। तभी तो आई.एन.ए. की सीक्रेट सर्विस के एक गुप्तचर अधिकारी ने बाबा को लिखा कि—"हमलोग उपयुक्त समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं, और हम सब लोग मातृपूजा के लिए तैयार हैं।

—पवित्र। (1963)।"

पवित्र मोहन राय, आई.एन.ए. के हैं तो क्या हुआ ! वे फौज के आदमी हैं ठीक है। लेकिन यह कार्य तो क्रांति का है—यहां पर क्रांतिकारी और विप्लवियों की भी ज़रूरत पड़ेगी। तभी तो स्वतंत्रता संग्राम के दिनों की नेताजी सुभाषचंद्र बोस की सहयोगी क्रांतिकारी संस्था 'अनुशीलन समिति' के आशुतोष काली ने लिखा कि—"**आप वर्तमान में जिस अशांतिपूर्ण और बेचैन अवस्था में हैं, ऐसे समय में हमारी तरह के पुराने युग के विप्लवी आपके साथ सम्पर्क रखना चाहते हैं।** आपकी इस दशा के सम्बंध में जानकर मैं श्री हासिमय सेन के साथ मिलकर आपके पास आने के लिए प्रस्तुत था, पर डॉ. पवित्र मोहन राय को साथ लेना तय हुआ। पवित्र मोहन राय हमलोगों को विप्लवी दल के सहकर्मी और आपके स्नेह के पात्र एवं विश्वासी को भेजना तय हुआ, जो आपसे निर्देश लेने के बाद हम आपसे मिलेंगे। आपको जो इससे पूर्व पत्र लिखा था, वह पवित्र के साथ ले जाने की बात थी।

आपने पवित्र को विश्वास करके जो सब निर्देश दिया है, वह सब जानकर हमलोग आश्वस्त हैं।

**आपका प्रथम निर्देश गोपनीयता, जो हमलोग निष्ठापूर्वक पालन कर रहे हैं।** पवित्र मिलिटी लाइफ से परिचित है। परंतु कूटनीतिज्ञ शिक्षा उनको नहीं मिली. इस कारण से कोई-कोई उनके अति उत्साह और सरलता का लाभ उठाकर आपको इस अवस्था में डाल रखे हैं। अगर मैं इन लोगों के साथ रहता, तो शायद यह अवस्था न आती। पहली बार हमलोगों का आपके पास न जाना, आपकी तरफ से निषेध था। **यह हमलोगों की एक मूल ज़रूर थी, मगर यह गलती दोबारा न हो एवं आपकी गोपनीयता और सुरक्षा पूरी तरह से पालन हो, मैं आपसे मिलने आ रहा हूं। आपकी विपदा सिर्फ आपकी ही विपदा नहीं, बल्कि वह हम सब की विपदा व समग्र देश के लिए विपदा हो गई और गुरुत्तर हानि का कारण बन सकती है।**

आपके उपदेश व निर्देश के अनुसार हमलोग चलने के लिए प्रस्तुत हैं। और इसके लिए हमलोग आना चाहते हैं. **आपका निर्देश हम सब लोगों के लिए एक सैनिक की तरह शिरोधार्य अभी भी इस उम्र में भी होगा।**

आपके निर्देश के इंतजार में हैं। निर्देश दें।

आपका

आशुतोष काली

(क्रमांक 1690)''

तो क्या यही लोग थे 'पथिक फ़कीर' यानि गुमनामी बाबा की FORCES (फौज) के सैनिक ? कृपया इस पत्र के रचनाकाल के समय की याद करें। मई 63 का महीना। शालमारी प्रकरण के उत्कर्ष या अवसान का काल था वह। लीलाराय मार्च (1963) में ही नीमसार (नैमिषारण्य) आकर बाबा से मिल गई थीं। समर गुहा भी आये थे। बाद में पवित्र मोहन राय भी आये। आगे चलकर 1974 में कलकत्ते के प्रसिद्ध पत्रकार श्री वरुण सेन गुप्त ने भी लिखा कि—''सुश्री लीलाराय... नेपाल के सीमांत में नैमिषारण्य में रह रहे एक साधू के पास गई थीं... परंतु उन्होंने, वे साधू ही नेताजी थे, स्पष्ट कभी नहीं कहा।... इसके पश्चात डॉ. पवित्र मोहन राय को भेजने का निश्चय हुआ।... इस घटना के बाद संन्यासी ने नैमिषारण्य का घर बदल दिया।... सुनील दास अथवा पवित्र राय कुछ नहीं बताना चाहते। फलस्वरूप 'सुभाषचंद्र बोष की मृत्यु' जैसा ज्वलंत प्रसंग भी रहस्य में ही रहता है।''... (देखिए किस्त-3)।

तो क्या बाबा का यह विप्लवी सैनिक नीमसार गया था ? इस प्रश्न का जवाब है इंवेंटरी की क्रम संख्या 2152 पर दर्ज ये आशुतोष काली का बहुत से भेद खोलता हुआ दूसरा महत्वपूर्ण पत्र—''पिछले मई के महीने में मैं आपसे मिलने और वर्तमान परिस्थितियों में हमें क्या करना चाहिए इसका निर्देश लेने गया था।

माताजी की मार्फत एक पत्र और महाराज त्रैलोक्य चक्रवर्ती द्वारा लिखित पुस्तक 'जेल में तीस वर्ष' के हिंदी संस्करण की एक प्रति आपके लिए भेज दिया। उसकी प्राप्ति सूचना मुझे नहीं मिली है। **आपका समाचार पाने के बाद हमलोग अर्थात अनुशीलन के पुराने कर्मी लोग आपका निर्देश पाकर, और उसके अनुसार काम करने से एक तीव्र प्रेरणा का अनुभव कर रहे हैं।**

आप महाराज के सम्बंध में जानते हैं कि वे पूर्वी पाकिस्तान में हैं। वहां पर काम का अवसर भी नहीं है। और स्वास्थ्य भी ठीक नहीं है, इसलिए वह भारत आकर रहने पर राजी हो गये थे। **परंतु आपका समाचार सुनने पर और विशेष रूप से आपके 'अखंड भारत' के स्वप्न और साधना की बात जानकर उन्होंने पूर्वी पाकिस्तान में ही रहकर काम करने की इच्छा व्यक्त की है। वे इस समय आपके निर्देश की प्रतीक्षा में हैं। इस निर्देश को पाने के लिए वे आपसे प्रत्यक्ष सम्बंध स्थापित करना चाहते हैं। मेरी (पत्र लेखक की) उम्र भी इस समय सत्तर (70) से ऊपर पहुंच चुकी है। जीवन के शुरू में देश की स्वाधीनता प्राप्ति के लिए जो रक्त रंजित विप्लव का आदर्श ग्रहण करके अविचल हृदय से, बिना सिर झुकाये ब्रिटिश के साथ संग्राम किया, आज भी वही विप्लवी आदर्श व प्रेरणा हृदय में प्रज्जवलित है—चाहिए नेता, चाहिए उनका निर्देश ! निर्देश मिलने पर अब भी कर्म-समुद्र में कूदने से इंकार नहीं करूंगा। आप हमें अवसर दें तो मैं आपको बहुत समाचार भेज सकता हूं। सब कुछ आप पर ही निर्भर है।**

**आपको यह भी बता दूं कि श्रद्धेया श्रीमती वासंती देवी आपका समाचार जानने के लिए व्याकुल हैं और आप जीवित हैं, यह ठीक प्रकार से जानकर उनको बताने के लिए विशेष अनुरोध किया है।** एक दुःखद सम्वाद—श्री निर्मल नलिनी डे परलोक सिधार गये हैं।

आपके निर्देश की प्रतीक्षा में रहूंगा।''

आशुतोष काली द्वारा बाबा को लिखे पत्र की फोटो प्रति !

मुझे पूरा यकीन है कि इस पत्र ने बहुतों के अंतःस्थल को झकझोरा होगा। लेकिन ये वासंती देवी कौन हैं, और किसके जीवित रहने के समाचार का पुष्टीकरण चाह रही हैं—जानने के लिए हम आपको प्रसिद्ध लेखक श्री मन्मथनाथ गुप्त की 'स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी—नेताजी सुभाषचंद्र बोस' नामक पुस्तक की इन पंक्तियों पर लिए चलते हैं—''देशबंधु चितरंजन दास का परिवार एक बहुत आगे बढ़ा हुआ, आलोक प्राप्त परिवार था। उनकी पत्नी वासंती देवी उनके हर काम में, चाहे वह साहित्यिक हो या राजनीतिक, उनका बराबर हाथ बटाती रहीं। जब सुभाषचंद्र बोस कलकत्ता लौटकर इस परिवार के सम्पर्क में आये, तो वासंती देवी का उन पर प्रभाव पड़ा। वह प्रभाव इतना जबरदस्त था कि सुभाष की माता जी ने वासंती देवी को कहा था—''मैं तो केवल सुभाष की परिचारिका हूं, असली मां तो तुम हो।''

और त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती महाराज ? □

**(क्रमशः)**

**9. M.I.G. लक्ष्मणपुरी, फैजाबाद**

पूर्वकथा

अब तक आपने पढ़ा कि 16 सितम्बर 1985 को उत्तर प्रदेश के फैज़ाबाद शहर में स्थित रामभवन में एक गुमनामी बाबा की रहस्यमय मृत्यु हुई थी, जिनका दाह-संस्कार भी बड़े ही गुप्त रूप से तीसरे दिन उनके तेरह शिष्यों ने गुप्तार घाट पर किया था। इस खबर को पूरी प्रमुखता के साथ नगर के एक दैनिक 'नये लोग' ने छापकर घोषणा की कि 'फैज़ाबाद में अज्ञातवास कर रहे नेताजी सुभाषचंद्र बोस नहीं रहे?'

खबर प्रकाशित होते ही एक कुहराम मचा। पुलिस ने नगर के सम्भ्रांत नागरिकों, पत्रकारों, वकील, प्रोफेसर व नेताओं के समक्ष रामभवन के तीन ताले तोड़ कर तीन दिन तक लगातार बाबा के सामानों को जांचा-परखा। विस्मयकारी सामानों सहित पचासों बक्सों में विविध सामानों सहित नेताजी जैसा गोल चश्मा, घड़ी, दूरबीन, स्पूल टेपरिकार्डर, नेताजी के माता-पिता एवं परिवार के अनेकों छायाचित्रों के अलावा अंग्रेजी-बंगला साहित्य की हजारों पुस्तकों में अधिकांश नेताजी से सम्बंधित पुस्तकें मिलीं जिन पर बाबा की महत्वपूर्ण टिप्पणियां थीं।

अपने पिता श्री सुरेशचंद्र बोस के नाम खोसला आयोग के सम्मन की मूल प्रतिलिपि रामभवन से प्राप्त होने का समाचार सुनकर, तथा फैजाबाद के जिलाधिकारी द्वारा बाबा के सामानों को लावारिस करार देकर नीलाम करा देने से रोकने हेतु नेताजी की सगी भतीजी सुश्री ललिता बोस ने उत्तर प्रदेश के उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की। हाईकोर्ट ने एक एडवोकेट कमिश्नर नियुक्त करके बाबा के सामानों की इंवेंटरी बनवाकर ट्रेजरी में सामानों को रखने का आदेश दिया।

रामभवन में एक ऐसा नक्शा भी मिला, जो स्वयं बाबा द्वारा बनाया गया है। इस विचित्र नक्शे का अध्ययन करने पर पता चल सकता है कि 1945 की हवाई दुर्घटना के बाद नेताजी किन मार्गों से और कहां-कहां गये!

बाबा के फौजी जनरल की तरह आदेश देने, गुप्त भाषा का प्रयोग करने के भी प्रमाण मिले हैं। सरकार से लेकर नेताजी के सहयोगी, अनुयायी तथा प्रबुद्ध जनता के समक्ष पिछले एक वर्ष से, जब से 'गंगा' ने इस रहस्य की पर्तों को एक-एक कर उधेड़ना शुरू किया है; इस प्रकरण को गलत कहने या काटने का प्रामाणिक प्रमाण अभी तक कोई नहीं दे पाया है। बहरहाल, हम अपने आम पाठकों के समक्ष इस घटनात्मक खबर को उजागर करने वाले युवा पत्रकार अशोक टंडन की क़लम से आगे बढ़ते चल रहे हैं। आगे पढ़िए—

## फैज़ाबाद के गुमनामी बाबा—13

'मैं सुभाष बोल रहा हूं' में शैलेश डे ने एक जगह पर लिखा है कि, "लेकिन क्या कभी किसी के सामने न झुकने वाले विद्रोही सुभाष को देखा है?

ज़रूर न देखा होगा। सिर्फ तुम ही क्यों? अंतरंग मित्रों के रूप में जो जाने जाते हैं, उनमें से कितनों को मौका मिला होगा, यह देखने का कि उनके विप्लवी जीवन की कार्यप्रणाली क्या है?

देखा था त्रैलोक्य चक्रवर्ती (महाराज) ने, रवि सेन, भूपेंद्र कुमार दत्त, अरुण गुहा, पूर्णदास, अनिल राय और लीला राय ने जो उन दिनों विभिन्न दलों में प्रथम श्रेणी के विप्लवी नेता थे। खासतौर से हेमचंद्र घोष, सत्यरंजन बक्शी, मेजर सत्यगुप्त, मनींद्र किशोर राय जैसे बी.वी. के कार्यकर्त्ताओं ने।

यह बी.वी. उस दिन उनके अंतर्ध्यान होने के मामले में घनिष्ठ रूप से जुड़ी थी। (पेज : 31)।"

अब तो आप ज़रूर जान गये होंगे, कि ये त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती महाराज कौन हैं, जिनका जिक्र अनुशीलन समिति के आशुतोष काली महोदय ने अपने पिछले पत्र में किया था। अर्थात अनुशीलन समिति के साथ-साथ नेताजी सुभाषचंद्र

# वे नेताजी नहीं थे तो कौन थे?

☐अशोक टंडन
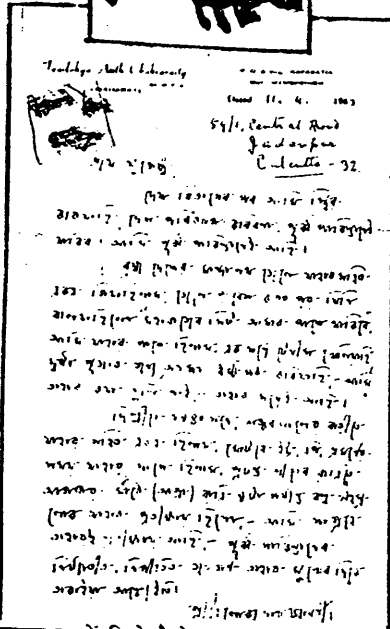
रामभवन में मिले त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती के मूल पत्र की फोटोस्टेट प्रति

बोस द्वारा बनायी गयी बी.वी. (बंगाल वोलेंटियर्स) क्रांतिकारी संस्था के लोगों का बाबा से पूरा सम्पर्क बना हुआ था। लेकिन इन क्रांतिकारियों ने बाबा को कैसे पहचाना और अपना कैसे परिचय दिया इसका भी उदाहरण रामभवन में मौजूद है। 11 अप्रैल 1963 को त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती महाराज ने बाबा को अपने पैड पर लिखा कि, "जय युक्तेषु, देश विभाजन के बाद मैंने तय किया कि मैं देश त्याग नहीं करूंगा, इसलिए पूर्वी पाकिस्तान में ही हूं।

**ब्रह्मदेश के मांडले जेल में जिनके साथ में इकट्ठा गया था, और जेल में घुसने के बाद जिन्होंने कहा था कि महाराज की सीट मेरे पास रहेगी, और मैं जिनके पास था भी। एक साथ टेनिस खेला हूं, दुर्गा पूजा के लिए साथ-साथ आंदोलन किया था और वह सब बातें मैं बिल्कुल नहीं भूला हूं।**

दिल्ली में 1940 में शंकरलाल के घर में जिनके साथ मैं इकट्ठा था, यू.पी. भ्रमण के समय मोटर में मैं जिनकी बगल में था, प्रचंड ठंड की रात्रि में आगरा के मैदान में रात के 9 बजे तक कुछ हज़ार लोग जिनकी प्रतीक्षा में थे, मैं भी साग्रह उन्हीं की प्रतीक्षा में हूं। पूर्व पाकिस्तान के सताये हुये लोग उन्हीं की राह देख रहे हैं। इति त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती"

(क्रमांक 1902)।

मेरे ख्याल से इन पंक्तियों को पढ़ने वाला हर प्रबुद्ध पाठक यह समझ ही गया होगा, कि त्रैलोक्य नाथ महाराज अपने इस पत्र में किसका बखान कर रहे हैं। सभी कुछ सांकेतिक है। क्योंकि बाबा का पहला आदेश है गोपनीयता। परंतु आज यह गोपनीयता भंग हो चुकी है। सभी कुछ हमारी आंखों के सामने, और पूरी तरह स्पष्ट है।

लेकिन क्या मांडले जेल जाते समय नेताजी के साथ बंदियों में उनके कुछ साथी भी थे, और इन लोगों ने किसी दुर्गा पूजा के लिए साथ-साथ आंदोलन भी किया था ? इस बात की पुष्टि स्वयं नेताजी ने की है। उन्होंने 'द इंडियन स्ट्रगल 1920–42' नामक अपनी पुस्तक में एक जगह लिखा है कि, "25 जनवरी 1925 को मुझे अचानक कलकत्ता बदली होने का हुक्म मिला। पर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, जब मुझे रास्ते में मालूम हुआ कि मुझे असल में कलकत्ता नहीं, ऊपरी बर्मा के मांडले जेल ले जाया जा रहा है। कलकत्ता पहुंचने पर मुझे रात बिताने के लिए लाल बाजार थाने में रखा गया।... तो मुझे पास की कोठरी से कुछ जानी-पहचानी आवाजें सुनायी दीं। क्या कहने हमारी सरकार के; उसने मेरे लिए यहां भी साथी भेज दिये थे।... जब कोठरियों के दरवाजे खोले गये तो उनमें से सात परिचित चेहरे निकले। ये सभी मांडले जाने वाले थे।"

सुभाष बाबू ने आगे फिर लिखा कि, "अक्टूबर 1925 में हमारा राष्ट्रीय धार्मिक त्यौहार दुर्गापूजा आने वाला था। हमने सुपरिंटेंडेंट को त्यौहार मनाने और इसके लिए आवश्यक धन प्राप्त करने की अर्जी दी।... सरकार ने हमारी मांग नहीं मानी और फरवरी 1926 में हमने अनशन शुरू कर दिया।"

प्रस्तुत उदाहरण से लगता है कि त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती महाराज ने जिन घटनाओं का जिक्र किया है, वे सही थीं। और उन्होंने यह सब बाबा को नेताजी सुभाषचंद्र बोस समझकर ही लिखी थीं। आपने पढ़ा होगा कि आशुतोष काली ने भी गुमनामी बाबा से त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती महाराज का जिक्र करते हुए लिखा था कि "वे आपके 'अखंड भारत' के स्वप्न व साधना की बात जानकर पूर्वी पाकिस्तान में ही रहकर कार्य करना चाहते हैं" और यहां पर महाराज ने स्वयं ही बाबा को लिखा कि, "पूर्व पाकिस्तान के सताये हुए लोग उन्हीं की राह देख रहे हैं और मैं भी साग्रह उन्हीं की प्रतीक्षा में हूं।"

## रहस्यमय खबर

तो क्या पूर्व पाकिस्तानियों के इस आग्रह पर बाबा कभी बंगला देश भी गये थे ? इस प्रश्न का सीधे-सीधे उत्तर न देते हुए, सामानों में मिली बंगला अखबार की एक कटिंग ने हमें और भी उलझा दिया। इंवेंटरी के क्रमांक 2125 पर दर्ज अखबारों की कटिंग के बंडल में से एक खबर को पढ़कर श्रीमती गीता बनर्जी ने हमें हिंदी में बताया कि, "पूर्व बंगाल की नदियों में एक विशेष प्रकार की नौका दिखाई पड़ी है, जो 'स्पीड बोट' की तरह है। उसमें सशस्त्र पहरेदार भी हैं। कोई विशिष्ट व्यक्ति उस नाव में पूरे पूर्वी बंगाल में घूमते रहते हैं। वह जहां से भी जाते हैं, वहीं झुंड के झुंड लोग आकर उनको देखते हैं, व उनका पीछा करने का प्रयास करते हैं। खान सेना ने पोशाक देखकर सोचा कि नाव उनकी है और सवार भी उन्हीं के लोग हैं।

परंतु बंगाली लोग पहचान गये हैं कि उनके बहुत समय के परिचित सर्वश्रेष्ठ बंगाली हैं।" इस कटिंग का शीर्षक है—'कौन ? जिस पर बाबा ने सही का निशान लगाया है। मेरे विचार से ऊपर प्रयुक्त 'खान सेना' का तात्पर्य पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति 'याहिया खान की सेना' से है। पाठकों को याद दिलाने की जरूरत नहीं कि बंगला देश की लड़ाई के समय भी वहां नेताजी के दिखायी देने की बहुतेरी खबरें सुनायी दी थीं। (देखें किस्त–2)।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को कुरेदता यह प्रश्न इतना आसान नहीं है कि बस आपने कुछ देखा (या बिना देखे ही) उत्तर प्रदेश के मंत्री की तरह कह डाला कि, "गुमनामी बाबा के शिष्यों ने कहा है कि ये सुभाष बाबू नहीं हैं।" लेकिन हमने देखा कि इतनी गोपनीयता और सतर्कता के बावजूद लिखे गये पत्रों में कुछेक ऐसे पत्र भी रामभवन से मिले हैं जो गुमनामी बाबा के विराट व्यक्तित्व की ओर स्पष्ट इशारा कर देते हैं। यही नहीं, एक 22 दिसम्बर 1964 का विश्वनाथ राय का एक पत्र (2703) भी मिला है। बंगला भाषा में लिखा यह पत्र सात टुकड़ों में फटा हुआ था। इसमें श्री राय ने लिखा है,

"श्रद्धास्पदेशु,

आपका पत्र प. राय (पवित्र राय—ले.) के पास से मिला। यथा समय लोगों के हाथ से वापस भेज दूंगा। एक वाइनाकुलर मिला है, उसे भेजूंगा।

**मैं आपको अपना गुरु क्यों समझता हूं, वह बताता हूं। जब मैं 12 वर्ष का**

बालक था सन् 1923 में, तब देशबंधु के साथ संतोष कुमार गुप्ता और आप हमारे घर के मैदान में विधान राय (या विधान सभा—ले.) के निर्वाचन के लिए भाषण देने गये थे। उस दिन आपके व्यक्तित्व से मैं बहुत आकृष्ट हुआ था। मन ही मन तय किया कि मैं एक दिन सुभाषचंद्र बोस के जैसा बन सकूं।''

ऊपर प्रयुक्त 'आपके व्यक्तित्व' का तात्पर्य नेताजी सुभाषचंद्र बोस से ही है, इतना तो आप लोग समझ ही गये होंगे। अर्थात विश्वनाथ राय ने बाबा को नेताजी मानकर ही उन्हें अपना गुरु समझा था। लेकिन क्या विश्वनाथ राय के कथनानुसार 1923 में बंगाल में ऐसा कोई चुनाव हो रहा था ? इस बात को जानने के लिए हमें नेताजी सुभाषचंद्र बोस द्वारा लिखित पुस्तक 'द इंडियन स्ट्रगल 1920–42' की इन पंक्तियों को पढ़ना होगा, ''देशबंधु चितरंजन दास बंगाल के प्रतिनिधियों के बहुत बड़े जत्थे के नेता के रूप में अधिवेशन में पहुंचे... 1923 की विशेष दिल्ली कांग्रेस में बिना अधिक कहा-सुनी के दोनों को मान्य एक प्रस्ताव पास किया गया। यह प्रस्ताव था कि कांग्रेसजन विधान मंडलों में सरकार का सभान रूप से, और निरंतर विरोध करने के लिए आगामी चुनावों में हिस्सा ले सकते हैं।... अत: स्वराज्यवादियों के पास अपने प्रचार के लिए भाषण ही एकमात्र साधन था।... बंगाल के चुनाव परिणाम भी उत्साहवर्द्धक थे और केंद्रीय विधान मंडल में भी स्वराजवादियों का सशक्त दल चुनकर पहुंचा था। आपसी सहमति से यह तय किया गया कि पं. मोतीलाल नेहरू सभा में स्वराज पार्टी के नेता होंगे, और देशबंधु बंगाल की कौंसिल में पार्टी का नेतृत्व करेंगे।'' (नेताजी सम्पूर्ण वांगमय II : 37)।

खैर, श्री राय अपने पत्र में आगे लिखते हैं कि, ''... धीरे-धीरे आपका समाचार मुझे मिला। देखा कि एक व्यक्ति देश से अपनी इच्छानुसार निर्वासन लेकर, बाहर रहकर, देश व जाति की मुक्ति के लिए कोशिश कर रहे हैं।'' पता नहीं क्यों, श्री राय ने इन पंक्तियों को रेखांकित कर दिया है। इन पंक्तियों का सही अर्थ व संदर्भ निकालने के लिये इतिहासविज्ञों को इस पत्र की मूल प्रतिलिपि का अध्ययन करना चाहिए, जो राभभवन के तीन ताले में बंद है। क्योंकि अगर हम इस निर्वासन का मतलब सन् 1945 के बाद की घटनाओं से लगाएं तो गलत नहीं समझा जाना चाहिए, क्योंकि यहां 'निर्वासन' शब्द के पूर्व लिखा है 'अपनी इच्छानुसार'। और स्वतंत्रता से पहले का नेताजी का निर्वासन अपनी इच्छानुसार न होकर बल्कि अंग्रेजों की इच्छानुसार था। अत: इन पंक्तियों का अगर छिद्रांवेषण किया जाए, तो इसका अर्थ निकलता है कि गुमनामी बाबा रूपी, श्री विश्वनाथ राय के गुरु यानी नेताजी सुभाषचंद्र बोस 1945 की ताईहोकू विमान दुर्घटना के बाद जीवित होकर विदेशों में जहां कहीं रहे, धीरे-धीरे उसका पता विश्वनाथ राय को भी चलता रहा, और जो आज इस (पत्र के माध्यम से) पुनर्मिलन के रूप में प्रकट हुआ। आप फिर पूछेंगे कि मैंने पुनर्मिलन क्यों लिखा ? क्या विश्वनाथ राय को पहले भी नेताजी से मिलने का मौका मिला था ? इसका जवाब है श्री राय की अगली पंक्तियां, ''... 1935 में आपके साथ मेरी मुलाकात हुई। उसके पहले वियना में आपके इलाज के लिए रुपया आपके सहकर्मियों के माध्यम से भेजा गया था।''

बात बहुत साफ होती-सी नज़र आ रही है। लेकिन कुछ जिज्ञासु पाठकगण मेरे द्वारा इस पत्र का इतना छिद्रांवेषण करने का कारण भी मुझसे पूछ सकते हैं। पूछना भी चाहिए। मैं उन्हें यहां बता दूं कि यह पत्र मुझे महत्वपूर्ण इसलिए लगा कि इस पत्र के अंत में नीचे की तरफ बाबा ने स्वयं लिखा है कि—''धन्य हो, हे मेरे मां के पुत्र, मेरे प्राण स्वरूप, ऐसा ही हो, विजयी हो।''

अपने पत्र की इन आखिरी पंक्तियों में श्री विश्वनाथ राय ने ऐसा क्या लिख रखा है कि जिस पर बाबा को उपरोक्त अर्थगर्भित टिप्पणी करनी पड़ी। यह जानने के लिए अब तो आप लोगों को स्वयं रामभवन खुलवाना पड़ेगा।

वैसे यहां मौजूद प्रत्येक दस्तावेज या पत्रों की प्रत्येक पंक्तियां बड़ी ही अर्थगर्भित हैं ऐसा हमने महसूस किया। क्योंकि आप स्वयं इस पत्र में ही देखें, कि श्री राय ने पत्र के प्रारम्भ में ही लिखा है कि, 'आपका पत्र प. राय के पास से मिला। यथासमय लोगों के हाथ से वापस भेज दूंगा।' अर्थात बाबा हर किसी को सीधे डाक द्वारा पत्रों का जवाब आदि न भेजकर बल्कि अपने किसी खास चैनल से ही भेजते थे। और फिर साथ में यह भी निर्देश रहता था कि पत्र पढ़कर वापस कर देना। जानते हैं क्यों, यह सतर्कता बरती जाती थी। क्योंकि बाबा की हस्तलिपि किसी के पास न रहे।

अपनी हस्तलिपि के बारे में बाबा की ऐसी ही एक और सर्तकता आपने पिछले अंक (11 वीं किस्त) में भी देखी होगी कि वे ज्यादातर अंग्रेजी के कैपिटल अक्षरों का ही इस्तेमाल करते थे, तथा बंगला भाषा को भी रोमन अंग्रेजी में ही लिखा करते थे या पत्र को पढ़कर तुरंत जलाकर नष्ट कर देने का आदेश दे देते थे। प्रश्न उठता है आखिर क्यों ? (क्रमश:) □

9, एम.आई.जी. फ्लैट,
लक्ष्मणपुरी, फैजाबाद

लघुकथा

## तीन दुर्घटनाएं

□ अरुण कुमार मित्रा

**पहली दुर्घटना**

रेल से अनाथ कुत्ते की एक टांग कट गयी। कुछ दिनों तक उसे विशेष परेशानी रही, परंतु धीरे-धीरे टांग की शक्ति पूंछ में आ गयी।

**दूसरी दुर्घटना**

रेल से एक अनाथ कुत्ते की पूंछ कट गयी। कुछ दिनों तक उसे विशेष परेशानी रही, परंतु धीरे-धीरे पूंछ की शक्ति टांगों में आ गयी।

**तीसरी दुर्घटना**

कुछ दिनों बाद बिना पूंछ का कुत्ता प्लेटफार्म पर मरा पड़ा था, और तीन टांग का कुत्ता पूंछ हिलाते हुए घूम रहा था। □

## फैज़ाबाद के गुमनामी बाबा–14

# वे नेताजी नहीं थे, तो कौन थे ?

□ अशोक टंडन

**पूर्वकथा**

अब तक आपने पढ़ा कि 16 सितम्बर, 1985 को उत्तर प्रदेश के फैज़ाबाद शहर में स्थित रामभवन में एक गुमनामी बाबा की रहस्यमय मृत्यु के बाद जब उनके कमरे का ताला तोड़ा गया तो वहां अनेक बक्सों में विविध सामानों सहित नेताजी सुभाषचंद्र बोस जैसा गोल चश्मा, घड़ी, दूरबीन, नेताजी के माता-पिता एवं परिवार के छायाचित्र, नेताजी से सम्बंधित पुस्तकों के अलावा नेताजी के सहयोगियों, आई.एन.ए. के अधिकारियों एवं बाबा के बीच हुए पत्राचार की फोटो प्रतियां भी मिली हैं जिनकी गोपनीयता एवं सांकेतिक भाषा के बावजूद यह जाहिर होता है कि यह साधु वही हैं, जिसका जन्म 23 जनवरी को हुआ था। यही नहीं फैज़ाबाद के जिलाधिकारी द्वारा बाबा के सामान को लावारिस करार देकर नीलाम करा देने से रोकने हेतु नेताजी की सगी भतीजी सुश्री ललिता बोस की याचिका पर उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय ने बाबा के सामानों की इंवेंटरी बनवाकर सामान को ट्रेजरी में रखने का आदेश दे दिया। क्या कारण है कि जब से 'गंगा' ने इस रहस्य की पर्तों को एक-एक कर उधेड़ना शुरू किया है, इस प्रकरण का विरोध करने का साहस कोई नहीं कर पा रहा है। एक ओर नेताजी के परिवार वालों एवं अनुयायियों का कहना है कि उनका फैज़ाबाद के बाबा से कोई सम्पर्क नहीं था, दूसरी ओर बाबा के सामानों में ऐसे नक्शे, दस्तावेज और पत्रों की फोटो-प्रतियां मिली हैं जिससे लगता है कि यह बाबा कोई साधारण साधु नहीं था। बाबा के सामानों में जो महत्वपूर्ण पत्र मिले हैं, उनकी जांच करते हुए यहां पेश किये जा रहे हैं कुछ और महत्वपूर्ण पत्र। □

हाल ही में मुझे, प्रो. समर गुहा द्वारा लिखित एक पुस्तक 'क्या नेताजी जीवित हैं ?' देखने को मिली। यह पुस्तक सन् 1978 में पहली बार प्रकाशित हुई है। प्रो. गुहा ने इस पुस्तक में एक जगह पर लिखा है कि, ''1946 के शुरू के महीनों में वॅवेल की सरकार को एक गुप्त रिपोर्ट में बताया गया था कि बोस शायद रूसी क्षेत्र में पहुंच गये हैं, और गांधी व नेहरू को इसके बारे में गुप्त सूचना भी मिली। यह रिपोर्ट शहनवाज समिति को पेश किये गये दस्तावेज में मिली (नं. 10/मिस्क./आई.एन.ए./पृ. : 38–39), जिसमें कहा गया था—''गांधी जी ने जनवरी (1946) के आरम्भ में सार्वजनिक रूप से कहा था कि उनका विश्वास है कि नेताजी जीवित हैं, और छिपे हुए हैं। इसका आधार उन्होंने अपनी अंतरात्मा की आवाज बताया था। कांग्रेसजनों का विश्वास है कि गांधी जी की 'आत्मा की आवाज' उन्हें मिली गुप्त सूचना थी। एक गुप्त रिपोर्ट के अनुसार नेहरू को बोस का एक पत्र मिला था, जिसमें उन्होंने लिखा था कि वह रूस में है और भारत लौटना चाहते हैं।' इस सूचना के अनुसार गांधी जी और शरत बोस को इसका ज्ञान था।'' (पृष्ठ : 22)।

तो क्या नेताजी के इसी पत्र वाली बात को लेकर पं. जवाहरलाल नेहरू और श्री शरतचंद्र बोस के बीच झगड़ा हुआ था ? क्योंकि नेहरू जी सार्वजनिक रूप से यह मानने को तैयार ही नहीं होते थे कि नेताजी जिंदा हैं। और तभी इन दोनों के बीच झगड़े की वजह गांधी जी ने भी नेहरू से जाननी चाही थी। 7 सितम्बर 1987 के दैनिक 'नवभारत टाइम्स' में 'गांधी की विश्व दृष्टि और दो भूली हुई चिट्ठियां' नामक लेख में श्री सुधीर चंद्र लिखते हैं कि, ''अंत में नेहरू और शरतचंद्र बोस के बीच फूटी चिंगारियों के कारण हुए अपने दर्द का हवाला देते हुए वह नेहरू से पूछते हैं कि इस झगड़े की जड़ क्या है ?''

यह पत्र गांधी जी ने 5 अक्टूबर 1945 को लिखा था। अर्थात नेताजी की तथाकथित हवाई दुर्घटना के ठीक डेढ़ माह बाद।

**इतना हम ज़रूर जानते हैं कि गुमनामी बाबा को अपने मेजदादा (मझले बड़े भाई) के बारे में जानकारियां रहती थीं, उनके स्वास्थ्य की चिंता रहती थी, उनके इलाज का ख्याल रहता था। और यह बात हमें डॉ. कविराज कमलाकांत घोष के 23 जनवरी 1967 के एक पत्र से मालूम हुई।**

इसका मतलब यह हुआ कि नेताजी के दूसरे नम्बर के बड़े भाई शरतचंद्र बोस को अगस्त 1945 के बाद भी अपने छोटे भाई सुभाष के बारे में जानकारियां थीं—यह हमारा अनुमान है। लेकिन इतना हम जरूर जानते हैं कि गुमनामी बाबा को अपने मेजदादा (मझले बड़े भाई) के बारे में जानकारियां रहती थीं, उनके स्वास्थ्य की चिंता रहती थी, उनके इलाज का ख्याल रहता था। और यह बात हमें डॉ. कविराज कमलाकांत घोष के 23 जनवरी 1967 के एक पत्र से मालूम हुई, जिसमें डॉ. घोष ने बाबा को बांग्ला में लिखा था, **''सत्तर वर्ष की पूर्ति के उपलक्ष्य में मेरी श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिए शब्द नहीं हैं। एक नमस्कार में मेरे शत् सहस्त्र प्रणाम केंद्रित हैं। परम पूज्यनीय मेजदा (मझले भाई) के साथ मैं आज (20.1.67) मिला हूं। कुछ दिन से बीमार हैं। मानसिक परेशानी ही इसका कारण है। आई.एन.ए. के भूतपूर्व कैप्टन दत्ता महाशय अब उनका इलाज व देखरेख कर रहे हैं। परम पूज्यनीय के आग्रह पर ही ऐसी व्यवस्था हमने की है। बाद में मैं दूसरे समाचार लिखूंगा।''**

यह पत्र कविराज ने अपने लेटर पैड पर लिखा है। रामभवन से प्राप्त सामानों की इवेंटरी के क्रमांक 1746 पर दर्ज है। अब ऐसे पत्रों को पढ़कर हमारे पाठकगण भी उसका मतलब समझने लगे होंगे। फिर भी हम उन्हें बता दें कि यह पत्र 23 जनवरी 1967 को बाबा को उनकी सत्तरवीं वर्षगांठ पर भेजा गया है। इस तिथि में अगर सत्तर घटा दें तो वह दिन और वर्ष 23 जनवरी सन् 1897 आता है—अर्थात नेताजी का जन्मदिन। इसी तरह आप देखें कि बाबा की ही तरह नेताजी को भी अपने बहन-भाइयों, मित्रों आदि के स्वास्थ्य की चिंता बहुत रहती थी और वे चिकित्सा की सलाह भी दिया करते थे। देखें उनके कुछ पत्रों के अंश—

(1) ''कैम्ब्रिज, 20.4.21, प्रिय दादा, मुझे मेज दीदी को लेकर विशेष चिंता है... मेज दीदी की बीमारी की खबर पाने के बाद मैंने पिताजी को इस्तीफे के बारे में कुछ नहीं लिखा है।''

(2) ''आदरणीय मां... मेजदादा की परीक्षा कैसी रही?''

(3) ''20.11.15 (अपने मित्र हेमंत को)... जब मैं तुमसे मिलूंगा तो मुझे तुम्हारे बारे में एक प्रकार की न्यायिक जांच करनी होगी। मुझे पता लगाना होगा कि तुम अपनी तंदुरुस्ती की ओर से इतने लापरवाह क्यों रहते हो?''

(4) ''... कृपया अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो... मेरा तुमसे अनुरोध है कि तुम इसके लिए और पेचिश के लिए भी अपनी चिकित्सा करा लो। तुम्हारी डॉक्टरी परीक्षा ज्ञानदा या कोई अन्य कर सकता है।''

(5) ''... मैं तुम्हारे स्वास्थ्य का समाचार पाने को उत्सुक हूं।''

(6) ''आदरणीय मां... मेज दादा ने मुझे मेरे अनुरोध पर एक लम्बा पत्र लिखा है, जो मुझे कल मिल गया, और उसे पाने पर मेरी प्रसन्नता की सीमा न रही।'' (सभी पत्र नेताजी सम्पूर्ण वाङ्‌गमय खंड 1 से)।

बाबा आई.एन.ए. के डॉक्टरों से भी परिचित हैं। इस पर भी जरा आप गौर फरमाते चलें। मेरा तो कहना है कि बाबा केवल अपने मेजदा के स्वास्थ्य की चिंता इतनी दूर से बैठकर ही नहीं किया करते थे, बल्कि वे कलकत्ता भी जाया करते थे। इस राज को खोलने वाले पवित्र मोहन राय के 6.9.84 के एक पत्र में लिखा है कि, **''आप गत् तीन वर्षों से नहीं आये हैं। आने में तो आपको असुविधा है ही, लेकिन अगर आप आ सकते हैं तो सोचकर लिखिएगा, आपके ठहरने की व्यवस्था दूर किसी होटल में कर दिया जाए, यह भी आप सोचकर लिखिएगा कि यह व्यवस्था की जाए या नहीं।'' (1693)।**

पवित्र मोहन राय से कौन पूछेगा कि आप अपने गुरु, संत महात्मा जैसे आदमी को कलकत्ते बुलाकर दूर किसी होटल में क्यों ठहराना चाहते हैं? अपने या अपने परिचितों के ही घर पर क्यों नहीं? इसलिए नहीं, क्योंकि वे जानते हैं कि यह 'साधू बाबा' कौन है। अपने चार पृष्ठों के एक दूसरे बंगला भाषा के पत्र में पवित्र मोहन राय बाबा को 'श्री चरण कमलेषु' से सम्बोधित करते हुए लिखते हैं कि, **''आपके सम्बंध में ज्योतिषी से मैंने पूछा था, जिन्होंने कहा है कि 1940 से 1945 तक कोई दुर्घटना नहीं हो सकती थी, जैसा कि प्रचलित है।** उक्त ज्योतिषी ने यह भी बताया था कि 55 से 60 के बीच की आयु में महान रोग से आक्रांत हो सकते हैं। जाने के समय बड़ी धर्मशाला में जो आप बीमार पड़े थे, उससे मुझे ऐसा समझ पड़ता है कि ज्योतिषी ने ठीक ही बताया था।'' (2150)।

इसी तरह 14.7.77 को अपने अगले पत्र में पवित्र बाबू लिखते हैं कि, ''एक विशिष्ट घटना इस बीच घटी है। वह इस प्रकार है कि ठाकुर ऋषि रामकृष्ण देव की पुस्तक पढ़ रहा था, तो थोड़ी तंद्रा-सी मुझे आई। उसी समय अनुभव हुआ कि बहुत दिनों के पुराने किसी स्थल पर मैं पहुंचा हूं, जबकि इस स्थान से मेरा सम्बंध सन् 1930 के बाद से नहीं है। परंतु वहां मेरे पितृ देव का कर्म-स्थल मैमन सिंह, जिला टांगाई का कोई गांव, जहां पर मेरे पिताजी ने कुछ सहकर्मियों के सहयोग से मां काली की मूर्ति स्थापित की थी, और आज भी लगातार वहां पूजा की व्यवस्था है, और एक बार मैंने यह बात आपको भी बताई थी। तब मैं देखता हूं कि मेरे सामने उस गांव के रास्ते मेरे सतगुरुदेव (अर्थात गुमनामी बाबा—जिनको पवित्र मोहन राय इसी सम्बोधन से पत्र भेजते थे—ले.) आगे-आगे चल रहे हैं और गेरूआ वस्त्र पहने हैं, तथा ठीक मंदिर के सामने पहुंचकर मंत्र पढ़ रहे हैं, और मैं उनके पीछे खड़े होकर वही मंत्र दुहरा रहा हूं, और वह उच्चारण व कंठ स्वर वह मेरा चिर परिचित है—इसके बाद उन्होंने प्रणाम किया और बांयीं तरफ घूमकर पश्चिम की तरफ चलना प्रारम्भ किया, फिर दो-तीन सेकेंड बाद मेरी तंद्रा टूट गयी। यह घटना मैं सबके सामने नहीं कह सकता। इसी से इस पत्र में लिख रहा हूं और पेपर कटिंग भी भेज रहा हूं।'' (2151)।

यह वही आजाद हिंद फौज की गुप्तचर सेवा के अधिकारी पवित्र मोहन राय हैं, जिन्होंने इस घटनात्मक खबर की जांच करने गये एक पुलिस अधिकारी को यह कहकर बहका दिया था कि, ''मैं यह नहीं कह सकता कि स्वामी किसकी तरह
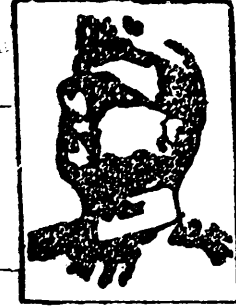
थे।'' और यहां पर वह दिवास्वप्न तक में स्वामी यानी की बाबा का उच्चारण व कंठ तर्क पहचान ले रहे है। आखिर यह छिपाव, यह गोपनीयता क्यों ?

स्वप्नों की माया भी बड़ी विचित्र है। विज्ञानी, मनोविज्ञानी सभी इसके पीछे पड़कर भी फ्रॉयड की दुनिया से आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं—और इधर सपने हैं कि वे बाबा के डॉ. राय जैसे शिष्यों को कौन कहे, उनके भाई-बहनों को भी आच्छादित किये हुए हैं। इवेंटरी के क्रमांक 1745 का मुलाहिजा फरमाइए !

21 जनवरी 1981 को श्री चरणेषु को सम्बोधित किये गये, अपने बंगला-भाषी पत्र में 'चारण' बाबा को लिखते हैं कि, ''शुभ जन्म दिन पर मैं प्रणाम करता हूं। मैं निरंतर इसी प्रतीक्षा में हूं कि कब आप सशरीर सबके सामने प्रकट होंगे ? इसी दीर्घ प्रतीक्षा में मैं कभी व्याकुल, कभी चंचल हो जाता हूं। श्री श्री ओंकारनाथ ठाकुर ने **कहा है कि 'काफी लोग कहते हैं कि मेरा सुभाष बाबू से सम्पर्क है जो कि ज्ञानतः नहीं है, और सभी कुछ गुरु की कृपा है, मैंने ज्ञानतः उनसे साक्षात्कार नहीं किया है, परंतु जो कुछ भी है वह अज्ञानतः और सूक्ष्म शरीर से है।'** मेरी छोटी बहन कहती है कि उसने स्वप्न में देखा कि इंदिरा जी काली व ढीली पोशाक पहने हुए हैं और उनके साथ 'महाकाल' हैं। पहले उनको परछाई-सी दिखती है, फिर अत्यधिक प्रकाशमान स्वरूप दिखाई देता है, और इंदिरा जी रोने लगती हैं। चारों तरफ समुद्र की लहरें हैं और असंख्य मनुष्य तेज आवाज में महाकाल के अस्तित्व को स्वीकार कर रहे हैं। यह स्वप्न क्या असफल हो जाएगा ? यह मेरी बहन शिवानी का सपना है जो अब सिल्चर में रहती है। असंख्य प्रणाम लीजिए। आपके चिरंतन आशीर्वाद का आकांक्षी—चरण।''

वैसे सपने तो सपने ही होते हैं, उनका वास्तविकता से क्या काम। लेकिन फिर भी प्रश्न उठ सकता है कि ये 'महाकाल' कौन है और फिर उस महाकाल से इंदिरा जी (सम्भवतः इंदिरा गांधी) के डरने का क्या अर्थ होगा ? यह सब अब पाठकों के विवेक और चिंतन पर छोड़ता हूं। लेकिन इस 'महाकाल' शब्द से याद आया कि श्री शैलेश डे ने भी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'मैं सुभाष बोल रहा हूं' की अंतिम पंक्ति में भी न जाने क्यों 'महाकाल' का ही जिक्र किया है। जरा देखें, **''न केवल आज... और भी बाद में... लोग हमेशा ही व्याकुल होकर पूछेंगे—सुभाष कहां है ? कब वे हमारे बीच लौट आयेंगे ? कब ?... वह दिन, वह शुभ घड़ी कब आएगी ? कब ? धैर्य धारण करो... रहस्य का द्वार खोलेंगे... स्वयं महाकाल।''** (खंड तीन : पृष्ठ 310)

चलते-चलते संसद सदस्य के लेटर पैड पर दिनांक 19.3.67 को किसी 'बेटा' द्वारा श्री चरण कमलेषु सम्बोधन से बंगला में लिखा एक पत्र देखें, जिसमें लिखा है कि, ''आपके आशीर्वाद से मैं जीत गया हूं। एक 'बांगाल' के लिए मेदिनीपुर के ग्रामांचल से जीतना सबके लिए अकल्पनीय था। परंतु भवितव्य को कोई नहीं रोक सकता। आपके आशीर्वाद से, वाणी से जननी जन्मभूमि के लिए कुछ कार्य हो सके, भगवान से इसके लिए मैं प्रार्थना करता हूं।''

कौन थे ये 'बांगाल' सांसद (पूर्वी बंगाल के निवासियों को कलकत्ते में बंगाली न कहकर 'बांगाल' कहा जाता है) जो गुमनामी बाबा के आशीर्वाद से जीत गये थे ? यह आप लोग स्वयं पता लगाइए और उन लोगों को बता दीजिए जो कहते हैं कि नेताजी के परिवार वालों तथा उनके पुराने अनुयायियों का फैज़ाबाद के बाबा से कभी कोई सम्पर्क नहीं था।

हां, एक बात जो ऊपर कहने से रह गयी, वह यह थी कि कविराज कमलाकांत घोष बाबू नहीं डॉ. कमल हैं, जिनको फारवर्ड ब्लॉक के कुछ लोगों ने गुमनामी बाबा के रूप में रहना बताया है। जबकि असलियत यह है कि डॉ. कमलाकांत घोष, नेताजी की परम अनुयायी सुश्री लीलाराय द्वारा संगठित क्रांतिकारी संस्था 'श्री संघ' के सदस्य थे, और उन्हीं के कहने पर नैमिषारण्य में बाबा का इलाज करने जाते थे, जिनका जिक्र पत्रकार श्री वरुण सेनगुप्त ने भी अपनी रिपोर्ट में किया है (देखें किस्त तीन)। (क्रमशः) □ 9.

9. M.I.G., लक्ष्मणपुरी, फैज़ाबाद

**कौन थे ये 'बांगाल' सांसद (पूर्वी बंगाल के निवासियों को कलकत्ते में बंगाली न कहकर 'बांगाल' कहा जाता है) जो गुमनामी बाबा के आशीर्वाद से जीत गये थे ? यह आप स्वयं पता लगाइए और उन लोगों को बता दीजिए जो कहते हैं कि नेताजी के परिवार वालों तथा उनके पुराने अनुयायियों का फैज़ाबाद के बाबा से कभी कोई सम्पर्क नहीं था।**

## फ़ैज़ाबाद के गुमनामी बाबा–15

**अब तक आपने पढ़ा कि 16 सितम्बर 1985 को उत्तर प्रदेश के फ़ैज़ाबाद शहर में स्थित रामभवन में एक गुमनामी बाबा की रहस्यमय मृत्यु के बाद जब उनके कमरे का ताला तोड़ा गया तो वहां अनेक बक्सों में विविध सामानों सहित नेताजी सुभाषचंद्र बोस के जैसा गोल चश्मा, घड़ी, दूरबीन, नेताजी के माता-पिता एवं परिवार के छायाचित्र, नेताजी से सम्बंधित पुस्तकों के अलावा नेताजी के सहयोगियों, आई.एन.ए. के अधिकारियों एवं बाबा के बीच हुए पत्राचार की फोटो प्रतियां भी मिली हैं। यही नहीं, फ़ैज़ाबाद के जिलाधिकारी द्वारा बाबा के सामान को लावारिस करार देकर नीलाम करा देने से रोकने हेतु नेताजी की सगी भतीजी सुश्री ललिता बोस की याचिका पर उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय ने बाबा के सामानों की इंवेंटरी बनवाकर सामान को ट्रेजरी में रखने का आदेश दे दिया। क्या कारण है कि जब से 'गंगा' ने इस रहस्य की पर्तों को एक-एक कर उधेड़ना शुरू किया है, इस प्रकरण के विरोध करने का साहस कोई नहीं कर पा रहा है। बाबा के सामानों में महत्वपूर्ण नक्शों और दस्तावेजों के अलावा जो पत्र मिले हैं, उनकी जांच करने से लगता है कि यह कोई साधारण साधू नहीं था। इसी क्रम में पढ़िए कुछ और महत्वपूर्ण पत्रों के बारे में—**

रामभवन में मिले गुमनामी बाबा के सामानों की इंवेंटरी के क्रमांक 1673 पर दर्ज एक पत्र देखिए—"**श्रद्धास्पदेषु, मेरा प्रणाम स्वीकार करें। कुछ दिनों से पत्रादि नहीं दिया हूं। कारण, पत्रवाहक नहीं भेज सका। डाक द्वारा सभी बातें नहीं लिखी जा सकती हैं, यदि प्रगट हो जाएं! इसलिए सावधानी रखनी पड़ती है।**"

ये कौन आदमी है, जो एक साधू-संन्यासी से बात करने में, पत्र लिखने में इतनी सतर्कता बरत रहा है। उसे हिंदुस्तान के डाक विभाग पर भी भरोसा नहीं रहा। उसे डर है कहीं उसकी 'वो' सब बातें अगर प्रगट हो गई तो क्या होगा? इसलिए वह बाबा तक अपनी खास बातें पहुंचाने के लिए कलकत्ते से अपना खास आदमी—यानी पत्रवाहक भेजता है। ये महाशय हैं—श्री विश्वनाथ राय।

वही विश्वनाथ राय, जिनका परिचय हम आपको पहले ही (किस्त-3 में) कलकत्ते के प्रसिद्ध पत्रकार श्री वरुण सेन गुप्त की कलम से करा चुके हैं, जिन्होंने सन् 74 में 'आनंद बाज़ार पत्रिका' में लिखा था कि जब गुमनामी बाबा नैमिषारण्य में रह रहे थे तो इन्हीं कुमार विश्वनाथ राय ने उनके लिए सभी सामान खरीदकर भिजवाया था। इसके बाद उन्होंने नेताजी अनुसंधान का पूर्ण दायित्व ग्रहण कर लिया। उन्होंने संन्यासी को अपनी एक गाड़ी भी दे दी थी। और तभी शायद इन्हीं कुमार विश्वनाथ राय का ज़िक्र 'अमल' बाबू ने भी अपने पत्र में सिर्फ 'कुमार' के सम्बोधन से ही किया है (किस्त-3 में ही देखें)।

श्री राय ने अपने इस पत्र में आगे आध्यात्मिकता व ईकोनोग्राफ़ी से सम्बंधित बात लिखते हुये लिखा कि—"**आपके द्वारा पहले लिखी हुई रचनाएं—आध्यात्मिकता और आधुनिकता के समन्वय से सम्बंधित कई देखी। मैं उन पर पहले भी विश्वास करता था और अपने जीवन में भी उसे ग्रहण किया था। अब देख रहा हूं कि आप भी**

□ अशोक टंडन

उन्हीं विचारों का पोषण करते हैं। बाद में कभी आपसे इन्हीं विषयों पर चर्चा करूंगा।''

**रामभवन से प्राप्त विश्वनाथ राय के पत्र की फोटो प्रति**

पत्र की उपरोक्त पंक्तियां देखने में जितनी साधारण लगती है, सम्भवत: उतनी हैं नहीं।

सर्वविदित है कि नेताजी सुभाषचंद्र बोस के प्रिय विषयों में से एक 'दर्शनशास्त्र' भी था। सन् 1918 में नेताजी जब इंग्लैंड में ऑनर्स कोर्स के चौथे वर्ष के विद्यार्थी थे तो 'दर्शन समिति' के सचिव की हैसियत से उन्होंने समिति की बैठक की कार्रवाइयों में लिखा कि—"अगले विचार-विमर्श का विषय था भारतीय और योरोपीय सभ्यता का दार्शनिक आधार। निबंधकार श्री विनय रक्षित थे और अध्यक्षता प्रो. इवान ने की। निबंधकार ने इस स्थापना के लिए प्रयास किया कि भारतीय सभ्यता अनिवार्यत: आध्यात्मिकता-वादी थी जबकि योरोपीय सभ्यता भौतिकवादी थी। यूरोप में विज्ञान के दुरुपयोग के लिए यही तथ्य काफी हद तक जिम्मेदार रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य की सभ्यता में भारतीय और यूरोपीय संस्कृतियों का सुखद सामंजस्य होगा।... चौथी बैठक 6 सितम्बर को हुई। श्री सुभाषचंद्र बोस ने अपना निबंध पढ़ा।... निबंधकार ने हेगेल द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत के अनुसार आदर्शवादी अद्वैतवाद का समर्थन किया, लेकिन यह कहते हुए हेगेल तथा शापेनहावर से मतभेद प्रकट किया, कि **उनके अनुसार निरपेक्ष सत्ता न शुद्ध तर्कणा है, न शुद्ध संकल्प बल्कि अपनी सम्पूर्णता के साथ आत्मा है जो विश्व की समस्त प्रक्रियाओं से गुजरते हुये किसी मनुष्य के जीवन में स्व-चेतना के परमानंद तक उत्थित होती है।** निबंधकार का कहना था कि यह मत विज्ञान-सम्मत भी होगा और धर्म-सम्मत भी और वस्तुओं की प्रचलित तथा वैज्ञानिक धारणा का दार्शनिक धारणा से सामंजस्य स्थापित कर सकेगा।" (नेताजी सम्पूर्ण वांगमय : खंड एक, पृष्ठ : 245)।

नेताजी के उपरोक्त सिद्धांत (निरपेक्ष सत्ता न शुद्ध तर्कणा है... परमानंद तक उत्थित होती है।) को समझने के लिए हमें नेताजी द्वारा लिखी गयी आत्मकथा के "मेरी आस्था (दार्शनिक)" अध्याय की निम्न पंक्तियों का अवलोकन करना ज़रूरी है, जिससे हम श्री राय द्वारा लिखे गये उपरोक्त वाक्यों को वास्तविक रूप में समझ सकें कि वास्तव में क्या नेताजी के दार्शनिक दृष्टिकोण का मूल 'आध्यात्मिकता और आधुनिकता' के समन्वय पर ही आधारित था?

उन्होंने लिखा कि—"हिंदू दर्शन में पर-ब्रह्म की पारम्परिक धारणा 'सच्चिदानंद' के रूप में है। अधिक समन्वयात्मक दार्शनिकों का कहना है कि निरपेक्ष ब्रह्म अनिवर्चनीय है। और, बुद्ध के विषय में कहा जाता है कि जब कभी उनसे उस निरपेक्ष सत्ता के विषय में जिज्ञासा की जाती थी, तो वह मौन धारण कर लेते थे। मानव मन द्वारा, जिसकी अपनी अनेक सीमाएं हैं, ब्रह्म का सम्पूर्ण ज्ञान हो पाना असम्भव है।... हिंदू दर्शन के अनुसार पूर्ण ज्ञान की उपलब्धि तभी सम्भव है जब हम योगिक बोध अर्थात किसी प्रकार के अंत: प्रज्ञात्मक बोध द्वारा अतिमानसिक स्तर पर पहुंच सकें। पाश्चात्य दर्शन में हैनरी बर्गसां के समय से अंत: प्रज्ञा को ज्ञान के एक साधन के रूप में स्वीकार अवश्य किया गया है, हालांकि कतिपय क्षेत्रों में अब भी उसकी खिल्ली उड़ायी जा सकती है। लेकिन पाश्चात्य दर्शन को अभी भी अतिमानसिक के अस्तित्व को, और यौगिक बोध द्वारा उसके परिज्ञान को, स्वीकार करना शेष है।"

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या हम निरपेक्ष सत्ता का परिज्ञान यौगिक बोध द्वारा कर भी सकते हैं? क्या कोई ऐसा अतिमानसिक स्तर है जिस तक व्यक्ति पहुंच सकता है और जहां ज्ञाता और ज्ञेय का आपस में लय हो जाता है? इस प्रश्न पर मैं स्वनिर्मित शब्दावली में कहना चाहूंगा कि मेरा 'उदार अज्ञेयवाद' का है। एक ओर तो मैं किसी भी बात को केवल विश्वास के आधार पर सच मानने को तैयार नहीं हूं, मुझे प्रत्यक्ष अनुभव होना चाहिए, लेकिन निरपेक्ष सत्ता के मामले में मुझे ऐसा अनुभव नहीं होता। दूसरी ओर, जिस बात का अनुभव कितने ही लोगों ने अतीत में करने का दावा किया है, उसे मैं कोरी कपोल-कल्पना कहकर अस्वीकार नहीं कर सकता। उन सबको नकारना ऐसे बहुत कुछ को नकारना हो जाएगा, जिसके लिए मैं तैयार नहीं हूं। **इसलिए मुझे अतिमानस के प्रश्न को तब तक के लिए खुला छोड़ देना है जब तक मैं स्वयं उसका अनुभव न कर लूं।''** (नेताजी स.वा. प्रथम : पृष्ठ 199)।

याद कीजिए कि ये आत्मकथा नेताजी ने दिसम्बर 1937 में ऑस्ट्रिया में अपने दस दिन के प्रवास में लिखी थी। 1938 का जनवरी महीना आया नहीं कि भारत की कांग्रेस पार्टी ने उन्हें अपना अध्यक्ष चुन लिया—फिर से वही राजनीति। 1939 में फिर अध्यक्ष और इस्तीफा! फारवर्ड ब्लाक और घर में कैद! गुप्त रूप से काबुल, जर्मनी, जापान, आजाद हिंद फौज, अंग्रेजों से लड़ाई और 18 अगस्त 1945 (तथाकथित वायुयान दुर्घटना के दिन) तक नेताजी कर्मयुद्ध के वीर प्रणेता के रूप में व्यस्त रहे। सोचिए तो जरा, इन दिनों के बीच उन्हें क्या कभी

ऐसे भी एकांत क्षण मिले होंगे कि वह 'अतिमानस' को समझने के लिए योगायोग कर पाते? सम्भवतः कदापि नहीं। क्योंकि 'अतिमानस' जैसे प्रश्न को समझने व अनुभव करने के लिए समय और एकांत की ज़रूरत होती है, जो कि उनके पास उस समय नहीं था। **अब अगर हम यह मानते हैं कि नेताजी 1945 के अंतर्ध्यान के बाद भी अगर जीवित थे, और वे कहीं अज्ञातवास कर रहे थे, तब तो उनके पास अवश्य ही समय रहा होगा कि वे अपने जीवन की उस साध को पूरी करते—अर्थात अतिमानस का अनुभव।**

तो क्या ऐसा नहीं हो सकता कि नेताजी वही कुछ यहां बैठकर गुमनामी बाबा के रूप में कर रहे हों. क्योंकि आपने ऊपर श्री विश्वनाथ राय की इन पंक्तियों को तो पढ़ा ही है कि— अब देख रहा हूं कि आप भी उन्हीं विचारों का पोषण करते हैं।"

बात बहुत गम्भीर और उस विराट प्रश्न—"कि नेताजी अगर जिंदा रहे, तो छिपकर क्या कर रहे थे'—की ओर इंगित करती प्रतीत होती है। नेताजी एक महान क्रांतिकारी थे, जो कभी छिपकर रह ही नहीं सकते थे—कह देने भर से ही इतने विराट प्रश्न का उत्तर हम-आप नहीं ढूंढ़ सकते हैं, बल्कि हमें 'नेताजी' जैसे व्यक्ति को समझने के लिए उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का अनुशीलन करना होगा।

ऊपर जहां नेताजी ने निरपेक्ष सत्ता को न तो शुद्ध तर्कणा और न ही शुद्ध संकल्प बल्कि अपनी सम्पूर्णता के साथ 'आत्मा' माना है। उसी 'आत्मा' के बारे में उनका यह भी कहना है कि—"मैं आत्मा के बारे में क्यों विश्वास करता हूं? क्योंकि वह व्यवहारिक आवश्यकता है। मेरी प्रकृति उसकी मांग करती है। मुझे प्रकृति में एक उद्देश्य और एक अभिकल्पना दिखाई देती है। मैं स्वयं अपने जीवन में 'उत्तरोतर विकसनशील उद्देश्य' पाता हूं। मैं महसूस करता हूं कि मात्र परमाणुओं का समपिंडन नहीं हूं। इसके अलावा, सत्य को (जैसा कि मैं उसे समझता हूं) अन्य कोई भी सिद्धांत स्पष्ट नहीं कर सकता...।

यह विश्व आत्मा का व्यक्त रूप है, और जैसे आत्मा अनंत है, उसी प्रकार इस सृष्टि का क्रम भी अनंत है।...

मेरी दृष्टि से सत्य की प्रवृत्ति प्रेम द्वारा व्यक्त होती है। प्रेम सृष्टि का सार है, और वही मानव-जीवन का भी मौलिक सिद्धांत है।... सम्पूर्ण कमियों के बावजूद, मुझे प्रेम सम्बंधी धारणा में अधिकतम सत्य प्रतीत होता है और वह निरपेक्ष सत्य के निकटतम है।" (पुस्तक वही : पृष्ठ 102)

इस अनजान पथिक-फकीर का 'अपनी चिर आराध्य साधना की इष्ट देवी बंग माता की स्नेह, प्रेम, दया, प्रीति, प्यार की मूर्तिरूप।... सब साधनाओं की मूर्तिमति स्नेह, प्रेम, प्यार का आधार...' (किस्त-12) शब्दों को शायद आप अभी न भूले हों। बाबा का लोगों से, या फिर अपनी बंग माता से इतना प्रेम-प्यार आखिर क्या दर्शाता है, जबकि नेताजी फिर आगे लिखते हैं कि—

"मैं महसूस करता हूं कि मुझे अपने आपको पूर्ण करने के लिए प्रेम से ओत-प्रोत होना होगा, और अपने जीवन का पुनर्निर्माण करने के लिए भी प्रेम को ही अपने जीवन का बुनियादी सिद्धांत बनाना होगा।" और उधर बाबा ने भी ब्रजनंदन दुलाल से कहा था कि, "अगर तुम्हारे लिए मेरा प्यार सच्चा है।" (किस्त-11) बाबा सबको प्यार लुटाते चल रहे थे, "ली ब्लेसिंग एवर लास्टिंग लव" (क्रमांक 1744)।

उसी क्रम में नेताजी फिर कहते हैं कि, "सत्य वास्तव में इतना विशाल है कि हमारी छोटी-सी कमजोर बुद्धि उसे पूरी तरह आबद्ध नहीं कर पाती।... इसलिए, सत्य अंतरात्मा है जिसका सार-तत्व प्रेम है जो द्वंद्वात्मक ऊर्जाओं की अनंत लीला में, और अनंत समाधानों में, व्यस्त होता रहता है।" (वही)

**फिर कौन इस सत्य से इंकार कर सकता है कि कहीं, अपने इसी सिद्धांत के वशीभूत होकर वह महान व्यक्ति अपने प्रेम तत्व (जन और जन्मभूमि से प्रेम) की द्वंद्वात्मक परिणति के अनंत समाधानों की खोज में, अनंत लीलाओं का दास बना हो।** क्योंकि यह मत भूलिये कि नेताजी ने स्वयं अपने लिए कहा था कि, "... अरविंद घोष का ज्वलंत उदाहरण मेरे सामने है। मुझे लगता है कि मुझे भी वैसा ही त्याग करना चाहिए, जिसका उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया है। मेरी परिस्थितियां भी उन्हीं के समान अनुकूल हैं।" (वही)

बस फर्क सिर्फ इतना था कि क्रांतिकारी श्री अरविंद घोष को अंग्रेजों ने मरा जानकर छोड़ दिया था, और वे कई दिनों की बेहोशी के बाद जब जगे तो आध्यात्मिक रूप से राष्ट्र की सेवा करते हुए महर्षि बन गये थे और यहां पर नेताजी को जब मरा हुआ घोषित कर दिया गया, तो वह अज्ञातवास करते हुए महर्षि अरविंद की ही तरह जन्मभूमि की आध्यात्मिक सेवा करते हुए ब्रह्मर्षि से अपने भक्तों के 'भगवन जी' के रूप तक में जा पहुंचे हों। क्योंकि बाबा को जहां उनके स्थानीय शिष्य 'भगवन जी' के रूप में पूजते थे, वहीं पर सन् 1952 में इटावा से इनके सम्पर्क में आये इनके तांत्रिक शिष्य श्री सुरेंद्र सिंह चौधरी ने अपने एक पत्र में लिखा कि—"... हमारे भिखमंगा बाबा का मार्ग साफ हो गया और ब्रह्म ऋषि का सर्वोच्च पद मिल गया।" (क्रमांक 893)।

इसका मतलब ये हुआ कि नेताजी महर्षि अरविंद से बहुत प्रभावित थे, जैसाकि उन्होंने स्वयं कई स्तरों पर बार-बार स्वीकारा है—और हों भी क्यों न, 'अतिमानस' को समझने के लिए महर्षि अरविंद ने सुगम रास्ता जो सुझाया है। अरविंद का कहना था कि—"अतिमानस' की उपलब्धि से न केवल सच्चिदानंद को ही अभ्रांत रूप से जाना जा सकता है, वरन् इस दृश्य के पीछे काम करने वाली रहस्यमयी लीलाओं को भी समझा जा सकता है। 'अतिमानस' की ज्योति में ब्रह्म भी सत्य और जगत भी सत्य है, स्पष्ट हो जाता है।" इसको और अधिक स्पष्ट करते हुए महर्षि ने कहा कि—"अतिमानस' सच्ची तुरीय या चतुर्थ शक्ति देह, मन, प्राण से ऊपर और सत्, चित्, आनंद से ठीक नीचे ज्ञान-शक्ति के रूप में स्थित रहती है।"

जिन लोगों ने भी (वे चाहे कितने ही सूक्ष्म ज्ञानी ही क्यों न रहे हों, लेकिन एक सच्चे भक्त के नाते) इस महामानव (गुमनामी बाबा) के सत्संग का अवसर पाया, उनके अनुसार, या फिर वहां प्राप्त विविध अंग्रेजी, हिंदी, बंगला व संस्कृत साहित्य के अवलोकन मात्र से जिस ज्ञान-शक्ति का अपार पुंज वह 'व्यक्ति' हमें लगा—वह निश्चय ही 'अतिमानस' का साधक रहा होगा। इस बात से कौन इंकार करेगा, जिसने स्वयं रामभवन की सामग्री से साक्षात्कार किया हो।

इस बात को और तार्किक विस्तार न देकर मैं श्री विश्वनाथ राय के पत्र की ओर आता हूं जिसमें लिखा है—

"काम की बात—

**2. Radio बदल लिया हूं। Philips Radio** प्रसिद्ध है, जो पहले वाला था, उससे बड़ा और उन्नत किस्म का **(a) Trouble free, most accurate (b) ये अच्छे रेडियो प्रायः मरम्मत की आवश्यकता नहीं पड़ती। (c) 5 घंटे बजने पर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। Battery इसी देश में तैयार होती है, Everady आसानी से उपलब्ध भी है...।**

**(क्रमशः)** □

(पत्र का शेष महत्वपूर्ण अंश अगली किस्त में)

9, एम.आई.जी., लक्ष्मणपुरी,
फैजाबाद

## फ़ैज़ाबाद के गुमनामी बाबा-16

**अब तक आपने पढ़ा कि 16 सितम्बर 1985 को उत्तर प्रदेश के फ़ैज़ाबाद शहर में स्थित रामभवन में एक गुमनामी बाबा की रहस्यमय मृत्यु के बाद जब उनके कमरे का ताला तोड़ा गया तो वहां अनेक बक्सों में विविध सामानों सहित नेताजी सुभाषचंद्र बोस के जैसा गोल चश्मा, घड़ी, दूरबीन, नेताजी के माता-पिता एवं परिवार के छायाचित्रों के अलावा नेताजी के सहयोगियों, आई.एन.ए. के अधिकारियों एवं बाबा के बीच हुए पत्राचार की मूल प्रतियां भी मिली हैं। यही नहीं, फ़ैज़ाबाद के जिलाधिकारी द्वारा बाबा के सामान को लावारिस करार देकर नीलाम करा देने से रोकने हेतु नेताजी की सगी भतीजी सुश्री ललिता बोस की याचिका पर उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय ने बाबा के सामानों की इंवेंटरी बनवाकर सामान को ट्रेजरी में रखने का आदेश दे दिया। क्या कारण है कि जब से 'गंगा' ने इस रहस्य की पर्तों को एक-एक कर उधेड़ना शुरू किया है, इस प्रकरण के विरोध करने का साहस कोई नहीं कर पा रहा है ? बाबा के सामानों में महत्वपूर्ण नक़्शे और दस्तावेज़ों के अलावा जो पत्र मिले हैं, उनकी जांच करने से लगता है कि यह कोई साधारण साधू नहीं था। इसी क्रम में पढ़िए गुमनामी बाबा से जुड़े कुछ और महत्वपूर्ण लोगों के बारे में—**

❑ अशोक टंडन

पिछली किस्त में आपने देखा कि श्री विश्वनाथ राय किस तरह पत्र के साथ भेजे जा रहे सामानों का ज़िक्र करते हैं। वे इन बातों को क्रमबद्ध करते हुये जहां पर काश्मीरी मधु, जिलेट ब्लेड, अथर्ववेद, नाशादीय शूज आदि का ज़िक्र करते हैं, वहीं पर उसी क्रम में नं. 12 डालकर श्री राय अपने इस पत्र में बाबा को सूचना देते हैं—"Liquidate का progress report—पहले ही बताया है। Bangaon से Nama Sudra लोगों ने Retaliation शुरू किया है, Khulna incidence के बाद। कुछ लोग पकड़े भी गये हैं।"

इसी तरह 18 नम्बर पर लिखा कि "राजशेखर जा रहे हैं पत्र और सामान लेकर। साथ में शशांक शेखर जा रहे हैं, जिन्हें आपने देखना चाहा था।" आखिर ये राजशेखर व शशांक शेखर कौन हैं, जिन्हें गुमनामी बाबा ने देखना चाहा था। वैसे ये दोनों लोग बाबा से मिलने आये और बाबा को पत्र लिखा कि, "माताजी ने हमलोगों की बहुत सेवा की। आपके शिवालय में हमलोगों को कोई तकलीफ नहीं हुई।" (क्रमांक 2479)। 19 वें तथा अंतिम क्रमांक पर श्री राय ने लिखा कि—"January का 500/- रु. भेज रहा हूं।" सन 1964 के 500 रुपये का मतलब होता है आज के समय में 5000/- रुपयों से भी अधिक ! आश्चर्य है कि बाबा का ये कौन-सा भक्त है, जो बाबा को हर महीने खर्च के लिए 5000

V.P.P. For Rs. 13/- (Thirteen only).

FROM : AJIT DUTT
53 Nil Kamal Kunda Lane,
Sibpur, Howrah - 2.

V. P. PARCEL

To

Sreemati Saraswati Devi Shukla
ja Maidan,
P.O. PURANI BASTI
(BASTI)
U. P.

V.P. 13
1-9-77

VP 13
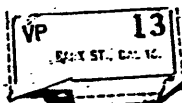
राममवन से प्राप्त बाबा की सेविका श्रीमती सरस्वती शुक्ला को बस्ती के पते पर भेजा गया वी.पी. पार्सल, जिसे बाबा ने स्वयं 'रिसीव' किया है।

रुपये (आज के हिसाब से) भेज रहा था, अर्थात इतना अधिक खर्च था बाबा का! क्या सिर्फ एक संन्यासी के लिए इतने रुपये अधिक नहीं लगते आपको? अब इस पत्र के सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं विवादास्पद अंश को देखें—"6—Nanda Kishore—**पहले ही मैंने लिखा है कि Nanda Kishore का दरख्वास्त मैंने अशोक सेन को देकर कहा कि 'मेरे गुरुदेव का कहना है कि प्रयोजन पड़ने पर आपके हाथों से यह कार्य करवाना पड़ेगा। क्योंकि उनके प्रति कृतज्ञतावश वे इस व्यक्ति का उपकार करना चाहते हैं।' अशोक सेन ने कहा कि जब आप इतना कह रहे हैं, तो मैं जितना कर पाऊंगा अवश्य ही करूंगा।**

**उन्होंने आगे भी पूछा—'अच्छा! क्या आपके गुरुदेव इसी देश में रहते हैं? शॉलमारी के साधू क्या नेताजी हैं?' मैंने अपने को थोड़ा सम्भालते हुए उत्तर दिया कि, 'मैंने नीहारेंदु के पास से सुना है कि ये साधू नेताजी नहीं हैं।' पहले प्रश्न को अनसुना कर, दूसरी बातें करके मैं जल्दी ही भाग आया। मुझे संदेह है कि इन्हें कुछ-कुछ बातें मालूम हैं। आपको सतर्क रहना होगा। Type किया हुआ दरख्वास्त मेरे पास ही है, क्योंकि पहले की हाथ की लिखी हुई दरख्वास्त श्री सेन को दी गई थी।**"

आखिर ये अशोक सेन कौन हैं? अशोक सेन भूतपूर्व केंद्रीय कानून मंत्री हैं, जिन्होंने गत वर्ष ही श्री राजीव गांधी के मंत्रीमडल से इस्तीफा दिया था और हाल ही में जिन्होंने श्री गांधी के नेतृत्व से विरोध प्रगट करते हुए श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के 'जनमोर्चा' में शामिल हो गये हैं। श्री सेन सन् 1930 से कांग्रेसी हैं और श्रीमती इंदिरा गांधी के मंत्रीमंडल में भी रह चुके हैं तथा बंगाल सरकार में भी शायद मंत्री रहे हैं।

सन् 1964 के उन्हीं दिनों में जब शॉलमारी आश्रम की चर्चा जोरों पर थी। श्री विश्वनाथ राय अपने 'किसी' गुरु के आदेश पर अशोक सेन के पास अगर कुछ कार्यवश ही गये थे, तो श्री सेन ने उनसे क्यों पूछा कि क्या आपके गुरुदेव इसी देश में रहते हैं। और फिर इस प्रश्न के साथ ही उन्होंने (यानि श्री सेन ने) यह क्यों पूछ डाला कि 'शॉलमारी के साधू क्या नेताजी हैं?'

बात भी सही थी। श्री सेन ठहरे कांग्रेसी और मंत्री भी। लेकिन शायद श्री सेन को भी आगे चलकर बाबा की असलियत के बारे में पता चल गया था क्योंकि श्री सेन नेताजी की परमभक्त सुश्री लीला राय की मासिक पत्रिका 'जयश्री' की 'गोल्डेन जुबली सेलिब्रेशन कमेटी' (1931–81) की स्वागत समिति के अध्यक्ष बने। जबकि इस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष थे श्री सुनील दास—पत्रकार एवं नेताजी के परम सहयोगी एवं गुमनामी बाबा के विश्वस्त शिष्य। श्री दास ने श्री सेन को अवश्य कुछ बताया ही होगा, क्योंकि उसी 'जयश्री' पत्रिका में लीला राय इन्हीं 'साधू' की वाणी निरंतर छाप रही थीं। और अगर श्री सुनील दास ने इन्हें बाबा की असलियत बतायी थी, तो जान लीजिए बहुतों को बतायी होगी। क्योंकि इन्हीं सुनील दास के नाम के साथ 17 अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों की एक और चौंकाने वाली लिस्ट हमें रामभवन में ही देखने को मिली।

**19 अगस्त 1977 को प्रधानमंत्री के नाम जारी एक अपील के 'प्रेस नोट' की कार्बन कॉपी (क्रमांक 2423) में इन व्यक्तियों ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस की कथित वायुयान दुर्घटना (1945) की जांच करने वाले दोनों शाहनवाज व खोसला आयोग में डॉ. योशीमी द्वारा दिये गये बयानों की भिन्नता पर आपत्ति करते हुए नवनिर्वाचित जनता सरकार के प्रधानमंत्री से इस मामले का पुनर्निरीक्षण करने की मांग की थी।**

अब आप सबसे पहले उन नामों को देखिए जो नेहरू शासन के बाद इस तरह की मांग जनता सरकार से कर रहे थे। ये लोग हैं—सर्वश्री डॉ. आर.सी. मजूमदार (डॉ. रमेश मजूमदार—इतिहासकार), डॉ. एस.के. मुखर्जी (वाइस चांसलर कलकत्ता विश्वविद्यालय), अशोक कुमार सरकार (सम्पादक, 'आनंद बाज़ार पत्रिका'), शैवाल कुमार गुप्ता (सायबाल कुमार गुप्ता) रिटा. आई.सी.एस., बीना भौमिक (वीणा भौमिक), नीहारेंदु दत्त मजूमदार बार. एट लॉ (खोसला आयोग के समक्ष प्रस्तुत), काशीकांत मित्रा (प. बंगाल विधान सभा में विपक्ष के नेता), किरनचंद्र मित्रा एडवोकेट, प्रफुल्ल चंद्र सेन, भू.पू. मुख्यमंत्री, अजीत कुमार दत्ता (भू.पू. एडवोकेट जनरल प. बंगाल सरकार), सुकमल घोष (सम्पादक, 'जुगांतर'), सुधांशु कुमार बसु (सम्पादकीय सलाहकार 'हिंदुस्तान स्टैंडर्ड), सीताराम सेक्सरिया, द्विजेंद्र लाल सेन गुप्ता (भू.पू. राज्यसभा सदस्य), अमर प्रसाद चक्रवर्ती एडवोकेट (खोसला आयोग के समक्ष प्रस्तुत), डॉ. अजीत कुमार रे (भू.पू. अध्यक्ष I.N.A. बंगाल शाखा) और स्वयं सुनील दास (पत्रकार, नेताजी के परम सहयोगी) के साथ-साथ बाबा के अनन्य भक्त डॉ. पवित्र मोहन राय (एक्स. आई.एन.ए. सीक्रेट सर्विस एवं प्रस्तुत खोसला आयोग के समक्ष)।

इन महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने मात्र श्री सुनील दास व डॉ. पवित्र मोहन राय के कह देने पर इस अपील पर हस्ताक्षर कर दिये होंगे—ऐसा नहीं लगता। बल्कि डॉ. पवित्र मोहन राय व सुनील दास ने इन सोलहों व्यक्तियों को बाबा के विषय में अवश्य ही कुछ बताया होगा—जबकि दूसरी ओर ये लोग खुद बाबा को ही नेताजी मानकर चल रहे थे। फिर

तो इसका मतलब ये हुआ कि इन सारे महत्वपूर्ण लोगों को भी बाबा के विषय, या असलियत के बारे में जानकारी रही होगी, या सम्पर्क रहा होगा। तभी तो रामभवन से हमें श्री अजीत दत्त द्वारा बाबा को पार्सल भेजे जाने का प्रमाण मिला। (देखें संलग्न चित्र)।

आश्चर्य है, इस प्रेस नोट के आधार पर अखबार में छपी खबर की कटिंग (2138) हमें रामभवन में मिली, साथ में उस प्रेस नोट की कार्बन कॉपियां भी। तस्वीर आईने की तरह साफ हो न हो, उलझाने वाली ज़रूर है।

इतना ही नहीं, खोसला आयोग से सम्बंधित अनेकों कागजात रामभवन से प्राप्त हुए हैं। जैसे—''**जी.डी. खोसला आयोग के समक्ष 8 जुलाई 1971 को सर्वश्री पी.के. मुकीह थेवर एवं सुनील गुप्ता द्वारा दिये गये 5 पृष्ठों के प्रार्थना पत्र की टाइप्ड कॉपी (अंग्रेजी में)—जिसमें उल्लिखित 12 कागजातों को पेश किये जाने की मांग की गई है जो भारत सरकार, अमरीका, रूस, जर्मनी व जापान से सम्बंधित है। इस प्रतिलिपि के नीचे 'डेटेड मद्रास, दि. 8 जुलाई 1971 एवं एस.डी. पी.के. मुकीह थेवर एंड एस.डी. सुनील गुप्ता' नीली स्याही से लिखा गया है। इस लिखावट को भी देखकर उस दिन रामभवन में मौजूद सुश्री ललिता बोस ने इसे अपने पिता की ही हस्तलिपि बताया था।**'' (क्रमांक 34 सी)। इसी तरह आयोग के ही समक्ष दिल्ली में श्री द्विजेंद्र नाथ बोस द्वारा जनवरी 1971 को दिये गये शपथ पत्र की दो पृष्ठों की टाइप्ड प्रतिलिपि भी वहां मिली। (35सी)।

एक ओर तो देश के सर्वाधिक लोकप्रिय राष्ट्रनायक नेताजी सुभाषचंद्र बोस की वायुयान दुर्घटना की जांच करने के लिए हिंदुस्तान के प्रमुख शहरों में जी.डी. खोसला आयोग अपनी कार्यवाई कर रहा है, और दूसरी ओर उसकी कार्रवाइयों का ब्योरा, जिरह-जवाब आदि की फ़ाइलें यहां उत्तर प्रदेश के एक सर्वाधिक पिछड़े जिले 'बस्ती' में किसी से भी न मिलने-जुलने वाले 'बाबा' के पास क्योंकर पहुंचाई जा रही थीं? बस्ती के ही एक वयोवृद्ध वकील श्री दुर्गा प्रसाद पांडेय ने बताया था (वे नेताजी नहीं थे तो कौन थे? की दूसरी किस्त में) कि जब खोसला आयोग जांच कर रहा था तो उस समय उसके गवाहों के जवाब-सवाल सब यहीं बस्ती में बाबा तैयार कराते थे—कितना सही प्रतीत होती है।

जी हां, यह बात बिल्कुल सत्य है कि बाबा को

AN APPEAL TO [illegible]

[illegible] 1977

[illegible]

[illegible] 1976.

On all accounts the findings of both the Shah Nawaj Committee of 1956 and the Khosla Commission of 1970 to inquire into the facts and circumstances relating to the disappearance of Netaji Subhas Chandra Bose [illegible]

(Dr.) R. C. Majumdar.

Prafulla Chandra Sen.

(Dr.) S. K. Mukherjee, Vice-Chancellor, Calcutta University.

Ajit Kumar Dutta, Ex-Advocate General, Govt. of West Bengal.

[illegible] Kumar [illegible], Editor, Ananda Bazar Patrika.

[illegible] Ghosh, Editor, Jugantar.

[illegible] Kumar Gupta, (I.C.S. Retd).

[illegible] Kumar Basu, Editorial Consultant, Hindusthan Standard.

[illegible]

[illegible]

[illegible] Majumdar, Bar-at-Law, (Appeared before the Khosla Commission).

[illegible] Sen Gupta, (Ex-Member, Rajya Sabha).

[illegible], (Leader of the Opposition, West Bengal Legislative Assembly).

[illegible], (Appeared before the Khosla Commission).

[illegible] Mitra, Advocate.

(Dr.) Ajit Kumar [illegible], Ex-President, I.M.A., Bengal Branch.

(Dr.) [illegible] Roy, [illegible], (Appeared before the Khosla Commission)

Sunil Das, (Journalist, close associate of Netaji) (Appeared before the Khosla Commission).

रामभवन से प्राप्त बंगाल के 18 महत्वपूर्ण लोगों द्वारा खोसला आयोग के पुनर्निरीक्षण की अपील की टाइप्ड कॉपी की फोटोप्रति।

खोसला आयोग की प्रत्येक कार्रवाई की जानकारी उपलब्ध ही नहीं कराई जाती थी, बल्कि उन्हीं के निर्देश पर पैरवी भी की जाती थी। इस बात की पुष्टि करता हुआ श्री सुनील का एक महत्वपूर्ण पत्र भी हमलोगों को रामभवन में मिला। पत्र में लेखक का नाम सिर्फ सुनील होने से हमें यह पत्र या तो सुनील दास (जो नेताजी के क्लोज़ एसोसिएट थे) या फिर सुनील कृष्ण गुप्त (सुनील गुप्त उर्फ सुकृत) दोनों में से किसी एक का ही लगता है, क्योंकि इन दोनों के ही काफी पत्र रामभवन में मिले हैं। तथा ये दोनों ही व्यक्ति खोसला आयोग से सम्बद्ध रहे हैं। खैर, वह पत्र देखिए जो इंवेंटरी के क्रमांक 2431 पर कुछ यूं दर्ज है—''**सुनील का बंगला भाषा का कलकत्ते से प्रेषित 24-7-73 का एक पत्र। जिसमें अनाम संत को परम पूज्यनीय से सम्बोधित किया गया है। जिसमें ताईहोकू से विमान द्वारा दिल्ली पहुंचने व शनिवार शाम को दिल्ली से रवाना होकर इतवार को दोपहर कलकत्ता पहुंचने का विवरण है। ताईहोकू में जाकर 15 दिन का ही अवसर मिला था, उसी में सामान खरीदने का प्रश्न था।... फारमूसा का काम हो गया है। पत्र में सब बातें लिखी नहीं जा सकतीं। यदि अनुमति हो तो एक सप्ताह के लिए आकर माथा नवा जाऊं। आरगूमेंट प्रारम्भ नहीं हुआ है। प्रारम्भ होने पर आपकी चरणधूलि लेकर ही जाऊंगा। माता जी को प्रणाम और आपको अनंत कोटि प्रणाम।**''

अब आप ही बताइए कि आरगूमेंट, यानि की बहस होनी है नेताजी की हवाई दुर्घटना में हुई मृत्यु की सत्यता की ऐतिहासिक परख के लिए—तो वहां पर इस 'साधू बाबा' से आशीर्वाद लेने आने की श्री सुनील बाबू को क्या आवश्यकता आ पड़ी थी?

प्रश्न उठता है आखिर ये कौन व्यक्ति पर्दे की आड़ में एक 'साधू बाबा' की तरह रहकर भी खोसला आयोग का पूरी तरह सामना कर रहा था—इसे कौन नहीं जानता और कौन नहीं जानना चाहता? सबसे पहले यही प्रश्न आपको समझना होगा।

**(क्रमशः)** □

9, M.I.G., लक्ष्मणपुरी,
फैज़ाबाद (उ.प्र.)

## फ़ैज़ाबाद के गुमनामी बाबा-17

# वे नेताजी नहीं थे तो कौन थे ?

□ अशोक टंडन

**अब तक आपने पढ़ा कि 16 सितम्बर 1985 को उत्तर प्रदेश के फैज़ाबाद शहर में स्थित रामभवन में एक गुमनामी बाबा की रहस्यमय मृत्यु के बाद जब उनके कमरे का ताला तोड़ा गया तो वहां अनेक बक्सों में विविध सामानों सहित नेताजी सुभाषचंद्र बोस के जैसा गोल चश्मा, घड़ी, दूरबीन, नेताजी के परिवार के छायाचित्रों के अलावा नेताजी के सहयोगियों, आई.एन.ए. के अधिकारियों एवं गुमनामी बाबा के बीच हुए पत्राचार की मूल प्रतियां भी मिलीं हैं। यही नहीं, फैज़ाबाद के जिलाधिकारी द्वारा बाबा के सामान को लावारिस करार देकर नीलाम करा देने से रोकने हेतु नेताजी की सगी भतीजी सुश्री ललिता बोस की याचिका पर उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय ने बाबा के सामानों की इंवेंटरी बनवाकर, सामान को ट्रेज़री में रखने का आदेश दे दिया। क्या कारण है कि जबसे 'गंगा' ने इस रहस्य की पर्तों को एक-एक कर उधेड़ना शुरू किया है, इस प्रकरण के विरोध करने का साहस कोई नहीं कर पा रहा है ? बाबा के सामानों में महत्वपूर्ण नक्शों और दस्तावेजों के अलावा जो पत्र मिले हैं उनकी जांच करने से लगता है कि यह कोई साधारण साधू नहीं थे। इसी क्रम में पढ़िए किन्हीं 'प्रसाद' द्वारा बाबा को लिखे गये पत्र के बारे में, जो तमाम रहस्यों को उजागर करता है—**

आइये इस बार आपको एक खबर पढ़ाऊं—जो गत वर्ष अखबारों में छपी। शीर्षक था—'स्वतंत्रता सेनानियों का पता लगाने के लिए ब्रिटिश मदद' और खबर थी—'नयी दिल्ली, 21 दिसं. (भाषा)। भारतीय इतिहासकार विदेश में गुमनामी की जिंदगी बिता रहे स्वतंत्रता सेनानियों का जीवन परिचय तैयार कर रहे हैं।

इस काम के लिए वे ब्रिटिश गुप्तचर सेवा द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध में तैयार गुप्त विवरण की सहायता ले रहे हैं। यह गुप्त विवरण यूरोप के विभिन्न देशों से स्वाधीन भारत के लिए लड़ रहे 'संदिग्ध' भारतीय नागरिकों के बारे में तैयार किया गया था।

भारत के इन निर्वासित देशभक्तों में से पांच सौ से ज़्यादा का पता चल चुका है। भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद के निदेशक टी.आर. सरीन ने 'भाषा' को एक भेंटवार्ता में बताया कि दो सौ और ऐसे लोगों के होने की सम्भावना है।'

देखा आपने, हमारे ये सरकारी और नामधारी इतिहासकार दुनिया के गली-कूचों में स्वतंत्रता की अलख जगाने वाले 'गुमनामी' शहीदों को तो बड़े जोर-शोर से ढूंढ़ रहे हैं, लेकिन वहीं अपने यहां पड़े उस गुमनाम व्यक्ति के व्यक्तित्व को न जाने क्यों ढंका-मुंदा ही रहने देना चाह रहे हैं—जो स्वतंत्रता संग्राम के महानतम सेनानियों में से एक यानि नेताजी सुभाषचंद्र बोस, होने की सम्भावनाओं को झकझोरे दे रहा है। लेकिन नहीं—हमारे ये सरकारी और नामधारी तथाकथित इतिहासकार अंग्रेजों की गुप्तचर रिपोर्टों की जूठन पर ही केवल अपना इतिहास लेखन कर सकने की क्षमता रखते हैं—न कि यहां आंखें फाड़ देने वाले हज़ारों सबूतों-प्रमाणों से पटे पड़े रामभवन में मौजूद वर्तमान प्रचलित इतिहास को झुठला देने वाला इतिहास।

खबर में आगे लिखा गया कि—''भारतीय स्वाधीनता वर्षगांठ और जवाहरलाल नेहरू शताब्दी समारोह की राष्ट्रीय समिति के मुख्य कार्यों में से एक यह भी है।

अपनी तरह का यह पहला अभियान ऐसे कई लोगों के संक्षिप्त जीवन वृत्त तैयार करेगा जिन अज्ञात भारतवासियों में से कई खामोशी से शहीद हो गये।'' (नभाटा, 1987)

और नेता जी ? उनका कुछ पता चला ? सरीन साहब को इतना तो मालूम ही होगा कि श्री मोरारजी देसाई के प्रधानमंत्रित्व काल में भारत सरकार ने 'नेताजी' की मृत्यु की पुष्टि करने वाले
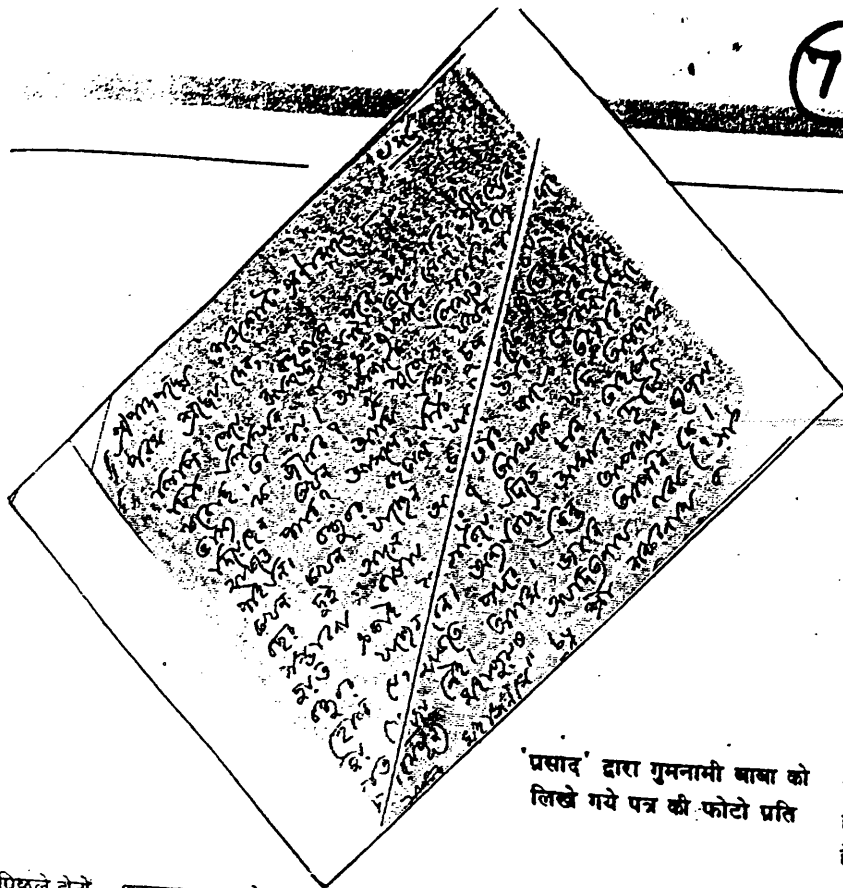
'प्रसाद' द्वारा गुमनामी बाबा को लिखे गये पत्र की फोटो प्रति

पिछले दोनों—शहनवाज तथा खोसला आयोग की रिपोर्ट रद्द कर दी है। तथा गत वर्ष ही प्रारम्भ हुये कांग्रेस शताब्दी समारोह के बम्बई अधिवेशन में कांग्रेस ने नेताजी की उस जीवनी को छापने से इंकार कर दिया था, जिसे उनके भतीजे श्री शिशिर बोस ने स्वयं लिखा। जबकि शिशिर बोस सन् 1945 की तथाकथित हवाई दुर्घटना में नेताजी की मृत्यु को सही मानते हैं।

सरीन साहब को कम से कम 'राममवन' तक तो आना ही चाहिए था।

**ये सही है कि हमको आज़ादी सिर्फ चंद रहनुमाओं के कारण ही नहीं मिली बल्कि न जाने कितनों ने कितने जुल्म और सितम सहे, कष्ट उठाये और गुमनामी के अंधेरों में खो गये। सभी को उसका प्रतिफल नहीं मिला और न ही बहुतों ने मांगा नेताजी ने एक बार स्वयं कहा भी था**—"स्वतंत्रता का अनमोल रत्न हमारे हाथ तभी लगेगा, जबकि हम व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से बहुत कष्ट उठा लेंगे। ईश्वर को बहुत धन्यवाद है कि मैं शांति में हूं और मैं बिल्कुल शांति के साथ उन सारे कष्टों को सह सकता हूं जिनमें ईश्वर डालेगा।" (पृष्ठ : 67 : नेताजी सुभाषचंद्र बोस—मन्मथनाथ गुप्त)

और इधर बाबा भी—कष्ट ही भोग रहे थे। शांति के साथ, चुपचाप एकदम अकेले। तभी तो 'प्रसाद' ने लिखा कि—"आपको इतनी बड़ी बीमारी हुई। सोचता हूं यदि मैं पास रहता तो पैर दबाकर, और भी कई तरह से आपकी सेवा करता, पर ऐसा ही भाग्य है कि यह सब कुछ नहीं हो पा रहा है।... हालांकि मेरा मन वहीं पड़ा है। जो **पृथ्वी के सर्वश्रेष्ठ मानव हैं और पृथ्वी पर नवयुग लाने के लिए जिनका कर्मयज्ञ विश्वव्यापी चला है, वह आज रोग शय्या में जनमानवविहीन स्थान में लेटे-लेटे कष्ट भोग रहे हैं, शायद सेवा करने के लिए कोई भी नहीं है—उचित दवा और भोजन भी नहीं। जिनकी इच्छा मात्र से सम्राट का ऐश्वर्य पैरों के नीचे हाज़िर हो सकता है। वह आज स्वेच्छा से कष्ट भोग रहे हैं। यह दृश्य इतिहासकारों के लिए उच्छ्वास भरी श्रद्धा का विषय हो सकता है, लेकिन हमारे लिए परम वेदना का विषय है।**"

सरीन साहब को चाहिए था कि वे पता लगाते कि ये कौन-सा बाबा या साधू-संन्यासी है जो अपनी इच्छा मात्र से सम्राट का ऐश्वर्य त्यागे हुये है। यह पृथ्वी का वह कौन-सा सर्वश्रेष्ठ मानव था—जो इतिहासकारों की जिज्ञासा का पात्र हो सकता था। लेकिन सरीन साहब ने नहीं पता लगाया। पता लगाया था 'प्रसाद' ने। अपने इसी अदिनांकित पत्र में वे लिखते हैं कि—"मैं जानता हूं कि आप कौन हैं? परम पूज्य महापुरुष आदित्यनाथ बाबा ने ('साधू संतेर महासंगमे' : श्री शंकरनाथ राय ने) कल्कि अवतार का जो वर्णन किया है, वह यह है—

(1) वह दो पवित्र नदी—गंगा एवं ब्रह्मपुत्र विधौत बंगदेश में जन्म लेंगे—यह बात उच्चकोटि के महापुरुषों ने उनसे कही है।

(2) वह बहुत प्रच्छन्न होकर आएंगे।

(3) सारे विश्व में वे ध्वंस का बीज बिखेर देंगे।

(4) पाप कलि के अंदर पुण्य का गुद्म भर देंगे।

(5) अपने विश्वव्यापी कर्मयज्ञ के बाद जब वह स्वरूप धारण कर आत्मप्रकाश की इच्छा करेंगे, तब हिमालय से योगी, ऋषि-मुनिगण समतल भूमि पर उतरकर जन-जन के समक्ष उनकी पूजा करके उनको स्वयं कल्कि कहकर परिचित कराएंगे।

1950 में उन्होंने जिनके लिए ऐसा वर्णन किया था, वह इस समय हिमालय की गहराईयों में कहीं तपस्यारत हैं। यह वर्णन किसके साथ मेल खाता है ? दुनिया में सिर्फ एक ही ऐसा सुपरमैन है। क्या इसमें भी कहीं कोई चूक होने की गुंजाइश है। कम से कम मेरे लिए तो नहीं।"

'प्रसाद' साहब आगे लिखते हैं कि—

"23 जनवरी यथारीति मनाया गया। सुबह पताका-उत्तोलन, दस बजे दीर्घ जीवन की कामना में यज्ञ (पाठकगण—'दीर्घ जीवन की कामना' शब्द पर ध्यान देंगे), चंडी पूजा और चंडी पाठ, 1.15 पर शंखध्वनि द्वारा और गोला दागकर जन्म समय की घोषणा, शाम चार बजे स्थानीय कलाकारों द्वारा गीत आलेख, शाम को तैलचित्र के समक्ष उम्र के समान संख्या की प्रदीप सज्जा, बाहर भी प्रदीप सज्जा और रात्रि 7 बजे अपनों को लेकर बातचीत। आठ बजे उनका ध्यान और प्रार्थना।"

मैं समझता हूं कि पाठकों को यह समझने में कहीं कोई गलती नहीं हो रही होगी कि 'प्रसाद' साहब द्वारा किया जा रहा उपरोक्त वर्णन नेताजी सुभाषचंद्र बोस के जन्म दिवस 23 जनवरी के उत्सव से सम्बंधित है। और 'प्रसाद' साहब आगे लिखते हैं कि—

"आपको मैंने पहले ही सूचित किया था कि आश्रम माठ (मैदान) को पी.डब्ल्यू.डी. द्वारा कब्जा कर लेने के कारण, सन् 1975 से ही बड़ी उत्सव बंद हो गई है। यहां के लोगों का कहना है कि वह माठ (मैदान) किसी ने आपको दान में दिया था। और साथ में लगा हुआ अनाथ आश्रम भी आपने ही स्थापित किया। आश्रम-माठ नाम उत्सव मनाने के समय हमी लोग चालू किये थे।.. 21 अक्टूबर भी मनाया जा रहा है। आगरपाड़ा समिति स्मारक के सामने इस बार भी 21 तारीख का उत्सव मनाए। यह लोग 'जयश्री' ग्रुप के हैं। इस बार हमको

सभापति बनाकर ले गये थे।"

'प्रसाद' साहब का केवल एक यह पत्र ही सरीन साहब की ऐतिहासिक खोजों के लिए काफी महत्वपूर्ण हो सकता है कि वे पता लगाते कि ये 'प्रसाद' साहब के किस 'सुपरमेन' को 23 जनवरी के साथ-साथ 'आज़ाद हिंद फौज दिवस-21 अक्टूबर' के उत्सव के विषय में भी जानकारियां दी जा रही थीं। और कलकत्ता का वह कौन-सा मैदान है—जो किसी ने इस 'बाबा' को दान में दिया था। और बाबा ने वहीं पर एक अनाथ आश्रम भी खोला। कहीं वह मैदान सुभाष बाबू के नाम से तो नहीं है ? यह कौन खोजेगा ?

कोई खोजे या न खोजे 'प्रसाद' साहब खुद को खोलते चले जा रहे हैं बहुत छिपाते हुए भी ! आगे लिखते हैं—

**"देव ! आपने मुझे 'तुम' न लिखकर 'आप' लिखा है। इस सम्बोधन से मेरा सम्मान बढ़ेगा या घटेगा—आपको सूचित करूं ? ऐसा लग रहा है कि आप जान-बूझकर मेरी परीक्षा ले रहे हैं। हर रोज स्नान करने के बाद देवताओं के साथ जगतगुरु के रूप में, स्वयं कल्कि अवतार के रूप में जिसकी वंदना करता हूं, तथा रात्रि में सोने के पहले 'मां' के साथ जिन्हें 'बाबू' कहकर प्रणाम करता हूं, वह अगर अपने अधम सेवक को 'आप' कहकर सम्बोधित करें—तो उसके पैरों के नीचे मिट्टी कैसे रह जाएगी ?"**

'प्रसाद' साहब जगत जननी मां के साथ किस महापुरुष—स्वामी रामतीर्थ, विवेकानंद, रवींद्रनाथ, गांधी, पटेल, नेहरू या सुभाष के नाम के साथ 'बाबू' कहकर स्मरण करते होंगे—यह बात 'सुभाष बाबू' के अनुयायियों के अलावा भी देश के करोड़ों लोगों से पूछी जा सकती है।

इसी पत्र के कुछ अंशों के आधार पर मैंने इस पत्र का रचनाकाल निकाला है और वह आता है अक्टू-नव. 1977। ऊपर आपने एक जगह पर देखा ही कि '23 जनवरी से लेकर 21 अक्टूबर' उत्सव मनाने की बात की गयी है, अर्थात् यह पत्र 21 अक्टूबर के बाद ही लिखा गया। और इसी तरह एक जगह पर 'प्रसाद' साहब ने लिखा कि—"आप तो अभी 90 वर्ष में नहीं पहुंचे हैं। 81 वां चल रहा है। 90 के बाद भी 5–6 दशक तक शरीर धारण रखने की बात आपने लिखी है। हमें ऐसा लगता है कि भीष्म पितामह जैसा ही आपको भी इच्छामृत्यु योग है।"

अब अगर हम यहां यह मानकर चलें कि 'प्रसाद' साहब 'बाबा' को ही नेताजी मानकर यह सब लिख रहे थे तो 81 वां चलने का मतलब हुआ कि बाबा 80 वर्ष पूरे कर चुके थे, और नेताजी की जन्म तिथि है 23 जनवरी सन् 1897। अर्थात 80 में से तीन वर्ष घटा दीजिए आता है 77। यानी की सन् 1977। तो ये हुआ 'प्रसाद' साहब के पत्र का रचनाकाल अक्टू.-नव. 1977। अब आइए प्रसाद साहब का पत्र प्रारम्भ से पढ़ें—

"श्री पाद पद्म में शतकोटि प्रणामांत में—परम श्रद्धेय देव,

बहुत दिनों बाद आपके श्रीहस्त की लिपि पाकर दिल आनंद से भर गया। जान-बूझकर पत्र नहीं लिखा मैंने, यह बात नहीं। या इस बारे में टाल-मटोल किया, यह भी नहीं। आपको पत्र लिखने का भाग्य कितनों का होता है ? यह मौका जब आपने हमें दिया है तो हम कैसे चुपचाप बैठ सकते हैं। असलियत तो यह है कि पत्र भेजने का मौका ही नहीं मिला। बंधुवर बहुत दिनों से जा नहीं रहे हैं। डॉक्टर दा भी कब-कब जाते हैं, मैं जान नहीं पाता। डॉक्टर दा लगभग दो साल पहले हमसे कहे थे कि विपद की सम्भावना बढ़ जाने के कारण चैनल बंद कर देंगे। शायद अकेले ही जाएंगे। उसके बाद मैंने देखा बंधुवर जा नहीं रहे हैं। हमें ऐसा आभास हुआ कि आप उस स्थान से कहीं अन्यत्र चले गये हैं, अब शायद आपके साथ सम्पर्क नहीं हो पाएगा। इसके पहले (शायद पिछले वर्ष) जब मुझे खबर मिली कि डॉक्टर दा जा रहे हैं, तब बहुत हड़बड़ी करके संग्रह की गई पुस्तकों को भेजा था। अब डॉक्टर दा के पास ही चिट्ठी-पत्रियां रख आएंगे, जब भेजने को होगा, वे भेज देंगे।"

देखने में अति साधारण-सी लगने वाली इन उपरोक्त पंक्तियों का निहितार्थ हमारे नियमित पाठक तो ज़रूर ही समझ गये होंगे। फिर भी हम सरीन साहब की कुछ मदद करना चाहेंगे, उन्होंने देखा कि 'प्रसाद' साहब के लिए अपने गुरु 'बाबा' के पास पत्र भेजने के लिए इस देश का डाक विभाग कितना बेमानी है। वे अपने इस 'बाबू' नामक बाबा के पास डाक से पत्र भेजते ही नहीं, बल्कि जब कोई पत्रवाहक कलकत्ता से आने वाला होता है तभी पत्र भेज पाते हैं। चाहे दो वर्ष ही क्यों न बीत जाएं। आखिर ऐसी क्या बात थी, या फिर बाबा का पता 'आम' नहीं था, या फिर बाबा का कोई ऐसा निर्देश था। ज़रूर रहा होगा वरना विपद पड़ने पर चैनल अर्थात आना-जाना बंद क्यों हो गया था। संदेशवाहक भी कोई साधारण आदमी नहीं बल्कि कोई डॉक्टर दा हैं। पहेलियों से काम चलने वाला नहीं है शायद—आईए अब मैं आपको पूरा निहितार्थ समझाता हूं।

यह डॉक्टर दा हैं—डॉक्टर पवित्र मोहन राय बाबा के सर्वाधिक निकटतम व्यक्ति—आई.एन.ए. की गुप्तचर सेवा के अधिकारी। विपद परिस्थितियों में भी केवल जो व्यक्ति बाबा से सम्पर्क रख सकता था वह थे डॉ. राय।

पत्र के रचनाकाल सन् 1977 के लगभग दो वर्ष (जैसाकि प्रसाद साहब ने लिखा है) पूर्व यानी 1975 का वर्ष। यह वही वर्ष है जब 23 जनवरी को बाबा जयगुरुदेव कानपुर के फूलबाग में नेताजी सुभाषचंद्र बोस को प्रगट कराने वाले थे। और ठीक इसके तीन माह पूर्व उधर कलकत्ता के प्रमुख बंगला दैनिक समाचार पत्र में दिनांक 25.9.1974 से 22.10.74 तक लगातार धारावाहिक किस्तों में श्री वरुण सेन गुप्त ने अपना सनसनीखेज "क्या ताईहोकू की विमान दुर्घटना बनायी हुई घटना थी ?" नामक लेख छापा था। और जिसकी अंतिम किस्त में उन्होंने नीमसार में रहने वाले एक ऐसे गुमनामी साधू का जिक्र किया था जो नेताजी होने की सम्भावनाओं से परिपूर्ण था। वह नीमसार के साधू 'बाबा' ही थे, जो उस समय (1974 में) 'बस्ती' शहर के राजा मैदान में निवास कर रहे थे। लेकिन नहीं, ठीक उन्हीं दिनों जब उपरोक्त ये सब बवाल मचा हुआ था, बाबा ने 'बस्ती' में अपने किसी सेवक या अनुयायियों को कुछ बताए बिना ही बस्ती छोड़ दिया था, और चुपचाप चले आये थे धनतेरस की रात्रि को अयोध्या। और जहां पर अयोध्या की एक घनी बस्ती में पंडित रामकिशोर मिश्रा का एक पूरा धर्मशाला ही किराये पर ले ली थी। यह सब बातें वैसे हमें पं. रामकिशोर मिश्रा ने भी बतायी थीं मगर हमें रामभवन में भी पं. रामकिशोर मिश्रा द्वारा 600 रु. किराया पाने की दिनांकित 20.10.74 की एक रसीद भी मिली है (क्रमांक 2512)।

यह पूरा किस्सा हमें बस्ती के वयोवृद्ध वकील श्री दुर्गाप्रसाद पांडेय ने भी बताया था कि किस तरह सन् 74 की दीपावली के आसपास 'भगवन' जी को अपने फैजाबाद निवासी एक रिश्तेदार श्री हरिश्चंद्र मिश्रा की कार में बस्ती से बैठाकर अयोध्या चुपचाप ले आये थे। बाबा अपना सारा सामान बस्ती में ही छोड़ आये थे, यहां तक कि उनकी परिचारिका महीनों अयोध्या आकर उन्हें खोजती भी रहीं। **(क्रमशः)** ☐

9, एम.आई.जी., लक्ष्मणपुरी, फैज़ाबाद

## फ़ैज़ाबाद के गुमनामी बाबा-18

बात बहुत लम्बी न खिंचती चली जाए, इसलिए रामभवन से प्राप्त पत्रों का विवरण समाप्त कर दूसरे प्रकार के तथ्यों की ओर आपको ले चलता हूं—लेकिन उससे पूर्व एक व्यक्ति के दो पत्रों का जिक्र करना ज़रूरी है—वैसे तो वहां सैकड़ों पत्र भी मौजूद हैं जिन्हें हम पूरा पढ़ नहीं पाये, या बंगलाभाषी उपलब्ध न होने पर, किसके पत्र हैं यह भी जान नहीं पाये।

एक हैं बंगाली (पूर्वी) के विप्लवी अनिल दास! जन्म—1911, पांचगांव, जिला श्रीहट्ट, अविवाहित—जी हां इसी तरह शुरू करके उन्होंने अपना परिचय पत्र लिखकर गुमनामी बाबा के पास भेजा है। ऊपर लिखा 'Credential of Anil Das alias Renu.' पत्र के कुछ अंश—

''1930 में... श्रीसंघ के मेम्बर के रूप में पूजनीय नेता स्व. अनिलचंद्र राय के साथ मुलाकात करने... उपदेश सुनने का मौका मुझे कई बार मिला।... हमारे नाम से वारंट निकला... बहुत से सहकर्मी पकड़े गये। पिसीमा लीलानाग (बुआ लीलानाग—जो बाद में लीला राय बनी—ले.) भी पकड़ी गई।... हम तीन जने 1933 में जापान जाने के लिए ब्रह्मदेश पहुंचे... नेताजी के आने के बाद हम सिंगापुर गये। वहां नेताजी के साथ मेरा परिचय हुआ... मैं 'आज़ाद हिंद दल' का दलपति होकर रंगून भेजा गया।... कुछ दिन रहने के बाद नेताजी के आदेशानुसार हम रंगून आकर S.S. Group Camp का चार्ज लिये।

बैंकाक छोड़ने के पूर्व रात्रि में नेताजी ने कई लोगों का इंटरव्यू लिया। उसमें मैं भी एक था। नेताजी जब हमें बुलाए, उस समय रात का ढाई बजा था। Post War काम के विषय में भी हमें सावधान किया। और 'हिकारी किकान' के नाम से हमें एक चिट्ठी दिये, जिससे कुछ arms, amunition, wireless sets और कुछ British money (S.S. Dollor) हमें दिया जाए। नेताजी की चिट्ठी के फलस्वरूप ही हम 'Hikari Kikan' से 2 Wireless set और कुछ revolver और pistol पाये।... इन चीज़ों को लेकर श्याम देश में ही छुपे रहे। नेताजी ने कहा था कि कहीं भी क्यों न रहें, हमारे साथ वायरलेस से Contact करेंगे।''

### नेताजी की मृत्यु की खबर ?

''... जब हमें नेताजी के Plane के accident की खबर मिली, तब मैं जानता था कि ऐसी ही एक खबर मिलेगी और इसमें कोई सच्चाई नहीं है, परंतु सुदीर्घ दस साल तक कोई खबर न मिलने के कारण 1956 में मैं बैंकाक से अपने देश चला आया और पिसीमा (बुआजी) लीला राय को सब बातें बताई। उसके बाद हम फिर बैंकाक चले गये। 1961 में बैंकाक त्यागकर अपने देश वापस आ गये।''

और जब अनिल दास जैसा नेताजी का सहयोगी अपने देश सन 1961 में वापस आ गया तो फिर क्या हुआ—यह जानने के लिए हम आपको पत्र की अंतिम पंक्तियों की ओर लिये चलते हैं—

**''पिछले साल पिसीमा लीला राय ने हमें नैमिषारण्य भेजा। और उसके बाद हमें जितनी बातें जानने की ज़रूरत थी, सभी छोटी-बड़ी खबर हम पिसीमा से पा गये। इसीलिए आशांवित होकर आपके निर्देश की प्रतीक्षा कर रहा हूं।''**

**अनिल दास का यह परिचय पत्र जब बाबा के पास पहुंचा तो सुश्री लीला राय ने निम्न शब्दों में संस्तुति कर रखी थी—"he is a dedicated, honest upright idealistic worker. L.R. (17.7.64)"** (क्रमशः

# वे नेताजी नहीं थे तो कौन थे?

□अशोक टंडन

अब तक आपने पढ़ा कि 16 सितम्बर, 1985 को उत्तर प्रदेश के फैज़ाबाद शहर में स्थित रामभवन में एक गुमनामी बाबा की रहस्यमय मृत्यु के बाद जब उनके कमरे का ताला तोड़ा गया तो वहां अनेक बक्सों में विविध सामानों सहित नेताजी सुभाषचंद्र बोस के जैसा गोल चश्मा, घड़ी, दूरबीन, नेताजी के परिवार के छायाचित्रों के अलावा नेताजी के सहयोगियों, आई.एन.ए. के अधिकारियों एवं गुमनामी बाबा के बीच हुए पत्राचार की मूल प्रतियां भी मिली हैं। यही नहीं, फैज़ाबाद के जिलाधिकारी द्वारा बाबा के सामान को लावारिस करार देकर नीलाम करा देने से रोकने हेतु नेताजी की सगी भतीजी सुश्री ललिता बोस की याचिका पर उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय ने बाबा के सामानों की इंवेंटरी बनवाकर, सामान को ट्रेजरी में रखने का आदेश दे दिया। क्या कारण है कि जब से 'गंगा' ने इस रहस्य की पर्तों को एक-एक कर उधेड़ना शुरू किया है, इस प्रकरण के विरोध करने का साहस कोई नहीं कर पा रहा है? बाबा के सामानों में महत्वपूर्ण नक्शों और दस्तावेजों के अलावा जो पत्र मिले हैं उनकी जांच करने से लगता है कि यह कोई साधारण साधू नहीं था। इसी क्रम में पढ़िए— रामभवन में मिले विप्लवी अनिल दास के पत्र एवं कुछ महत्वपूर्ण तथ्य, जो इस रहस्य का पर्दाफाश करते हैं—

2463)

और उसके बाद जब अनिल दास बाबा के पास पहुंचे तो बाबा ने फिर से विस्तृत जानकारी चाही हिकारी किकान वाली। अनिल दास ने चार पृष्ठों में बाबा को जो लिखकर दिया उसके भी कुछ अंश देखिए। ये दोनों पत्र फटी हालत में रामभवन में हमें मिले।

"श्री चरणेषु, मैं Hikari Kikan के पास से 2 Wireless Sets और कुछ Revolvers & Pistol और दो स्टेनगन पाया था।... इसी बीच Plane accident की खबर आ गई। सारे शहर में हाहाकार मच गया... करीब दो माह बाद देवनाथ दास महाशय बैंकाक पहुंचे। उन्होंने बताया नेताजी सिर्फ हबीबुर्रहमान को लेकर Plane में चढ़े थे। क्योंकि उस प्लेन में और कोई accomodation नहीं था। और बाकी सब लोग दूसरे प्लेन से follow किये, पर वह Plane उन लोगों को लेकर Hanoi में उतार दिया। और बाद में बताया कि नेताजी का Plane accident हुआ है अतः वे अपनी व्यवस्था स्वयं करें।... देवनाथ दास... Lao चले आये। वहां Prince Suvarno (कुछ ऐसा ही लग रहा है—ले.) [जो वर्तमान में Lao Govt. (Comunist) के Leader के साथ] मिले, और कुछ दिन उनके घर पर ही रहे। उस Prince की पार्टी के साथ उस समय का कुछ Thai Ministers का सम्बंध था।... उन Ministers में से एक के घर में Col. Thown नामक एक व्यक्ति देवनाथ दास को ले आया। उसके दूसरे ही दिन देवनाथ दास... के साथ मिले और... accident की घटना को सत्य कहकर अपना मत प्रकट किया। और हमलोगों से कहा कि अब arms, amunition, वायरलेस आदि चीज़ें हमलोगों को रखने की ज़रूरत नहीं है। यह सब Lao के लोगों के स्वतंत्रता संग्राम में काम आएगा... इसलिए उन सब चीज़ों के साथ दस हज़ार टिकेल हम लोग Nai Indra (Thai Minister of Industry) के मकान में जाकर Col. Thown को दे आये। उस समय मैं, C.R. Narula और देवनाथ दास तीन लोग थे। उसके बाद... गोदाम से मूंगदाल बेचकर अस्सी हज़ार टिकेल में से दस या बीस हजार Col. Thown को देवनाथ दास के निर्देश पर दिया।... उसके बाद मैं और देवनाथ दास दो-तीन महीने तक भागते फिरे। आखिर मैं... देवनाथ दास British Military के पास समर्पण किये। उनका statement लेकर उन्हें छोड़ दिया गया। मेरा statement लिये... जिन लोगों को arrest किया था उन सभी लोगों का individual statement लिया गया, इसलिए कौन क्या statement दिया कहना कठिन है।"

इन पंक्तियों को पढ़ने से क्या आपको नहीं लगता कि जैसे बाबा ने पूछा हो कि किस-किसने क्या-क्या statement दिये समर्पण के समय। आखिर बाबा को इतनी सूक्ष्म जानकारियों से क्या लेना-देना था? **खैर!**

लगता है यह पत्र अनिल दास ने बाबा के पास आने पर ही उन्हें लिखकर दिया था, क्योंकि वे अंत में लिखते हैं—"मुझे यहां असुविधा हो रही है, यह कहने के जैसा लज्जा का विषय और कुछ नहीं है। खाने, रहने की तो कोई असुविधा हो ही नहीं रही है। बल्कि अपने घर से भी अच्छी तरह हूं। अगर यहां रहकर उपवासी होकर भी आपकी सेवा करने का अवसर मिलता है तो अपने को धन्य समझूंगा. इसके अलावा उपवास करना, एक समय खाना, सिर्फ नमक से खाना, 200 मील पैदल चलने का अभ्यास तो हमें है ही। आपके ऐसा कहने के कारण मैं लज्जित हूं।"

मैं समझता हूं कि इन पत्रों के रामभवन में पाये जाने की संदर्भ गर्भिता स्वयमेव लाक्षन है कि रामभवन में रहने वाले गुमनामी बाबा और नेताजी के बीच ज़रूर कोई सम्बंध है, वरना इतनी सूक्ष्म जानकारियों को लेकर नेताजी के सहयोगी विप्लवी अनिल दास क्यों हाज़िर होते?

ये तो रहे गुमनामी बाबा और नेताजी सुभाषचंद्र बोस के सहयोगियों के बीच के महत्वपूर्ण पत्राचार। अब आइए हम उस गुमनाम व्यक्ति के पठन-पाठन की रुचियों, उनकी विद्वता, जानकारी व टिप्पणियों को देखें और उस व्यक्ति के व्यक्तित्व की खोज करें कि आखिर में वह गुमनामी व्यक्ति था कौन?

भारतरत्न

जिन्होंने भारत-पाक युद्ध में 'मागृधः कस्य स्विद्धनम्' (दूसरे की भोग्यवस्तु न लेने की कामना मत करो) के वैदिक आदर्श को, संसार के सम्मुख स्थापित कर, देश को गौरव प्रदान किया।

जिनके प्रधान मंत्रित्व में भारत की प्रतिष्ठा और राजनीतिक स्वतंत्रता पूर्णतः सुरक्षित है।

जिनकी छत्रछाया में देश दृढ़तापूर्वक आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की ओर सफलता से अग्रसर हो रहा है।

गुमनामी बाबा की हस्तलिपि में इंदिरा गांधी के बारे में छपे आलेख पर किये गये रेखांकन व टिप्पणी

एक साधू का राजनीति में दखल?

## क्या कहती हैं ये कतरनें?

कहना नहीं होगा कि रामभवन में हमें जहां पर ज्यादातर अंग्रेजी व बंगला के अलावा हिंदी, संस्कृत आदि की हज़ारों पुस्तकें मिलीं, वहीं पर अंग्रेजी के 'पॉयोनियर' (लखनऊ से प्रकाशित), 'आनंद बाजार पत्रिका' (कलकत्ता), 'टाइम्स ऑफ इंडिया (दिल्ली), 'स्टेट्समैन' (कलकत्ता) के अलावा बंगला दैनिक 'जुगांतर' (कलकत्ता), 'वर्तमान' (कलकत्ता) तथा 'बेतार जगत', 'मिरर' व 'इलेस्ट्रेटेड वीकली' आदि पत्रिकाओं

की सैकड़ों प्रतियां भी मिलीं। इनके साथ ही लगभग एक बोरा कटिंग्स भी (पत्र-पत्रिकाओं की) वहां पर मिलीं। वैसे बहुत-सी कटिंग्स बाबा के अनुयायी व डॉ. पवित्र मोहन राय बाबा के पास भेजते थे और बहुत-सी बाबा स्वयं काट-काटकर रख लेते थे। इन कटिंग्स के प्रकार इतने विविध हैं कि उनकी रुचि की विविधता का अनुमान लगाना तो बहुत कठिन है। लेकिन फिर भी हम कुछ का जिक्र यहां अवश्य करेंगे ताकि आप लोग भी बाबा की रुचि का अनुभव कर सकें। बाबा ने ऐसी ही खबरें व पुस्तकों में कुछ टिप्पणियां भी लिख रखी हैं. उनमें से कुछ टिप्पणियां काफी महत्वपूर्ण हैं जिनका जिक्र हम यहां कर रहे हैं।

पत्र-पत्रिकाओं की ये कतरनें सबसे अधिक जिस विषय पर हमें दिखीं—वे ज्यादातर नेताजी विषयक ही थीं—जैसे देखें इवेंटरी के क्रमांक 638 पर दर्ज है डॉ. पी.एम. राय द्वारा भेजे एक-एक पार्सल का वर्णन. जिसमें 'वीक एंड टेलीग्राफ' 19.3.83 का एक अंक है जिसमें 'द नेताजी—महात्मा लेटर' शीर्षक से लेख छपा है। (क्रमांक 1723) पर 24 अश्विन बंगला सम्वत् 1381 का 'अमृत' साप्ताहिक पत्रिका का 23वां अंक तथा 28वां अंक जिनमें दोनों में द्विजेंद्रनाथ बसु का लेख 'नेताजी के अंतर्ध्यान की कहानी' छपी है। (क्रमांक 1725) 'टाइम्स ऑफ इंडिया' 26.10.82 में 'सोवियत स्कॉलर्स रिवाइज ओपिनियन ऑन नेता' शीर्षक लेख की कटिंग। (क्रमांक 1727) 26 जनवरी 83 का 'परिवर्तन' बंगला पत्रिका में शिवप्रसाद चौधरी का एक लेख 'नेताजी फाइल' शीर्षक से छपा हुआ। इस लेख की भूमिका में लिखा है कि—''शिवप्रसाद चौधरी मित्र शक्ति खुफिया विभाग फ्रांसीसी भाषा के अनुवादक के रूप में कार्य करते थे। उन्होंने 'चंद्र बोस' नामक एक फाइल में नेताजी से सम्बंधित कुछ बातें नोट कर रखी थी उसी के आधार पर यह लेख लिखा गया है।'' इस लेख के साथ नेताजी व I.N.A. के कई चित्र छपे हैं तथा लेख की अंतिम पंक्तियों में लिखा है कि—''जापान आत्मसमर्पण के कुछ समय पहले से नेताजी विचार व राजनीतिक मतवाद में परिवर्तन आ गया था और उन्हें मृत बताया गया। परंतु इस विषय में कुछ विद्वान यदि खोज करें तो सही तथ्य सामने आ सकते हैं।'' 1737-1982 में बंगला में प्रकाशित नेताजी पर एक स्मारिका—जो उनके 86वें जन्मदिवस पर आयोजित कार्यक्रमों व जीवन पर लिखे गये लेखों व चित्रों से भरपूर है। 1756—2 अक्टूबर. 1964 के 'इंडियन ऑब्जर्वर' में 'नेताजी एलाइव ?' 2139—26 जुलाई के 'पॉयोनियर' की कटिंग. जिसमें 'नेताजी जिस प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध के समय 1941 से 43 के बीच गये और रहे' से सम्बंधित आलेख। 2147—24 जुलाई 77 के 'स्टेट्समैन' में लेख 'द नेताजी मिस्ट्री'। 2197—31 जुलाई 77 के 'स्टेट्समैन' की इसी शीर्षक से दूसरी कटिंग जिसमें 'ट्रांसफर ऑफ पावर' (1942-47) के हवाले से नेताजी की कथित मृत्यु के बयान को गलत साबित किया गया है। 2321—'अमर उजाला' (26.9.47) 'नेताजी के धन की तलाशी'! 2326—28 अगस्त की एक कटिंग—'नेताजी कहां हैं ? 2335—'इलेस्ट्रटेड वीकली' (1.5.77) में से नेताजी व हिटलर की फोटो कटिंग। 2361—बंगला दैनिक 'युगांतर' (21.1.1985) की प्रति जिसके मुख पृष्ठ पर नेताजी की एक मूर्ति की फोटो छपी है और नीचे लिखा है—'नेताजी की एक मूर्ति तैयार है परंतु यह निश्चित न हो पाने के कारण कि कहां लगेगी. पड़ी हुई है।'' 2364—12.8.77 का 'आनंद बाजार पत्रिका' की 'नेताजी के सम्बंध में देसाई को आवेदन' खबर। 2583—बंगला भाषा में नेताजी का 'विश्व सभ्यता में बंगाल का विशेष योगदान' लेख। 2589—बंगला में 'सुभाष बोस का अप्रत्याशित रूप से गृह त्याग' लेख। 2666—मैदान में नेताजी की मूर्ति लगाये जाने के समाचार की कटिंग। 1937—'स्वतंत्र भारत' (13.3.78) हिंदी दैनिक की एक कटिंग 'प्रो. समर गुहा का दावा—नेताजी के जीवित होने के महत्वपूर्ण प्रमाण मौजूद'। 1963—'युगांतर' बंगला दैनिक के 2.6.82 के अंक के सम्पादकीय 'महामानव की प्रतीक्षा में' संसार के सभी महापुरुषों के आविर्भाव के उद्दरण के साथ नेताजी के सम्बंध में विशेष आलेख। 2034—'अमृत बाजार पत्रिका' 23 जन. 72 का सम्पादकीय 'नेताजी'। 2130—7.7.77 का 'युगांतर' में नेताजी की कुंडली पर खबर। 2135—6.8.77 के 'आनंद बाजार पत्रिका' की एक कटिंग जिसनें 'जयश्री' पत्रिका में नेताजी से सम्बंधित जो लेख छप रहे थे उन पर हाईकोर्ट से स्थगन (रोक) आदेश जारी हो गया है उक्त सम्बंध में नेताजी रिसर्च ब्यूरो के शिशिर बोस का नाम उल्लिखित है। साथ में चीन. बंगाल व पाकिस्तान की राजनीति से सम्बंधित खबरों की कटिंग नत्थी है।

अब आइए आपको बताऊं कुछ विशेष खबरों के बारे में जो अखबारों में छपी थीं. मगर यहां पर उनकी कटिंग न होकर टाइप्ड कॉपियां मौजूद हैं। जैसे क्रमांक 1767 पर दर्ज है ''अंग्रेजी पत्र 'ईवनिंग पोस्ट' (19.5.70) क्वालालमपुर से
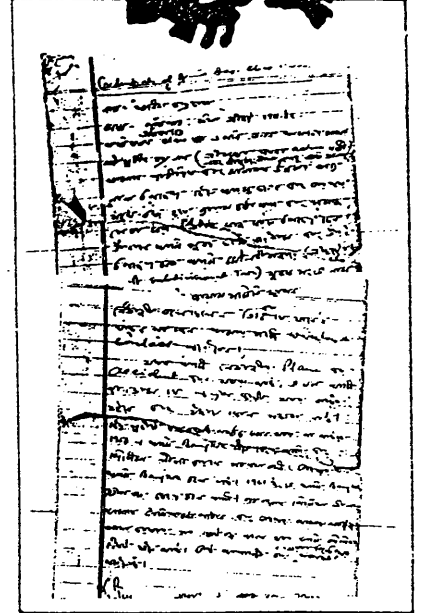
विप्लवी अनिल दास का गुमनामी बाबा को भेजा गया परिचयात्मक पत्र एवं उस पर सुश्री लीला राय की संस्तुति

माइकेल जोसेफ द्वारा प्रेषित सूचना. जिसमें उक्त रिपोर्टर जर्कार्ता में हुई 'एशियन एवं पैसेफिक कांफ्रेंस ऑन कम्बोडिया' में पूर्व यू.एस. डिफेंस सेक्रेटी क्लार्क किलीफर्ड से मिला था. जिनके अनुसार शक्तिशाली वियतकांग की जो फौजें कम्बोडियन बॉर्डर पर लगी थीं. उसमें पूरा एक डिवीजन एशियन लिबरेशन आर्मी का लड़ रहा था. जिसके लीडरशिप में ऐसे महामानव का वर्णन था जिसमें द्वितीय विश्वयुद्ध के कई खोये हुए जनरल्स शामिल थे। उन्होंने उक्त व्यक्तियों का नाम बताने से इंकार कर दिया। ठीक इसी तरह की एक टाइप्ड प्रतिलिपि 'डेली मॉनीटर' अंग्रेजी पत्र की 30.5.70 के अंक में विशेष सम्वाददाता द्वारा भेजी खबर। 'मिसटीरियस लेडी मिस मेरी टेलरस सेंसेशनल कंफेसन' शीर्षक खबर में कहा गया है कि मिस टेलर नामक ब्रिटिश महिला जब नक्सलवादियों के साथ जदुगुड़ा के जंगल में पकड़ी गई. तो उसने बताया कि वह जिस ग्रुप के साथ काम करती है वह हिमालय से उतरने वाली तीसरी शक्ति का एक अंश मात्र है। उसने आगे यह भी कहा कि उसे विश्वास है कि नेताजी सुभाषचंद्र बोस जीवित हैं. यह उसके पिता का भी विश्वास

When

AZADIRACHTIN'—CHEAP INSECT PEST CONTROL
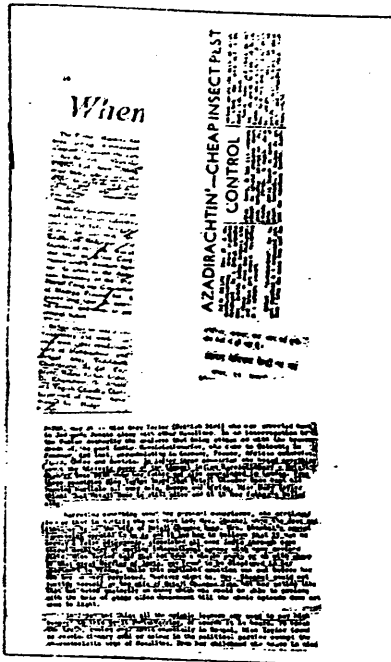
रामभवन से प्राप्त अखबारों की कटिंग के नमूने

है। 1769—'टाइम्स ऑफ इंडिया' (6 अप्रैल 70) में 'काबुल इंटलाइन' से छपी खबर की टाइप की हुई प्रतिलिपि में लिखा है कि श्री एम.के. कुलकर्णी ने जब बादशाह खान से पूछा तो उन्होंने मत व्यक्त किया कि नेताजी सुभाषचंद्र बोस से आतंकित होकर कि एक दिन वह एशिया महाद्वीप में अवश्य प्रकट होंगें. नेहरू और जिन्ना ने स्वयं बंटवारा करके शासन की बागडोर सम्भाल ली. परंतु वे निष्प्रभावी ही सिद्ध हुए।

अब आइए आपको 23 जनवरी 1985 का बंगला के 'वर्तमान' दैनिक का एक अंक दिखाएं (2359)। जिसकी पृष्ठ सं. 6 पर नेताजी के चरित्र व जीवन-दर्शन पर लिखा गया कुशल लाहड़ी का एक लेख—जिसमें रविंद्रनाथ टैगोर, काजी नजरुल इस्लाम और सैय्यद मुर्जतबा अली, डॉ. राधाकृष्णन व देशवंधु चितरंजन दास आदि के अनेक उदरण है और 'स्प्रिगिंग टाइगर' व फिलीपाइन के राष्ट्र प्रधान लारेल की पुस्तकों के अंश उद्दत हैं। इस लेख में उद्दत रवींद्रनाथ की कुछ पंक्तियों को घेरकर गुमनामी बाबा ने 'प्रणाम-प्रणाम' लिखा है। कविवर गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर को इस तरह से किस बंगाली संतनुमा व्यक्ति ने श्रद्धा अर्पित की ? वैसे सभी जानते हैं कि नेताजी कविवर के प्रति कितनी अगाध श्रद्धा रखते थे ! इसी अंक में नेताजी का स्वयं का लेख व उन पर अन्य लेख भी छपे हैं। और इसी अंक के पृष्ठ 3 पर मुसर्रफ हुसेन का एक लेख जिसका शीर्षक 'स्वाधीनता के पहले व बाद में भटोरा एक ही रह गया है' छपा है। इस लेख में कई जगह अंडरलाइन व निशान लगाते हुए गुमनामी बाबा ने लिखा है—"रेफरेंस माई बुक्स एंड आर्टिकिल्स. दियरफोर आस्क 'यस' ।"

ये कौन-सा बाबा है जिसने किताबें और लेख लिखे हैं और उनका जिक्र 'मुसर्रफ हुसेन' ने अपने इस लेख में किया है। कहीं वे नेताजी द्वारा लिखे लेख व किताबें तो नहीं है—जिन्हें बाबा अपने द्वारा लिखा बता रहे हैं ? वैसे यह अंक 23 जनवरी 1985 को प्रकाशित नेताजी पर ही समर्पित है। मुख पृष्ठ पर 'नेताजी के पूर्वजों का भवन उपेक्षित क्यों है ?' शीर्षक के बगल में लेख के कुछ अंशों को अंडरलाइन करके बाबा ने लिखा है—"मोस्ट अॅयेंटिक" ।

सुविज्ञ अध्येयताओं के लिए बंगला सम्वत् 1379 पौष की 'जयश्री' पत्रिका (क्रमांक 76) में 'नेताजी' पर क्षणश्वर घोषाल क एक लेख पर बाबा द्वारा लिखी गई एक टिप्पणी। एक स्थान पर बाबा ने लिखा—"1. देशनायक कालांतर रवींद्रनाथ ठाकुर, 2. तदैव... 3. तदैव... 4. टोकियो" तथा इस पृष्ठ के पुस्त पर जिस पर पृष्ठ संख्या 602 छपी है. में छपी कुछ लाइनें जिनमें—"मध्य प्रदेशं युवा सम्मेलन सभापति भाषण 29.11.29 त.स. 176 लाहौर पंजाब—छात्र सम्मेलनी ते सभापतरि भाषण त.स. पृष्ठ 127 ट्." लिखा है को काटकर बाबा ने नीचे नोट लिखा है—"ऐई वक्तव्य समर्थन निम्नलिखित रचनागुली द्रष्टव्य क मध्य प्रदेश युव सम्मेलने सभापतरि भाषण 29.11.29 तरुणेश स्वप्न 176 ख लाहौर पंजाब छात्र सम्मेलनी ते सभापतीर भाषण तरुणेश स्वप्न पृष्ठ 127 (ग) इंडियन स्ट्रगल 1920–1943 कम्पाईल्ड बाई नेताजी रिसर्च ब्यूरो पृष्ठ 414 व 372 !"

ठीक इसी तरह 29.2.83 के अंग्रेजी दैनिक 'पॉयनियर' के 'आसाम होलोकास्ट' शीर्षक सम्पादकीय के बगल में गुमनामी बाबा ने स्वयं पेन से टिप्पणी लिखी—"जब Provinees Re-organised हुई थी तब language और ethics group की रक्षा करने की principle को स्वीकार करके हुई थी उसी के फलस्वरूप एक ही आसाम का पांच टुकड़ा किया गया।" इसी तरह इस सम्पादकीय की निम्न लाइनों को घेरकर बाबा ने 'Right Editorial' लिखा—'Political Power is the nature of things must be in the hand of Assames. People of Assames origine.... This is elementry safegards there must be for minorities. मैं नहीं जानता कि कब प्राविंसेज री-ऑर्गनाइज हुई थीं. लेकिन मेरे ख्याल से यह किस्सा स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व का ही है—और अगर वाकई है तो आश्चर्य होता है कि बाबा को इतनी पुरानी बात याद है और टिप्पणी को पढ़ने से क्या ऐसा नहीं महसूस होता आपको भी. कि यह टिप्पणीकार भी ऐसे उपरोक्त निर्णय में उस समय शामिल रहा हो। बहरहाल ये टिप्पणियां इतिहासकारों के लिये हैं—वे ही इसका अर्थ व संदर्भ ढूंढे (1679)।

## पांच दशक पुराना पत्र !

बाबा ने सन् 1931 का इलाहाबाद से प्रकाशित (सम्भवतः साप्ताहिक) समाचार पत्र 'भविष्य' का एक अंक और बड़े जतन से संजोकर रख छोड़ा है (1708)। इस 29 जन. 31 के अंक के मुख पृष्ठ पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस व अंदर तत्कालीन सभी नेताओं के चित्र हैं। इसी तरह (1738) सन 1931 के ही 8 जनवरी. 5 फरवरी. 28 मई के 'भविष्य' की प्रतियां भी रामभवन में हमें मिलीं. जिनमें तत्कालीन स्वतंत्रता संग्राम से सम्बंधित अनेकों चित्र व समाचार छपे हैं जिसमें उक्त पत्र की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ श्री मोतीलाल नेहरू का है जिसमें उनके बगल में फौजी पोशाक में प्रधान सेनापति नेताजी सुभाषचंद्र बोस खड़े हैं। ये कैसी यादें के साये बाबा को लपेटे हुये है इसका अनुमान पाठकगण स्वयं लगाएं।

बाबा के पास रखी जहां समाचार पत्रों की इन कतरनों में इतिहास. विज्ञान. राजनीति व दुनिया के रहस्यात्मक वर्णन हैं. वहीं पर 'टाइम कैपसूल'. 'इस्लाम इज सेकुलर'. 'मृत्युदंड' पर लेख ('इलेस्ट्रेटेड वीकली'). 'इंडिया विस फ्रीडम'. 'फॉरजिंग फ्री इंडिया लिंक विथ क्राउन'. 'ब्रिटिश टेक ओवर ऑफ इंडिया' ('पॉयनियर' में छपे लेख की 81 किस्तों की सभी कटिंग). 'ट्रांसफर ऑफ पावर' ('युगांतर') 'सीक्रेट ऑफ राडार रीवील' आदि बाबा के प्रिय विषय थे। यह आपको उनकी पाठन रुचि का परिचय अवश्य दे रहे होंगे।

बाबा को हमारे उ.प्र. सरकार के एक मंत्री महोदय ने मात्र एक साधू संत बताया था. मगर वह साधू-संत था कौन. उसके विचार आज की राजनीति या इंदिरा गांधी के विषय में क्या थे यह उन्होंने जानने की जरा भी कोशिश नहीं की—आखिर क्यों ? बहरहाल. उन्हीं के लिए एक उदाहरण—क्रमांक 170 पर 'आदिदेय सूर्य'

(1972) नामक पत्रिका के दूसरे पृष्ठ पर श्रीमती इंदिरा गांधी के रायबरेली के भाषण का एक वाक्य है जिसमें जाति-पांति व ऊंच-नीच मिटाने पर ही समाजवाद का लक्ष्य प्राप्त होने की बात कही गई है। इस वाक्य को काटकर बाबा ने लिखा कि—"सृष्टि, जीव, इतिहास, धर्म तथा समाज ज्ञान में दयनीय रूप से अज्ञान मनुष्यों की ही प्रमोत्पादक विचार होती है।" इसी तरह एक पृष्ठ पर इंदिरा गांधी के चित्र के साथ लिखे गये एकता, न्यायशीलता, समदर्शिता, भारत सरस्वती, डॉ. विशेषणों को बाबा ने काटकर केवल 'साहस' लिखा रहने दिया तथा स्वयं लिखा कि—"ऑनरेरी सम्मानों का ढोल पीटना सम्यता तथा सत्य विरुद्ध माना जाता है; उच्चतम समाज में।"

इसी पृष्ठ पर जहां इंदिरा गांधी के लिए छपा है कि—'जिनके प्रधानमंत्रित्व में भारत की प्रतिष्ठा और राजनीतिक स्वतंत्रता पूर्णतः सुरक्षित है। जिनकी छत्रछाया में देश दृढ़तापूर्वक आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की ओर सफलता से अग्रसर हो रहा है।' इन वाक्यों को काटकर बाबा ने लिखा—"गलत प्रचार।" फिर लिखा—"इन दोनों प्रशस्तियां में सिर्फ चाटु वाक्य हैं। भारत की राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता और आत्म-निर्भरता पूर्णतया नष्ट-भ्रष्ट, विकृत हो चुकी है।" बाबा ने इस पुस्तक के सम्पादक को भी नहीं छोड़ा। बाबा लिखते हैं—"अवश्य ही अपना रोजी और बचाव के लिए—सम्पादक जी को मोसाहेबी करना तो परम पुणीत धर्म-कर्तव्य है ही। जी हां, आपका तरक्की होगी।"

इसी तरह पृष्ठ (ओ) पर जगजीवन राम के चित्र के बगल में लिखी प्रशस्ति—'1971 के भारत-पाक युद्ध के समय केंद्रीय प्रतिरक्षा मंत्री जो प्रगतिशील चिंतन के प्रतीक हैं'। में से 'जो प्रगतिशील चिंतन के प्रतीक हैं' वाक्यांश काटकर लिखा गया है—"कमाल है सम्पादक जी! जिन्होंने 10 साल इन्कमटैक्स नहीं दी ?!!" पृष्ठ 73 पर 'भारत के तीन महारोग' नामक निबंध में श्रीमती इंदिरा गांधी के सम्बंध में एक प्रशंसापूर्ण वाक्य को काटकर लिखा—"मिथ्या-वाद।" पाठकगण बाबा की इन टिप्पणियों का अर्थ व संदर्भ व उनकी रुचि-अरुचि का अनुसंधान स्वयं करें।

यह तो आपको पता लग ही गया होगा कि किसी से न मिलने वाले, पर्दे के पीछे से दुनिया का सारा हाल जानने के इच्छुक गुमनामी बाबा ने सारी दुनिया घूमी होगी। शायद पर्दे के पीछे जाने के पहले! प्रमाणस्वरूप हाजिर है इंवेंटरी के क्रमांक 100 पर दर्ज हंसराज भाटिया की पुस्तक 'आगरा रेड फोर्ट इन ए हिंदू बिल्डिंग'। इस पुस्तक में जहां पर लिखा है कि—'टू गो-एक्जामिन दी एंटीसीडेंट ऑफ ऑल मेडवल बिल्डिंग्स इन इंडिया एंड अदर रीजनस ऑफ द वर्ल्ड।' को अंडरलाइन करके बाबा ने लिखा है—"राइट, आई हैव सीन माई सेल्फ।" आगे फिर जहां पर किताब में लिखा हुआ है—'इन ए नम्बर ऑफ कंट्रीस अबोर्ड टू' पर बगल में बाबा ने लिखा—"करेक्ट : आई नो माई सेल्फ; सीन देयर।" दुनिया जानती है कि नेताजी ने भी कई बार दुनिया घूमी थी!

जब किताबों पर बाबा की टिप्पणियों की बात हमने चला ही दी है तो आइए कुछ अति महत्वपूर्ण पुस्तकों पर बाबा के कमेंट्स देखें—

क्रमांक 1649—कुलदीप नैय्यर की प्रसिद्ध पुस्तक 'बिटविन द लाइंस' में पेज 82 पर जहां छपा है—'अंडर दी कांस्टीच्यूसन सच ए स्टेप वाज रिहेडेट सिंस इंग्लिश कुड बी कंटीन्यूड फॉर इन इंडेफनिट पीरियड विदाउट मेकिंग ऐनी अदर लीगल प्राविजन'—को अंडरलाइन करके बाबा ने लिखा—"करेक्ट।" इसी तरह पेज 83 पर 'देसाई' (यानी मोररजी देसाई) नाम के आगे बाबा ने विचार व्यक्त किये—"A man always wrong."

**1645—कुलदीप नैय्यर द्वारा लिखी दूसरी पुस्तक—'इंडिया द क्रिटीकल इयर्स' में काफी रेखांकन करने के साथ-साथ पेज 149 पर बाबा ने लिखा—"नो, जे.एन. ओकेड इन।" तथा पेज 283 पर लिखा—"स्टुपिड नेहरू।"** कुलदीप नैय्यर की ही एक अन्य पुस्तक 'Distant Nighbours'—A Tale of Subcontinent' में पेज 43 में छपी पंक्तियां—'But some Foreign office men whom I met in London in 1971 told me that Mountbatten was in hurry to get back to a bigger position in the Biritish Navy.' के बगल में दो लाइन खींचकर बाबा ने लिखा—"True!" वाह रे बाबा की जानकारी! आगे जहां पर छपा है—'Raja-gopalachari, who had in 1942 gone to the extent of saying that partition be accepted in principle...' पर लिखा बाबा ने—"Right."

इसके अलावा हमें राममवन में हजारों पुस्तकें भी मिली हैं। इनमें अधिकतर अंग्रेजी साहित्य एवं युद्ध विषयक पुस्तकें हैं। शेक्सपियर द्वारा रचित—'द विंटर्स टेल', 'रिचर्ड सेकेंड', 'मेकबेथ', 'उथैलो। चार्ल्स डिकेंस की पुस्तकों

MARY TAYLOR'S SENSATIONAL CONFESSION.

PATNA, May 29 :- Miss ... who was arrested here
in Jadugude Jungle alon... In an interrogation by
the Police Authority sh... ttrac ed with the bravery
deeds of, the past India... came to Calcutta in
February 1st last, pers... rence, African countries,
Japan, China and Austr... tries she heard something
about the historic deed... Revolutionary - Netaji
Chander Bose with whom... ainted in London. From
those countries Miss T... Chander Bose kept his
burning particle all o... ica. Miss Mary Taylor
thinks that Netaji Bose... is her father's belief
also.

...g about her personal experience, she continued
she met that Lady Mrs. Shenkel whom she does not
... of Netaji Chander Bose. Mrs. Shenkel's amused
... and it led her to believe that it was ...
..., circulated all over India through some
... international agency with some devised
... that not even a single photo or ... with group
... India, was found to be displayed in her
...lle this pertinent question was put before her
...ed, "whatever might be, Mrs. Shenkel could not
wife of Netaji Chander Bose but her acting like
...y on money which she would be able to prolong
alien Government till the whole episode does not

... all the notable leaders are used to pay high
... Warrior, of course it is heard. To speak
India especially in Bengal, Miss Taylor found
or colour in the political parties except the
Naxalites. From her childhood she bears in mind
and lastly, of course, this made her to come
hands ... with this revolutionary group
... allurement.

...on is very serious which may lead into otherwise
Jail custody for further interrogation. Guessing
is presumed that her group is not guided by the
...up she belongs is simply a small spark of a big
...one down to this plain from the Himalayas ...
...ew to live on with the gift of Himalayas.

**'डेली मॉनीटर' में 30 मई 70 को छपी 'मिस्टीरियल्स लेडी' से सम्बंधित खबर की टाइप प्रति, जो राममवन में मिली।**

'एक अन्य सेट' और 'टू इच हिज स्ट्रेंजर्स', 'टेल्स ऑफ मिस्ट्री एंड इमेजिनेशन', 'महावाक्य—परमहंस', 'चाणक्य नीति—दर्पणम्' 'पचतंत्रम्' आदि सैकड़ों पुस्तकों की राममवन में मौजूदी जहां यह दर्शाती है कि गुमनामी बाबा कोई साधारण व्यक्ति नहीं था—वहीं पुस्तकों पर उनकी टिप्पणियां उस व्यक्ति की जागरूकता, राजनीतिक विचारों की विविधता का एक ऐसा प्रमाण प्रस्तुत करती हैं जो उस व्यक्ति को निर्विवाद रूप से सामान्य व्यक्ति से अलग करके विशिष्ट व्यक्ति की श्रेणी में ला खड़ा करती है, जो चुपचाप दो कोठरियोंनुमा क्वार्टर्स में पर्दे के पीछे, बिना किसी से मिले अपनी दुनिया में व्यस्त रहने के साथ ही साथ देश-दुनिया की हर खबर से वाकिफ रहता था। (क्रमशः) □

9, M.I.G., लक्ष्मणपुरी,
फैजाबाद (उ.प्र.)

फैजाबाद के गुमनामी बाबा (अंतिम किस्त)

# क्या वे नेताजी ही थे?

**16 सितम्बर 1985 को उत्तर प्रदेश के फैज़ाबाद शहर में स्थित रामभवन में एक गुमनामी बाबा की रहस्यमय मृत्यु के बाद जब उनके कमरे का ताला तोड़ा गया तो वहां विविध सामानों से भरे बक्सों के अलावा तमाम ऐसे चौंकाने वाले रहस्यमय दस्तावेज एवं पत्र मिले, जिनका सम्बंध किसी न किसी रूप में नेताजी से रहा है। 'गंगा' ने फरवरी 1986 से सिलसिलेवार इस रहस्य की पर्तों को उजागर किया है। इस बार इसकी अंतिम किस्त में पढ़िए कि क्या वे सचमुच नेताजी ही थे?**

गत दिनों संसद के वर्षाकालीन अधिवेशन के शुरुआती दौर में ही गुमनामी बाबा के बारे में राज्यसभा के किसी सदस्य द्वारा पूछे गये प्रश्नों के जवाब में सरकार ने कहा था कि, 'फैजाबाद के स्वर्गीय 'गुमनामी बाबा' के बारे में की गई जांच से यह सिद्ध नहीं हो सका है कि अज्ञात बाबा नेताजी सुभाषचंद्र बोस या उनके अनुयायी थे।'

अखबारों के अनुसार राज्यसभा में 30 जुलाई को एक सरकारी वक्तव्य में कहा गया कि जांच में ऐसा कोई कागजी सबूत नहीं मिला, जिससे यह पता चले कि, बाबा सी.आई.ए. के एजेंट थे। इस मामले की जांच स्थानीय अधिकारियों ने की थी।

पहली बात तो इस मामले की स्थानीय अधिकारियों ने कोई जांच नहीं की, बल्कि पुलिस अधीक्षक श्री कर्मवीर सिंह के आदेश के बावजूद पुलिस ने केवल सामान की इंवेंटरी बनाकर ही छोड़ दिया और दो-चार लोगों से पूछताछ भर की—क्या इतने बड़े ऐतिहासिक महत्व के प्रकरण की ऐसी ही जांच होनी चाहिए? और अगर ऐसी जांच कोई हुई है तो सरकार उसकी रिपोर्ट क्यों नहीं प्रकाशित कर देती—जबकि विधान परिषद (उ.प्र.) के सदस्यों ने भी इसकी मांग की थी। लेकिन सरकार ने अपनी इस सतही-सी पुलिस जांच का नतीजा सार्वजनिक तौर पर या सम्बंधित लोगों को आज तक नहीं बताया, और न ही उसे विधान परिषद (उ.प्र.), या राज्यसभा में ही रखा—आखिर क्यों? क्या ऐसा तो नहीं है कि उक्त रिपोर्ट नेताजी की उपस्थिति के विषय में नकारात्मक न होकर सकारात्मक आई हो?

दूसरी बात—अगर सरकार ने जांच करा ही ली है और उसे यह भी पता चल गया कि ये गुमनामी बाबा नेताजी नहीं थे, तब तो सरकार को यह भी पता चल ही गया होगा कि वह व्यक्ति कौन था? उसी का नाम बता देते!

राज्यसभा में मंत्री महोदय ने यह भी कहा कि जांच में ऐसा कोई कागजी सबूत नहीं मिला...।

लगता है कि मंत्री महोदय चाहते थे कि गुमनामी बाबा (अगर वह नेताजी थे तो भी) को अपने साथ-साथ हर वक्त अपने जन्म का म्यूनिसपैलिटी प्रमाण-पत्र तथा हाई स्कूल का सर्टिफिकेट रखना चाहिए था—तभी हमारी सरकार यह साबित कर पाती कि वह कौन था ?

बहरहाल, राज्यसभा के सभापति उपराष्ट्रपति महामहिम श्री शंकरदयाल शर्मा, सरकार के उपरोक्त वक्तव्य वाले मंत्री तथा प्रश्न पूछने वाले सांसद सहित पूरी राज्यसभा के सदस्यों के समक्ष ('गंगा' में दिये गये अब तक प्रमाणों सहित) प्रस्तुत है कागजी सबूतों के नमूने के रूप में यह पूरी श्रृंखला—

प्रश्नवाचक शीर्षक की इस ऐतिहासिक श्रृंखला के अंतर्गत उपलब्ध सारे सबूत, वाक्यात व दस्तावेजों के आधार पर मैं पाठकों (यानी भारत की समग्र जनता) से ही इसका उत्तर चाहता था। लेकिन सरकार के साथ-साथ नेताजी के रिश्तेदारों, सहयोगियों, अनुयायियों व पूजने वालों आदि सभी ने जहां अपने-अपने मुंह पर ताले लगा रखे हैं—वहीं पर 'गंगा' के कई पाठकों ने मुझसे आग्रह किया कि इस प्रश्नवाचक शीर्षक का 'सस्पेंस' खत्म कर स्वयं मैं ही इसका उत्तर दूं।

मैं अपनी इस खोज यात्रा में जिन वाक्यातों, सबूतों, प्रमाणों व दस्तावेजों के विवेकसम्मत, तर्कपूर्ण इतिहासपरक आदि बिंदुओं से अभी तक गुजरा हूं, उन सबका एक ही निष्कर्ष निकलता है कि 'गुमनामी बाबा' और कोई नहीं वरन् स्वयं नेताजी सुभाषचंद्र बोस ही थे। अब चाहे अपनी सुविधा के लिए हमने उन्हें 'गुमनामी बाबा' (गुमनाम—जिसका नाम गुम हो चला हो) कहा, या उनके स्थानीय शिष्यों ने अपनी अगाध श्रद्धावश उन्हें 'भगवन जी' कहकर पुकारा, या फिर उनके कलकत्ता निवासी सहयोगियों ने उन्हें 'स्वामी, गुरुदेव, विजयानंद, श्रीचरण स्पर्देषु' आदि सम्बोधनों से पुकारा हो। मगर किसी ने भी उन्हें कोई 'दूसरा' नाम नहीं दिया (यहां तक कि सरकार भी नहीं दे पा रही है)—क्योंकि उस जैसी शख्सियत का कोई दूसरा नाम हो ही नहीं सकता था। परंतु 'वह' अपने नाम से इस तरह 'कटकर' क्यों रहे—यही अब इतिहास को तलाशना होगा। याद कीजिए गुमनामी बाबा ने एक बार स्वयं कहा था कि उनका नाम ही दुनिया के रजिस्टर से मिटा दिया गया है।

अभी तक हम लोग जितने भी तथ्यों, पत्रों, बयानों, संदर्भों आदि की खोजों से गुजरे तो हमारे सामने उससे जो एक सीधी-सादी कथा (सार संक्षेप में) बनी, वह यह है कि 'गुमनामी बाबा लगभग सन् 1954 के आसपास इटावा के श्री सुरेंद्र सिंह चौधरी के सम्पर्क में आये। चौधरी साहब का कहना है कि सर्वप्रथम मैं हीरालाल दीक्षित के साथ इनसे मिला, तत्पश्चात् तांत्रिक क्रियाओं आदि की साधना में इनके सहायक व शिष्य बने। चौधरी साहब बाबा को लखनऊ ले आये और पं. सम्पूर्णानंद (तत्कालीन मुख्यमंत्री) के संरक्षण में ये कई वर्ष वहां रहे—यहीं पर श्रृंगार नगर में रहते समय श्रीमती सरस्वती शुक्ला इनकी परिचारिका के रूप में इनकी सेवा में आईं। तत्पश्चात् सन् 1958 के आसपास बाबा नीमसार (जिला सीतापुर) में पं. शिवराम शर्मा के एक शिवालय में जाकर रहे और सन् 1963–64 तक वहां रहने के बाद एक रात चुपचाप फैजाबाद चले आये। दर्शन नगर में अयोध्या राजा की कोठी तथा अयोध्या स्थित लाल कोठी में 6–7 माह रहे, फिर वे बस्ती के राजा शरिस्ता की कोठी में चले गये और सन् 1974 की धनतेरस की रात को बस्ती के दुर्गाप्रसाद पांडेय उन्हें अयोध्या के पं. रामकिशोर मिश्र की एक धर्मशाला में छोड़ गये। छः माह बाद बाबा वहां से शहर के ब्रह्मकुंड मोहल्ले में स्थित सरदार श्री सोंधी के मकान में चले गये। फिर कुछ वर्ष वहां रहने के पश्चात् वहीं समीप में एकांत में खाली पड़ी लखनऊवा कोठी में लगभग डेढ़-दो वर्ष रहे, तत्पश्चात् वहां से फैजाबाद के सर्किट हाउस के ठीक सामने 'रामभवन' के पीछे बने किराये के एक क्वार्टर में 16 सितम्बर सन् 1985 तक रहे।

इस बीच जहां बाबा हमेशा पर्दे के पीछे ही रहे, तथा सामान्य व्यक्तियों से कभी नहीं मिले, वहीं पर हमने पाया कि सन् 1963 में ही नेताजी सुभाषचंद्र बोस की अन्यतम सहयोगी, अनुयायी व क्रांतिकारी श्रीमती लीलाराय तथा उनके भतीजे विजय कुमार नाग व उनके शिष्य व सहायक तथा 'जयश्री' पत्रिका के सम्पादक सुनील दास के अलावा, आई.एन.ए. के गुप्तचर अधिकारी पवित्र मोहन राय, नेताजी के अनुयायी व प्रवक्ता प्रो. समर गुहा आदि का उनसे प्रथम बार सम्पर्क हुआ, तथा बाद में बंगाल के कुमार विश्वनाथ राय, अमल बाबू, 'अनुशीलन' के आशुतोष काली, अमलेंदु घोष, खोसला आयोग के पैरोकार सुनील कृष्ण गुप्त तथा इनके बड़े भाई अतुल कृष्ण गुप्त, क्रांतिकारी त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती 'महाराज', साधनचंद्र दास, नंदलाल चक्रवर्ती, सुरजीत दास गुप्त (पत्रकार), मिहिर दास, शैला सेन, संतोष कुमार भट्टाचार्य आदि अनेक लोगों का बाबा से सम्पर्क हुआ चाहे पत्र द्वारा अथवा व्यक्तिगत रूप से। लेकिन बाबा इन लोगों से भी पर्दे की आड़ में ही मिले।
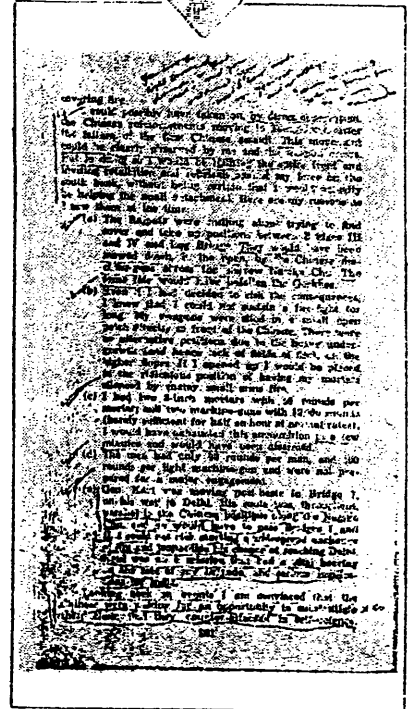
'द हिमालियन ब्लंडर' पुस्तक के एक पृष्ठ पर 'गुमनामी बाबा' की टिप्पणी

फिर भी आपने देखा कि इन सभी लोगों को यह विश्वास हो चला था कि ये बाबा उनके 'नेताजी' ही हैं। और वे सभी लोग अपरोक्ष रूप से उनके पुनः प्रकट होने की मनोकामना कर रहे थे। अब प्रश्न उठता है कि आखिर ये इतने महत्वपूर्ण लोग क्या बेवकूफ थे, जो एक चुपचाप शांति से बैठे बाबा को नेताजी मान रहे थे और वह भी दुनिया को छिपाकर; आखिर उससे इन लोगों को या बाबा को क्या लाभ मिलने वाला था ?

हां एक प्रश्न उठ सकता है कि, फिर आखिर ये शालमारी, जयगुरुदेव या रोटी बाबा की तरह अन्य सभी प्रकरण आदि क्या थे ? इसका एक सीधा-सादा-सा फिलहाल यह उत्तर है कि शालमारी में जो कुछ हुआ वह इनकी जानकारी, या इनकी ही योजना थी, जयगुरुदेव वास्तव में इन्हें प्रकट करना चाहते थे और बाबा अयोध्या से
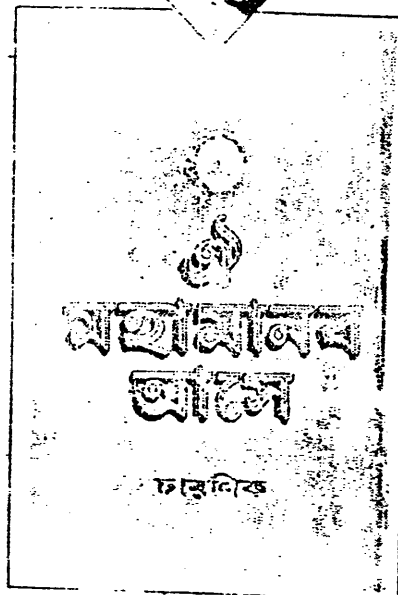
कोई महामानव आये' (ले.-चारणिक) पुस्तक का मुखपृष्ठ!

कार द्वारा गंगापुल (कानपुर) गये भी थे फिर न जाने क्यों (?) वापस लौट आये। तथा अन्य प्रकरणों के संदर्भ में ऐसा लगता है कि 'किसी' योजना के तहत ही यह प्रकरण या नाटक उछलते थे। क्योंकि अगर आप नेताजी को ज़िंदा बताने वाला जितना भी फुटकर साहित्य पढ़ें, तो आप पाएंगे उसमें दस बातें जहां घुमा-फिरा व बढ़ाकर कही गई हैं, वहीं पर एक बात सत्य या वास्तविकता वाली भी कही गई है, जैसे 'वह कहीं एकांत में चुपचाप साधनारत हैं' आदि।

इसी तरह यहां आप यह भी पाएंगे कि जितने सबूत, दस्तावेज आज तक यहां मिले, उतने अभी तक न तो और कहीं मिले और न कहीं परखे गये। हमने यहां मिले हज़ारों सबूतों में से केवल कुछ ही को परखा और पाया कि वे सभी केवल 'नेताजी' की ओर ही इंगित करते हैं, न कि नेताजी के किसी सहयोगी की ओर, और न ही किसी सी.आई.ए. के एजेंट की ओर। वहां एक भी ऐसा सबूत (पूरे दो मजिस्ट्रेटों की मौजूदगी में) नहीं मिला जो उन्हें नेताजी का सहयोगी या एजेंट करार देता। आपने बाबा के अध्ययन की सीमा, रुचि व उनकी टिप्पणियों को भी देखा, जिससे साफ जाहिर है कि वे कितने बड़े विद्वान, राजनीति के अध्येयता, अंग्रेजी व संस्कृत आदि के प्रकांड पंडित थे तथा युद्धक विषय पर उनका ज्ञान कैसा था ? अतः इससे तो यही सिद्ध होता है कि उस व्यक्ति को राजनीति व युद्धक विषयों का पूरा ज्ञान था।

जहां तक रही खान-पान की बात, मिलाकर देखिए तो—लगातार चाय-कॉफी व सिगरेट पीने की आदतों के अलावा, किसी बात पर द्रवित होकर रोने की आदत, पिता का स्मृति चिन्ह रखने की बात, हर औरत को 'मां' के रूप में देखने की बात, पेन व पेंसिल दोनों से लिखने व अंडरलाइन, व तारांकित करने की आदत, अच्छे खाने व शहर, यू.डी. क्लोन, जावा कुसुम प्रयोग करने की बात, झाड़-फूंक, नीम हकीमी, होम्योपैथी करने की बात, मुसलमान साथ रखने की बात (यहां अयोध्या में एक मुसलमान उनके साथ रहा था कुछ दिनों तक), व पढ़ने आदि की सैकड़ों आदतों का मिलान करने पर हमने पाया कि वे आदतें नेताजी में भी विद्यमान थीं।

अब सबसे अहम् प्रश्न उठता है कि वे छिपे क्यों रहे और इन छिपे दिनों में उन्होंने किया क्या ? इसका उत्तर बाबा द्वारा बोले गये और लिखे गये सबूतों को देने से पहले, मैं ब्रिगेडियर दल्वी द्वारा भारत-चीन युद्ध पर लिखी गई अंग्रेजी पुस्तक 'द हिमालियन ब्लंडर' पर बाबा की हस्तलिपि में लिखी गयी कुछ टिप्पणियों को आपके सामने पेश करना चाहूंगा।

इस पुस्तक के पृष्ठ 8 पर 'Preface' में प्रारम्भ में ही ब्रिगेडियर दल्वी ने लिखा कि "This book was bom in a prisonor of War Camp in Tibet on a clod black night." वहीं पर बाबा ने लिखा "V.V. TRUE" तथा "—me witness—"।

पेज 27 में जहां पर दल्वी ने लिखा कि 'सन 1951 में ही जब चीन ने लद्दाख पर पेट्रोलिंग प्रारम्भ कर दी थी, तो इस बाबत नेहरू ने संसद को कुछ नहीं बताया'—पर बाबा ने अंडरलाइन करके लिखा 'R' (अर्थात Right)। इसी तरह पुस्तक भर में सैकड़ों स्थानों पर 'R', Rt., Most Imp., Yes, लिखने के साथ-साथ तारांकित व अंडरलाइन के अलावा डबल लाइन बगल में खींची है उन्होंने (हमने पाया कि नेताजी भी इसी तरह अपने पत्रों में अंडरलाइन, तारांकित व बगल में डबल लाइन करते थे)।

पेज 136 पर बाबा ने बड़ी तीव्र टिप्पणियां हिंदी व अंग्रेजी में पं. जवाहरलाल नेहरू के खिलाफ लिखी हैं। केवल नेहरू जी के प्रति बाबा के विचार व आक्रोश को दर्शाने की गरज से हम बिना अपनी किसी टिप्पणी के इस अंश को इतिहासकारों के सुपुर्द करते हैं—

इस पृष्ठ में जहां पर ब्रिगेडियर दल्वी ने लिखा कि सन् 1962 में बिना किसी रक्षात्मक तैयारी के हमारे नेतागण कहते रहे—'that we would recover "every inch" of our soil.... are not expected to indulge in empty boasts.' पर बाबा ने लिखा—"Only the Indian Govt. Is adopt in empty Boasts of J.N.—the then P.M. He was wisked through and through अरे भैया जी, आप भी अंधेर बोलते हैं ! सोचिए सही : बुढ़ापे में मुफ्त राजगद्दी मिला।। अब चाहिए : आराम-ऐश-शैम्पेन-औरतें-रुपये जमीन।"

इसी तरह पेज 180 पर लिखा—"चीनी कूटनीति, दिल्ली क्या जाने ?" और जहां पेज 140 पर जनरल कौल को दुधमुंहा बच्चा कहा, वहीं पर पेज 218 में नेहरू जी को लिखा—"Oh, Suckling Baby P.M. !!!"

और पेज 152 में जहां पर ब्रिगेडियर ने युद्ध से इतर फौज की रोजमर्रा की दुर्व्यवस्था को दर्शाया, तो वहां पर जानते हैं इस बाबा ने क्या लिखा है—**"An exact picture in all countries almost." क्या इस कमेंट को पढ़ने से ऐसा नहीं विदित होता कि इस बाबा ने दुनिया के और भी बहुत से देशों में सेना के तौर-तरीकों को नजदीक से देखा है, वरना वह कैसे कहता कि दुनिया के लगभग सभी मुल्कों में यही दशा है सेना की।** अब बताइये अपने देश का वह कौन-सा 'महत्वपूर्ण' व्यक्ति हो सकता है ये ? खैर आगे चलिए जहां पर लिखे कमेंट ने बाबा के व्यक्तित्व को और रहस्यमयी बना दिया।

पेज 261 में जहां पर ब्रिगेडियर दल्वी ने Tseng–Jong क्षेत्र में अपनी रणनीति का वर्णन किया वहीं पर गुमनामी बाबा ने अपने हाथों से लिखा है—"You took the right crucial decision in that event. Had you battered, you would have made the

gravest.... I know because I gots the facts from the enemy commonder." है कोई संसद में पूछने व बताने वाला कि ये कौन-सा साधारण बाबा था जिसे चीन के कमांडरों से भी जानकारी मिली थी ?

अपने पाठकों को याद दिला दूं कि जहां नेताजी के बारे में कहा जाता है कि वे तिब्बत व चीन में रहे सन् 1945 के बाद—वहीं पर आपने भी देखा कि बाबा ने भी अपने उस रहस्यमयी नक्शे में तिब्बत के साथ-साथ चीन का भी यात्रा मार्ग दर्शाया है।

चीनी सेना के कमांडरों व उनकी रणनीति पर बाबा ने लिखा—"100% correct student of Maharsi Kautilya." "महर्षि की यही शिक्षा है ठीक किया।" "They are true followers of Kawtillya and they were right on their Fronts." अर्थात् इस बाबा को महान कौटिल्य शास्त्र की भी जानकारी थी ! और दिल्ली के बारे में बाबा के विचार—"Oh God ! What Blunders ! from H.Q. & N.D. !"—"most Bad orders from H.Q. & N.D."

बाबा ने जनरल कौल के लिए बड़े तीखे कमेंट किये—"मगर चीनी बंदूकों की पहली धड़ाके में ही तेरी हवा खिसक गये और नर्वस ब्रेक डाउन—शक और दिल धड़कन की शिकार होकर एकदम देहली भागे और अपना काला मुंह दिखाने को कभी न आ सके। जानते हैं तुझे।"

जानने को तो बाबा ने जनरल प्रसाद, जनरल थापर, जनरल थिमैया आदि कई जनरलों के वर्णन के अलावा पुस्तक में अनेक चौंकाने वाले महत्वपूर्ण कमेंट लिखे हैं। जिनको जांच-परखकर उस बाबा की असलियत आसानी से क्या नहीं खोजी जा सकती ? लेकिन खोजे कौन ? यही प्रश्न तो सर्वोपरि है। लेकिन हमारे पाठकों को केवल इतनी ही झलक से यह तो अंदाजा हो गया होगा कि इस व्यक्ति का युद्धक ज्ञान एक 'जनरल' से कम नहीं लगता। और इस तरह ये गुमनामी व्यक्तित्व, आप ही बताइये नेताजी जैसे 'जनरल' के करीब कितना जा बैठता है।

आइये अब हम आपको ले चलते हैं इस प्रकरण या रहस्य के उस अप्रतिम सबूतों की ओर, कि बाबा ने अपने बारे में स्वयं क्या लिखा ! मैं समझता हूं इससे बढ़कर सबूत और कोई हो ही नहीं सकता—जिसे जांच-परखकर, दूध का दूध और पानी का पानी किया जा सकता है।

यहां यह सबूत भी दो रूपों में हमें प्राप्त हुये हैं। एक तो बाबा ने जिन्हें मुंह से बोला और उनके अनुयायियों ने उसे लिखा और छापा। तथा दूसरा वह जो स्वयं उन्होंने अपनी हस्तलिपि में लिखा। लेकिन यहां पर फिर मैं अपने पाठकों को सचेत करना चाहूंगा, कि ये सारे सबूत 'अपरोक्ष-प्रत्यक्ष' रूप में ही हमारे सामने आये हैं, इनका सार व महत्व हमें आपको तलाशना व निकालना होगा।

तो आईये सबसे पहले मैं आपको राममवन से प्राप्त ढेरों-ढेर कागज की स्लिपों में से एक महत्वपूर्ण स्लिप का दर्शन कराऊं। इस पर्ची पर बंगला में जहां एक ओर "1930 सेक्रेटरी विद्युत बोर्ड, देवेंद्र सेन, प्रफुल्ल घोष, नलिनी गुहा Chairman Lee... जगदीश बनर्जी M.P. मुड़ापाड़ा—अच्छे बगीचे के शौकीन मालिक ओक पेड़ भी था। घर के सामने से नदी बहती है। शीतलक्षा में जाकर गिरती है... मोहिनीदास... बंगला बाजार के रास्ता कॉरपोरेशन के बगल...।" आदि लिखकर बाबा ने लगता है अपनी यादों के पिटारे से कुछ स्मृतियां उड़ेली हैं, वहीं पर इस चिट के दूसरी तरफ बंगला में बाबा ने लिखा—

"हरिपुरार थेके वेलिंग्टन स्क्वायर पोरजोंतो जा छोटे छिलो ना जोदि न घोटतो ताहोलो जीबनटा हयतो ओन्योदिके मोड़ नितो।" अर्थात हरिपुरा से लेकर वेलिंगटन स्क्वायर तक जो कुछ हुआ, अगर वह नहीं होता तो शायद जीवन दूसरा मोड़ लेता।

अध्ययी पाठक तो तुरंत इसका अर्थ व संदर्भ ताड़ गये होंगे। लेकिन अपने आम पाठकों को बताने के पहले मैं अपनी एक शंका दूर कर दूं—यह लिपि बंगला है, मैंने बंगला पढ़ी नहीं, अतः वहां (राममवन में) मौजूद अन्य बाबा की सैकड़ों बंगला लिपियां को देखकर मैं नहीं जान सका कि यह लिपि बाबा की है या किसी और की—लेकिन वहां मौजूद बंगलाभाषियों व अनुयायियों ने हमसे यही कहा कि ये हस्तलिपि बाबा की ही है। बहरहाल यह तो 'हस्तलिपि विशेषज्ञ' आसानी से बता सकते हैं। हम भी यहां यही मानकर ही नहीं, विश्वास करके चल रहे हैं कि ये पंक्तियां बाबा ने ही लिखी हैं। और अगर बाबा ने ही लिखी हैं तो स्पष्ट है कि लेखक ने यह पंक्तियां अपने बारे में ही लिखी होंगी। क्योंकि यहां पर लिखा है—'जीवन दूसरा मोड़ लेता।' प्रश्न उठता है किसका जीवन ? अगर पंक्ति लेखक किसी दूसरे के बारे में लिख रहा होता तो अवश्य लिखता की—'उनका' या 'फलाने' का। लेकिन लेखक ने यह नहीं लिखा। और इन पंक्तियों का निहितार्थ तो आप जानते ही हैं कि किस व्यक्ति पर फिट बैठता है—यानी नेताजी सुभाषचंद्र बोस पर। हरिपुरा में कांग्रेस के अध्यक्ष बनने के बाद, वेलिंगटन स्क्वायर में ही कार्य समिति की बैठक में नेताजी ने इस्तीफा दे दिया था। और तब ही से 'कांग्रेसी नेता' बनने के बजाय नेताजी के जीवन ने मोड़ लेकर उन्हें जर्मनी, जापान जाकर एक सशस्त्र क्रांतिकारी बनाया। अजीब इत्तिफाक है कि बाबा की भी वही कहानी है जो नेताजी की थी शायद। अर्थात इन पंक्तियां का लेखक यानी गुमनामी बाबा और नेताजी का व्यक्तित्व एक ही नहीं लगता आपको ?

इसके बाद हम दूसरे सर्वाधिक उन महत्वपूर्ण
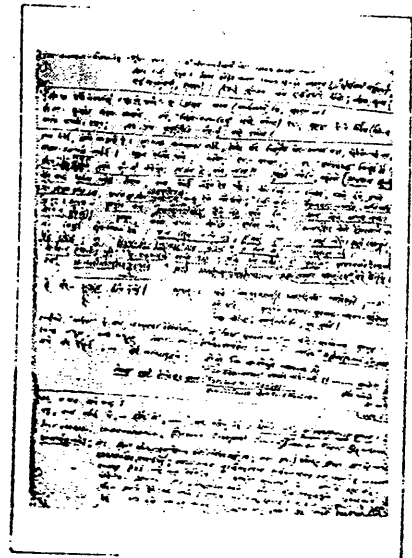
'गुमनामी बाबा' की हस्तलिपि में प्रसाद का लिखे गये पत्र के प्रथम पृष्ठ की फोटो स्टेट।

पत्रों का जिक्र करते हैं जिसे बाबा ने स्वयं हिंदी लिपि में लिखा है। याद रखिये नेताजी ने हिंदी सीखी थी और हो सकता है कि बारम्बार प्रयोग करने से उनकी लिपि में काफी सुधार हो गया हो इसलिए इसे नेताजी की पुरानी हस्तलिपि से मिलान करना बिरले हस्तलिपि विशेषज्ञों का ही काम होगा ! यह बात भी है कि बाबा ने जान बूझकर हिंदी लिपि का प्रयोग किया—क्योंकि पत्रों में वे अंग्रेजी लिपि लिखते तो लोग तुरंत उसका मिलान कर लेते। वैसे आपने देखा भी था कि बाबा ने जहां ब्रजनंदन दुलाल या किसी को लिखा भी तो मात्र कैपिटल अक्षरों में, न कि

small letters में। तभी तो प्रो. समर गुहा ने हम लोगों से बाबा की small letters की हस्तलिपि मंगाई। लेकिन कभी-कभी आदमी से चूक हो ही जाती है—बाबा ने काशी नरेश को लिखे अपने चार पृष्ठ के एक अधूरे हिंदी भाषा के पत्र में दो-चार पंक्तियां अंग्रेजी में भी लिख मारी है।

Auditque Vocatus Apollo"
(Apollo Listens when invoked)
His Highness Maharajadhiraj Arishtottarashata Shree
Bibhuti Narayana Singh jiu,
Kashi-Naresh.

गुमनामी बाबा द्वारा काशी नरेश को लिखे गये पत्र में से प्रथम पृष्ठ का फोटो स्टेट

इस पत्र में जहां बाबा ने आध्यात्मिक बातों के साथ-साथ अंततः भारत के सुदूर उज्जवलता हेतु भविष्यवाणी की है—"आपका भारतवर्ष, जग रही है, जगेगी, उठेगी; अपनी पूर्ण पूर्व शाश्वत गौरव-शक्ति-मर्यादा पुणः प्राप्त करेगी—और फिर भी करेगी। सम्पूर्ण विश्व श्रद्धावणत होकर भारतवर्ष की शाश्वत अमरवाणी सुनेगी।" (याद कीजिए फ्रांस के महान भविष्यद्रष्टा नस्त्रादमू तथा प्रभु जगदबंधु की भविष्यवाणियों को)। लेकिन यह होगा किस बल पर इस हेतु बाबा ने लिखा—"महान साधन-शक्तियां, निज-निज आत्मोसर्ग करके जुटे हुए हैं।" इसी पत्र के बीच-बीच में अपरोक्ष रूप से बाबा ने अपने बारे में लिखा—"यह शरीर एक मातृसंतान-वृद्ध दशनामी सन्यासी की है। मैं, मातृपुत्र हूं, मातु साधक बनने के लिए आद्ये दुर्गा-काली से प्रार्थना करते रहता हूं।... मेरे लिए उम्र-चाह-आवेश नहीं है।

नराधिप!, इस वृद्ध सन्यासी की भावनाओं की धाराएं, दृष्टिकोण, सम्यक विचार यानी Prospectives,—वर्तमान समय में प्रचलित इतिहास तथा दिग्दर्शन से काफी भिन्न है।... मेरी Premises—भी, वर्तमान समय में प्रचलित-प्रचारित तथा (अज्ञानतावश से) गृहीत 'तथ्यों से'—भिन्न ही है। कारण स्पष्ट ही है : I Know my Propositions are Previously Proved."

मैं बाबा द्वारा लिखी गई इन पंक्तियों का भावार्थ आप पर छोड़ता हूं कि आप सोचें कि बाबा और नेताजी की परिस्थितियां कहां एक-दूसरे की पूरक बनी जा रही हैं—बाबा ने अपने (नेताजी के) बारे में फैले या फैलाये गये (सम्भवतः वायुयान दुर्घटना में हुई तथाकथित मृत्यु पर उत्पन्न भ्रांति) के सम्बंध में लिखा—"भ्रांति को प्रतिष्ठित करने के लिए 'व्यापक-सुगठित-राजशक्तिपुष्ट—महाप्रचार' करते रहने से ही सत्य की पूर्ण अवरोध नहीं किया जा सकता। भले ही कुछ समय के लिए मिथ्या बादल ने—उसे (सत्य को) ढक लें।" वह सत्य क्या है इसे भी शायद आप बाबा की ही हस्तलिपि में पढ़ना पसंद करेंगे। लेकिन ठहरिए—इसे बाबा ने हिंदी लिपि में तो अवश्य लिखा है लेकिन भाषा बंगला है। अतः इसको हिंदी हम आपको पढ़ाएंगे। यह आठ पृष्ठीय पत्र बाबा ने 'प्रसाद' को आध्यात्मिकता से भरा स्वयं लिखा है। अर्थात हमारे अनुसार नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने स्वयं लिखा है। (पाठकगण अब मुझे 'बाबा' के स्थान पर 'नेताजी' शब्द लिखने की अनुमति दें, तो बात ज्यादा सीधी तौर पर, Direct समझी जा सकेगी।

आप यहां पाएंगे कि बाबा को नेताजी के रूप में देखने की अभिलाषा जब उनके शिष्यों में तीव्र हो जाती थी, तो उसको वे कैसे शांत करते थे—"सुदूर अतीत युग में जिस एक व्यक्ति को तुम जानते-पहचानते थे—उसे भूल जाओ। उस आदमी को सामान्य रूप से भारत एवं अत्यंत विशेष निरंकुश रूप से 'उसी के सगे-सम्बंधी रिश्तेदारों एवं सम्पूर्ण बंगलादेश' ने मार डाला है। वह मरकर भूत हो गया है।"

मैं नहीं जानता नेताजी के द्वारा कहा गया उपरोक्त वाक्य—नेताजी के रिश्तेदारों, बंगाल व पूरे भारतवासियों के गले के नीचे उतर रहा है या नहीं—लेकिन यह वास्तविकता है—हकीकत है, कि यह वाक्य स्वयं नेताजी ने हमारे व आपके लिए लिखा है। घबड़ाइए मत—आगे और भी हिदायत देते हुए हम सबको लताड़ा है उन्होंने—

"अतः जिसे 'दूर शताब्दियों के अज्ञात दिनों' में जानते-सुनते थे। उसका सूत्र पकड़कर, मृत भूत को मापने का, समझने का, जानने की चेष्टा मत करो। सम्पूर्ण व्यर्थ होगा। गलत समझोगे।।... पर अद्भुत, अति अद्भुत, तुम लोग और तुम लोगों का गर्वनमेंट : जो व्यक्ति 'सर्व स्वीकार्य रूप से प्रमाणित रूप से मर ही गया है, उस निश्चित मृतक को :

**मोरे छे कि न मोरे छे जानि बार तरे,**

**'लोडेड-डाइस कमीशन' बसाये बारे बारे।' क्यों ?** (अर्थात् मरे हैं कि नहीं मरे हैं जानने के लिए लोडेड डाइस कमीशन बार-बार बैठाते हो ?... क्यों) तुम सभी लोग इसका कारण हो : 'Populus Vult Decipt' (सम्भवतः जर्मन उक्ति)—You all people wish to be fooled.—जाने दो, यह सब बेकार की बातें।। सिर्फ सत्य यह है—पहले का 'वह',—अब और नहीं है। अंदर-बाहर पूर्णतम रूपांतरित मृत भूत।"

मैं समझ रहा हूं बहुतों के दिमाग सनक रहे होंगे और बहुतों के खून में हो सकता है उबाल भी आ रहा हो, और बहुत से अति बुद्धिवादी सचेत होकर कुछ प्रश्नों की खौलन मस्तिष्क में महसूस कर रहे होंगे—लेकिन सभी से मेरी प्रार्थना है कि यह एक वास्तविकता है और उसे पहले और

अधिक उजागर होकर सामने आने दीजिए। तो आपने ऊपर देखा कि नेताजी की मृत्यु को सिद्ध करने के लिए बैठाये गये दो—शाहनवाज व खोसला कमीशनों के बारे में नेताजी की स्वयं क्या प्रतिक्रिया थी। ध्यान रखिए यह प्रतिक्रिया गांधी, नेहरू या पटेल नहीं करने वाले, और न ही नेताजी का कोई अनुयायी ही खुद 'मृत भूत' बनकर यह सब कहेगा—आखिर उसे इससे क्या फायदा ?

अब मैं पत्र की थोड़ी बातों को और पढ़ता हूं। शुरू से श्रृंखला पढ़ रहे पाठकों के सामने आईने की तरह स्थिति साफ होती चली जाएगी, कि हमने जो अन्य दस्तावेजों के आधार पर अनुमान भर लगाया था वह कितना अक्षरश: सही था—"ऐसा लगता है मृत भूत की स्थिति के विषय में तुम 'विशेष, खास, कुछ' सोच नहीं सकते हो। और मृत भूत जो-जो निर्देश (खुद या अन्य लोगों के माध्यम से) भेजता है; उसके ऊपर काफी तौर से गौर भी नहीं कर सकते हो।

पहले ही तुमसे कहा है कि (a) मेरा Horizon के बाहर तुम लोगों के साथ स्नेह-प्रेम का योग-स्थापना करना... नहीं है, साधारण और सुसाध्य तो बिल्कुल ही नहीं। वैसी सुविधा के लिए, कब और कहां—इसका 'पूर्व निश्चित' कुछ नहीं रहता है, श्रीमान सुकृत (सुनील कृष्ण गुप्त—ले.) तुम्हें क्या-क्या कहे हैं, वह सब तो मुझे नहीं मालूम ?... तुम्हें पहले से ही निर्देश दे रखा गया है कि कोई चिट्ठी या सामान भेजना हो तो पहले डॉ. श्रीमान पवित्र राय, अथवा श्रीमान सुकृत के पास से जान लेना; चिट्ठी या सामान पाने वाली जगह में मैं हूं या नहीं; अथवा—मृतभूत के पास पहुंचा भी पाएगा कि नहीं। अन्य कोई माध्यम का प्रयोग नहीं करोगे—भूल से भी नहीं। (सख्त हिदायत देख ली आपने कि नहीं। यह सुकृत वही सुनील कृष्ण गुप्त, खोसला आयोग के प्रमुख पैरोकार हैं—ले.)। मृतभूत, कब, कहां—किस देश में—स्थल का, जल का अथवा अंतरिक्ष का, कौन देश-समाज में रहता है, उसका कोई भी ठीक ठिकाना नहीं रहता है। जो-जो निर्देश तुम्हें देता हूं, उसे तुरंत तत्काल ही सम्पन्न करोगे। यही डिसिप्लिन है। हो रहा है—होगा—हो जाएगा—यह सब मैं सुनना नहीं चाहता।" वाह रे डिक्टेटरशिप ! लोग कहा भी करते हैं कि नेताजी का पूर्व चरित्र भी ऐसा ही था।

इसके पश्चात् इस शताब्दी के इस महान पुरुष ने 'मृतभूत' शब्द की व्याख्या आदि हेतु पूरे आठ पृष्ठ के इस पत्र में ज़्यादातर आध्यात्मिक बातें की हैं। लेकिन अंतोगत्वा सबसे अंतिम खड़े होते प्रश्न—'आखिर नेताजी ने अपने इन चालीस वर्षों में किया क्या ?—का उत्तर एक साधारण-सी पंक्ति में, सार-संक्षेप रूप में यही है कि इस महान देशभक्त कर्मयोगी ने अपनी चिर अराध्य जननी जन्मभूमि की निरंतर सेवा में लीन रहने का व्रत लेकर अनेकों सिद्धियों, तंत्र, मंत्र, योग आदि का पूर्णत: समाधान कर अपनी साधना व तप-तपस्या के बल पर 'ब्रह्मर्षि' जैसे स्तरों से होते हुए 'कल्कि' और 'महाकाल' के रूप में प्रतिष्ठित होने का सतत् प्रयास जारी कर रखा था।

और इससे पहले कि, मैं अपने निष्कर्ष की पुष्टि में इस श्रृंखला का आखिरी सबूत पेश करूं—मैं आपको बता दूं कि हाईकोर्ट के आदेश पर रामभवन से सारा सामान मय दस्तावेज के कुल 2760 क्रमांकों पर दर्ज करके 31 बक्सों में भरकर, अन्य सामानों सहित एडवोकेट कमिश्नर श्री सत्य नारायण सिंह 'सत्य' एवं सुश्री ललिता बोस आदि पक्ष के वकीलों सर्वश्री मदनमोहन पांडेय, कैलाशनाथ जायसवाल, रामप्रकाश सिंह एडवोकेट के समक्ष डिप्टी कलेक्टर श्री राजमणि यादव की उपस्थिति में स्थानीय ट्रेजरी (कोषागार) के एक कमरे में सील बंद करके, ताली जिलाधिकारी के सुपुर्द (दिनांक 23.4.87) कर दी गई है। लेकिन एक वर्ष से भी ऊपर हो गया सुश्री ललिता बोस अभी तक इस मुकदमे की पैरवी करने नहीं आईं। कुछ लोगों का कहना है कि परिवार वालों के साथ-साथ कांग्रेस व सरकार के भय से वे नहीं आ रही हैं, और न ही नेताजी के अनुयायी आदि भी आगे बढ़कर आ रहे हैं जिसका कि परिणाम यह होगा कि फैजाबाद के जिला कोषागार के सीलनभरे कमरे में ठूंस कर रखे गये, ये सारे दस्तावेज-सबूत सड़-गलकर जल्द ही काल के गाल में समा जाएंगे। यानी कि, न रहेगा बांस और न बजेगी फिर कभी बांसुरी, की मुद्रा में सभी मौन हैं—आखिर क्यों ? कहीं, ज़िंदा आदमियों के रजिस्टर से 'किसी' का नाम काट देने की यह कोई साजिश तो नहीं है ?

'महाकाल' का कहना है कि, हॉ—"Human रजिस्टर से मेरा नाम crossed out हो गया है। I am no more a man." अब आप मुझसे पूछेंगे कि ये 'महाकाल' कौन है ?

नेताजी की सर्वविख्यात सहयोगी क्रांतिकारिणी श्रीमती लीला राय कलकत्ता से एक पत्रिका निकालती थीं—'जयश्री'। उसी पत्रिका में छपे कुछ अंशों को एकबद्ध करके प्रकाशक श्री विजय नाग ने एक पुस्तक प्रकाशित की—'वोई महामानव आषे' (लेखक—चारणिक, जयश्री प्रकाशन, 20A प्रिंस गुलाम मोहम्मद रोड, कलकत्ता-700026)। अर्थात 'वह महामानव आ रहे हैं' नामक यह पुस्तक दो खंड में है। इसके प्रथम खंड के प्रकाशक के निवेदन में लिखा है कि—"चारों तरफ से यह प्रश्न उठ रहा है कि 'जयश्री' के पन्नों पर आविर्भूत होने वाले यह 'महाकाल' कौन हैं ?" और इसका वही Direct-Indirect (परोक्ष-अपरोक्ष) जवाब ही इस पुस्तक में भरा पड़ा है।

अपने एक पत्र (क्रमांक 1919) में चारण ने 'गुमनामी बाबा' को लिखा—"वर्तमान पर्याय को लेकर 'वोई महामानव आषे' है, और कुछ वक्तव्य 'महाकाल' के 'आत्मकथन' स्वरूप मिलता तो प्रकाशित करता।" दूसरे पत्र में पल्टू ने लिखा—"कानों में बहुत विभिन्न घटनाएं आती रहती हैं, परंतु चारण उन सभी को लेकर कहानी नहीं लिख सकता है। 'महाकाल' की सम्मति की प्रतीक्षा में चारण के कदम रुक जाते हैं।" मैं यहीं एक गुत्थी और सुलझाता चलूं कि ये 'चारण' व 'पल्टू' महोदय का नाम 'चारणिक' व 'पल्टन' भी है, तथा ये उपनाम जिस व्यक्ति के हैं, वह व्यक्ति हमारी खोज के अनुसार (सम्भवत:) श्री विजय कुमार नाग ही हैं, जो उपरोक्त पुस्तक के प्रकाशक भी हैं, ये शायद श्रीमती लीला राय (लीला नाग) के भतीजे हैं।

इस पुस्तक में चारण लिखते हैं कि, 'सन् 82 के पुण्य दिन (यानी 23 जन.) को सर्वस्व अर्पण कर देने वाले मातृचरण आश्रित महासाधक के चरण स्पर्श करने का सौभाग्य चारण को हुआ था।... एक ही दिन (23 जन.) को उनकी मातृभूति की महानगरी में चारों ओर उत्सव-मेले लगे हैं।... इसी दृश्य के दूसरी ओर... यह कैसे परिवेश में चारण ने 'महाकाल' का दर्शन पाया, चिकित्सकविहीन एक अवर्णनीय परिस्थिति में, करवट बदलने की भी क्षमता नहीं है, तीव्र यातना से थोड़ी-थोड़ी देर बाद वह आर्तनाद कर उठते हैं।... महाकाल शैय्या से न उठ सके।... फिर भी... बड़े खुश होकर बोले, "चारण अब गाओ वह गीत—'मन चलो निज निकेतने।"

महाकाल ने स्वयं एक दिन चारण से कहा भी था, "This is one the sad condition of life, that experience is not transmissible. No man will learn from the suffering of another. He must suffer Himself." और इस अवस्था की प्राप्ति उन्हें क्यों हुई, इसके बारे में भी उन्होंने कहा, "Inscrutable I was, this time absolutly so... this type of living, this utter Faquiri...." अर्थात मेरा व्यक्तित्व तो यूं ही अभेद्य

था, और इस बार तो और भी पूर्णरूपेण अभेद्य है—मेरा इस तरह का रहन-सहन, यह चरम फकीरी का वेष, यह अपने मांस को नित सूली पर चढ़ाना और उसे पीड़ित-कष्टित करना—यह सब कई-कई वर्षों के विचार-मंथन का ही परिणाम है।... मेरे प्यारे चारण... तुम अपने महाकाल के विचार, कार्य पद्वति एवं विचारों के आदान-प्रदान पर कभी शंका मत करना। यह शंका तुम्हें किसी भी प्रकार से मदद नहीं करेगी। इस समय यह असम्भव है।... क्योंकि तुम इस वक्त कल्पना भी नहीं कर सकते हो, कि तुम्हारा 'महाकाल' किस कार्य के लिए, किन शक्तियों के साथ प्रयत्नशील है। और भाग्यवश तुम अगर उसका शतांश भी जान सके तो तुम्हारा दिमाग चकरा जाएगा, कि तुम्हारा 'महाकाल' कैसे अपने हाथों में Thunder of The Thor (सम्भवतः 'इंद्र के वज्र' जैसा यूनानी देवता का हथियार—ले.) को लेकर भविष्य की प्रत्येक सम्भावित घटना का सामना करने के लिए तैयार है।... मेरे हाथ में कितनी बड़ी कल्पनातीत, संहारक व सृजक शक्ति एक साथ समाहित है और उसका प्रयोग करते ही तुम्हारी सांसें थम जाएंगी।... क्योंकि मैंने मृत्यु को कई बार धत्ता बताई है, और मैं प्रत्येक क्षण जीवित रहने के लिए मृत्यु को धोखा देता हूं।"

और ऐसा महाकाल ने क्यों किया, जानते हैं आप ? उन्होंने कहा—"मैं जानता हूं, अब मेरी मौत पर कोई दो बूंद आंसू बहाने वाला भी नहीं है। ... लेकिन मैं यह भी जानता हूं कि यह मेरा आखिरी जन्म है (I know this is my last mortal coil) इसीलिए मैं सिर्फ अपनी 'साधना' में जुटा हूं।... मातृ साधना... मेरी मातृ साधना कभी असफल नहीं हो सकती।... मां जननी, जन्मभूमि... बंगाल, भारत फिर से अपने ऐश्वर्य, दीप्ति को प्राप्त करेगी।... ओह मां... मां... मेरी बंग मां, तुम मुझसे कितनी दूर हो।"—लेकिन चारण जानते हो कि 'It is very, very tough road that leads to the height of greatness.' और इसके लिए ज़रूरी है आध्यात्मिक ऊंचाइयों को छूना ! उन्होंने (महाकाल ने) कहा—'यह आकाश के ऊपर एक महाव्योम है, Recorder of thoughts, recorder of words, recorder of deeds. 'साधना' की एक सीमा तक पहुंच जाने पर अपने 'प्राण शरीर' को 'स्थूल शरीर' से बाहर निकाला जा सकता है। अभ्यस्त हो जाने पर ये प्राणमय शरीर लेकर तुम कहीं भी आ-जा सकते हो (अर्थात 'सूक्ष्म शरीर' से बिना देह के कहीं भी आया-जाया जा सकता है) यह गति मनोमय है।... यह सब शिक्षा अपने यहां के ही वेद-पुराणों की है, यदि योग दर्शन पढ़ो तो समझ जाओगे कि उसमें 'अणु' का कितना विशद वर्णन है, जबकि आज का वैज्ञानिक उसका शतांश ही जान पाया है।'

विचित्र समन्वय है महाकाल की बातों में, चरित्र में—कभी कठोर तो कभी कोमल हो जाते हैं... 'वे' अतीत का होते हुए भी, 'वे' अब नये मानव हैं। क्योंकि वे कहते हैं कि—'तुम नहीं जान सकते कि तुम्हारा 'महाकाल' यहां पर कैसी कुत्तों की ज़िंदगी जी रहा है।... मेरा नाम ही दुनिया के रजिस्टर से मिटा दिया गया है।... क्या तुम नहीं जानते कि मैं जन्म से ही संन्यासी हूं। मेरा जन्म 'अनब जोग' में हुआ है मेरी कुंडली में देखो।... मैं जैसे-जैसे बड़ा हुआ मेरी अनंत जिज्ञासा बढ़ती ही गई... जिसकी शांति हेतु मैं एक बार बचपन में ही सतगुरु की तलाश में भटका... हिमालय घूमा... लेकिन मेरी प्यार नहीं मिटी... फिर मेरी मां ने मुझे समझाया जो परमहंस की शिष्या थीं... मेरे पिता ने मुझे दूसरों के लिए लड़ना व सेवा करना सिखाया।... मेरी परिचारिका (My Governor, first tutor–guardian) ने मुझे त्याग व संघर्ष का पाठ पढ़ाया। अर्थात मेरे इस 'Bedrock' की तैयारी इस तरह बचपन में ही हो गई थी।'... और अब मैं मृत हूं "I am dead.... Dead Man took nothing from 'you' (Bengal–India–and home) he gave and left his everything.... He gave himself to India. He gave something to India and he effaced himself away.... And he shall again efface himself away. He is a Dead man, he is a Mystie."

इस आध्यात्मिक, सम्वेदनात्मक बातों के अलावा भी 'महाकाल' (यानी नेताजी) ने बंगला देश की उत्पत्ति, देश की राजनीतिक दशा, नेहरू की चाल, चीन, पाक-युद्ध, युद्ध रणनीति, विदेशियों द्वारा जीवित रहने की जानकारी, स्वतंत्रता संग्राम के दिनों का वर्णन किया है, वहीं पर ताईहोकू विमान दुर्घटना व अपनी एमिलीशेंक्ल से शादी को नकारते कहा कि—"Air crash a death concoetion—यह कहना ज़रूरी है। वह है कि नहीं है यह redundant—air crash उस दिन वहां नहीं हुआ था, यह बनावटी बात है।" इसी तरह शादी के बारे में महाकाल ने कहा—"सारा जीवन ब्रंह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा करने के बाद, मृत्यु की ओर जब कूदने जा रहा हूं, ठीक उसी समय डोबा (गंदा नाला—ले.) में गिरकर शामुक (सीप-घोंघे) से पैर कटाता।... जो आदमी आग में कूदने जा रहा है वह इतना नृशंस, इतना अत्याचारी, हत्याकारी होगा कि एक लड़की से शादी करने जाएगा।... दादा लोग का कब बंगला में पत्र लिखता था मैं ? और दिन, तारीख, जगह का नाम, पत्र में एकदम नीचे—ऐसा भी कभी नहीं हुआ।"

इसी के साथ 'महाकाल' ने अपने विश्व भ्रमण के किस्सों के रूप में एथेंस के नेशनल म्यूज़ियम, इंग्लैंड के ब्रिटिश म्यूज़ियम क्रिस्टल गेस, बगदाद के 20 हज़ार टन के खम्बे, मेक्सिको, रूस, स्पेन के प्यॉर ग्लास आदि का वर्णन किया है, वहीं पर कुछ बातें एकदम चौंकाने वाली है—जैसे वियतनाम के युद्ध में महाकाल का, वहां के राष्ट्रपति हो ची मिन के अतिथि के रूप में रहकर नौ देशों की सेना के जनरलों की बैठक में भाग लेना आदि। इसका तो मतलब यह हुआ कि सन् 1945 के बाद नेताजी के बारे में जो कुछ 'उड़ाया' जाता था, वह केवल कोरी कल्पना नहीं थी, बल्कि कुछ हद तक सत्य था। अर्थात नेताजी का जीवित रहना अगर सत्य था, तो उन्होंने क्या किया इन चालीस वर्षों में ? इसका जवाब खोजने के लिए आपको भी अपने को, उस स्तर 'Horizen' को समझ पाने की सीमा तक, तो अवश्य ले जाना होगा, जिसके लिए उन्होंने (महाकाल ने) स्वयं कहा है—"I can not spare a single moment to waste my life time outside my horizen's work. That is the only, I repeat only one, for which I am."

हमने खोजा—तो पाया भी, कि गुमनामी बाबा ही 'महाकाल' और 'महाकाल' ही नेताजी थे। अब इस राष्ट्र की जनता, सरकार व न्यायपालिका—जो चाहे वह इतिहास में दर्ज करे। □

9, M.I.G. लक्ष्मणपुरी,
फैज़ाबाद

## सूचना

पाठकगण, 'गंगा' में प्रकाशित 'वे नेताजी नहीं थे तो कौन थे ?' लेखमाला की पिछली सभी किस्तों सहित—तथा इस अंतिम किश्त का विस्तृत वर्णन—लेखक की शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक 'गुमनामी सुभाष' (द्वितीय खंड) में पढ़ सकेंगे। इस पुस्तक का प्रथम खंड प्रकाशित हो चुका है, जिसमें प्रारम्भ से हाईकोर्ट के इंवेंटरी बनाने के आदेश करने तक का विस्तृत वर्णन है। इच्छुक पाठक, लेखक के उपरोक्त पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

—सम्पादक